অত্যাশ্রমী

কেশ্বচন্দ্রের

আশ্রমধর্ম।

অত্যাশ্রমী কেশবচন্দ্রের আশ্রমধর্ম *।

হে অনস্কজানের প্রস্রবণ, তুমি আমাদের হালয়ে প্রকাশিত হও। তুমি হালয়ে প্রকাশিত না হইলে, অনাকার আলোচা বিষয়ের তার না বন্ধার হালয়ে ক্রি পাইবে, না শ্রোত্বর্গের হালয়ে তাহা প্রতিফলিত হইবে। যে তত্ত্বের আলোচনা করিতে প্রস্তুত্ত, উহা অতি গভীর এবং ছর্ভেদা, তোমার আলোক বিনা ট্রাব অন্ধান্তর, বল, আমরা কির্কাপে পাইব। এই জন্ম ভীত মনে স্কাপ্রে তোমার স্মিলানে উপনীত হইতেছি, ভূমি আলোক হইয়া সদয়ে অবতরণ কর যে, তোমার আলোকে আমরা বিষয়েট যথাযথ হালয়ক্ষম করিতে পারি, এবং উহা দ্বারা আমরা জীবনপথে অগ্রস্র হইতে সমর্থ হই। তব পালপান্ন এই প্রার্থনা জানাইয়া আমরা অন্যবার আলোচনা বিষয়ের আলোচনা ব্যাব্র হট।

অমি হয় আরেছে নয় অস্তে এই কথা অনেকবাদ বলিয়াছি, কেশবচন্দ্রে বিষয় আমি যাহা বলি, তহা চরম নতে। ভাহাব জীবন অভি গভার, তাহার ভিতরে প্রবেশ এক বাজির জীবনের কার্যা নয়। এখন যাহা প্রকাশ পাইতেছে ভাহা জতি সামাল। ইহার পরে বাঁহারা আসিবেন, ভাঁহাদের নিকটে এ জীবনের আরুও নিগৃত তর সকল প্রকাশ পাইবে। আলোচনার পর আলোচনা চলিতে থাকিবে, শভাকীর পর শভাকী চলিয়া যাইবে, এ জীবনের ভিতরে এখন যাহা আমাদের নিকটে বীজাকারে প্রকাশ পাইতেছে,

ত্রমংষ্টিভম ক্রেমাংসবোপলকে প্রদৃত্ত বস্তুতামূলক ।

विश्व के तुम्बानस्ति विश्वक स्टेटन, केन्द्र क्रेन्ट्रेड होता जिस्ति इस्किट्ट स्टेड्ड बहुता शाक्ति । क्रुक्तारे कान्ति तकः व निरंति शहा विश्व क्रिक्ट्ट्रेड निर्देश हेरेत । तकः गर्गाल हरेशव स्टेड्ड क्रुक्ट क्रुक्ट्ड ब्राह्मक ब्राह्मका निरंद्रत ब्राह्मका शहुक इस्टेड्डिड

ক্ষেত্রকার অভ্যান্তমী অধন উল্লেখ্ন আলমধর্মের কথা বলিতে কাৰি ট্ৰাড; ইয়া ভূমিরা পণ্ডিতেরা বলিবেন, এ ব্যক্তি স্ক্রাব্রেম্বী কথা বলিভেছে, উহার ক্থায় কর্ণণাত করা কাহারও ৰ্ভিচিত নহ। বিনি সকল আল্রমধর্ম অতিক্রম কুরিয়াছেন তিনি ক্ষান্ত্রী। অভ্যাশ্রমী হইরা ধদি আবার কেহ আশ্রমের আশ্রম ৰার, ভাষা ইইনে ভাষার পতন হইন, সে পতিত ব্যক্তির কথা কাৰে ভোলা কাহার উচিত নয়। শালে একচর্যা, গার্হস্বা, বান প্রস্থ ও ভিকু এই চারি আশ্রম আছে। দৈশবে ব্রহ্মচর্যোর कात्रख हरेना त्योवत्मत श्रांत मधाकांग भगाव छेहा वार्थ शांकिछ। আঁচাৰ্য্য ত দিন পৰাস্ত এক্ষচারীকে গৃহে প্রভাাবর্তন করিবার উপযুক্ত মনে না করিতেন, তত দিন তাঁহাকে গুরুকুলে বাস করিতে হইত। সন্তান বক্ষতেজে তেজবী হয়, পিতামাতা এলপ অভিনাৰ কৰিলে গৰ্ভ হইতে গণনাৰ পঞ্চমকৰে ব্ৰহ্মচণাৰতে শিশুকে উপনীত করা হইড, শিশু উপযুক্ত না ইইরা আর গৃতে প্রভাবর্ত্তন করিতে পারিত না। সাধারণতঃ গর্ভ হইতে গণনার श्रहेमवार्क बाकान, धकामन वार्व कालिक धावः बामन वार्व देवन উপনীত হইরা গুরুকুলে বাস করিতেন। ত্রাদ্ধণগণের যোড়শ, क्किजनारनत्र बान्धिन, धावः देवजनारनत्र छष्ट्रिंशन वार्वत्र मध्या উপনৱন না হইলে ভাহার। গভিত হইভেন। সচবাচর ছঞ্জিল

Bent bergen und affen einenge, bigebeite Cunfelle क्रकाबीरक मीत्रसामना कविएक शरेका। नागरकक्रिक मानकस्मा वर्डेरण क्षम अञ्चल सन्दर ए दिनाच कविक, क्षम बाह्यस्था নিক্ট বৃত্তে প্ৰকাশসন করিব।র বস্তু এখচারী অসুবৃত্তি পাইতেন। कनत्त्र अधानत्त्र कृष्टि वा इत्रेतन आवार्य त्म विशव क्रेम्सक् विरुचन मा, रक्त ना दर वाकि उरमदस्य बाजाममावट मान माहे, জানাকে নে বিষয়ে উপদেশ দিলে তিনি ভাষা জ্বনজ্জ জানিবেন ক্তি প্রকারে ? আচার্বাগণ শিষাগণকে যে প্রকার করিন শাসমেই স্থীন করিরা রাখিতেন, ভাষাতে সাধারণতঃ মনে হইতে পারে त्व, ठाँशाता अछि निर्हेत किरणन, किन ठाँशालत अक्रण गावशात्र নিঠুরতা নহে, শিবাগণের প্রতি অতি সদর ব্যবহার ৷ সংবতেজিয় বংৰভ্ৰমন। ছইয়া সংসাৱে প্ৰভাবিৰ্ত্তন দা করিলে সংসার ভাছা-বিগকে নিভান্ত নীচ হীন পশুর মত করিরা কেলিত, দেবন্ধ-क्षण-कता हृत्त शोकुक मञ्चयक्ष-प्रका-कताहे कठिन हरेख ; नःनात्त्रद বিবিধ পরীক্ষার সধ্যে আত্মসংবরণ করিয়া আত্মার মহত ও-গৌরক-বৰ্দ্ধনকৰা একেবারে অসম্ভব কইবা বাইত; সকল অবস্থার মধ্যে মনের শান্তি থৈবা ও প্রাসরতা কিছুতেই রক্ষা গাইত না। এই সকল দেপিয়াই ভাঁহানা শিবাগণকে সর্কতোভাবে সংযভমনা দ্ইবার পক্ষে ধথোচিত সাহায়া করিতেন। ব্রহ্মতন্ত্রে ক্র্ডি হইলে, বুক্ষপরিচর চইলে ভবে সংব্যাদি নিরাগদ হয়; সংসারের वरमाञ्चन ভागिया भाउदात १४ व्यवस्य २३, धक्क रह पिस ব্ৰোয় মনে একতথক বি না চইড, তত দিন আচাৰ্য একচায়ীকে জ্ঞান্তব্যৰ কঠিন নিহমের জ্ঞান করিরা রাধিতেন। রক্ষান্তব্য ন্দ্ৰ অভিনে যে আখানপাতি হয়, সে আখাদের নিকটে

नानादिक चान चांछ ज़क्क, छेशाल चांत्र टानून सहेरात मञ्चारना বাকে না, ইয়া দেবিরাই এখনখনে জান উপস্থিত হওয়ার কাল প্রাস্ত বন্ধচর্ব্যে ছিভি শাল্রে নির্দারিভ হইরাছে। বন্ধচর্বার পর গৃহত্ব ইইখা প্রহের কর্ত্তব্য সকল নির্কাহকরিবার পর অরণ্যে বাসের वावका हिनाँ ध ममात शृह्द कर्डवा मकन रान वाहे, किंद रकानि धर्मनवतीत कावा शृक्वित त्रहिन, टक्तन ता नम्दत शक्त মাংসাদিতে বজ নিশার হইত, একণে কণমুগাদি সেই স্থান অধিকার করিল। বনে বাস করিয়া সর্কথা নিবৃত্তি উপস্থিত **হইলৈ ভিকাবলয়ন করিয়া বানপ্রস্থ পরিবাজক হইতেন,** নির্ভকাল আর তিনি একস্থানে হিতি করিতেন না। এই চারি আল্রমের নিয়ম বিনি অভিক্রম করিয়াছেন, তিনিই অভ্যাল্রমী। ट्रिक्नविष्ट्य और नक्त्र चाल्रमक्ष्य वा भागन कतित्वन करन, वा সকল আশ্রম অভিক্রম করিলেনই বা কবে ? বদি ভাঁহার কোন আত্রম ছিল, সে আত্রম গৃহস্থাত্রম, এবং সে আত্রমও ঠিক ৰাজাছবায়ী ছিল না। এরণ অবছার অজ্ঞালমী হইরা ভাহার পাত্রমধর্মহাপন, এ কথা নিতান্ত অপ্রদের শান্তবিক্ষা।

শার্মজ ব্যক্তিগণের এ প্রতিবাদ কি আমি অঞ্চল করিব ? বদি অগ্রান্থ করি তাহা কইলে শান্তে ব্যবহার লক্ষ্মল অন্ত অর্থে ব্যবহার করিবার আমার কি অধিকার আছে । শান্তের সক্ষেত্র সদে মিল না রাখিরা উহার ব্যবহার শব্দ গুলি নিজের ক্ষতির মত ব্যবহার করা কি নীতিবিক্ত নহে ? শব্দ ভাষের অনুগামী। বে ভাবে যে শব্দ ব্যবহাত হইরাছে, লে ভাব নাই, অথচ ভলকুগামী শব্দ ব্যবহার করা হইডেছে, ইহা নিতাত অসক্তর। আমি বলি, ভাব টিক রাখিরাই শক্ষ্যবহার করিছেছি। কেন এক্স বলি ভাহার

কারণ আমার প্রদূর্ণন করিতে হইতেহে। প্রথমতঃ দেখিতে गारे, (कननहासक सीरन मध्यम अधाम । धरे मं व्यवागादक बाक्स क्रीशात रुकुर्वन वर्गत यहरम स्टेबाफिन। द्यीवनावरखन श्रेट्स वक्कर्यात्वारमधानव छेरक्छ वह दिन त्य, वात्रक्षितवृह क्यातिक না কর। অভারের প্রেরণার কেলবচন্দ্র যদি চ্ছুর্কলবর্ষয়নে नःवमावनचन कतिवा थाटकम, छात्रा व्हेटन छात्रात्र श्रीवटन अध-চর্যাত্রমের ভাব উল্লিক্ত হইয়াছিল, এবং তক্ষরই সে সাত্রমের कार्वा जीवान कीवान किवादक, धकवा मानिएक व्हेरव। बाहिरत তাঁহার কোন উপদেষ্টা বা আচার্ব্য ছিল না ভাহাতে কিছু আনে বার না। বেবানে অন্তরান্তার নিগৃত প্রেরণার কোন কার্যা অমুটিত হর, দেখানে বাহিরের আচার্যাদির কোন প্রয়োভন वारक ना । रक्नवहरत्कत सीवरमत अधाम नक्नन धारे रव, किसि দ্মীবনের অতি প্রভাবে আর কাহার প্রেরণার কার্য্য করেন নাই, শস্তরাত্মার প্রেরণায় কার্য্য করিরাছেন। ঈদুপ প্রেরণাকে শাস্ত ष्मश्रीक क्तिरंक भारतम ना, रतः क्रेपुन ट्यात्रभारकहे भाव मर्कासक विनिहा পরিগণিত করেন। চতুর্দশবর্ধবয়সে উলোর জীবনে বে गर्यस्त्रत्रं चात्रक हरेन, त्नहे मरवम **छाहारक रोवरत वनठात्री चत्रिन**। তিনি গৃহ ছাড়িরা বনে গেলেন না বটে, কিন্তু গৃহে থাকিয়াও তিনি বনবাদী হইলেন। অন্তরাস্থার প্রেরণার সংব্যাভ্যাদ ভাৰত: ত্রন্সচর্যা হইতে পারে, কেন না অন্তবের প্রের্রিভারই সংযত করিবার পূর্ণ অধিকার। যে ব্যক্তি সেই প্রেরণার প্রবৃত্তি-नम्दरत উत्त्रवकान क्रेंटिक नःयक क्रेंटिक शास्त्रम, किनि अक्षार्गा-लायत वाश्विक नकन छनि धात्रण मा कतिरमञ्ज बन्दाहाती, रक्त मा भरवम ६ निका डेक्सरे खडरीमीत ट्यातनाव धनारन माविक

णेहराव शृश्हांनाः ज्यनाश्चिह्यक्रकात् ।

पाछारच् जिर्णागंवाः विक्रमं त्रकृषेणी ।

चचप्रंममा निजाः सरका गुर्का उक्षम् गर्छन्।

चूतः सनगनः साममत्रवाणित गळ्कि । योगवानिकः।

पे विज्ञात नगरस छापमात्रा वाणा रहेषाहित्य । अहेत्रम् चळत यथा
तन्ते समगठस्मत क्या छक्ष च हरेशास्त्र राज्यारवहे छेशा शरत नगरवाकिक

स्रेंशहस्त, देशेरे पुणित्क हरेरा ।

भागेताल- विषयां पूर्व सवक्त तथ, क्लांट यादि केति हुँ कु पूर्व किता पूर्व सवक्त तथ, क्लांट यादि केति हुँ कु पूर्व किता हैं। क्रांच स्था तान । त्रिश्चिक विश्व में क्रांच नाना। त्रिश्चिक विश्व में स्था में महाराज्य विश्व केति हैं महाराज्य विश्व केति हैं महाराज्य विश्व केति हैं महाराज्य विश्व केति हों। महाराज्य विश्व केति हों। क्लांच महिला मां, महाराज्य निक्ष यादी विकास केति हों। क्लांच, गांन, का नक्त जाति कथी, स्थानाज्य सादान होंछ। स्थानाज्य सिताहें स्थानाक नदिल हों। महाराज्य किताहें सिताहें सिताहें

এরপ অবস্থা কোন্ সময়ে হইল ? আঠার উনিশ কুড়ি বংসর বরসে। বিবাহের সময় উপস্থিত। অক্ষলন বিবাহরতে ব্রতী
করিতে উলাগী হইলেন। কেশবচব্রের মনে তথন কি হইল ?
ক হইল তাহা তিনি আপনি এইরূপ বলিরাহেন, "মখন বিবাহ
দরিরা সংসারে প্রবেশ করিব, দেখি, এই আরগাই তো আশান।
ংসারের বিষর বিশেষ ব্রিতার না, কিন্তু সংসারের ভব জানিনাম। ব্রী আসিডেছেন সংসার আরভ করিতে হইবে। সংসার
লোনে তুরি স্থাতাত করিবে ? ব্রীর কাছে তুরি বসিরা থাকিবে ?
সোরের কথা লইরা তুরি আগাণ করিবে ? এ সকল বিষর

The second area to any the second and a second and a second area and a second and a

অভ্যাশ্রমী বলা শান্তসকত কি না, ইহা বেখা নিতান্ত আনোজন। বিদি শান্তসকত না হয়, তাহা হটলে আনরা কবন এ শান্তবাহার করিতান না। শান্তে দেখিতে পাওরা বাচ, রন্ধসাকাংকারানত্তর প্রথের আনোশে কৈব কেব সংসারে অবহান করিবা সাজাগালনারি ওকতর কার্যা নির্বাহ করিবাছেন। প্রথানকর ইনামিনকে 'বিবিহিনা' সন্নাসাংকরী অর্থাং প্রজাজনাত্ত হইনা সংসারে হিড বিনরা নির্বাহণ করিবাছেন। ইচারা প্রস্কাশত করিবাছেন। ইচারা প্রস্কাশত করিবাছ পরে আন্দেশত করিবাছ পরে আন্দেশত করিবাছ পরে আন্দেশত করিবাছ পরে আনুচ, ইচারের ভবনও প্রক্রমত্বাহর নাই, ইচাই উব্যাহ অতি প্রায়। এ স্বাহ্মে ভারার সহিত ব্যাহ ব্যাহত হয়,

The second secon THE REPORT OF THE PERSON The same of the sa were contributed by the same and same a AND SHEET WHITE SHEET SHEET SECTION अविकासिक व रिपान क्षेत्रक उपरास्त्री करूर के प्रमाणिक and and their star that the start which नावक्याच्या परिश्व नावापमानारकात्र करवव बस्र बार জীকার বাজো প্রভাগেরন করিবার বাসনা বাবে না ; তৎস্থতে জিলি স্বাৰ্ নিয়ন্ত হল, কিছ তথাপি প্রযায়ার ভাষেদে তিনি वांबामानवार्व बाट्या क्रकारिक वन, धरः अवनव चरित्रक्त (वाटेन विकि कतियां बाककार्या करतमः ; किन्नु कं मुद्रीकं वर्गम नवृत्र क्षरा जीशात निवागत्नत अञ्चलामिक नव, छन्न आवता व वृद्धांच शक्तिय দিনা ভালপুত্র ভককে প্রহণ করিভেছি। গছর্মসীত, আকাশবার্থ रेकाति नत्य रम काटन वाकारमन्यांनी केतिथिक स्टेक, अकारि केंगर व्यक्तारम्थान कतिका त्यानमान्यन व्यक्त क्रम, धन्य वक्ताकारकात्रामकवरे छोहात बाल्यान बाल्यामन कर्त्वम । कारा चरन किनि शहरे पृद्धांच वहेरणक स्नामका त्यांना क्षत्रक এই বন্ধ নিৰ্মিখন দুঠাৰ বনিয়া উপন্থিত কভিতেতি বে, ভিনি व्यवसायमध्य कविशे मध्यावका।भगूनक विशि विशिष्टिका তিনি বে আৰু কৰম বিভাৱ সমীপক্ষী কৰৱা নুক্তন পৰেছ আন্তৰ तंबेरनम्, छाराव रकाव महावना विम वा । निवृश्वित नप्राकांती

file full mains who but their and na fact wie Cints than fire at a fufe BELLEVIN PROBLEM. WAS STATE PROPERTY THEIR BAS किंद्र बढा पाडिस्ट । बराजपाठ क्रिक गुरुष लाहक साम मामक व्यवित स्वेशविद्यान, रमन ना सरमाहरूपाद प्रशासकात আরং সুক্রা উভয়ই ধরান। কেহ কেহ বলেন, ওক বোগগড়ি শন্ত্রার প্রাঞ্জক করিয়া পরিশেবে বেহভাগে করিয়াছিলেন, ভাষাভেই শিক্তা এত অধীয় কইরাছিলেন। धियकदत खबन **७५मरे ७० त**रकांग कतिग्राहित्यन हेरा बात्मन मा, त्यांब व्यक्तिमञ्ज ब्यालाम 'शिवा मिक्फार्श कविवाहित्सम जिलि बहेब्रान वरमा । जन्म ना रुउक शता (मरुजांश स्टेग्नाहिन, व कथा বৰিচন্ট ভিনি আবার পিতার নিকটে প্রভাগমন করিবেন ক্রি बाकारत, कागवजनावाधारन कतिरवनके वा किसरण १ काशवक कि थ कांबनात्र विराद्ध कानिएकन ना १ यति ना कनिएकन, करव 'स्र-প্রবিশ্বনত্বপত্রতাম' এ কথা বলিয়া তাঁহার প্রবিদ্যায় উল্লেখ করিলেন কি প্রকারে? তিনি দেহত্যাগ করেন নাই, কেবল মেল প্রদেশ ভেদ করিয়া অপরদিকে গমন করিরাছিলেল এই ভাঁছার মন্ত। আমি এই ভাগবভের মতেরই অসুমোদন করি। অপরে 🕬 কেছ এ মডের অস্থুমোলন না করেন, ভাহাতে কভি নাই, কেন না ভাগৰতে নিহুতির পর বে নিযুক্ত প্রবৃত্তগণের বোগের উল্লেখ করি-রাছেন, ভাহাই বথেট ; কারণ কোন ব্যক্তিতে নেরুগ বোগ**্ট**প-হিত मा बहेरन चात ভাগৰতে ভাষা নিৰ্ভ কৃত না। ভাগৰত সূৰে দুৰে চলিয়া আসিয়াছে। ইহা সৰ্ব্যেখ্যে চারিট্টয়াঞ্জ স্নোকে क्रमांकारत निवस एवं। नातन देशास विकास कतिया वार्गिएक

কালে কালে কালে বাবা কালে কালে অনুনাৰ কৰা ব্যৱস্থা কালে সংঘটিত আনায় কৰা পালত বিশ্ব বৈশ্বত ভালে হৈ প্ৰ বিশ্বত নিজাই কৰা কৰা, কাল কাল আৰম্ভ নিজ্ঞ কৰা। ইয়াৰ সৰু আনত কৰালৈ পালবাৰ কৰালে। আনাকে কৰা কুল বিশ্বত বাব কে লামৰ কৰিব বিশ্বাৰ কৰালে, আনাকে কৰা কুল বিশ্বত নামাৰ কৰালে কে বিশ্বত পালে ! আসাকে কৰা কুল বিশ্বত নামাৰ কৰালে কৈ বাবা কৰবালি এই আৰে নামাৰে পালা বাৰণ ভালাকে অব্যানে অব্যানে বে লোক সংবা। আহে, বৰ্তমান ভাগৰতের সলে ভালাৰ কৰা হব না। বে প্ৰকৃষ্ণ কত পানিবৰ্তন, ভালাকে কি প্ৰকাশে প্ৰমাণ বিশ্বতা প্ৰকৃষ্ণ কা বাইকে পালে ! এই কল্প গ্ৰহণ কৰা বাইকে পালে বে, ভন্নবোৰ বিশ্বত প্ৰাণ প্ৰচাৰিত কৰ্মতে, উৰ্বা সভাসকত গ্ৰহণ সভাই অধিনক্ষৰ শাস্ত্ৰ।

্থাৰন থা সকল কৰা বাউক, প্ৰকৃত বিষয়ের অনুসরণ করি। গুৰু
নিবৃত্তিয়ালোর চনৰ সীমান উপস্থিত হইনাছিলেন, তিনি ভংপুর্বে প্রকল্পার পরিবেটিত গৃহস্থ ছিলেন। তিনি কল্পাকে নাজগৃহে স্থান প্রকল্পার পরিবেটিত গৃহস্থ ছিলেন। তিনি কল্পাকে নাজগৃহে স্থান পাল করিবাছিলেন। এমন প্রকৃতি গৃহীর প্রজ্যাবদখন প্রকৃতি গৃহীক্তা নাজেব কি ? তিনি আবার গৃহে পিতৃসারিধানে কিরিবা আনিলেন কেন ? ভাগবত বংলন, হরিওপপ্রতাক করিবা বিকিশ্রেনা হইরা পিভার নিকটে তিনি আনিবাছিলেন। 'হরিওপ্রতাক করিবা বিকিশ্রেনা' হওরার অর্থ কি ? নির্ভিগ্রে নিওপি উদাসীন প্রক্রে হিন্তি হর, আনেবকল্যাক্ডপ্রকলন প্রক্রেম্ব এ প্রে আবৃত্ত নাহেন। প্রক্রেম্বর স্থান্তিবিদ্যান করেব বোলে প্রক্রেম্ব নাইকে ব্যৱস্থান সন্তান না, কেন না প্রথমেই মাজের জনবক্ষায়ব্যব্যক্তিক করিকে সেনে কর্মর অর্থাতে প্রকৃতি কর্ম বে, সম্বর্ম রিব্রুক্ত

আর দৃষ্টি থাকে না, সেই গুণসকলই সর্ক্তর হইরা পড়ে; বাসন गम्रहत बात निद्रक्ति इत ना । देशारु करे वत त्य, क्रावरेत्या आकृष्टेिक्छिंचनकः त्मरे वैचर्याममुश्रे चालनात नित्क चनित्र हिन्द राश्करक काइन्हें कविया शविरमध्य প্রকোভনমধ্যে নিকে करता। अहे निशायनगरनत क्या अर्थ अथरम निवृत्तिरवारण मि ছওরা সকল যোগাকাজ্ঞীর পক্ষেই প্রায়েজন। কোন কো वाकि अहे निवृद्धिरगारगरे थाकिया यान, व्यात व्यवनत रून नी, व्या অগ্রসর হইতে এই ভয় করেন যে, कि জানি বা তাঁহাদের চিত আবার বিকার ফিরিয়া আইনে। এসম্বন্ধে কিরূপ ভয় একটি দৃষ্টা দিলেই সকলে বুঝিতে পারিবেন। স্বর্গাত প্রমহংস ভাস্করান খামী শঙ্করের পথাবলয়া নির্ভিযোগী। একদা তাঁহার নিকং আমাদের একজন বন্ধু সগন্ধীক গমন করেন। ভাঁহার পদ্ধী অ সামাস্কা ত্রার স্কার তাঁহার নিকটে পিয়া সংসারের কলকামনা विवयक्षांत्रन करतन ना, किन्द वक्षाज्यक्षिकाञ्च हन । हेहारच श्वां আশ্চর্বাাহিত হইয়া তৎপ্রতি আরম্ভ হন। করেক দিনের প্রশ্নে ভরে তৎপ্রতি ভাঁহার স্বেংর স্থার হয়। আপনাতে স্নেহে मकात स्विता जिमि जीज इस, धवः त्यव हिटन जिमि बरसस, स তুমি আর আমার নিকটে আসিও না, আমার মোহ উপস্থিত ইংলি লেহকে তমোগুণসভূত অন্ধতার মৃণ মনে করেন, স্বতর प्पर हैशानिश्वत निक्छि त्यार बनिशा शविष्ठि ।

নিবৃত্তিযোগের পরাকাঠাপ্রাপ্ত শুক্ষেব বখন ঈশবের কল্যাণ ওণের সৌন্দর্যো আরু ই হইলেন, তখন ভাগবত বলিলেন, 'ক্রিঃ ওণে তিনি আন্দিপ্তমতি' হইলেন। আন্দিপ্তমতি হইলেন, ইহা মর্ম্ম কি ঃ নিবৃত্তিতে উাহার মন বৃত্তিশৃত্ত হইয়াছিল, শুক্তং

চইরা গিয়াছিল, এখন জীহাতে নবীন প্রবৃত্তি উপছিত। এ नवीन প্রবৃত্তি कि ? ঈশরের প্রতি চিত্তের অফুরাগ। নিবৃত্তিমার্গে অভুরাণ বিক্লেপের কারণ, তমোওণের কার্য। সর্কবিধ প্রবৃত্তি-রহিত ওক্টিভে পুনরার প্রবৃত্তি উপস্থিত, স্থতরাং নিবৃত্তিধাগাঁর পকে উহা বিকেপভির আর কি হইতে পারে ? এ বিকেপ অমূ রাপ, এ বিক্লেপ ভক্তি, এই ভক্তিতে ভাগণতের আরম্ভ *হইয়াছে*। বিষয়ের আকর্ষণে আফিপ্তমতি না হয় এজন্ত নিবৃত্তিযোগ অবলম্বিত বিষয়ের আকর্ষণ নিবৃত্ত হইলে ঈর্বরের আকর্ষণে আকৃতি হওরা ছাভাবিক। সে আকর্ষণ অমূল্ত হর নাএই জয় বে, যোগী নির্ভিদাধন করিতে করিতে আকর্ষণমাত্রকেই ভন্ন করেন। নিবৃত্তিবোগী শুক সেরূপ ভয় হৃদরে ছান না দিরা শ্রীহরির কল্যাণ্-ভ্রণদৌলর্ব্যে জারুষ্ট হইরা পিতৃসরিধানে আসিলেন, ভক্তিশাল্লে বীক্ষিত হইলেন, এবং জগতে ভক্তিবিভার করিলেন। তক चकाञ्चमी रहेता वसन जगवन्त्रन्ताचात्र अवृत रहेतनन, नेपताङ्-রাগে আর্ত্রচিত্ত হইলেন, তথম কি তাঁহার অত্যান্ত্রমিত বুচিরা रांग ? क्यनरे नरह। छिनि चछात्वमी पाकितारे जनगनारक ভদৰলীলাপ্ৰচাৱে প্ৰবৃত্ত হইলেন! তিনি এরপ করিলেন কেন ? ভরবংপ্রেরণার, ভগবানের আদেশে। বে কালে ভগবংপ্রেরণা ও ভগবদাদেশ কাহাকেও কোন কর্ত্তবাসাধনে প্রবৃত্ত করে, সে কালে দে ব্যক্তি আত্মকৰ্ত্তৰ বিশ্বত, স্কতরাং ভাষাতে তাঁহার প্রস্কাসংস্কৃতা विमृत मा बहेना छेटा बात्र छेब्बनका आर हन । गण्डिकरे এবানে পরসংংসম বা অত্যাত্রমিমের কোন বাহাত উপস্থিত श्रदेशक मा।

তীব্রির ভাকধন ও দীলাপ্রচার ইবাতে অভ্যাশ্রমিধ্রের

ব্যাঘাত জন্মিতে না পারে, কিন্তু সংলারেক বিনিধকার্যো প্রত্ ইইরা অত্যাশ্রবিদ্ধ থাকিবে কি প্রকারে ? সংসারে থাকিচ रंगरनहे विविध रंगारकत नक कतिरं हत्र, कर्खरवाालनरक अम সকল কার্যা করিতে হয়, বাহা যতিধর্মের একাস্ত বিরোধী। এরু স্থলে সংসারে থাকিয়া কেশবচন্দ্রের অত্যাশ্রমিত্ব রক্ষা পাইয়াছিল हेरा किकाश निष्कांत्रण कर्ता याहेरत । अल्लाजमी यथन जगरम् প্রণে আরুট হইরা তাঁহার আদেশপালন করেন, তথন বন্ধনংখ্তার ব্যাঘাত উপস্থিত হয় না, ইহা আমরা স্বীকার করিয়া লইয়াছি। বদি সংসারের সমুদায় কাঠা ঈশ্বরের আদেশে প্রতিপালিত হয় তাহা হইলে দে দকল কাৰ্যো ত্ৰদ্ধসংস্থ তার বাাঘাত হইৰে কেন ? অত্যাশ্রমীর ভগবদান্তাপালন অত্যাশ্রমিদের ব্যাঘাতকর নহে, ইহা 🕮 মছেররকেও স্বীকার করিতে হইবে। ভিনি বধন ক্ষ্ণানিবৃত্তির জন্ত ভিক্ষাচর্ব্যার অনুযোদন করিয়াছেন, তথন সেই দিক দিয়া ব্রারুডিবোগে প্রবিষ্ট হইবার পথ প্রাস্ক রহিয়াছে। কুণা শারীরিক ব্যাপার, কুধানিবৃত্তি করিতে গিছা যদি পরিবান্ধকের শরীরের অধীন হইতে হয়, ভাচা হইলে এক্ষদংস্থতা কাটিয়া গোল, ইহা শ্রীমচ্ছদরও স্বীকার করিরাছেন। স্বীকার করিলেন বটে, কিন্তু ইহার প্রতিবিধান হওয়া চ্কর। যত দিন দেহ আছে, তত দিন ক্রিবৃতি করিতেই হইবে। ভিক্লাই হউক, বা অঞ্চারের ভার শ্রান থাকিরা আগত ভক্ষাদ্রা গলাধ:করণ করাই হউক, আচার-किशांत कांन कारण निवृत्ति श्टेरन नां। वक्कमश्य गांकि वांभ-নার ক্ধানিবারণ করিয়া নিশ্চিত্ত চইতে পারেন না। আপনার ছঃখনিবৃত্তির পর ভাহার সঙ্গে সঙ্গে জগতের ছঃখনিবৃত্তির জন্ত জীহাতে কল্পাস্থার হইরা থাকে। বৃদ্ধ নিবৃত্তির পরাকাঠালাভ

করিয়া মানবমগুলীকে শ্বরামৃত্যবাধির হন্ত হইতে মুক্ত করিবার জন্ত বাতা ইইলেন। প্রীমক্ষকরের দিখিলর পাভিতাপ্রকাশের জন্ত নর, কেন না পাভিতো বাতরাগ না চইলে ব্রহ্মগাছ হইবার সম্ভাবনা নাই, কিন্ত প্রজ্ঞানতার বন্ধন হইতে মানবগণকে মুক্ত করিয়া বন্ধনাই করিবার জন্ত। বদি এইর পই হইল, তবে নিবৃত্তিকাগ প্রস্থিতিবাগে প্রবিষ্ঠ না হইয়া থাকিতে পারে না ইচাই বলিতে হইবে। প্রীমক্ষুক প্রবৃত্তিযোগের বিস্তার ও বিবৃত্তি করিয়াছেন দতা, কিন্তু আদৌ যদি উহার মূল নিবৃত্তিযোগের মধ্যে না থাকিত, প্রবৃত্তিযোগ কোধা হইতে আসিত ?

'নিবুজিঘোগ' 'প্রবৃত্তিবোগ' এ ছুই শব্দ কেশবচন্দ্র প্রচনিত করিরাছেন। তিনি বহুশান্ত পাঠ করিরা তাহার নিক্র্যন্ত্রণ এ ছুই শব্দ বাহির করিরাছেন, ভাহা নহে। শাত্রপাঠ করিরা ভবে ভিনি কোন বিষয়নির্দ্ধারণ করিতেন, তাহা নহে। ভিনি স্থাপনি অংগান্ধযোগে বাহা প্রভাক করিতেন, ভাহাই বলিভেন, বাহার। শাস্ত্রাধানন করিতেন, জাঁহারা শাত্রের সঙ্গে জাঁহার কথার মিল বেৰিভেন। শাস্ত্রপাঠ করিয়াও বাঁহারা বে বিষয় জনমুক্তম করিতে পারেন নাই, তাঁহার মূখে তৎসম্পর্কে কথা ওনিবার পর তাঁহারা প্রকৃত শাল্রার্থ তথন বুঝিতে পারিবাছেন। কুধা প্রাভৃতিকে কেশ্ৰচক্স ঈৰ্যের আদেশ বলিরা মানিতেন। ক্ধা পাইলে আহার করিতে, নিজোলগম হইলে নিদ্রা যাইতে ঈশার আদেশ করেন, এই তাঁহার ধারণা। ভক্তিশান্ত বলেন, দেহ আমাদের নিজের নয়, পরহিতার্থ করং ভগবান্ দেহলান কণিয়াছেন, अनाशशानित्छ উशांत विनालनाधटन आमारतत ट्रकान अधिकात नाहै। यनि अधिकात नाहे छटन छेशत तकनार्थ गृह में बटनत

এইরণে শীৰক্ষর বেধানে স্থাসিরা, কোন মীনাংসা করিতে পারেন নাই থামিরা পড়িরাছেন, সেখান হইতে কেশবচন্ত্র প্রবৃত্তিবোগের আরম্ভ করিয়াছেন। এরপে প্রবৃত্তিবোগের আরম্ভ হওয়াতে যে একসংস্থতার বিঘ উপস্থিত হয় নাই, বরং উহা धनीकृठ आकात्रधातन कतिवादह, देश नकनत्करे श्रीकात कतित्क হইবে। বুদ্ধ শহর প্রভৃতির জনহিতার্থ স্বযতপ্রচার, তাঁহারা বলুন আর না বলুন, প্রবৃত্তিযোগেরই অন্তর্গত। এই প্রবৃতিযোগ নিবৃত্তিযোগকে মূলে রাখিয়া উদিত হয়। বিষয়স্পৃহা নিবৃত্ত না ছইলে ভগৰংপ্রেরণা উপস্থিত হয় না। ভগৰংপ্রেরণায় কর্ম্মে थाइछ ना रहेवा चकर्तृत्व कर्त्य थाइछि देवनिक अहिष्टमार्ग, निहिक्त म्नक श्रेवुक्तियांग नरह। ष्यामत्रो रक्षयहस्त्रत कीवरनत श्रीथमान वष्टांत्र निवृत्तिरंशारात्र किया कि थाकात थाकान भारेबाहरू **जा**ला-চনা করিয়াছি। অরণোবাদ ও বৈরাগোর পর তাঁহাতে ভক্তি ও যোগ উপস্থিত হয়। তিনি প্রথম হইতে আদেশবাদী। তাঁহার मध्यक्त भाजविति हाहा किছू नेश्वतहे हिल्लन। आहात विश्वत गांहा কিছু ঈশবের আদেশ বিনা তিনি করিতেন না। এই আদেশবাদের ভূমিতেই তিনি শঙ্কর যেথানে থামিয়াছিলেন, দেখান হইতে নবীন পথে অগ্রসর হইলেন। এরপে অগ্রসর হইয়া তাঁহার অত্যাশ্রমি বিনত্ত হইণ না, কেন না তিনি এক্ষমংহ থাকিয়া নিজের ইছেয়ে नव बदक्षवर जात्तरण मरीम जाजमधर्मा श्रविष्ठ रहेरनम ।

তাঁহার আশ্রমণর্ম কি ? তিনি আশ্রম বলিতে আপনি কি বুঝিতেন ? গৃংকাশ্রম না তপোবন ? তাঁহার আশ্রম তপোবন ছিল। নরনারী তপোবনে বাস করিবেন, ইহা কেবল ভাঁহার অভিলাব ছিল তাহা নহে, এই ভাবে তিনি সংসারে আপনি বাস

করিতেন। এইরলে বাদ করিতেন বলিয়াই তিনি বলিভে পারিরাছেন "বাঁহারা শ্ববিপুত্র শ্ববিকভাগণকে আশ্রমে স্থান पिछिन, आपन कतिछन छीशाता छाशानिशात मूथ पूर्वन कतिना উচ্চ ধর্মদাধন করিতে সক্ষম হইডেন, তাঁহারা আশ্রমে থাকিলা হিন্দ্ধশ্বের উচ্চ আদর্শ প্রদর্শন করিতেন। একথা স্টাকে লিখিত चारक, अञ्चलेतन कीवनरकाल क्षेत्रां भारेतारक।" क विरास বৰুগণকে প্রোৎসাহিত করিতে তিনি ক্রাট করেন নাই। কি ভাবে প্রোৎসাহিত করিতেন এই কথাগুলি গুনিলেই সকলে বুঝিতে পারিবেন। "সপরিবারে ধর্মসাধন হিন্দৃছানের সর্ক্ষেত ভাব। ঈর্বরের বিধি নহে, সংসারত্যাগ করিরা পরিবারবিদর্জন দিরা ধর্ম্মনাধন করিতে হইবে। ধর্মমাধনে ইহা আবশ্রক**ও নতে**। हेश कठिन वााशांत, त्कन ना मः मारत थाकिया तकह त्कान मत्छ धान कतिराज भारत ना । कि इ मासूय यनि मः नारत निमग्र हत्र, সংসার ছাড়িরাও ধর্মসাধন করিতে পারে না। জকলে অরণ্যে বাস করিয়াও সংসারস্বরণ হয়, সেখানেও ক্রীপুত্র লইরা বাস করা इत। कन मून चारात कतिता कि हरेटर ? श्रीठीन चाराञ्चाटन আপ্রমের স্থলর ছবির উপজাস আছে। ইহা যেন প্রমিষ্ট পদ্য রচনা। অতি স্থলর ভাষা, শুনিতে আরম্ভ করিশে আর শেষ হর না, সে দেশ সেধানকার বায়ু সকলই মনোহর। সেধানকার কথা ভনিলে হৃদয় স্থী হয়, দে বায়ু স্পর্শ করিলে অঙ্গ স্থানীতক হয়। স্থন্দর নদীর শ্রোত চলিগ্রা বাইতেছে, সেই নদীকৃদে মনোর্ম

भैनक्कचत्र करे कांत्रतारे शृहीत वानत्यात्त्र चनविकात्रनिक्कात्रभ
 केतियाद्यतः।

व्यक्ति। दा इका इति प्रसिद्ध छान्, दा बाह्र छनिए। रक्षमन क्षताके गृथिवीरङ गांख्या तात मां। अपि क्षमत क्रि व्यक्तिम महत्व, वात्यम परिवादकः। सत्तम क्य बाहेशा कृष्टित কৰিয়া, অপ্নাৰকৈ ৰণীভূত কৰিয়া অবিগণ পরিবার বার दबहिल, बन सक, शाद गरिक क्यानत्म महा नकता नवारनही इंछ। दिनतात्र मत्या थाकिकाछ गाहाटक देवतान বোগভন্ধ, প্ৰেমতন্ব শেৰা বাৰ, সেই দিকে চল। প্ৰাচীন স্মামে চল, দেখানে জীকে পরিতাগ করিবার বিধি নাই, ন্মহৰশ্বিণী করিয়া যোগপথে তাঁহাকে প্রবৃত্ত করিবার বি সে পথে চলিলে তোমার স্ত্রী তোমার অফুগার্মিনী হইবেন। ভোষার এই দৃশু প্রদর্শন করিজে হইবে। বে দেশে ভনক अधिवाहित्यन, त्मरे त्मरण त्लामात जन्म श्रेताहरू, त्य श्वान গণের আশ্রমে পূর্ণ, দেই হিন্দুখান দেই ব্রন্ধের ক্রোড় তে জন্মভূমি। আমন উপার কর, যাহাতে দপরিবারে ঈশবের নি যাইতে পার।"

এই নৃতৰ আশ্রমধর্ম সন্নাসধর্মের উপরে স্থাপিত। স কর্মনে সর্বসমর্পণ। তাঁহাকে সর্বসমর্পণ করিলে আর অ কর্তৃত্ব থাকে না। তিনি যে দিকে লইয়া যান, সাহা ক ভাষাতেই প্রবৃত্ত হইতে হর। যদি মনে একটু ক্রান্ত আই ভবে সন্নাসধর্ম কাটিরা যার। নবীন আশ্রমে ঈর্মরের আটে নরনারীকে পরিণয়বন্ধনে বন্ধ হইতে হইবে। এ পরিণর সন্না ও সন্নাসিনীর পরিণর। কেশবচন্দ্র এই জ্বন্থ ইথার্থনার বলি ছেন:—"বাঁহারা ফিরিয়া আসিবেন তাঁহাদের কথা বলিবে ন নির্বাসনের কথা বলিলে, ফিরিয়া আসিবার কথা বলিবে ন

व्यविनाहित, कार्यमकाती, श्रविनातकाती, गृहकाती मनामीत পরিচর পৃথিবী পাইরাছে। এবন বী পৃত্ত পরিবারের ভিডর নলাস সৃথিবী দেখিতে চার। নৃতন সলাসী সলাসিনী একত ইইরা কিন্তাপ সমস্ত সংসারকে ধর্মের সংসার করে, স্তামপালন করে, এবার ভাষাই দেখাও। ইহাতে রাগু হয় সা, লোভ হয় ना, हिश्मा रुद्र ना, जरकाद रुद्र ना। हेराटल ठाका रुट्ल अधिटन ক্ষতি হর না, বেন থড়ের ম**ত।" কেশবচন্ত্র এ অমুত মত কো**ন वाहरन धठात कतिरनन ? यह नतनाती मधानी मधानिनीहे स्हेरन, তবে ভাহারা বিবাহ করিবে কেন ? বে ধর্মে প্রেম ও পুনোর যোগে আনন্দ প্রকাশ পাইরাছে, সে ধর্মের চরমই এই। ভাই কেশবও ঐ প্রার্থনার বলিরাছেন, "১৮০০ বংসর পুর্বের বে বাজা করিরা গেলেন, বলিয়াছিলেন আননকে পাঠাইরা দিবেন 📍 কৈ আসিল না ? ঈশা বর হইয়া আসিবেন, ঈশার সঙ্গে পৃথিবীর বিবাহ करव हरत १ कि वह रव चात्रिन ना १" नहा। मधर्म विना वस्त्रमः-श्रुण हत्र ना, उक्तमान्ह ना हहेल मेचात्रत भूवक मेचात्रत क्रमांक माना ন। নব আশ্রমধর্মে বিবাহ হইবে কাহাদের ? ঈশরপুত্র ও ঈশর-ক্সার। আনক কি না—পবিত্রাত্মা পর্মাত্মা তাঁহাদের উভরকে সন্মিলিত করিবেন। "এবার বর হইয়া ঋবিগণ নৃতন বেশধারণ করিরা সংসারে প্রবেশ করিতেছেন" এ কথা তাঁচাদিগেরই সম্বন্ধে শোভা পার, বাঁহাদিগের ত্রক্ষদর্শন ত্রক্ষবাণীশ্রবণ জীবনের অন্তপান रहेबाटक ।

সর্নাসাবদ্দন করিরা বাঁচারা অত্যাশ্রমী হইলেন, তাঁহারা ঈবরের আদেশে সংসারে প্রবেশ করিলেন, তাঁহাদের সংসারা-শ্রম তপোভূমি হইল। এখন তাঁহাদের আশ্রমধ্য কি ? ইহাই

निर्वो के प्रका आवास्त्र । एक्पाइत वे बार्वापत एक कि जिल

- (क) वेषत्र क्रमात कर्ता ।
- (४) गकरम सेचन्द्रदाविक।
- (গ) ইহলেকে থাকিয়া গরলোকে ছিভি।
- (খ) সাধুগণের সঙ্গে বাস।

 (क) নবীন আশ্রমে ঈশ্বর ভিন্ন আর কেহ কর্তা নাই। বেখানে নরনারী আপুনি কর্জা হইরা সংসার করে, সেধানে তাহার৷ সংসারী সল্লাদী নহে। যত দিন প্ৰান্ত বণাশ্ৰমাচাবে তাহায়া আবছ, তত দিন তাহাদিগের আত্মকর্তৃত্ব আছে, তাহারা অত্যাশ্রমী हरें एक পারে না। অভ্যাশ্রমী হইতে গেলেই আত্মকর্ত্ত্ববিদর্জন দিতে হয়। অভ্যাশ্রমী হইরা আর কেহ পুরতিন আশ্রমধর্মের আর্ত্রমার করিতে পারে না, ভিহাতে পতন হয়। অভালেমী হইরাছেন, ভাঁহার আত্মকর্তৃত চলিয়া গিয়াছে। তিনি ধে বলিবেন আমি এইরণে চলিব, তাহাও পারেন না, ; কেন না ভাহা হইলে পুনরার কর্জ্বাভিমান ফিরিরা আসিল। আমি যণন অত্যাত্রমী হইরাছি, তখন জীবনাস্তপর্যন্ত এই এই বিধি পালন করিব, এরপ নির্বন্ধপ্রকাশ করিলেও আলুকর্ত[্]নেলা ৰিল, অত্যাশ্ৰমিত্বজ্ঞ হইল। আমার দেহ আচে: অভএব দেহপাত্রণ**যান্ত আমার ভিকাচবা। করিয়া ক্রির**িত করিতে **হটবে, এ**রণ নিয়বাল্যন করিলেও আত্মকর্তৃত্ব ভাহার সঙ্গে সঙ্গে জানিরা উঠিল। হতরাং আত্মকর্তৃত্ববিলোপকারী কোন উপার উপছিত না হইলে সল্লাসিভ বা অত্যাঞ্জমিভ কিছুভেই কেখা পাইবার আর সম্ভাবনা থাকে না। আত্মকর্তৃত্ব বা জাগে এই

करा बानाज राजनीय क्याराक बाचक्क्षण मृति गारेरकार, रका ना क्वारक स्वभूतिक जानिएक जिल्ला चाचालरे कर्ड्य क्षेत्रा फेटी। अस्तर्वत्रवास्त्रवास्त्रवास्त्रवास्त्रवास्त्रवास्त्रवास्त्रवास्त्रवास्त्रवास्त्रवास्त्रवास्त्रवास्त्रवास् जब कृतिका जिल्लाखा संसावत्कत्व कडिएक स्टेटर रू मनावाकत्वन করার ভিতরে কি কর্ত্ত নাই ? আত্মকর্ত্ত গিয়া বলি এক্লে अग्रवास्त्र कर्ज्ड ना बाहरन, छाहा हहेरन उन्ननस्कृतात कठि छेनडिंठ हरेंदबरे बरेदर। मकनई शंग क्या शंग मा स्वतः स्वतन क्वा मह बोरवर व्यक्ति व्यक्त कड़नाहे वा रकन व व्यवहात উপস্থিত হর ? अरङ्ग তবে এখন अधारतत एका रहेना गढान रहेना তাঁহার প্রেরণার তাঁহার আনেশে কার্যাকরিবার সময় উপস্থিত। এক দিন নিজের প্রায়ৃতি ছিল, বাসনা ছিল, বিবরভ্ঞা ছিল, পুদ্ৰকার ছিল, বুদ্ধি বিচার ছিল। বাধা সম্ভান ও ভৃত্য ছইবার মহান্কভরার ছিল। এখন সে কভরার গিয়াছে। ঈশ্বর বাহা বলেন কোন কথা না বলিয়া ভাহার অনুসরণ যাভাবিক হইরা পড়িরাছে। প্রভুর আদেশপালন, পিভার ইচ্ছামুবর্তন, ইহাতে আর আয়ুকর্ত্য কোণার রহিল ? আত্মকর্থবিরহিত স্লাসা ও স্লাসিনী ঈবরপুত্র ও ঈবরকল্পা দ্বীর্ত্তর সাক্ষাৎ কর্তৃত্বাধীন হট্রা আজন বা তপোবনে নাস कतिरङ প্রবৃত হইলেন। ইহারা নবীন আশ্রমধর্মের অন্তভূতি। **८०**नवहत्व चत्रः धरे बाजमध्यी हित्तन।

(४) नवीन आक्षाय श्रविष्ठे वाकि त्वन आश्वकर्ज्डवर्क्किं इहेरनेन । जिनि त्य गकन वाकि बाता পরিবেটিজ, তাঁहाता कि प्रकाशके आज्ञाक्ष्मी ? गकाशके आज्ञाक्षमी हहेरन हेंहा अग्रस्थ ? इति जाहा हत जाहा हहेरन शृह्दत नामनानी अज्ञतक्षय वामक বালিকা সকলেই ধর্মের উচ্চতন সোপানে আরচ বীকার क्तिना गरेए इत। अन्न श्रीकात कथन गठामृत्क हरेएड পারে না। যদি আশ্রমের স্কলে অত্যাশ্রমী 🐗 🗪 লে ভাহাদিগের সংলবে বাসকরা অত্যাক্তি পক্তে কথনই সম্ভত নয়। ব্যৱহ বা ভাহাদের আচরণে ভাহার ক্রোধাদির উদ্রেক না হউক, তথাপি তাহাদের হীনতা চক্ষের সন্মধে নিরত প্রকাশ পাইরা আপনার শ্রেষ্ঠছঞান সহফেই উল্লিক হইতে পারে। যদি হয়, ভাষা হইলে তাঁহার মনে অভিযাদের সঞ্চার হইরা অত্যাশ্রমির বভিত হইল। এরপ অস্কুরার উপস্থিত না হর, এ ক্ষণ্ড নবীন আশ্রমণ্যী সংসাবের সকলকে ঈশ্বরের প্রেরিড বিশ্বর গ্রহণ করেন। বুদ্ধ, ঈশা, মুবা, চৈডক্ত প্রভৃতি ঈশ্বরপ্রেরিড, ত্যিহাবিগের নিকটে খতই মন্তক প্রণত হয়। বাড়ীর দাস দাসী পুত্ৰ কন্তা প্ৰাভৃতি ঈৰৱের প্ৰেরিত বলিয়া বিশাস করিয়া তাহা-ৰিপেৰ সহিত বিনম ব্যবহার, ইহা কি স্বাভাবিক ? যথাৰ্থ জ্ঞান-দৃষ্টি উপস্থিত হইলে তাহাদিগকে প্রেরিতভির অন্ন দৃষ্টিতে মেখিবার কোন সম্ভাবনা লাই। নরনারা ঈশবের পুত্তক্সা, ইহা কি অধীকার করিতে পারা বার ? ভাহারা আপনাদিগকে क्रेश्वरतत शूल कक्का विनिहा कारन माहे, এ क्रक्रहे कि उन्हमनीर নিকটে তাহারা ঈবরের প্তক্তা নহে ? তাহারা তাহাদিগে আপনাকে না চিত্তক, তিনি তো তাহাদিগকে চিনেন। যদি চেনেন, তবে তিনি তাহাদিগের সঙ্গে তত্বপযুক্ত ব্যবহার করিবেন না কেন ? কেশবচন্ত্ৰ উৎসবের পূর্বের দাস দাসী প্রভৃতিবে ধ্বেরিত বলিরা গ্রহণ ও নমন্বারপূর্ত্বক উৎসবে প্রাবৃত্ত হইতেন ভাহার কি কোন অর্থ নাই ? অভিমান যদি নবীন আশ্রমে বোর শব্দ হয়, ক্রবে স্থাহাকে সর্ব্বাগ্রে উচ্ছেদকরিবার উপায় করাই কো প্রব্রোধন। জিনি কেবল মুখে সকলকে প্রেরিড বলিয়া প্রহণ বা প্রশাম করেন নাই আপনার সমগ্র শ্রীবনে জানুল সপ্রমের প্রমাণ দেখাইরাছেন; স্বভরাং বাহারা অভ্যাশ্রমী নয় তাহাদিগের সক্ষে নিয়ত বাস করিয়াও ক্টেহার অভ্যাশ্রমী শ্রমিবের ক্ষতি হয় নাই, ইহা অবশ্র মানিতে হইবে।

(श) जेचरवत कर्ज्याधीन वरेश मश्मारत उद्यविकशरगटक भन्निरव हिंठ शाक्रिताई कि अ नवीन आञ्चम निर्मित्र हहेन १ विकृत सन সমাজের সঙ্গে নবীন আলমধূমীর সন্ধন্ন রাখিতে হইবে, ভাচাতে তো তাঁহার ত্রন্ধণস্থতার ক্তির বিশেব সম্ভাবনা আছে ? কোন উপারে এ ক্ষতির তিনি নিবারণ করিবেন 📍 বধন তিনি ব্রহ্মগংছ ब्हेबाइबन, छवनहे छिनि हेहरनाटक वाकिबाध शत्रालाटक ছিতি করিভেষেন। কেন না বোগীর পক্ষে খনং ব্রন্ধই ভাঁহার निकाकात्मक यमिकशान ; जाहात निकाम नत्माक विवा শ্ৰতন্ত্ৰ আৰু কিছু নাই। সংগাৰে বিবিধ লোকের গলে বাস করিছা हेरलारक नाहे, नंतरनारक चाहि व स्नान साजर शक्तित कि ध्यकारत ? त्करण कझना कतिरण किंद्र रह ना, याश मछामूलक नरेंद्र, छारा कि क्यान कारन दावी रहेवा बादन ? हेश्रानांक আছি, অথচ মনে করিতেছি, পরলোকে ঈররেতে বাস করিতেছি, हेश कहना विना मठा हहेरव कि धाकारत ? यदि मठा ना हत, এ করনার বোর শীঘট ভালিয়া বাইবে। সত্য পাইলে আস্থা ভাষা ধরিয়া থাকিতে পারে, বেধানে দত্য নাই, দেধানে আত্মার नैफ़िरियाद कृषि नारे। -रेश बाद ८० ना बात्न ८४, बामदा लार यथन चाहि, छथन देशलाटक चाहि, त्वहरियुक्त हहेता

कृद्व कांबारमञ्ज शत्रालांक वात्र इहेरक। मूळा वरहे, शांधारः लाटकत धातना धाहे ककांत्रहे वर्छ, किन्छ वागहरक मिधल মন্ত প্রকার দেখিতে পাওরা বার। নিবৃতিযোগে বেমন প্রবৃত্তি সকল নির্ব্বাণপ্রাপ্ত হইয়াছে, তেমনি সর্বত্ত ব্রহ্মসভাদর্শন সিঞ इडेग्राइड। «किर्ज दक्षणलामान जिस इडेग्राइड लाहा नहा. क्षात्मात मम्माप्त कार ७ की त्वत्र शिक्षि প্রত্যক্ষ হই माছে। এই যে ব্রহ্মতে নিয়তকাল সকলের ও আপনার স্থিতি দর্শন, ইহাকেই ইহলোকে থাকিয়া পরলোকে স্থিতি বলিতে হইবে। যে ব্যক্তি ঈদুশদর্শনে সিদ্ধমনোর্থ হয় নাই, তাহার এখনও অত্যাশ্রমিত্-লাভ করা দুরস্থ। এক্ষেতে সমুদায় অগৎ ও জীবের স্থিতি দেখিলেও নরনারীর ছরাচার যখন নিয়ত দৃষ্টিপথে নিপতিত ছইতেছে, তথন সে সকলের প্রতি চৃষ্ণু মৃত্রিত করিয়া থাকিবার কোন সম্ভাবনা নাই। পরলোক যদি ঈদৃশ লোকস্কলের আবাসভূমি হয়, তবে সে প্রলোকে প্রয়োজন কি ? মৃত্যুর প্র যদি পরলোকের আরম্ভ বল, তাহা হইলে এখানে যে গুরাত্মা ছিল. সে মৃত্যুহুইবামাত্র সাধু হইয়া গেল ইহা যথন বলিতে পারা যায় না, তথন ইহলোকে হুৱাত্মা আছে বলিয়া প্রলোকে স্থিতি সাক্ষাৎ উপলব্ধির বিষয় হইবে, তাহাতে আর অসম্ভাবনা 🕸 🕈 যোগী যথন ছরাত্মার ভিতরেও প্রচ্ছের ঈশ্বরতনয়ওদর্শন পরিয়া তংপ্রতি চিভ নিবদ্ধ করেন, তখন তাঁহার পরলোকে ছিভি অসদাচারী লোকদিগের ছারা প্রতিহত হইবে কি প্রকারে ৪

্ (ঘ) তবে কি তিনি সংসারে থাকিয়া নিয়ত অসম উদাসীনের ভায় থাকিবেন ? তাগ হইলে তো তিনি যে নির্ভিযোগী ছিলেন, সেই নির্ভিযোগীই থাকিলেন, প্রেমপ্রধান প্রভিযোগাল।

তাঁহাকে লার্ণ করিল নাঁ ? তিনি পাপছরাচারসম্বন্ধে নিবৃত্তি-যোগী, मना নিৰ্শিপ্ত, কিন্তু নিয়ন্ত সাধুসকে তাহার বাস। বে প্রেম ঈশরের সহিত বোগ সিদ্ধ করে, সেই বোগেই সাধুগণের দহিত বোগ নিবন্ধ হয়। কেশবচন্দ্র বলিয়াছেন, 'কৃদ্র বৃদ্ধির কথা পরিত্যাগ করিয়া ভক্তির কথা গ্রহণ কর। ভক্তিপূর্ণ চক্ উজ্জল হইবে, নদী পর্বত সংসার যে কোন স্থানে যে কোন সময়ে क्विन अकिनयन यूनित, आत मिथिए शहित अमूक माधु আসিয়াছেন। আর একটি ঈশরপ্রেরিত মহাত্মা আসিলেন, ভক্তিসাগরে টানিয়া লইরা ক্রীড়া করিতে লাগিলেন। यह ভক্তিনয়ন থাকে এখনই দেখিতে পাইবে, স্থুথ অমুভব করিবে, অনেক দিন প্রতীকা করিতে হইবে না। এ সব সত্য কথা ভক্তি হইলে চেষ্টা না করিয়াও দেখিতে পাইবে। যত সাধু উপস্থিত हरेशाह्न, धर्मका९ जालांकि करिशाह्न, छांशांकिंगरक सिथार विठित नरह। यनि अन्यरक क्रिकामा कर क्रमग्र कार्यन विवा দিবে। সাধুসজ্জন বাঁহারা প্রলোকে আছেন, বাঁহাদের নাম শুনিয়াছ, যাঁহাদিগের কথা পুস্তকে পাঠ করিয়াছ, অথবা বন্ধুমুখে ভনিয়াছ, সেই নাম, সেই চরিত্র, সেই কথা একতা করিয়া তুমি ভাব, তাঁহাদিগের মত ও তত্ত্ব চিন্তা কর, দেই মত ও তত্ত্বের ভিতর হইতে এক আশর্ঘ্য জ্যোতিয়ান পুরুষ বাহির হইবেন, ভক্তিচকুর নিকট প্রকাশিত হইবেন।" এই সাধুসঙ্গ যে ত্রহ্মন্থ ব্যক্তির পক্ষে কত দূর অপরিহার্য্য এই কথাগুলিতে তাহা প্রকাশ পাইতেছে:—"ভক্তের পর ভক্ত, সাধুর পর সাধু একটি একটি করিয়া কি বিদায় করিয়া দিতে পার ? মনের যদি দে ক্ষরতা থাকে এটরূপ উপায় অবলম্বন করিয়া চেষ্টা কর। শরীয় হইতে

কিছু কিছু বক্ত বাহির কবিরা জীবিত থাকিবে ইংগ বেমন অসন্তব, বহাজা পবিত্রাভাগণকে বিদার করিরা ঈর্বরে বিশ্বাস রঞ্জে তেমনই অসম্ভব ।"

ं केंबरत्रत व्याखालालन, उत्पत्तिक मानवमधा 🎉 निका क्रेबरत স্থিতি এবং সম্পূদক যে আশ্রমধর্মের প্রধান ক্রিয়, সে আশ্রম व्यक्तिनद्र। धर्यानकात्र मकन मद्रश्च व्यक्तिकः। व्यक्तिन ভূমিতে এই মাশ্রম স্থাপিত, এ জন্ত সকলের সঙ্গে অভিয়ন্ত্রর रहेश दिकि धवान मस्दर्भ । आत धर कांत्र भृषिवाट স্বর্গের পরিবার স্থাপন অবশুস্কাবী। পরিবারে স্ক্রিকাশ পাইলে সমগ্র মঞ্জনীতে স্বর্গস্থাপনে আর প্রতিবন্ধক রহিল 🗮 কেন না ব্দনেক্ত্রনি পরিবারের সমষ্টিতে মণ্ডনা। কিন্তু 👫 ব্যক্তি জিনুৰ অধিকার লাভ করিতে সমর্ব ? যিনি বৈরাগ্য ও অরণ্য ৰাৰ ৰাবা, আপনাকে সৰ্বতোভাবে প্ৰবৃত্তিৰাসনাঃ শৃতীত করিরাছেন, নিবৃত্তিযোগে সিদ্ধ হইরাছেন। এ অবস্থার 🌯 ক্রের কথা উঠিতে পারে না ; মূথে হাস্ত বিরাজ করিতে পারে বা। কেশবকে ধর্মজীবনের আরম্ভে আমরা এইরূপই দেখিতে গাই। अक बात ममुनाब क्रेबरबब ठबरन बनिनान ना कविरण, ठब[ा] ठिब আনন্দের রাজ্যে ঈথর ও তাঁহার পুত্র কঞাগণকে ল 🦫 চির আমোদে নিময় থাকা কগনই সম্ভবপর নহে। কেশ 15কের জাবন বদি আনক্ষন রস্থক্তেপ নিষয় হইরা রোগ শোক স্থাপ যন্ত্রণা সম্লার ভূলিরা গিরা থাকে, তবে তাহা সম্মাসধর্শ্বের উপরে---কাল অমির উপরে বিচিত্র অর্গের ছবি অভিত ইইরাছিল বলিয়া সম্ভবপর হইরাছে। বিনি নির্ভিবোগকে মূলে রাবিরা তত্পরি অর্ভিযোগস্থাপন না করিবেন, কেশব যে পথে চলিয়াছেন

ति शर्थ ना इतिरादम, जिनि य नरीन बाज्यसम्ब श्रीविट इहेरवन जाहात क्यांन मछावना नाहे। क्वरण निवृत्तियां भाज्यत करित्ण छक सक्व्रियां वाज्यत करित्ण छक सक्व्रियां वाज्यत करित् ज्यांन वाज्यत करित छक सक्व्रियां वाज्यत हहें तो शिक्षित। बात विनि निवृत्ति यांगिनित्रत्यक हहें तो श्रीकृति । बात विनि निवृत्ति यांगिनित्रत्यक हहें तो श्रीकृति वाज्यत्यक हां वाज्य हांति कर्मनात त्रांका हांतिक वच विन्ता श्रीकृति वाज्यत्यक वाज्यत्य

কলিকাতা, "মধ্যগঞ্জ মিগন প্রেসে" কে, পি, নাথ কর্তৃক মুক্তিত ও নববিধান প্রচারকার্যালয় হইতে প্রকাশিত।

কেশবচন্দ্র অগহারক।

কেশবচন্দ্র অপহারক। •

च्या रमन्दरत्वत अवनित् । जिनि कि किलन जाशाही चारमाठना कहा चनाकात निरमत छैनतुक कार्य। चरनक निन मूर्ट्स आह अक्षे विविद्या विवृद्ध अस्त छेनिछ हुई-प्राहित । यत्न कृतिप्राहिनाम धनात संस्थारमस्य मिरे निवस्ति विद्वा कतिया किक देशात मर्गा आप किन दरेन "किनव-চক্র অপহারক" এই বিষয়টি মনে আসিয়াছে: প্রভয়াং উহাই এ দিনের আলোচ্য বিষয় করা হইব। 'অণহারক' এ শ্বটির প্রতিশব্দ 'চোর'। চোর শ্বটি নিভান্ত নিকাত-हक । 'दक्ष बहुत (हार', देश विन्ता च्हारनाहाविस्त्रहि विनाच कतिरल छेश छप्रशामत कार्मत छरवनकत हहेरव, छाई চোর শব্দের ছলে 'অপহারক' শব্দ ভত্রতাসুরোধে ব্যবস্থাভ হইয়াছে। কেশবচন্ত্ৰ হয়ং কিছ আপনাকে 'চোর' ও 'প্রভারক' ালিয়া আখ্যাত করিয়াছেন। ত্রন্ধান্দিরের বেদী হইতে ভিনি এইবণে আম্বণরিচর দান করিয়াছেন, "বধন পৃথিনীতে (আমার 🕽 দর্ম বুইল, তথন চোরের সংখ্যা যত ছিল, তাহার এক এন বাভিল, । ত প্রতারক বাস করিডেছিল তাহার এক জন বৃদ্ধি হটুল। कारात अहे क्या शनात छेनात काराकात विवद अर्थानिए। छिनि বিদ বলিলেন, তাঁহার আবদনে চোরের সংব্যা বাছিল, ভবন

[्]री (रणपम्याम केमप्रक्रिय करपारनपत्रियानकाम अस्य प्रकृत्वानुस्त ।

কাৰা এই বিনা বিক্তিয়া নে তিবি আনিছাত নেই এ প্ৰিনিধ্ লাজৰ আনেল চোঁৱ আনিছাতিবেন। "এই একটি নিবান বৰ্ধ প্ৰিনিতে উলিত হয়, তব্ন ডাছার সংস্ক সালে এক লন প্রধান চোঁৱ লালেন, জিনি আনিছা লতকণ্ডলি চোর সংগ্রহ করিয়া বান, নাইলা-পৃথিবীকতে উলোৱ ব্যৱহার ছালাইতে বাচকন। চোর, পঠ, বুলা প্রকাশন গ্রহারক, এ লকন নাম উছোরা আপানারা প্রহণ করেন নাঃ লোকে উছোলিয়াকে এই নাম দিয়া থাকে। এনন মাজনার ক্ষাতে কেছ আলেন নাই, বিনি পৃথিবীর লোকের নিকটা এই কলা নাম না গাইরাছেন। তাছারা এই নামগুলি আপানার স্বান্ধ করিয়া লউন বা না লাটন, তাছাদের ব্যৱ-লার বে চোবের ব্যৱহার, ইছা আর উছোরা ভাহারও নিকটে অর্থকান লাবিতে লাকেন নাই। কেনবচন্দ্র স্বাহ্ এই সকল নাম পৃথিবীক নিকটে লাভ করিয়া ভাছা আপনি বীকার করিয়া লইয়া-ছেন্দ্র, এবং কি ভাবে তিনি চোর ও প্রভারক, ভাছা আপনি নয়ন্ত্রন করিয়াছেন।

প্রধান জিকাসা এই, বাঁহারা অগতের হিতকারী বছু বালিয়া আল্লানিকের থারিকর দেন, লোকে তাঁহাদিগকে একপে প্রপদস্ক করিবার লাকে বছর করে এবং তাঁহাদিগের বিরোধী ইইয়াই রা কেন জালার ই তাঁহারা মংসারকের বেলে সাধারণ লোকের নিকটে উল্লিক হন, এবং তাহারা বে সকল পুরুলিকা পুলা করিতেছে তাহারা বিকরে তাঁহারা জীর আক্রমণ করিয়া বাকেন। কেয় বী পুরু বহিনারের প্রথা করিতেছে, কেয় মন, কেয় মান, কেই বিলাস বা জন্য আর কিছু পার্থিব বিষয়ের আর্কনাম প্রবৃত্ত বহিনারের বিকরি বালিয় আনার, নিভার আনীর, নিভার বিভার বিভার

MINESPER, THE PROPERTY AND LOSS OF THE क्षेत्र केरण क्षेत्रक किएक क्षेत्रक का कारण कर कार न्यानामारक त्यां विकास केमाजिक देश । सारांक को सम्बद्ध ग्राहरू न्वीति नियाची परिवर्ध प्रीशना काराविधान नार्वश्रवहरू स्थानक ्वविराजः जनाः कंपनंत्रकः स्तः। श्रीरांचा त्यादा दलः विहा-্রিরকে ক্ষত্রে ক্ষণদক্ষ না করিয়া প্রাহারা কোনবলে জান্সকের জ্বীরে অভ্যাচার বা ভাঁহাদিগরে বিদাশ করিতে পারিবে ৰা; তাই ভাহারা তাহারা বে নিভাক্ত পঠ, বুর্ত, চোর, र्रनाटकंत्र कतानं कदिवानः छोतः कदित्रा गृहेकार्य छोद्दातन नंत्रिक्षक अविरंक केनाक, हेरांटे मध्यमान सविवाद संबा तक ंबरड । त्यान अक राक्ति निजनींड चनिर्देखारी हेर्। सार्थारन कारकर क्षमतकम मा प्रदेशा, जाहाता चनावाहारवर व्यक्तियाम ক্ষরিত্র, তাহারা ভাহাদের প্রতিষ্ঠার ক্ষরতার ক্ষরিব, এক্সমুই कारांक्तिक कारांत्रव मधुप्तात कार्यात सात कार्या वहरू - বৰি অধিক কৰা চফু মুদ্ৰিত করিয়া জীহার। বানে করেন, সাধাৰণ লোকে তাঁহাদিনকে বোগা বলিয়া সন্মান করে। এই সকল खिक द्यामान कविएक रहें। करत (ये देवांता स्वामी मरवन, देवांता कंछ। बाहिस्त देशासन त्यांतीत त्यम, किन्ह वास्तर देशाना काशा कि मर्बोनान कविरान छाशाँदे हिला करतम थ छनात छैतान करतमः। शृथिवीरंण व्यानकन वर्षे वांधादिण स्टेबारकः त्वरे अव्यासक এটাৰ প্ৰ-বিকাৰকাৰ্য্যে নিবক লোকদিগতে এই প্ৰকাৰে নিৰ্দিত আনুৰ্বিক কৰিছে মন্ত্ৰুক্টবাছে। **এট** নাৰ্য্যে আনুষ্ঠ এই ও উচ্চাত্ৰ ाम वार्थमिक निर्मानाथक व्यक्तिका एवं आशिकिक काठमहास क्**रे**शस्त्र , जारा अकरण केवारतम् । जारमणस्य तीस्त्रस्यः वर्षा वास्त्रस्याः अकरात

बरतन मार्ड, जीवरन गामन कत्रिएड वद्यमीन हिल्ला, डा েলাভি কি ভরানক অত্যাভারই না হইরাছিল। ভাহারা খা নিরে সৃহ নির্মাণ করিয়া তমধ্যে পুকারিত হইয়া সকলে গ শ্বৰ সাধন কৰিতেন, সেবান হইতেও তাঁহাদিগকে বাহির আৰু বিনাশ করা হইড ; ভাঁহাৰের আচরিত উপাসনা বন্ধন ^ওস্বাপান ব্ৰেক্ষাচারালি নাম দিয়া লোকের নিকট ভাঁচা মিন্দিত, ভ্ৰিত এবং দওবোগ্য বলিয়া প্ৰতিপাদন কয়া হইত। ভক্তৰ প্ৰেমিক চৈতলা, উত্তাৰও নামে কুৎলা বটনা কৰিছে লোঁকে ক্ষান্ত ছিল ? রজনীতে উঁহোদিকের কীর্তনানশ্ব সদ্য লেপের উত্মন্ততার রোল বলিয়া প্রতিপন্ন করিতে দুষ্টব্যক্তির ্র অসম্পারই না অবলক্ষন করিছে। কুচবিভাচরর বিধাহ উ করিয়া চারিদিকে বর্থন কেশবচন্দ্রের নামে খোর অপবাধ । ি ভৰম ডিনি ব্রহ্মমন্দিরের বেদী পরিত্যাপ করিলেন। উপ ৰত্পী উহায় এই বেদীজ্ঞানে নিডান্ত ব্যধিত হইয়া ধ্বন জাঁ৷ ংকী পুনরায় প্রহণ করিবার জন্য নিতান্ত অন্স্রোধ করেন, ! তিনি বেদীতে বসিয়া আপনার সহকে কয়েকটা কথা জাহাদি ্ৰলিব্ৰে প্ৰতিশ্ৰুত হইয়াছিলেন। এই প্ৰতিশ্ৰুতি পুৰুত ্ অক্স-বিক্তে ভিনি ভুইটি উপকেশ দেন। বিভীয়ে উপত ্তিনিঃ আপনাকে চোর ও প্রভারক বলিয়া উপন্থিত করিং ্ ক্ষৰণা সাধারণে ৰে কর্ষে চোর ও প্রভারক বলে সে কর্ষে ন ্ৰক্লটোরিনবের প্রদন্ত নামের উহা ক্লণান্তর ও ভাবাত্তর। বৰ্ণনিচলের আগবদরের পূর্বে বালারা আদিয়াছি। . क्षाशताः कि अनामीरक :दावेश रावमात्रः हानावैशाहिताने छ। ्र कारणांच्याः अक्ष्यः । एक्याने स्थापनाः । व्यापनाः । व्यापनाः । व्यापनाः । व्यापनाः । व्यापनाः । व्यापनाः ।

,बारात मजानमा बाहे। अवना जरपूर्तित महान बन बहात -वार्गसंत्रक्षकः व्यनपुर्वकानीन काट्याकनाव अवस १००१ आधिक । अर्केटाचटक काराज्य कविश्वन । माहादा सहमात्रम् ए वक रहेक वरिवादह अमर्राचनक्यानि संशामितक किछ एउन कवित्रा वास्त्रिहरू छारास्त्र हिन्छ एतन कवित्रक ना नावित्न कथन ভাহাদিনকে সংসার হইতে নিব্রত,ভগবানেতে অসুরক্ত করিতে পার্য শ্বির না। এই সকল লোকের চিত হরণ করিবার জন্য ঋষিণণ ক উপার অবলম্বন করিলেন ? এই জন্বং সংসার ফে কিছুই নয়, মান্তিক, क्रिक, निष्ठाष्ट न्यमात, क्षत्रिय मस्त्रावस्य देशहे व्यक्तिमाधन করিতে বন্ধ করিলেন। জাঁহারা লোক্সকলকে বলিলেন, এই বে ৰন জন ভোগ বিলাসাধিতে সুৰ অনুভব করিতেই এ সুৰ নয় ছঃৰ। अ शकल शिववारम जामां मिनरक दुः (वेद मानरद जामाहै (वे । हेरा-বিবের উপরে ভোমরা কখন বিশাস স্থাপন করিও না। সংসারীয়া दिनटि नानिन, धरे मक्त श्रवित्र गुर्छ धारकक । जी नुक प्रतिवात, का का रवीतन, भान ट्यांकन बारमान, रेंद्राता कामानिगरक टार्फिनिम ত্বৰ দিতেছে। ইহার। আছে বলিয়াই সংসার আমাদিলের নিক্ট হুৰের আলয়। মে হ্ল নিতা প্রতাক ভাষাকেই কি না ইহার। বিলভেচ্ছে মিথা। । যে সংসারকে খাত প্রকার যক করিলেও উড়া-ইয়া দেওৱা ৰাম না, সেই সংসাহকে মান্তিক, ক্ষণিক, কিছুই নয় बना देख कि वक्षमामान विकास करा नद्र १ वनि अ अवन शासिक, ক্ষণিক, বিধ্যা, প্ৰথমই হয়, তবে ইহারা নিয়ত সংসার করিতেকে बाब १ कविरावक छ। कविनको माटक कविकना, कविछनंत माटक र बेह्यताक देश विवासको पानित्यम एरेबा बादक ना सूचा पूर्ण , ब्राह्म व क्रिका-बहुदाव जान हरेट्ड विवय दव नारे । ब्रीवरन उपर

ইতার কোটারেক না অন্তান বক্তাহার ইণানের করিবাহার করা আলো করা বর্ণার ইহার বহে। ইহারের পরিচা বর্তা বরণা আলো ইয়ার নবর পরিচাপ করে। করিবা অর্থা পর্যাক্ত নির্মাণনার ইহার। পর্যাক্ত পরিমাণে ভোগ করে। ইলারা আপ্যারা বেটন পরিশ্রক করে ন', সংসাধিববের পরিপ্রদের কলভোগী হইবার অন্য এই বক্তাল ইহারা বিভার করিবাছে। বুবা বার্তাল বিভার করিবা অচতুর নরনারীর্ণণের মন হরণ পূর্বক ইহারা ভার্থ সাধন করিবে এজনা ইহারের সাধন ব্যানাদি অবলক্ষন। অপ্য সকলকে ভোগ পারিচ্যাল করাইরা আপ্নাদের ভোগের উপায়-বৃত্তি করিবা লাইবে ইহাই ইহার্কের উল্ল উপনেশের উদ্দেশ্য।

the state that when t रहाका प्रसार पर बन मन्तु वेलिस तका है इनके कर उनके न्ताव व्यवस्थाती हिन, बानवासीस्त्र गहिरतीय हिना प्रत्ये प्रत्ये ছুৰ্বেন্দ্ৰনিক্তৰ্যাৰ শ্বৰ কৰিছ, পান কোলন-নুক্তৰীয়েল, আমোৰে क्य बर्जना पूर्व बिना, जाब स्म नास्त्र कियानी ब्रेन,धकाही जातन জন্য পানারিত, ভূমিতল-আহার শবস ক্রন। জোকে ইহা দেখিল, নেবিরা ভাহাদের চলু স্টিন। স্বাই বলিভে কানিক, ৰুসিগ্ৰ মিধ্যা . প্রাক্তনাকাল বিস্তার করেন নাই, উহোরা খাহা বলিয়াছেন ভাহাই गुला प्रदेश । এक वम थल गुलाकि देशांत देक किंदूने दशिन सा । इक रसन व्यानिता याष्ट्रघाता सूहर्र्डत मस्या मकल छेक्। देवा शक्ता লোকেরা এইরূপ বলিভেছে, বলিভে বলিভে প্রভিবেশীর গৃহহ ৰক্তা প্ৰবেদ কৰিল ; ডাকাৰ একমাত্ৰ শ্ৰেছ প্ৰুক্তকে মৃত্যু হৰণ कतिल, प्रभूमत राराकातक्कित्व पूर्व रहेल । योराता एक वार्त्वमान ভনিল, তাছাদের জনম বিকল হইল, সংসার মারিক, জানিক, অসার, পরিণামে ভৃঃখন, এ মন্ত্রের বল ভাকাদিলের জীবনৈ প্রকাশ পাইল। অবিগণের বঞ্চনাজ্ঞাল বিস্তার করিবার স্থামর উপস্থিত। ৰাহারা তাঁহাদিণকে বঞ্চ ধুর্ত শঠ বলিয়াছিল, ভাহারা ভাঁহাদের জালে জড়াইরা পড়িন। ভাহাদের চিত্ত সংসারের প্রতি বীতরার ক্রীলঃ তাক । সন্ত্রাসী উলাসীন ক্রীলা-সংসার পরিভাগে করিল; পৰ্মত অৱণ্য বিৱিশুহ। আগ্ৰয় করিল। নিৰ্ক্লনে ব্যান্তিছা-ছারঃ সংসাবের মান্নানোত ত্ততে আপনাদিগকে বিচুক্ত করিবার জন্য काराता रक्ष्मतावकरहेन । अरेक्स्म नेड नेड लाक विश्वतंत्र संब व्याचेत्र कतिल, छीहाता व्याच्या त्रक्याचाल विश्वात कतिवाहित्सन कार्यात्र हम हरेते । किन्द्रभा त्यात्रक विस्कृति कवियाद काकर्य

Appear faces during referent, on the security state of

क्षे त्र मानार माहिन, कनिक, बनाउ, महिलाई कुन्त, हे क्ष्मण स्थाल कारण कारण निका धारा कि करेता चारिएएस ंबार्स बमारी हिन् गुननवान नकरनक मरपारे जरे कार्यका ए काना जामका छनिएक गोर्ड । मृगनमानगरण करका अ सक अक्षी सूच्य कार्यगदिका चाट्ट। कवित चाट्ट अरू गमरत अरू व বাষসাহ, অপন এক জন বাংসাহকে বলে পরাজন করিয়া ভাঁহা वस स्विता सामप्रम करवन्ता । तम कारण वकीतिनारक पर परवामा बाउमा दिख्या रहें है। नहार्किक रमनाविनकि वामकान व्यवना মিনীত হইয়াছিল। কুখা ভূকায় ইনি নিভাক কাতর হইয়া পা ্লেন, কুডরাং কজা ভাঁহাকে পরিত্যাল করিব। এক জন জ ्रमानकरक जिमि कारा समा किकिश सन शक्ष कतिराज समारत क्रिलम्। म छोहार बहुरहारा धक्ती कृत राजनात्र सन ভঙ্গ দিয়া চুলীর উপরে স্থাপদ করিল, এবং কার্যাধ্যপত্ আন্তর চলিয়া সোলা আরু বিক হইল ; কিন্তু কাই নুপতি চ ভাতে ছতিকা মনভাৱৰ করিতে কৰন জানিতেন না. প্রভরাং ব अकृता क्रिकास काएव एरेवांच (सर्वे क्या नगरक वाकाश्यम वाक ः व्यक्तित्वः सावित्यमः। व्यक्तित्वत्याः कृतितिः कृतानः व्यक्तितः अर्थि nes ment alias permental after cent i ter cent Applications from state while the feet we : **प्राथम क्षेत्रा औ**र राष्ट्रात कृषि सर्वटार्कस्थान । वेसून ३५ AND THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY WAS THE the series with a line with the series and

করিলেন। প্রথমে তিনি ইহার কারণ বলিছে কিছুলেই স্থান হইলেন না। পরিলেনে পূলঃ প্নচাবিজ্ঞেলার ক্ষান্তরের ক্ষান্তরে

ক্ষিপ্ৰ সংসাবে ছিলেন, বহিদ্দ্ধী, ক্ষিকন্যা এবং ক্ষিতক্ষিত্ৰ তলাবন ভূষিত ছিল, কিন্তু তাঁহারা দ্বানবাসী ছিলেন,
ক্ষেত্ৰনা সভাষক উহারা নিয়ত সমূদ্ধে রাধিতেন । নামারী স্কান।
ক্ষান্ত্রি ছিলি ক্ষিতেছে, এ বাবে তাঁহালিকের নিয়ত
ক্ষান্ত্রিক । বাহারা কৃত্যু ক্ষ্মুক রাধিক্ষা ক্ষান্ত্রক,
ক্ষান্ত্রিক সন্দেশ ক্ষান্ত্রী ক্ষিত্রক ব্যানিক্ষা ক্ষান্ত্রক,
ক্ষান্ত্রিকার তাহা ক্ষান্ত প্রকাশ নাম্বন্ধ ক্ষান্ত্রিক ক্ষান্ত্রক ক্ষান্ত্রিক ক্ষান্ত্রক বিশ্বন্ত্রক ক্ষান্ত্রক ক্ষান্ত্

জীতাং বাৰাতে বাৰ্ডাপটি নৃত্যনীত সন্ধবিধ প্ৰবদ সামগ্ৰী ैं छिदै বীজনোকের চিতের হ'ব উৎপর হয় নাই, ভর ছাবে সর্ব্ব প্রতিষ্ঠিত ক্ষমত ছিল। পূড়া সমূপে রাধিয়া সংসার করি े अवैद्यार्थि वर्षे । विकारनव मरमातिक अवैद्यार क्रिन, मासावव रू ্ৰতাহা কি প্ৰকাৰে বুৰিবেণ না বুকিয়া ভাহারা জীহাদিন देवक भेठ बरन करिवाद्यिम वर्ति, किछ कवा निन मरश्रा छ। বুৰিল, ভাঁহারা বঞ্জনা করেন নাই, ভাহারা যাছ। তথ ব আলিকল করিরাছিল বক্ততই উহা চুচিধের আকর। যদি সুদ্ इस्टबंद आक्त रहेन, कनिक, खशही, बनाद रहेन, छारा हरे অৰ কোৰায়, ছিৰতা লাভ হয় কোথায়, ইহাতো নিৰ্ণীত হং প্রারেকন। অবিগণ নিভাছায়ী সুখলাভের জন্য কোনু পথ । ज्यान कतिरामन १ व्यक्तिक, माहिक, जमात, श्रामंत विद्या भूम -উড়াইয়া দিলে চলে মা, তাহার স্থলে নিত্য, সত্য, সার, স্থান্ া स्थान कता सारभाक । छाराता बरे छेत्पतमा अभूमात श्रमात चडवारल (य मात्र रक्ष (Essence) आएकः छ। हात्र वे चरक আবুত হইবেন। ভাঁহারা দৃশ্যপনার্থ সমুলায়কে একেবারে উড়ার্য বিলেন না। উহাদের অসার ভাগকে অসাত্তের মধ্যে দিল «ক্ৰিয়া সাৱ সভ্যাবাহা কিছু ভাহাই বস্তা বলিয়া গ্ৰহণ কৰিলে कौराता छल एशानि ममुनाय शनार्थक क्रिकामा कृतिलान, त्ला। र्ति-नि ग्रमान चानारम नाम स्वित १ "काराना केस्य वि - আমরা নিভাকাশ রাভিন নান ভাহারা প্রকশেই আপুনাভের জা नक्षःशेकान कविनः। क्षीशाहा द्वानकान जन्नात जन्मक जन्म में प्राचेश निशे बादार सुरू दा नाउ मका बाह्य बाह्य वास्त्र स ्यानः। श्रेनावस्तिकः व्यवस्थितः नामानं सन्दर्धः क्रीवराकः क्रित्रः। ना

বাত্তে প্ৰবিদ্যান কৰিছেন কাৰা নহে, তাঁহাৰা চিছাপজিবোৰে क्लिलन दा, वर्षे क्लादा (वानदात्र) नदिवछ हरेन, क्लानहर्ष ৰবিহা বন্ধ হইল, সেই বন্ধ মতই আৰও প্ৰস্তু হইতে লাগিল, চকুৰ अपूना क्षेत्रा (अल । अरे छक्त अपूना निताकात मामधीरे मर, দেই সং সভাষাত্র, তেই সম্ভাই কোনকলে অভাহিত হয় না. চির্দিন থাকিয়া বার। "সভাষাত্রং নির্কিশেবং নিরীহয়" এই বলিয়া সেই সমাকেই ভাঁহারা ধারণার বিষয় করিলেন। मठा चार्निक मां चार्निवर्डनीय मकि। धरे मवा मुनामका तरह, हिं महा। हिंदमुखा नानार्यम धात्रम कतिया जामारतत मरधा দার ইয়া আছেন। যোগবলে তাঁহারা ভূতাদিসমূলায়কে উড়াইরা দিয়া আত্মতে সংপদার্থ দেখিলেন। এই আত্মা অহমরূপে গুৰীত হইলেন। স্বভরাং সনুদার উড়াইরা দিয়া এক 'অহন্য' खरानर वाकिन। এই 'खर्म्ट' बन्नक्रां छ। हानित्त्र निकारे প্রতিভাত হইল। এই প্রশালীতে তাঁছারা লোকের চিত্তরণ कवित्तम अर कारावा अन्यक्त रिक्कारी मञ्जाकाती दलिया •পরিচিত হ**ইলেন** ।

ক্ষিপণ সম্পাদ বন্ধ অসার অপদার্থ করিয়া উড়াইরা দিয়া
ব অংশকে অবনিষ্ট রাবিলেন, সে অংশকে পর্যন্ত উড়াইরা
প্রবাদ অসা বুজাদবের আগমন হবল। এবার এক অন প্রধান
ক্ষ অভিনেন। রাজভূলে জনগ্রহণ করিয়া রাজ্যেচিত ভোগো
লিভ পালিত হইরা তিনি ভিকারী সন্নাসী হইলেন, এ জন্য
হিবে বিজ্ঞালিনে সহল সহল গোক সহলে পড়িল। তিনি
নিবেরারী। পিড়া ভলোল বি জানি বা তিনি প্রবিদ্ধী বুজ

হবোঁ আচুর ভোগ বিলাদের ববোঁ উহাকে বাল করিছেন।
সংক্রী-আপনী পদী পোণা রুশেশুনে নারীকুলের তুল ছিলেন, রাহল
একাত্র লিও সভান, রাজ্য পাট বন সম্পদ্ অভিনিত্ত ও, এ সকল
কিন্তুই উহাকে দংসারে বন্ধ করিরা রাখিতে পালিলে না। ভিনি
ক্রেরাকুলবাাবির নিদর্শন দেখিরা সে সকল হুইতে আপনি উভার
ক্রিবেন, জীবদিগকে উভার করিবেন, এই প্রতিজ্ঞান ইই ইতে
বহিন্তত হুইরা নানা স্থানে ভ্রমণপূর্ত্তক পরিলেবে প্রস্তাহে নিয়
উপন্তিত হুইলেন। সেধানে ছর বংসর কাল ক্রুটোর উপন্যা ভারা
আপনার বেহ অভিচন্দাবিশিষ্ট করিলেন; অবচ বে বে ধনাভের
জন্য এত কৃদ্ধু সাধন তংসক্ষকে কিছুমাত্র কৃতকার্য্য হুইলেন না।
অনজ্য অত্যক্ত কৃদ্ধু সাধন নয়, কৃদ্ধু সাধনরাহিত্যও নয়, ই বর্ষা
পর্ব অব্যক্ত কৃদ্ধু সাধন নয়, কৃদ্ধু সাধনরাহিত্যও নয়, উই করা
পর্ব অব্যক্ত কৃদ্ধু সাধন করি প্রতিজ্ঞার আসনে উপন্যান করি প্রন্

ইংাগনে ওবাতু বে পরীরং প্রবিষাংলং প্রচারং প্রবাত । প্রাণ্য বোধিং বহুক্তমুল্ল জাং নৈবাদনাং কার্যক্তক্তিবাতে ॥

াশএই আসনে আমার দারীর তক হউক, ত্বৰু, ক্রান্ত মানস বিনত্ত হইরা ঘাউক, বছকলচ্ল ত বোধি (জ্ঞানবছা) না গাইরা এই আসন হইতে আমার দেহ বিচলিত হইবে না।" কি প্রতিজ্ঞার বলু-। বোধি লাভ না করিরা আর তিনি আসন হইতে উঠিলেন না। বোধি লাভ করিরা কি কইল গু এক জনত জ্ঞান ভিন্ন আর কিছু জাহার নিকটে বাকিল না। প্রতি কিছুই নম্ন মারার রক্ত্রির, জনত জ্ঞানের লহিত হতিব কোন সম্বন্ধ নাই। বে অহন্তক্ত ক্রিমাণ এত ব্যাহ বল্লা করিয়াছিলেন, বে অহনেতে জহন্ধ ক্রেমা

THE WAR SHE WAS AND THE WAY WE WANTED THE STREET the same builty from my rice cityens wanter was for allers a see were four to the THE REAL PROPERTY AND ADDRESS OF THE PERSON ADDRESS OF THE PERSON AND ADDRESS OF THE PERSON ADDRES क्रीकार्युमा तरर क्रिक विरूत्त-म्याहार केलिक कारण क्रिका THE STREET, CHAPTERS AND COURSE THE THE REAL PROPERTY. AR MINE MINE OR WESTERN SAUCE WITH STREET whiche | wee at the cut manufacture specials with the पुत्रकारिका द्वान्यवयान पुरुष्टेश विरत्यन । व्यानिवरम्ब ब्यान गुरुष्ट TELL VER THE GIVIS SIVIS MENTS Aften Milleman च्छा-कारीशियक केलिएक-कार्या लाव. किनि कार्क अभावत क्यांकfentage dieta statetta atta atfagi cefetanii sant. मुख्य-साथि निर्ण संस्थान । जार सुरा नामि, जार सुरा नामि, এই ভিজ্ঞা করিতে করিতে জন্ম বিশ্বা, নারার নামজুরি, কাণ্ডজুর, এ জ্ঞান সকলেবই স্থানে খান পাইন। তথ্য তিনি এক পাছৰছ केकात्त्व क्रिक्टिन, "वहे आहर, वहे नाहे"। व यह बाहात्त त्यांकरक सर्वक चानर्थन कवित्र । वास्त्रीत क्षेत्र सक सामक ক্ষমতেৰ, আঁহাৰ নাড়ীতে বিভা নুজা শীজানিৰ বুৰধান, বিজে नाम हर अवना पानधात्त्व व्यक्ति सारे । बानदेश्वरक मा ब्याद कान त्याक नारे । कें।रात अर्थन काहिनी मकन त्यारक अर्थरे अनित्य शास्त्रा पात्र। एके अप कि अवसीत्य कि रहेन, कारे कारीकारे बामगायत रेस्ट्लारकत मोला नाम वर्रेन । नव **लाहको अन्तिरंक गापिन, जार) बायोग जार गारे। ८० ज**र

দিন, হঠাৰ সে বড় ৰাজ্য হইল, হঠাৰ-ভাষাৰ মৃত্যু হইল; কুত্ৰা मकरने बरम "बरे चारक, बरे नारे" बाकू मह नातित्रा त्वल । करा ৰৰে লোক সংগার হাড়িয়া শাক্যের অনুসরণ করিল। তিনি য সম্মুক্তি লোকদিনকে ফকীর সন্মাসী না করিতেন, বুরিতে পার ৰাইত বে, ডিনি কেবল পরের সর্বনাশ করিডেই প্রবৃত্ত। কিন্তু শাক্য বংশের রাজ্যের উত্তরাধিকারিগণকে যথনই তিনি সাধা মৃভাইয় अवामी कतितान. ज्यमरे ध कात त्र कात्त्रत भितामनि निकार হুইল। রাজ্য পাট ধন ঐশ্বৰ্য্য, দৃষ্ট স্পষ্ট কত ভোগ বিলাস এ তলি ছাড়াইরা চক্ষে দেখা यात्र मा, कर्ल छना यात्र मा, वरस्त श्रुप হত্ত্ব না, এমন শান্তির কথা কহিয়া লোককে বঞ্চিত করা, ইহ कि मामाना तकना ! छारेनिशत्करे मा रह विशेष कतितान, बाका बर्ग्नत खेखताबिकातियमश्रास क्छेक्णूमा कतिराम । अक्षाट অবশিষ্ট উত্তরাধিকারী নিজ পুত্র রাহুল হাদশ বর্ষীয় শিশু, সে আদিল তাঁহার নিকটে রাজ্যাংশ লাভ করিবার জন্য। ভাহার ৰাধা মুড়াইয়া কেন তিনি সম্যাসী করিলেন ? আমি ত্রিরত্ব লাভ ক্রিয়াছি, আমার বিষ্কৃত রাজ্যের ইহাকে উত্তরাধিকারী ক্রিব, এইরপ বঞ্চনার কথার ভাহাকে কেন তিনি পৃথিবীর সম্ভরাজ ইইতে বঞ্চিত করিলেন ? আমরাতো নববিধানের প্রেরিত প্রচা রক, আমাদের ব্রভন্ততো বৈদাব্যব্রত; আমরা ভ্যানী, লোকের নিকট এরণ ভাব করিতেওতো আনবা হাতি না। কৈ আলৱা कि देखा कि दर, बानारक मचान मचां अरगारक भव क्रीकिन विद्या नवा नी किसीन रहे ने चंद्रर बोक्सक लोका मा क्ष SEINE WIT STIN STEN FOT OF THE WEST MARKET creital fer arriace ale signice defer

र्शि र्राहे, पहि, रहात, वाक्षेत्रराज्य वावेत्रना, हेरा वाहरणाहा वालिय र

बाज बांत्र हरे गरंख वरमत्त्रत नृत्स कृष्टितारगरे बात बक জন চোরের অর্থ হয়, ইনি মহার্থী, চতুরের চতুর, চতুরের কিটো-মৰি। কেন এ কৰা বলিতেছি ? খাক্য রাঞ্জ্য ত্যাপ করিলেন, পুঁজের মাথা মুড়াইলেন, কিন্তু শরীয়—অবিদ্যাকৃত বইলেও—ভি-কারে রক্ষা করিলেন। বে দেহের প্রতি ধোলীসাধক ভক্ত সকলেরই ৰ্মতা, সে দেহ দিয়া বিনি লোকের মন হরণ করিতে পারেন, তাঁহার মত বৃর্ত, প্রবর্তক, পঠ চোর আর কে আছে প আমরা কর্তব্যের ভাগ করিয়া আমাদের দেহের প্রতি কণ্ড र्वत्र कर्ति, देवाना भागशीरा वाशास्य देशत भूति हत्र छाहाँत उनाव करि, बाव करे लाकि तिरे महत्रवरक "मेरेदाव देखा पूर्व १७ क" वर्ष: वाष्ट्रवंत संगरक जुनाहेवान सका छकात्रक করিয়া জুলোপরি বিদ্ধা হইলেন। এ চতুরের বঞ্চাঞাল কাঁটিবে কাহার সাধা ৮ ইচার বাড়ী হর আছীর পঞ্চন জিল না ভাছা নর, কিন্তু সে সকল ছাড়িয়া আপনাকে পর্যের ভিকারী করিলেন, আর লোককে বলিতে লাগিলেন পাধিসকলের কুলাছ আহি, পুদালসকলের গর্ড আহে, কিন্তু মনুষ্যসন্তানের বাঁৰা बीवियात साम नाई।' व नकाई छाउत्तीत क्या। दय छात ब्यम থাসিলাহেন, ভাগকে ভুনাইনার ছফা কোন লা কোন Miller Greigt auf Affenten, att Mittele Beite Aufer eraftentem i effette finalität gegaßt egenun geben failing wife Extra feet devices twenter Maris AND COMP A THE CAT WAS ARREST THE ! SHOW

কি হইল ু না, আমাধের পরিতাপের জন্য জালদেহ তুলে বিশ্ব परेष पिलन। आशं कि त्यम।। अहे विश्वा नवनाती माणिन, सक्रमरे कारात कर बान निष्ठ नानिन, वक्ताकान नारवीत অধিকাংশ স্থানে ছড়াইরা পড়িল। যে জালে সপ্তমবর্ষীয় শিক্ত পৰ্যান্ত ধৰা পড়ে, সে জাল কি সামান্য জাল ? এ লোকটি সামান্য वर्ड नन । देनि बात बन अमन कठिन कतिया मिटल शादान (व, मणुट्य अञ्चाम अधिकूर भिक्ति हरेएए हि, कि कानि वा जेमारक अश्वैकां व করে এই ভরে মা বলিভেছেন, 'বংস ভর নাই, প্রভু ভোষার সঙ্গে আছেন।' শিশু হাসিতে হাসিতে অগিতে দগ্ধ ইইল। ঈশা জুশে প্রাণ দিলেন,সে আর-কত বাতনা। ইহঁরে প্রভারণায় যাহার। প্রভা-রিড হইবেন, ভাঁহাদের আণ বিনাশের প্রণালী পড়িলে কাছার না क्षाद्वत स्थानिक एकारेवा यात्र १ मम्नात्र भंदीरत मधु माथारेवा स्व রশিকে উর্ভে ঝুণাইয়া দেওয়া হইয়াছে, এ দিকে ভীবণ ভিমকুল দংখন করিভেছে, একটু আছাড় পিছাড় করিলেই নিয়ে প্রস্তুরো-পুরি পড়িয়া শরীয় চূর্ব হইবে, এ कि সামান্য বাতনা! সমুদায় नदीद ब्ला पित्रा माथारेषा भगाञ्चलिए अधि मश्रवान कवित्रा (ए छत्र) হইয়াছে। শরীর আত্তে আত্তে পুড়িতেছে, আর তাহার আংক্তি শক্তরণ পানভোজন করিতেছে, অট্ট অট হাসিভেছে। 🐗 প্রুল अखाहारवा कथा छनिता कि चार अकारत हेनार रक्षनावारत. न फिरा काराव नामना रव १ जेमा कुरू थान निवा निवान, जेन-दब देखा थर् एकेक"; चार चमनि मकन शास्त्रत सूर्व "क्रेच-রের ইচ্ছা পূর্ব হউক এই ধানি উঠিল। বালক বালিকা,বুবক যুৱতী, इक दुषा, बनी पश्चिम,पूर्व काली, मकरण এरकवारत माण्डिम केहिल क्ष वाकि असम कृतिया लाक्षिवरक क्यादेश जुनिएक नारका

€ **3**4 ∫

ক্ষীরের মায়া পতি ও ছাড়াইতে পারেন, তিনি বনি বুরু এঠ প্রথক অতারক চোরের শিরোমণি না হইবেন, তবে আয় কে হইবেন

धवात्र वितम हरेएक करमान बामा बाक्कि। ध रमान টারিশত বর্ষ পূর্বেষ্ট নবছীপে এক জন চোর জ্বিলেন, জাঁহার জান জীচৈতন্য। এ চোরের চরীর প্রশালী আশুর্যা। ইপ্লি ছব্লি বলিবা। নাচিতে লাগিলেন, কাদিতে লাগিলেন, হাদিতে লাগিলেন, আর চারিদিকের লোকগুলি কেপিরা উঠিল। অবশ্য লোকগুলি মুর্থ, তাহারা পানে না যে এ সম্পায়ই আয়্বিকার ! বলিও বা জানিত, এ মারাবীর হাত এড়ান কিছুতেই সহজ নয়। আলম বড় দর্শন-বেতা কঠোর জ্ঞানী সার্স্যভৌদ ভটাচার্য্য, তাঁহ কে একটা প্রোক্তের बाका कतिहा देनि जुनारेलन । अपून अवस्थित सामी वाक्यांत्र উজীর রূপ স্নাত্ন, উাহাদিগকৈ ফকির করিয়া ইনি বাহির করিয়া স্নাত্ন ব্যের সংসাধী ছিলেন, গ্রাহ্মধের সর্বভান্ত করিয়া আপ্নার অট্টালিকা নির্মাণ করিলেন, সে: লোকটাকে वामणाञ्च काराजादत यक कदिया चतियाँ वाचिएक नादिएकमा आ। कि बान्ध्या। देशाक मर्काराय कतिहास दे रात बाना विक्रिय मा। দীন দ্বিদ ফ্টার হুইয়া একখানি ভোটকবশনাত্র কারে ছিল. ভাছাও 🖹 চৈতন্যের বৃষ্টিপথে পড়িল। সমাতন বৃদ্ধিমান বালনার ভালির, ব্যালেন প্রভূগ ইহাতে মন **উঠিতেছে**লা, অমনি মুদ্দভালে এত ক্ৰম বৈক্ৰকে ভোটকৰগৰাদি দিয়া ভাইছৰ জিল্পছা গাৰে किंग किरहरूतिय निकरें वागिरणन, बात छारान मूक्त वाणि शरन ना वधुनाव नाम बनी समीनारतत नकाम, शहर समन्त्री मही, ৰতে বাবিধাৰ কৰ্মাণিতা মাতাৰ কৰু বৰ, তেলা বিনাটোৰ বাচুছ न्यान्त्री वांता निश्च रविष्ठ, विश्वका कारान कर होरी कविकाद

नार म राकि परतर सहित हहेता. महिल, के क्षा के का नानरकाकतः नविकानः कविशा कुण्यनाके कविष्यः कारायार्थ ৰাইল। মত দিন পথান্ত তাহার সম্পূর্ণ স্থান্তরনাশ করিতে ন शांतित्वन, छ७ पिन के दाव मनःशृधि एव नारे। दा हिन छनित्वन Ca. तम्ताव अवन चारव चारक किया कवा चाक्ति। विवा एका का बाक्रीनरवड मुक्त क्यमारवन गठा अमानाव अर्वपूर्वक छाराहे स्थाप किया एकाक्य करवन, उथन कात हैं हाद ब्यास्तारमंड शिवनीस ৰহিল নাঃ অকেবাৰে তাঁহাকে ক্ষমের মত পাগল করিছ দেওয়ার অভিপ্রাংর তাঁহার সেই পর্যুদ্ধিত অর হইতে একস্ট অন তুলিয়া এই বলিয়া ভোজন করিয়েন, অমন উপাদের সাম্বরী कृति निका रक्षांक्षम कर, व्यवह कानारक छावा बहेरक बक्कि वानियाद ।' नत्म, भड़न त्नाकृतित्वव बन हुती कृतिवात सम्म टेक्कना स्थान क्लोनल क्लानिएकन ध्यमन चात एक क्लारन ? बांशांत्र মন বেরুপে চুরী হইরা যাইবে, এই সকল চড়ুর চোর বিলক্ষণ জানেন, ডাই কাহারও ইঁহানের হাত হইতে নিছতি পাইবার উপার নাই। ঐতিহতনা শেষটা সাম্বিকারে প্রাণ হারাইলেন, ल्लारक विनन धावन खनवर धारमञ्जू व्यापार हिन थान मगर्नन क्रिलन । अ मदन वाकित क्या, कीवन, पूजा এक अक्री श्रकाश বাবকনাজান। স্চত্র নিপুণ ব্যক্তিরাও এ জার অভিক্রের করিবেন, ভাহার সম্ভাবনা কোখার ৭

গৃহছের। সাবধান। এবার জার এক জন বিষম চোর জানিহা-ছেন। আজ উাহার জমদিন। ইনি ভোমানের সর্বানাকরি-বৈন। ই হার জালে পড়িলে জার সে জাল কাটিয়া চলিয়া বাওয়ার কজাবনা নাই, এ বিবরের সাজী জাবরা নিজে। জানরা জে

ত্ৰাবাৰ ছিলান, কোন বিন জীহাৰ মহিত সময় বা পৰিচৰ ছিল सा। अधि मामाना रहा अवनयम कवित्रा आमारक आर्थ जिल बारवन कविरतन, स्थाव रहारे रव मन हुती कविरतन, साम नहीं अक बक्रवान रहेन, अवह स्न मन कितिया शास्त्रा तन मा अहे ভোষের মাতে পড়িরা হর গেল, বাড়ী গেল, জাতি খেল, কুটুস व्यन, व्याचीय श्रम, प्रथम श्रम, अदम श्रदक गहेवा श्रदक श्रह নিষ্ঠত একর বাস। এক এক চোৰ এক এক প্রধানী আকাশন করিছ। हुत्री कविशास्त्रम्, भूबाजम बाबानी अवनवम कविशा हुतीत काक कालान मा : दक्त मा नुवाजन वीकि बीख बवा नहक । क्षेत्रकार नुकन प्रकीत नम जारे । 'करे जारक, करे नारे' बढ़ा लाका सम्मानावाला कार रहक कहिरतन, केना किछा के छ। पूर्व क्छेक' मध्य कही। कार्यः मधनगरनावयं श्रीरतन, ठाउना शकि मारक शामिका केरिका नाव्या मन्दर्क मार्थनात मास्य माण्डरतान, क सकत यह अवन পুরাতন হইয়াছে। খন্য একটি নৃতদ ময়ের সংক এ খলি ছলিছে लादि, वर्ष्य वर्ष्य मह कार्याक्त दश्या अधन कठिन। दश्यास असन একটা চুরীর উপায় বাহির করিলেন, বাহার মধ্যে হিকুভার, र्वोक्सकार, बीडे जार, मकन कार्यत्र ममाराम रहा। त लारकत त ভাব প্রধান, তিনি সেই ভাবের দিকু দিয়া তাহার মুর্বলৈ চুত্রী করিছে লাগিলেন। যদিও তিনি এইরলে চুরীর কার্য্যে অনেকটা कुछार्थ एटेरलम, उर् मुख्न हुतीर यह अमन अरुक एश्रम हारे पारा ভনিলেই সকল লোকের মনে লাগে। ভিনি বলিলেন, 'আমার किएत अर बन बायात महा-कर्ण करा बादि सहा करि, मक्तरे জীবাৰ কথা ভূমিরা করি। লোকে জা করে, এ বুরি ভবে ভূতের क्का किक बाबाद (कान दिन प्राप्त करा ततिया का एवं दि.।

किशाबा अप्रवासा हुई नावी, अक पुरक पात्र करवन । जीवीकी नामानात्र क्या सनिएक नाम, देशा क्यम क्रांत्र क्या नहीं (जीवेडी) बीसारक 'बिरवर्क' यम, बरमद दुखि यम, खाबि कीसारक छेपेद दीने। ट्रिजारमञ्जू मकरमन किछात बाकिनाई विटर्क क्या कम। एक ट्रिजान ই হার ক্রা ভানিরা চলিবে, ভত ভোমাদিসকে কেবল তিনি নিবেধ कविराम ना. कि करिएक एटेएए छाटा छ पणिया मिर्दम । विराव कैंबत, विरवरकत कथा कैंबरतत कथा, केंबरतत कथा छनिया नक्नारक हिनाउ रहेरा, बारे सार्वप्राणात्ररक जिनि नर्वरायप्र বাস্থ্য করিলেন। সঙ্গতের সমধ্যে এই মল্লেভিনি কত যুবাকে मुख कवित्रा त्कनित्वम, कार्ल कड़िए कवित्तान । वियोजकरी তাঁহারা তাঁহার সত্তে থাকিতে ভাল বাসিতেন, তিনিও তাঁহাদিগের সক ভিত্র আর কোন সক জানিতেন না। ভাঁহার চ্টির বেন একটা মুম্ববন্ধ কি ছিল। বে দে দৃষ্টিতে পড়িল আর ভাহার ছাড়াইয়া বাওয়ার সাধ্য ছিল না। সঙ্গতের নীতির প্রাথলাসময়ে বিৰেক্ষয় বিলক্ষণ আধিপতা বিস্তাৱ করিল, এবং কডক শুলি লোককে ভিকারী সম্মাসী করিয়া তুলিল। 'ঈশরের বাণী ভাষণ' **बरे बर बानि जात्न जिनि मक्डे** इहित्यम ना ; 'क्रेन्डाब्र मूथमर्क्क ह আর এক থানি জাল তিনি বিস্তার করিলেন। ঈবজে মুর मर्गातक प्राप जिनि कार्गन क्षेत्रक श्रेरणन, अवर कर्गतकक ভদারা মন্ত করিয়া বেড়াজালে খেবিলেন। তিনি আপনি এ अकास बालकारक्ष्य, "क्षेष्ट प्रजीतम् जानतम् क्षेष्टः वर्णामकः प्रथम सन् ver (लाक्टक छोकिया चालिया जल चनित्रक क्षेट्रव, क्रमा कश्चित ভব্তা ৷ এই আমন্ত এবং সকতা কৰে। সকল কাল কৰিবা লভয় वार । आह का करिएक विशास स्टायरा जवर व विशिश वर्षसम्बार

विश्वतं करा। जाकाव रहेचा हकीयना कार विश्वतं नवीव्य हरेगा प्तर ता कहा अतिम ना, नाथन कवन मक्न विका हरेता। क्या र्यानशा किंदू करेन मा, जारक जारक निश्वकारन र कन, र कन, > इ.न. २ अनारक व्यक्तिक क्या शाना। विनास व्यक्तिकात पहेता. विवादक क्लीन, अवन, ध्याय, निष्ठे प्रकादन, धरेकन এकक्कि श्रकाश कान विकृष हरेन। बाहाता मध्मारतत तास्त्र পৰিক, জীহারা এক জন, চুই জন, তিন জন করিয়া জনে बाद्य शिक्तन। दबर दकर काल बाहिया त्यालन वाहे, किछ चाज ६ ठाँशास्त्र भारत काल लाना चारह। अहे कारन বাঁহারা পড়িয়াছেন উঁহোদিগের অনেকে দূরে আছেন, এবং ভাঁৰাৰা জানিবেছেন না বে কেছ তাঁহাদিনের কিছু চুৱী করি-ভেছে। জীবন আছে, ইহাতে বেমন নিশ্চিত বিশ্বাস, এক জনের হতে এখনো সকলে আছেন, ইহাও তেমনি নিশ্চিত বিশ্বাস। এটি অভ্ৰান্ত মত বে কেই ছাড়িয়া ঘাইতে পাৱে না। এক **জন গোক** pती कतिएलए हेश श्रकाण रहेक वा ना रहेक, अकल्पत हेंगाड চুরী চলিতেতে, এ বিষয়ে আমার বিলক্ষণ তথা আছে। প্রের লোকের মন চুী কবিতেছে। তাতারা হরা পড়িরাছে, নিশ্চর ने बहिनदा किएटत किएटत कर गड धार्व कहिरएटस, सीवटमह ভাব ভাহাদিগের মধ্যে প্রবিষ্ট হইতেছে।" বেশ বেশবচল কি বিষয় চোর ৷ ঘর্ষন বে উপায় খাটে, দেই উপায়ে জিনি স্বাধনার **हरीत सन्दर्भ हा**लाहेएक नानिस्त्रन । अवस्थान अवस्था नीवित जान विचात कवित्तम, छाणात माल क्षेत्रहत्र क्या छना बात, अरे विनश অনেক্তলি মুৰকের যাথা গাইলেন, আহার পর ঈপর সর্পনের दर्बंद क्या पृत्ति। बारमा क्यांट बारम द्वाराविताक बाहारेवा

अनिरम्भा कंडर वनि बड़ाइक अमेर बड़ाइक बहेताने कानित डीराव महत्र पुष्टिम, राममात्र साराटि दूर विकृष्ट रव छारीव क्रेनाव परेने । अकर क्रेनारत पूरी कवा रक्षनकरत्वेत वीकि विन मा, कोहें मेन्नरेक नमरक व्यक्तातम म्राहर केकिन करण कृतिसान। এই তালে কণিকাতা ঢাকা মননাসিংখ প্রভৃতির বত অচত্র ल्गांत्यना अत्येनारंत रेखवृत्ति रहेना त्रमा । अ प्रमात कीशीन हुनीत बढ़ले प्रदर्शन वहेंगा। विश्व अंकी कवा अवादन बना क्षरंत्राक्त । क्षम क्रिकेत्रणनिम क्वीत वाडाहाडी रहेन ; एवन জীহার ব্যবসারের ক্রতি হইল। এ দর্শনের জালে শোক বড পঞ্জি না। মনে হয়, কেপবচন্তের এবানে একটু চতুরভার বর্মত। वृष्टियोद्धः। दमन्यकृत्यं कृतीय वायमात्र वृत्तिद्वतः सन्। कदान नारे । চিঃকাল এই ব্যবসায় চলে ভাষাত্র উদায় করিতে তিনি তৎপত্র ছিলেন। আগতিওঃ ব্যবসায়ে লোকসান হইলেও তিনি জানিতেন, ভবিষাতে ইহাতে বিলক্ষণ লাভ ইড়াইবে। ভিনি শৃনোর সংক কৰা কহিতে লাগিলেন, কবিশ্ববোগে এই পুন্যকে নানাবিধ আলঙার্মিক ভূবণে ভূবিত করিলেন। সা কাঁদিতেছেন, ভাঁছার -বালুলারিত কেল, মার আঁচল কড হিরাপারার অভিত, এইরণ वाकारिनाम करिया विमालम, व्याम द्यमात्का व्यक्त क्रिकारित मात्र भारत मामारिया प्रत्यत राष्ट्रांत जानियादिन सेराता कीशा क्यांत्र वृद्ध रहेरेनम कीशाता नवा निकिरनमः जात विश्वा मुना जाकाम (बीहा यमित्राकीरात क्यार व्यक्तिकासिक स्टेरमन मा ভাষার। উহার বাল একাশ্যে অভিক্রম করিলেন। বিভাতিনি এক बाब बाक्टक विविध मारक मामाहरूमा, कार बाक्टक काकटकर कुछ और क्या किन अवाम देवावता कडिएमत । और विना कार

বৈশিৰ বন্ধ নাই, বাহা কিছু বেৰিভেছি ভানতেছি কৰা কৰিছেছি,

আ আলি (symbolical) গলিতের সাক্ষেতিক কৰা অকৃতির নার

নার, পঞ্চি ভিন্ন বাজবিক কোন বন্ধ খীকাই। নর, পোলার অকৃতি

বিজ্ঞানবিদ্পল এই কথা তৃলিয়া ভবিবাতে কেলবচন্দ্রের ব্যবসারে
বে বড়ই স্ফল হইবে, ভাহার উপার করিয়া দিতেছেন। সম্বার

আর্থাণ পণ্ডিতেরা সপক্ষ; স্ভরাং দর্শন ও বিজ্ঞান ববন উহার
পক্ষ সমর্থন করিতেছে, ভবন বর্জনানে কভি খীকার করিয়াও

ভবিবাতে ঈররদর্শনভালে লোকদিগকে চিরদিনের জন্য অভিত
করিয়া ফেলিবেন, তাহা ভিনি বিলক্ষণ আনিভেন।

কেশবচন্তে দেহ ত্যাগ করিরা পৃথিবী হইতে চলিরা গিরাছেন, এবন আর তর কি ? এ বলিরা কোন বৃদ্ধিনান পৃথিবতী নর নারীর অনবধান হওরা উচিত নর। এ সকল ব্যক্তির মৃত্যু নাই, লেহাতে ই হালের ব্যবসার আরও বিজীপ হইরা পড়ে। বৃদ্ধ ঈশা চৈতস্য আজ তো আর দেহে নাই, কিড ই হালের আধিগত্যের নিকটে শ্রাট্দিনের কিবীট প্রণত। ই হারো আজও কত লোকের কন প্রতিদিন চুবী করিতেছেন; কত অগণ্য লোক ই হালের জ্লার্ডাদিন চুবী করিতেছেন; কত অগণ্য লোক ই হালের জল্য প্রাণ দিতেছেন। কেলহচন্দ্র সামান্য চত্র চোর ছিলেন না, দেহ প্রেলেও হব মরণ হর না, এ কবা তিনি অব্যেই বলিরা দিরাছেন। বর্ণন সার্হ অথবার নাথ ধর্মারেছেণ করিলেন, তথ্য এই এক নহাপ্রতারণার মৃত স্থাপন করিলেন দে; সাবুর মনে আনবর্গ সংলাই পরিলেভিক হইসাছি, উচ্চার সাইছে আছি। কেলবক্তরের বর্গারেছিলের পর তারিত করবার উল্লেখ্য সালে নিতা জালার বর্ণারেছিলের করিবার জন্য প্রকাশিক করিবার স্থাপন করিবার জন্য ব্যবসায় সালেজিক করিবার কর্মান করিবার কর্মান করিবার কর্মান বিভারে স্থাপরাহিত্য করিবার কর্মান করিবার কর্মান বিভারে স্থাপরাহিত্যক করিবার কর্মান করিবার কর্মান বিভারে স্থাপরাহিত্যক করিবার কর্মান করিবার কর্মান বিভারে স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভার স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভার স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভার স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভারে স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভারে স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভারে স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভারের স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভারের স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভারের স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভার স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভারের স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভার স্থাপর স্থাপরাহিত্যক করিবার ক্রমান বিভার স্থাপর স্থাপ

स्वासकार कार्याक कार्

. त्मानव्या चान- क्षेत्रकि व्यक्ताधः कात विश्वात कतिशहिरमन क्ष अन्य अभिज्ञास करा राष्ट्री द्वानाथा । जिति ब्राहात कतिरामन, हि सन्तिसारमङ सर्व दशस्त्र सर्व । द्वाम् शर्व दशस्त्र सर्व महा। दशस् विमा कि स्थामांक वर्ष क्रिकेश्व शास्त्र ना, विक्र अ स्थासक गरक একটু:বিলেক্স আছে। নে-বিশেষত কি; তিকি আপনি এইবংগ্ন क्रिकारका, "रक्कामात : अः शृतिकीरण क्रमीकारी मार्के : कार्यि विका कर्षा करिएक कार्या बहुत महि महि चात्रि एवन विका वाकि, वानिन्दर्ग तका लहि, ताबिस्क अपन-कडिएक पाहे, अस्ति कारना कार्रे क्यो दक्षात्रवात विद्यान कार्य क्रिक क्या कार्य क्ष्मानः अरे कालि । । चात्रावः काविनातः विश्व स्मानः किः साहरू त आवाम न्यान त्यान विकास नाते, नवक्त-नाते। तम पाति ध्यानके प्रमित्रा कि स्वति । त्यान त्यानात स्वतस्य गुप्ता अस्ति । mail wine nett, divis-fame, men untifices car कवित्र जानामानक्षामान कालिक जातात संस्कृत । साहित स्थापन after, arrestables com representing public from Real Re

म् 🖟 ... प्रारेद्धवा इः ६ निया शास्त्र स्थानि, किछ छारारन्त स्थानना चारिता कर जानम रए, कर प्रथ भारे। अन्य लात्कत करहे कहे, जना लाटका कृत्व स्थ, बारे जागात स्थ, बारे जागात कार्छ।" राव 'काबात এ পৃথিনীতে क्रमीनाती माहे," धरे क्थात मस्या कुछ बजीत हाजूकी तहिताएए। विक समीमाती मार्चे एरव कसीमात्री हाहे। खबीमात्री ना शांकिटन जाननात कमला धांकांच কোৰায় হইবে ? ৰাহারা পৃথিবীর জমীদার ভাহাদের ক্ষমতা इमिटनत, धारः मास्ट्रवत मंतीदतत छेल्दत, किछ हैनि ए समीनातीत व्याकाकती, तम व्यानाती अ शृथितीत व्यतीनाती नव निष्णं काटन त कसीमाती। बास्टरबन भन्नीन लहेना व कभीमाती, तम कभीमाती শ্রীরের মঙ্গে সঙ্গে বিমন্ত হয়, কিন্তু মানুষের আছা লইয়া বে बबीनाती, मा बबीनाती निजा बभीनाती, मा बबीनातीत का कान দিন ধাংঘ নাই। ঈশা চৈতন্য প্রভৃতি শরীরহীন হইয়াও দেখ কেমন **ब्ला**रकत स्वासात छेशात स्वालनारमत श्रेष्ठात विकास कविरण्डाहरू; আত্তৰত শত লোক তাঁহাদের অমীদারিভুক্ত থাকিয়া তাঁহাদের জনা ধন জন দেহ প্রাণ পর্যান্ত অর্পণ করিভেছে। কেশনচল্লের শোভ দামান্য লোভ নয়। মে লোভ পুৰিবীর জনীবারীতে ভুষ্ট रहेरन दकन ? नाका त क्योणांत्रीत वाळानात विश्व ताला धन পরিত্যাপ করিলেন, স্বন্ধন আত্মীয় আত্মনকে পরিত্যাগ করাইলেন; দীৰা আপনার আৰ কুৰোপরি সুমূর্পন করিলেন, তৈতন্য আপনার প্ৰকংশলা মাতা ওপ্ৰিয়তমা পদ্মীকে বিস্থান ক্রিয়া চিরসর্যাসরত व्यक्तित कवित्तन, तारे व्यक्तिकोत्र वाकाशाव (क्रम्बव्य नवीन व्यक्तित्रक क्षर्ण कविरणमः। वैशिशस्त्र किनि सर्वसान् कडिरणन मन्द्र निर्काल २० तथा दक्का क्रीहाविश्रदक नरेशाहे जिनि

वाक्रिकन ; क्षांचार यस सर्वामा क्षांचारक क्रिकालके निवस वाक्रिक তাঁহাবের অবভা ভাবিরা নিরভর আছুল থাকা উচ্চার সময় कीवानं कार्य हिल । वीशास्त्र कम् जिन विवासीत कारिएका উহিয়ের উছোকে বধেষ্ট ক্লেখ দিয়াছেন, এমন কি ভাঁহাদের বিশ্ব ভাবিতে ভাবিতে অকালে তাঁহার দেহ মারাত্মক রোগে আক্রাস্ত হইল, পরিশেষে সেই সকল লোকের জন্য প্রেমানলে আত্মাত্তি मान कतिलन। अरे प्रकल वास्त्रित मर्था कथांखत श्टेरल मध्नांत्र রাত্রি ভাঁহার নিজা হইত না, ইহা স্বচক্ষে দেখিয়াছি, অতএব এ প্রেমের জাল অতিক্রেম করা বে কাহারও পক্ষে সভাব নহে, ইহা আর ৰ্নিতে হয় না। বিজ্ঞান বলে, বাহার জন্য বে ব্যক্তি প্রাণ মন ঢালিয়া দিরা দিন রাত ভাবে, ভাহার সেই ভাবনা ইশার আন্দোলন করিয়া যে ব্যক্তির বিষয় ভাবে তাহার মন্তিক উত্তেজিত করিয়া ভাহাকে চিন্তাৰিত ব্যক্তির ভাবাধীন করিয়া কেলে। কেশব[্] চল্ল বিজ্ঞানের এ কথার প্রতি আছা রাধুন বা না রাধুন তিনি অধ্যাত্মবিজ্ঞানে পারদর্শী ছিলেন। এক বার প্রেমের কাহাকেও জড়াইয়া ফেলিতে পারিলে, তাহার যে আর উন্ধার নাই, ভাহাকে তাঁহাৰ মতন হইয়া বাইতে হইবে তাহা ভিনি কিশ্ৰু জানিতেন। শেষ সময়ে কেবল তিনি এই বলিয়া আক্রেণ প্রকৃষ্ণ कतिराजन, व्यामि तत हैं हानिनातक छानवानि हें हा है होता नुनिरानन না। ৰণিও আমি এই বলিয়া জাঁহাকে চুপ করাইরা দিতাম, আপনি আঁর কত ভাল বাসেন, ঈশ্বর এত ভাল বাসেন তাতেই তাঁকে লোকে বড় গ্রাহ্য করে, আগনি নিজের ভাল বাসার কথা কি निर्देशका १ दक्षित व क्यांत्र जिनि हुन कतित्रा बारेएजन, किस ক্ষয়ত ৰে বেনের অভিন অনিভেছে, সে আভন কি

करें कथार निकाल रह । छिनि करे चा उतन चार्गनारक चार्च छ বিয়া অকালে স্বর্গে চলিয়া বেলেন, কিন্তু জীহার নে থেনের নিগড়ে আলও আনবা বাজা রহিয়াহি, শত শত লোক প্রতিদিন বাজা पिएएएड । अहे कारतब नाम स्तित स्व रह । है राव मानक ক্রিব না প্রতিজ্ঞা উপস্থিত হয়, কিন্তু পোণনে লোপনে বে বাজি-চুরী করিতেছে তাহা হইতে দাবধান হওরা নিতান্ত হুরুই। বাঁহার উঁহোর ব্যবসায়ের সঙ্গী হইয়াছেন তাঁহাদের চির দিনের জ্ঞা মৰ্কনাশ হইয়াছে। উাহারা পালাইরাও ভীহা হইতে পালাইতে পারেন না। এ সম্বন্ধে তিনি আপনি কি বলিয়াছেন পাঠ কর। ভাল। 🛅 কু বিজয় কুঞ্চ গোডামী এ সময়ে পলায়ন কৰিয়াছেন 🕫 এ কথা তালি হয় ভো ভাঁহাকেই লক্ষ্য করিয়া বলা;—"প্রত্যেক बाक्ति प्राहाता लेपहात अहारत अही दहेतारहन, छाहाता स्थासक নামে ঈগবের নামে এক এক জন পাঁচ শত সাত শত লোক ঈৰবের কাছে আনিয়া দিবেন এবং উঁহোরা চুরী করিয়া সকলকে বন্ধ করিবেন। যাঁহারা এরপ কার্য্যে নিযুক্ত ভীহারা প্লাছন কৰিতে পাৰেন না। বৃদ্ধি বিচার যাহা বলুক, প্রাণ ইছা কখন স্বীকার করিবে না। অতএব আমি জানি সে লোক কখন मक रहेरा भारत ना । टारतत कारण कर सना मर्कान । ৰাহাৱা আপনাদিগকে শত্ৰু বলিবে তাহাৱাও মিত্ৰ। ৰক্ষেত্ৰ রজের সঙ্গে যে মিলিড হইরা আছে, সে কিরণে ভিন্ন হইবে ? আমার কনিষ্ঠ অসুলি কি আমার শরীবের সলে বিবাদ করিবে 🏱 ন্দানি আমার কথন পর ছইন্ডে পারি না। ে দিনি এক বার বিদ্ধা হইরা জগরের ভিতরে প্রেমের জালে বছ হইবাছেন, তিনি বাহিরে विवाद रहेता तात्मक तकावत्म विविवत्तत क्रमा कात्क कार्यम,

ইহাতে আর কোন সংশ্রনাই। চোরের ব্যবসার মহৎ ব্যব-সার। সকল পৃথিবী চলিয়া গেলেও সেই আমার খরের ভিতরে ভাই বন্ধুপুৰ স্কলেই আছেন। খিনি ছাড়িয়া পলায়ন করিলেন জুবে গেলেন তাঁহাকে কি ছাড়া যায় ? তিনি চিরদিনের জন্য বাকে क्क कारहर । हुतीत मार्क त्कर भव रहेर्ड भारत मा। " त्काव-ছলের উদার গ্রেম বে এইরূপে দকলকে আস্থানাৎ করিরাছে, ভাছাতে কোন সন্দেহ নাই। একবার বাহার উপরে তাঁহার দৃষ্টি পড়িরাছে, তাহার চিত্ত তিনি চিরদিনের জন্য হরণ করিয়াছেন। चार्निक ध्वा शिक्षां के छैं। हाटक चारनक क्षेत्रांत नाश्चना कवितनम, কিন্তু প্ৰস্তুন। করিয়াও চোরের ছাত হইতে নিক্ষুতি পাইবার আশা ৰুখা। একবাৰ ক্রিলে আর ছাড়াছাড়ি নাই। বছনিপুণ চেষ্টাতেও ভোরের নৈপুথ্য অভিক্রম করা অসম্ভব। তিনি যাহাদিগকে চুরি कतिश क्रमण्य गैरिक्स (क्षिणित्म, जाशाता अम स्कालत अमा (मरे জ্বলে গ্রীধা রহিল। বাহারা ধরা পড়িয়া বিরোধ পরিহার করিয়া টোরের মঙ্গে এক হইয়া গেল, ভাষারা চির জীবনের জন্ম कुछार्थ रहेल ।

বে সকল চোর পৃথিবীতে আসিয়া লোকের সর্কার্থ ছার্ক্ত করিয়াছেন, উহালের এত মাহস কেন ? এত অহকার্যই বা কেন ? আমানের হাতে কাহারও রক্ষা নাই এমন কথা কি কেউ বলিতে পারে ল এ সকল চোরের বুকের পাটা এত বড় কেন, ভাহার কারণ আছে। ই হাছের স্থার কে জান ? ভয়ং হরি। তিনি আপনি প্রাইয়া থাকিয়া অনন্ত প্রেয়কে নানা সাজ্ঞা হয়। চুনীর ব্যবসায় ভালাইতেছেন। আহি কবি, খাকা, ইপা,

ट्यां कें।शास्त्र धान दर्ग कवित्रा भागन कदिशा नितनम, कीशा-বের জ্ঞান বৃদ্ধি রহিল না, আর তিনি সেই এক একটাকে মুখোস্ করিয়া বাহার ভাহার বাড়ীতে চরি করিতে লনিলেন। পাপ, ব্যক্তি-চার, অজ্ঞানতা, মৃত্তা, অবিধাদ, নাত্তিকতা দারা আপনাদিরকৈ लंडेन क्रिया क्रानाक मान क्रिएडएक, बाब कान हात जाहा-त्वत वाफोटि अरवन कतिए भातिरव ना + बाहाता अक्रम सरन করে তাহাদের তুল্য মূর্ব আর কে আছে? বর্বন চোরের রাজ্যে वान, ज्वन भनावन करत काशत नाधा ? खता, मृज्य, बाधि, विभर, भरोक्शात्र ठाविनिटक थाना निया विद्याद्य । এक थाना इंहेटड প্ৰায়ন কর, আর এক থানার বিয়া ধরা পড়িবে। বে বাহা কিছু वड़ मूनावान महन करत, व्यानत करत, एक कतिया वाशिए छोत्र, অমনি তাহাদের উপর চোরের দৃষ্টি পড়ে। দৃষ্টি পড়িলে আর बका नारे। তুমি धनिरे रुठ, चात महिन्दरे रूठ, छानोरे रूठ, चात्र मूर्व हे रुक, मार्ट रुक, वा भागीरे रक, कारतत हूती कर्य किंदू उटे বন্ধ করিতে পারিবে না। পৃথিবীতে প্রতিশবে প্রতিদিন চুরী চলি-তেছে, গৃহত্ব তথন ভানতে পারে না বে, চুরী হইরা গেল, किक वर्षन भित्रत्भारा रमिरिक भाव रव नुकारेवा नुकारेवा रक আহার সর্কানাশ করিয়াছে, তথন আরু চোরের না হইরা ভাহার পতান্তঃ থাকে না। বে সৰল ব্যক্তি স্থচতুর ভাঁহায়া চুরী কার্ব্যে बारा एक मा। फेंहराएक बारा किছू बारह नकति छ।हाबा ह्यादात रूख ममर्ग न कदिया निन्छि । अशान आह हाति कि हुतै। कतिरतन, व्याणिन ठाँहारणव निकटी विविधनत सना नासा शर्फन । मेना भूगा और 6 जना अञ्चि और मरमब लाक। यादाबा काइएक ন্দ দিলেন ভাহারাতাহার অসক হইলেন; আর জিনি তাহাদিনকে

द्वांत माबादेश चामनि छै।शासन बस्स मुकादेश वाविश चरादक 📆 व काम वानाहरू नानिरननः। सहारम्ब अहेतरण मर्सप हतक ছইন অনচ চোরকে ধরিজে পারিল না, তাহারা পূর্বী কুডার্থতা নাজ ক্ষরিক্ষে পারিক নাল এবার যে চোরকে হরি পাঠাইয়াছেন, তিনি শুৰিবীতে সকল ভোরকে লইয়া এমন এক দল বান্ধিয়াছেন বে, কে विक नित्रा याशांटक वितरण शाता कांत्र, जाशांटक स्मेरे विक नित्रा बविद्वा व्यानिता त्रेववनर्गन अवनकारन ध्यमि कतिता कछारेवा क्लिए-ছেন বে, আর পানাইতে পার। অসন্তব হইরা প্রভিরাছে ? বাঁহা-দিগকে তিনি জ্বালে জড়াইলেন তাঁহাদিগের আর এক পদ বাহিত্তে পদাৰ্শন করিবার উপায় নাই, প্রেমকারাগারে তাঁহারা চিরবন্দী চ্ই-পেন। বর্থন একবার সর্মনাশের ব্যাপার উপস্থিত এবং এই সর্পনাশ কার্য্যে করং ছরি রিনিক, তথল চোরের হাতে ধরা দিয়া প্রেমকারাপারে ছির•দিনের জন্য বন্দী হইয়া থাকাই ভাল। আপুন चात चामारनत वृक्ति कोचन चांडेरिया छाटतत रखः रहेरण निकृष्टि পুरिवात कना यह कतिवात किछू अःताखन नारे। स्मरे यथन मकन অপ্ৰহত হইবেই, তথন আজ হইতে সম্পান চোরের হাতে সমর্পক ক্রিয়া আমরা কৃতার্থ হই চোরের সন্ধার বিনি তিনি এবার দুবন আমাণের নিকট আরে আত্মগোপন করিতে পারেন না, মিই ক্যা छमाहेन्न। प्रत्येत मूथ (नवाहेन्न। सामारनत हिन्छ एतन कतिएछ वर्वन वास्त , उर्थन सामहा सामानिशटक कृष्ठार्थ महन कडिया गर्मीय छै।हाड क्रतः कानिता छ। नता कि। कृशानियान शतस्त्रतंत्र मक्रमरक आनीक्तान क्यन दान अवाब इतित अनुर्स क्रियानीना तिविश मकरण स्थाहिक क्त. कार विविध्यत्र क्या छोटात रहेवा नाम।

কেশবচন্দ্র অবোধ্য কেন ?

म्ला ०० माना।

क्रिनेवह्य ष्यावांश (क्स 10

व्याम (कनरहत्स्वत समानिन। अ मितन कीरात कीरवारमाहना করা স্বাভাবিক। তাঁহার জীবন লোকের নিকটে অবোধ্য কেন, ইহাই অদ্যকার আলোচ্য বিষয়। কেশবচন্দ্রের জীবন অবোধ্য, क्षा (कन विलिखिष्ठ), अरखाक बानरवत कीवन कि चरवांचा नक्ष्ण এবন কোনু মানুৰ আছে, ৰাহার মনের ভিতরে প্রবেশ করিয়া ভাহার অন্তরের সমুদার তত্ত্ব আমরা বলিয়া দিতে পারি 🕈 প্রত্যেক ব্যক্তির আত্মাই তো অবোধ্য। এ কথা সত্য বে, কোন্ ব্যক্তির মনের অন্তত্তম প্রদেশে কি আছে আমরা তাহা বলিতে পারি মা, কিন্তু ভাহার ক্রিয়ার মূল আমরা মহজে ধরিয়া ফেলিডে পারি। কোনু ব্যক্তি কোনু প্ৰকৃতি ও বাসনার অধীন ধনি একবার আনবা ইহা জানিতে পাৰি , ভাহা হইলে অনারাসে বলিতে পারি, সে राकि धपूर धपूर धरशबीत धपूर धपूर धरातत कार्य করিবে। সাধারণতঃ লোকে বে সকল প্রবৃত্তির ছারা পরিচালিত হর, দেই সকস ভাহাদিগকে কোনৃ সময়ে কোনৃ প্রকার কার্য্যে প্ৰাৰ্থত কৰে, ইহা ভাহাৰা অবগত আছে। অবগত আছে বলিয়াই ভাহারা আপনার সমানাবস্থাপর লোকদিপের বিষয়ে অনায়াসে বলিয়া দিতে পারে, তাহারা সেই সেই অবছায় কি প্রকার কার্য করিবে। পৃথিনীতে সময়ে সময়ে এ প্রকার লোক আসিয়াছেন, বাঁহারা নৌকিক প্ৰবৃত্তি বাসনা ছাৱা পরিচালিত হন না, বাহাদের ক্রিয়ার

^{ै ।} वहे वार्यसम्बर्गः अत्रतम् । विकासम्बर्धः व्यवसम्बर्धः वहेनशानस्य । इत्योशनाचानसम्बर्धाः अस्य सम्बर्धाः सम्बर्धः

বৃদ লোকাতীত। এই সকল ব্যক্তিকে তৎকালের লোচে
চিনিতে পারে মা। তাঁহাদিগকে স্বতই তাহারা বৃদ্ধিতে কেরে, ততই খোর অক্কারে নিপতিত হয়। এ অবস্থান্ত তাহ
কার কি করিবে, রুখা নিন্দাবাদ ঘাণা তাঁহাদিগকে অপদম্ম করি
কান্ত করে, কখন কখন প্রাণে পর্যান্ত বিনষ্ট করে। বি
এক্ষপ করিরাও তাঁহাদের লোকাতীতত্ব তাহারা বিনষ্ট করি
পারে না, কালে তাহারাই আবার তাঁহাদিগকে দেবতার প
আরুত করে। না বুনিতে পারিরা বেমন তাহারা তাঁহাদিগ
নিন্দা ও স্থপা করিয়াতে, তেমনি না বুনিতে পারিয়া তাঁহাদিগে
দেবত্ব আরে, প্রবিল; তুই দিকেই অবোধ্যত্ব সমান।

কেশবচন্দ্রে যদি এমন কোন লোকাতীত বিষয় হি
বাহা লোকে বন্ধ করিয়াও বৃক্তিতে পারে না, তবে তাহা বুঝাই
ভাল করিয়া বৃক্তিতের আপনার নিকটন্দ্র বন্ধ্যুগণও যদি তাঁহা
ভাল করিয়া বৃক্তিতে না পারিয়া থাকেন, তাহা হইলে অপর লে
বৃক্তিরে ইহা কি সম্ভবপর ? কেশবচন্দ্র প্রকাশ্তে এবং গোণ
আপনাকে বৃক্তিবার জন্ম প্রয়াস পাইয়া যদি তাহাতে অকৃতক
হইয়া থাকেন, তাহা হইলে যাহারা আপনায়াই তাঁহাকে ব
করিয়া বৃক্তিতে পারেন নাই, তাঁহারা আপনায়াই তাঁহাকে ব
করিয়া বৃক্তিতে পারেন নাই, তাঁহারা আপনায়াই তাঁহাকে ব
করিয়া বৃক্তিতে পারেন নাই, তাঁহারা আপনায়াই তাঁহাকে ব
করিয়ার জন্ম যন্ধ করেন কেন ? হাঁ, এ প্রকার মন্ত নিক্ষাল বা
আনে হন্ত, এবং যত বান্ধ এ সম্বন্ধে যন্ধ করা গিয়াছে, তাহাতে
বড় কৃতকার্যা হওয়া গিন্নাছে তাহাও নহে। কেন না তাঁ
মন্তবন্ধ এত বৎসর যাহা বলিয়া আসা হইতেছে, তাহ
ভাহাকে বৃক্তিবার পক্ষে এ সমন্তব্ধ লোকের কত ভূর সায
হুইয়াছে যলিতে পারা, যান্ন না, কিন্ধ বে সকল কথা।

হইয়াছে, তাহার বে কেবল মর্ম্ম পরিপ্রাহ করা হয় নাই ভাষা নহে ভাহার কোন কোন অংশ অপরাপর অংশের সহিও বিচ্চিত্র করিয়া সাধারণ ব্যক্তিগণ এমন সকল অর্থান্তর ভাবান্তর ঘটাইয়াছেন বে, ভাহাতে কেশবচন্দ্রকে বাহারা বুঝাইভে পিয়াছেন, ভাঁহারা আপনারা অব্রান্ধোচিত মত প্রচারের দোবে দোবী হইয়াছেন। কেলবচন্দ্ৰকে বোধগয়া কৰিতে গিয়া যদি ডিনি আৰও অবোধা হইয়া উঠেন, তাহা হইলে কি আর এ সম্বন্ধে কোন যত করা बाहेरव ना १ अधिकक देशाए यनि'दकरन अभिष्ठेरे घटि, छारा हरेल স্থাপ কার্য্যে হস্তক্ষেপ করিবার প্রয়োজন কি ৭ অপরকে বুরাইতে পিয়া ৰদি আপনাৱা তাঁহাকে বুঝিতে পারি,ভাহাতে কি লাভ হইল না ? আর যদি আমরা নিজে বুঝিলাম, তাহা হইলে এখন না হউক ইছার পরে তো লোকে তাঁহাকে বুঝিবে। স্থতরাং যদি বুঝাইডে निश्न जिनि चात्र घटवांधा हन, जाहा हहेटन हु: व कविवात विवश কি ? বাহা কর্ত্তব্য তাহা করিয়া বাওয়া আমাদের প্রতি আদেশ। আমরা আদেশ প্রতিপালন করিয়া নিজে কৃতার্থ হইব, সময়ে অপরেও কুতার্থ হইবেন।

কেশবচলের জীবনের মূলতত্ত্ব কি সর্কপ্রথমে আমরা ভাছাই
নির্কাচন করিব। তাঁহার জীবনের প্রধান মূলতত্ত্ব স্থানীনতা। এই
মূলতত্ত্বসক্ষে তিনি আপনি বলিয়াছেন, "আমার ইউদেবতা
আমাকে ধর্বন মন্ন দিয়াছিলেন, তর্মধ্যে স্থানীনতা মহামন্ত্র নিবিষ্ট
ছিল।" "ক্ষনত কাহারও অধীন হইও না" এই প্রধান সংশহামর্শ সর্কপ্রথমে তিনি ঈবর হইতে লাভ করিয়াছিলেন। এই
নংগ্রামর্শের ফলে তাঁহার জীবনে কি হইয়াছিল আমরা সকলেই
বিদিত আছি। ঈবর ভিন্ন আর কাহারও বা কিছুরই অধীন

रहेर मा, और अञ्चलका नहेशा जिम कीरन बाउक करिएनमें। ভিনি বৈক্ৰপুৰে জন্মহণ করিয়াছিলেন। ভাঁহার পিডামহ প্রম বৈষ্ণৰ ছিলেন। ৰম্বিও আমি ই হার লিখিত কডকওলি দৈনিক व्यक्ति तिविद्याहि, अवर अक्रम व्यक्ति। रेक्क्रवनमास्य विवत, তথাপি ইনি সর্বভোভাবে চুচ্বিরাসী বৈষ্ণৰ ছিলেন ভাহাতে **कान मरणह नाहै। दिक्यकृत्म क्याज्य क**तिश्रा कमन्त्रस्य व এক জন প্রমন্তক বৈক্ষর ছাওছাই সম্ভাব ছিল। বিশেষতঃ পিত।-यह रचन चिंछ ख्या वश्राम छै।शादक श्रिनाम मञ्ज निशाहित्तन, এवः त्म बरहात व्यंषि जिनि वानाकात्मक खरहना श्रीमर्गन करत्न नाहे. তৰন বৈক্ষবস্প্ৰদায়ের বন্ধনে আবদ্ধ হওয়া তাঁহার পক্ষে নিডান্ত সভাবিক ছিল। ইংরাজী পিক্ষার প্রভাবে তাঁহার পৌতলিক-ভার বিশাস শিধিন হইল, তাহার সঙ্গে সঙ্গে এইধর্মের প্রভাব আসিরা তাঁহার উপরে নিপতিত হইল। বীষ্টান পাদরিপন ভাঁহার সহিত সম্বন্ধ ও পরিচর করিতে লাগিলেন, ভাঁহার সময়ে ৰত কৃতবিদ্য ঐষ্টিধৰ্ম্মের আত্রয় গ্রহণ কবিলেন, কিন্তু কেশবচন্ত্রের খাধীন চিত্ত প্রচলিত গ্রীষ্টধর্ম্মের আশ্রয় গ্রহণ করিল না, প্রীষ্টধর্ম্মের নারভূত উপার প্রার্থনা তাঁহার জীবনের মূল অবলম্বন হইল। ভিনি বৰ্ণ কাৰীৰ ভাব আগ্ৰয় ক্রিয়াছেন, ঈরর ভিন্ন 🕬 कारात्र आजर प्रन जिनि खर्ग कतिरान ना, एवम व्यार्थना বিনা আর ভাঁহার কি সমল হইতে পারে ? সকল বিবরে খবন ক্সবরকে জিল্ঞাসা করিয়া করিতে হইবে,ওখন আর তিনি অস্ত কোন উপাত্তে ভাহা সিদ্ধ করিবেন ? ডিনি বেদ বেদান্ত পুরাণ কোরাণ না বাইবেল শান্তকে জীবনপথের আলোক করিলেন না, কোন ভঙ্ক रा वर्षधर्श्वरूप बाला नहेरान ना, हिन्दु द्वीक मूत्रम्यान वा

बैडें।न (कान अस मच्चामाद्य व्यक्ति एडेटनन मा ; दक्त ना पादी-নতা তাঁহাকে উচ্চঃলরে বলিভেছিল, 'অধীনতাশৃঞ্জলে দলীয় मनत्क वक दहेटल (मध्या इहेटन मा; मागच शीकांत कता हहेटन ना, काराविश्व भवज्ञतन भए। रहेव ना ; श्वक्रज्ञतन निक्ते आण्-विक्तत्र कता हरेटव ना ; श्चकविटमरवत्र किन्नत्र हरेन्ना वस्ता कता হইবে না; কোন এক সম্প্রদারের মধ্যে পড়িয়া দিবারাত্তি ভাহারই ফা ছোমণা করা হইবে না *।" স্বাধীনতা স্নভরাং ভাঁহাকে ঈশবের সহিত সাক্ষাৎসম্বন্ধে সম্বন্ধ করিল; ঈশ্বর ভিন্ন জার কেহ তাঁহার আলাপপ্পরিচয়ের ব্যক্তি রহিলেন না। তিনি আপ-मात्र मत्नत्र कथा ज्ञेषदत्रहरे निक्टे गुरू कतिराजन, विजीत गुरूटक কোন দিন প্রামশ্রতংগের জক্ত খীকার করেন নাই, কেন না जाहा हरेल जिसवरक छाजिया स्मरे वालिव स्वधीन हरेरण हरेरव। यथन (च कान दिवस উপश्विष्ठ हरेष, जाहारक श्रेशनतकरे स्नाना-ইতে হইত। স্মুড্ডাং সেই মনের কথা বিজ্ঞাপন প্রার্থনার আকার ধারণ করিবে, ইহা আর বিচিত্র কি ? স্থাধীনতা হইতে প্রথম উপায় প্রার্থনার স্মাগ্ম হইল। প্রার্থনা অবলম্বিত হওয়াতে তাঁহাতে স্বাধীনতা অক্সন রহিল।

এখন আমরা সহজে বুঝিতে পারিব, কেশবচন্দ্র প্রথম হইডে লোকের নিকটে অবোধা হইলেন কেন ? যে ব্যক্তি আপনাতে আপনি থাকে, কাহারগু নিকটে গৃঢ় কথা খুলিয়া বলে না, কোন চালে কোন বিষয়ে পরামর্শ জিজ্ঞাসা করে না, তাহাদের মত কার্য্য

ক কেশবচন্দ্রের উজিওলি বলিবার সময় ও বতঃ উল্লিখিত হইমাহিল। বয়টি শরিকৃত করিবার জক্ত এখন স্থানে স্থানে উহা উক্ত ক্রিয়া বেঞ্চ। মান

কর্ম উপায়াদি অবলম্বন করে না, ভাহাকে বোরা অসম্ভব। কেশব-ছন্ত্ৰ ৰে পথ ধরিদেন, তাহা নিভান্ত দতন পথ। বদি তিনি বৈকৰ ছইতেন, অন্ততঃ বৈষ্ণবেরা তাঁহাকে চিনিতেন; যদি এটান হই-তেন, তাহা হইলে হিশুগণের বেষভাজন হইলেও বীষ্টানগণ জীহার কার্য্য ও পতি বুঝিতে সমর্থ হইতেন। তিনি বদি বেদ বেদান্তের পক্ষপাতী হইয়া তাহার অমুসরণ করিতেন, বেদান্তবাদী স্রাহ্মগণ উাহার ধর্ম্মের রেখা কত দর বুঝিরা লইতেন। তিনি বিষয় কর্ম্মের পথ ছাড়িলেন; কোন ব্যবসায়ের পথ ধরিলেন না বে,বিষয়ী লোকেরা তাঁহার বিষয় বুঝিবেন। কেশব্চন্দ্র পূর্ণ স্বাধীনতা অবলম্বন করাতে সকল ধর্মা, সকল সম্প্রদায়, সকল প্রকার ব্যক্তির নিকট অবোধা হইয়া পড়িলেন। তিনি আপনিও আপনার পথ জানিতেন না: কেন না যে ব্যক্তি সম্পূর্ণরূপে ঈশ্বরের হস্তে আপনাকে ছাডিয়া দিয়াছে, সে ব্যক্তি জ্বানে না ঈশ্বর কখন তাহাকে কোন পথ দিয়া লইয়া যাইবেন। ঈশ্বর একটা সঙ্কীর্ণ প্রথমাত্র কেশ্বচন্দ্রের নিকটে ব্যক্ত কবিয়াছিলেন, তাহার অগ্র পশ্চাৎ চারিদিক খোর অন্ধকারে আছেন ছিল। স্বাধীনতার জন্ম তিনি যাঁহার হাতে আপনাকে ছাডিয়া দিয়াছিলেন যদি তাঁহার উপত্তর প্রথম হইতে তাঁহার পূর্ণ বিশ্বাস না ধাকিত, তাহা হইলে কখন তিনি আপনার পূর্ণ স্বাধীনতা রক্ষা করিতে পারিতেন না। **খোর অন্ধকারের মধ্যে** একটু একট বেশামাত আলোক প্রকাশ পাইতেছে, সেই আলোকে যে একটি मझौर्न शव (मचा वाहेराउटक, अ मिक् अमिक् मृष्टिभाष ना कतिया (महे সন্থীৰ্ণ পৰ দিয়া চলিয়া যাওয়া সামাশু বিশাসের কার্য্য নহে। অককার रहिर्दित क्षत्र हत्र, क्षत्र हहैतारे क्षत्रकः त्र शर्यत्र शृक्षिकश्वरकः জিঞ্চাদা করিতে, হতই মন সত্তর হয়,কিন্ত কেশবচক্র ছাধীনভামক্লের

বলে স্থিরচিত্ত থাকাতে তাদৃশ ভরে কাহাকেও কিছু ভিজ্ঞাসা করিতে व्यवनत हम नारे। अ मिरक ७ मिरक पृष्टि ना त्राविता रकरण क्रेय-রের প্রতি ধবন তাঁহার দৃষ্টি ছির ছিল, তথন তিনি অক্কারাবিষ্ট कुठ महीर्भ शर्वर रुपेक ना कन, किनरे वा छारा राहाहरवन न কেশবচল্ৰ যে পথে চলিতেছেন্সে পথের সংবাদ যখন তিনি আপনি জানিতেন না, বুৰিতেন না, তখন অপরে তাহা বুরিবে কি প্রকারেণ **क्यव्हार्य अरे ना जाना ना वालात्र छाव हित्रमिनरे हिल। अरे** জন্ত তিনি বন্ধুগণকে সর্বাদা অনুরোধ করিতেন, খেন তাঁহার আভিনয় তাঁহারা স্কলে বহন করে,তাঁহাতে আরও অনেক বিষয় আছে বাহা এখনও প্রকাশ পায় নাই। এখনও প্রকাশ পায় নাই, ইহা তিনি সর্বাদা বলিতেন কেন ? এই জন্ম বলিতেন বে, তিনি ৰাহার হাতে আপনাকে ছাড়িয়া দিয়াছিলেন, ডিনি ক্রমাৰরে ভাঁহাকে টানিয়া লইয়া যাইতেছেন, সম্মুখে আরও কত কি রহি-শ্বাছে তাহা তিনি এখনও দেখিয়া উঠিতে পারেন নাই। কি জানি বা বন্ধুগৰ পথে সঙ্গে চলিতে চলিতে কোথায় বাইতেছি বলিয়া ভয়ে পশ্চাৎপদ হইয়া পড়েন, এ জম্ম পুন: পুন: ভাঁহাদিগকে জালার সাবধান করিতে হইরাছে। আর এক কথা এই, এই ক্রেমারত্বে অগ্রের দিকে পতি হইতে কেশবচন্দ্রে অনন্ত উন্নতিতে বিশ্বাস উৎপন্ন।

কেশবচন্দ্র লোকাণীত পরে চলিতেন, স্তরাং তিনি পার্থবটী লোকদিনের নিকট নিতান্ত অবোধ্য হইবেন, ইহা আর বিচিত্ত কি ং এখন দেখা উচিত, খাধীনতা উচ্চাকে ঈশবে বিশাস, ঈশবের নিকটে ভাগরের কথা জ্ঞাপনে প্রবৃত্ত কবিল, ভারার পর কীহাকৈ কোথাৰ লইয়া পেল। 'স্বেক্ষ্চারের অধীন ইঞ্চা

पहेर मा अवस्थातम अदीन वस्ता वरेटन ना, ट्यारवड अदीन रावक प्रदेश मा, स्मारक प्रदीन एक्ट्रा एरेटर या, रवान टाकार किन्द्र रमानकी ए छन्। एरेरन ना, जाबीनलाकनिक धरे रह बारिका ষ্টাছাকে বিবেকী করিল। এ সকলের স্বাগনি বশীভূত হওল। कृरत, व्यनताक देशात बनीकुछ श्रदेष विविद्य कांशात मानत किलात. কেবন প্রস্তালিত ভাব উপস্থিত হইত। আপনার জীবনের তত্ত্ব বলিতে লিয়া তিনি বলিয়াছেন, "আমি দাসত্ব সহু করিতে পারিতাম না, এখনও পারি না। কাহাকেও বাসনার বলবর্তী, কি রিপুর বল-ৰভী দেখিলে অভায় বোধ করিতাম, কোন ক্রমেই সহিষ্ণু হইতে পারিতার না ৷ আমার অন্ত অধীনতা কাটিবার জন্ম সর্কদাই **इक्सक् क**तिष्ठ।" जिनि जापनि तिरश्रकत कथीन इहेलान, जापत-কেও বিবেকের অধীনে আনিতে বতু করিলেন। এই যঞ্জের প্রথম ফল সম্বত্সভা; সম্বতে নীতির সাম্রজ্যে খোষিত হইলে ভাঁহার বন্ধুগণ সকলেই বিবেকী হইয়া নীতির অনুবর্তনে প্রবুত্ত ছইলেন। ক্রোধ লোভ প্রভৃতি রিপুগণকে বিবেকের অধীন করিয়া নীতিমান হওয়া তাঁহার সকল বন্ধুর ব্রত হইল। একটু অস্ত্য বা মিখ্যার সংশ্রব জাঁছারা দূরে বিষবৎ পরিত্যাগ করিতে কাল্ড ছইবেন। তাঁহার বন্ধুগণ জনসমাজে নীতিমান্ বলিয়া 🐃 চিড হইলেন। সম্বতের প্রাধান্তসমায় মনে হইতে পারে, কেশবচন্ত সকলের বোধগম্য ছইলেন, কেন না নীতিমতা কে আরু না বুৰিতে পাৰে; কিন্তু কেশনচন্দ্ৰের জীবনের সঙ্গে অবোধাত কোন कारनहें পतिस्छ हहेवांत्र कात्रण हिन ना। जिन नीजिक्षांधास्त्रज्ञ ममरत अन्तर निकृ निका वक्षात्व निकटि भगाञ्च व्यवसाय हरेलन। "বৰুৱা বলেন এইটা কর; আমি তাহা করিনা। অয়ের ভাল

কৰার আল কার্যন্ত করিব না, ঈবনের করার করিব। অন্তের্থ করার বাহা করিলান না, ঈবনের করার তাহা আন্তের্থর নহিত করিব। যত কর্ণ না ঈবরের করা তানিব, তত কর্ণ লামি কার্য আরম্ভ করিব না।" এইরূপ বাঁহার প্রতিজ্ঞা তিনি বন্ধুবরের নিকটে পর্যন্ত করিবরের অনোবা বাকিবেন, ইহাতো আর বনিতেই হয় না। "বন্ধুবান্ধর বাঁহারা, ধর্ম্মেতে বাঁহানের সহিত নিলন হইয়াছে, তাঁহাদিগকে মানিও, আতা বলে বড় তার করে। ব্রথ বাঁহারা বিশেষ অন্তুগত, ধর্মে সংকর্মে অন্তর্গক, আন্তরের সহিত তাঁহাদের অধীনতা বীকার করিও; মনন বলে, অধীন হইতে আমি তীত হই! কোন বিশেষ বন্ধুর মায়াতে আমি বন্ধ হইন না।" বন্ধুগরের সম্মন্ধেও বর্ষন এরূপ ব্যবহার, তাঁহাকে অন্ত লোকে বুনিবনে দ্বের কথা, বাঁহারা সর্বাধা নিকটে থাকিতেন সম্বেথ বাকিতেন, তাঁহারাই তাঁহাকে ব্যাহ্ববেন, ইহা কি কথন সম্ভব ।

কে ঢাজিতে এরপ সাধীনতার প্রাবল্য, সে ব্যক্তি এতখালি বছু লইরা চিরন্ধীবন একত্র কি প্রকারে কাটাইয়া গেলেন, ইছাত এক বিষম সমস্রা। পৃথিবীতে তাঁছার অবস্থানকালে বাহার। তাঁছার দক্ষে মিলিত ভাবে ছিলেন, তাঁছার অন্তর্ভানের সঙ্গে সঙ্গে তাঁছার দক্ষে মিলিত ভাবে ছিলেন, তাঁছার অন্তর্ভানের সঙ্গে সঙ্গে তাঁহার বিচ্ছিন্ন হইরা পড়িলেন, ইছাতে এই দেখার বে, ই হারা তাঁছার চরিত্র হইতে বে স্বাধীনতা শিক্ষা করিয়াছিলেন, সেই স্বাধীনতার আতিশব্যবশতঃ পরশাবে মিলিত বাকিতে পারিলেন না, কিন্ত তাঁছার ভিতরে স্বাধীনতাব্যতিরিক্ত আর কোন মূলতক্ব ছিল, বাহার অন্ত তিনি সকলকে একত্র বাবিলা রাধিয়াছিলেন। এ মূলতক্ব স্বাধীনভান্তরক, স্বাধীনতার সহিত অবিব্রোধী। সে মূলতক্ব কিন্তু সমতা। এ সমতা স্বাধীনভাই

জাঁচাকে শিক্ষা দিয়াছে। "বারা ঘারা বলি সকলকে ভুলাইতে হচতী করিভান, বলে গলভূঞ করিবার হলি আলা হাত্ত্বিত, আমার ৰল লোকে পূৰ্ব হইড। স্বাধীনতাকে দলপতি 💐 লাম। এই জ্ঞ আমার সঙ্গে বাঁহারা অবস্থান করেন, উঞ্জেপ্তিক আমি বধু विन, चाबि छ। हारणद शक्न विन मा। पावी कार हरेर ... ছাধীনতা ৰাজুৰকে ভাকিৰে। ইহাতে গোলী আকে । অন্তৰ্গিরি কখনও করিব না। অধীন হওয়াই আনি অভ্যক্ত স্থা কৰি। আমাতে বাহা স্থা কৰি, অভেতে জিলা স্থা কৰি না 🐧 দলের সামান্ত কাহাকেও আমি অধীন দেখিতে পারি না इक्ट रा चरछत अथीन इटेरन, जाशा स्वविद्यंत भाकि का, आसाव শ্বৰীন ৰদি কেহ হয় তাহাও আমার অত্যন্ত অস্ক : আকু এক জন মনুব্য জামার অধীন হইবে ? পিতার নিকট জাতি কি উত্তর দিব 📍 আমার মত আর এক জনের খাড়ে আমি চাপা 📆 আমার শাসনে অপরকে শাসিত করিব ? মায়ার মোহিনী মূদ্দি গ্রন্থাইয়া দলে জানিতে চেষ্টা করিব 📍 অপরকে আমি আমার খ^{্টা}ন করিয়া রাখিব 📍 ইহাতে নরক আমাকে হাঁ করিয়া নিলিবে : 💥 ও লাখি মারিয়া ফেলিয়া দিবে। আমার বদি দল না হয়, এ সমস্ত বৃদ্ধি কাছে না আদে, নিজে ধ্বন দাস নই ত্বন অপ্রকেও দান করিব না। এ কণাগুলি কি দেখাইয়া দেয় ? সম্ভা। আৰি বেষন স্বাধীন, অপরে ডেমনি স্বাধীন, আমি বেমন ঈশরাধীন, अभारत एक्सन क्रेयवाधीन, अस्ति दिसन साहाटल वस नहें, अभाव-কেও তেমনি আমাৰ মায়ায় বন্ধ হইতে দেওয়া হইবে না। কেখব-চল্ল খলপতি সকলেই জানেন, এই সকল কি দলপতিসমূচিত ক্ষা ? কোষার কোনু দলপতি, বলের লোকদ্পিকে এরণ পূর্ব

কারীনতা দিয়াকেন ই দলপতি হই বা বাবিনতাকে বলগতি করিবা
দিয়ে করান, ইহা সর্কার অবোঞ্জঃ উহার আপনার লোকেই
বখন উহাকে এই বলিরা তং রনা করিয়াছিলেন, "তৃমি নিভাক
মুর্কান দলপতি, আপনার লোকদিবকে খাদন করিছে পার না;"
তথন তিনি কি উথর দিয়াভিলেন, "ইচ্ছাপ্র্কাক কেহ অধীন না
হইলে বলপ্র্কাক ভাহাকে অধীন করা ভাহার (কেন্বচন্দ্রের)
নত নহে। বদি ইটি মুর্কালতা হয়, তবে ভাহা স্বাবের, কেন না
তিনি বলপ্রকাক কাহাকেও অধীন করেন না।" কেনবচন্দ্র আপনি
বাধীন এবং অপরকে পূর্ণ খাবীনতা দিয়াও কোন্ মূলতভ্বের বলে
সকলকে একত্রে বান্ধিয়া রাধিরাছিলেন, এখন আনরা বুমিতে
পারিতেছি। আল্মসমান অপরকে দর্শন করিরা সন্তম দান করিতেন ইহাতেই ভাহারা ভাহাকে ছাড়িয়া যাইতে পারেন নাই।
এই আল্মসমান অপরকে দর্শন ও সন্তম্বান ।

কেলবচলে স্বাধীনতা ও সমতা এ তুই মূলতন্ত্রের বে বাড়াবাড়িছল, ইহা তাঁহার ব্যবহার হইতে সপ্রমাণ হওয়া, সমূচিত। জিন্ধি নকুগণের সহিত ব্যবহারকালে কথন কাহাকেও সাক্ষাৎ সমজে কোন সময়ে আদেল বা অভ্রোধ করিতেন না। ইহাতে আনেক সময়ে কার্য্যের কাতি হইত, তিনি এক কথা বলিলে সহজে বাহা হইতে পারিত, তাহা এই প্রকাবে হইত না। বিনি যে বিষয়ের ভার এছণ করিতেন, সে ভারস্থাকে তাঁহার সর্কাতামুখীন প্রভূতা থাকিত। সেই ভার গ্রহণ করিয়া এই ক্রপ নিরভূশ ভাবে কার্য্য করাতে উহার প্রক্তার প্রচুর প্রমাণ পারিবাহিক অ্থের অপ্রচুর হইয়াজ, তিনি কোন কথা না বলিয়া সে অপ্রচর বহন করিয়াছেন। জাইকা সমূদে বন্ধুগণ পরশার কলহ করিয়া তাঁহার শান্তি হক্ষ করিয়া

নহাকে, সৰ্বায় বলনীতে ভল্লান্ত উল্যাব নিজা হয় নাই, আ
আপনি কোন প্রকার প্রতিরোধ করেন নাই। প্রতি ব্যক্তি আ
নার কার্য্যের জন্ত স্বায়রের নিকটে নায়ী, অপরে ভারাতে হয়
কোন করিবার কোন অধিকার নাই, ক্রান্তাহ্য এড দূর তাঁহ
কুচতা ছিল বে, একবার তাঁহাকে বলিতে তনিয়াছি বে, কে
ব্যক্তি বলি তাঁহার সম্পুর্বে খুনও করে, হরত তিনি তাহার প্রা
রোধ করিবেন না *। কোন বন্ধুকে তিনি সাক্ষাৎসম্বন্ধে বি
বলিতেন না। একবার তাঁহাকে জিজাসা করিয়াছিলান কথনই বি
তিনি সাক্ষাৎসম্বন্ধে কাহাকেও কিছু বলিবেন না! ইহার উজা
তিনি বলিয়াছিলেন, বলি কোন ব্যক্তির সহিত একজানম্বন্ধ হ
ভাহার ভাবের সহিত নিজের ভাবের, ভাহার কথার সহিত নিজে
কথার কোন প্রভেন্ধ না ধাকে, তাহা হবলৈ সাক্ষাৎসম্বন্ধে বলিবে

এ কথা গুনিয়া মনে হয় ইহা সাধীনভার অপনাবহার, কিন্ত এক বিবেচনা করিয়া দেখিলে দেখিতে পাওলা বায় যে, 'হয়তো প্রতিরে ভরিবেন না,' এ কথার মধ্যে ঈশবের আন্দেশের ব্যাপেক্ষিত্বে বিশ্বার্থিয়াছে। এক্ষের কার্যে অপরের হতকেপ করিয়ার কোন অধিকার না ইহা নভা, কিন্ত বনি ইশব হতকেপ করিছে বলেন, ভাহা হইলে হতকে করিছে পারা বায়। কেশবচন্দ্র করণাও কার্যাকে আপনি সামন করিছেন, পানন করা প্রয়োজন হইলে নভাগত বিবেক ভারা নালন করিছেন, গানন করা প্রয়োজন ইইলে নভাগত বিবেক ভারা নালন করিছেন, গানন করা প্রয়োজন ইইলে নভাগত বিবেক ভারা নালন করিছেন ক্ষেত্র একসমার ভিনি একটি বছুর বিধানে অধিবানস্থাক কার্যার বিভাগি প্রকলি বাই বালিয়া প্রতিবাধি করিয়া রানিয়াহিলেন কার্যেক অধীন না করার সক্ষেত্র করিছে বলিবেন।' ইনার বর্গ এই বেশবে আন্তর্গন কিন্তে ভিনি ইশবের আবেশ পাইছেন শেখানে ভাহা অধিকারের বিহত (with authority) বলিছেন।

त्रादित ; संस्था कान कारन मांकारमध्यक किंदू बनियन ना। অঞ্জ প্ৰায়ন্ত্ৰিবছনতা উপ্ভিত হয়, এ ভয়ে ভিনি একা কোন ৰদ্ধুর সহিত কোন বিষয়ের মীমাংসার্থ কথা কহিতেন না, জিল্লাসা ্করিলে বলিতেন, সকলে আস্থন ভাহার পর ক্রা হইবে। কাহা-েকও কোন বিষয়ে আধেশ কয়া তাঁহোর রীতি ছিল না। দাসগণ-সম্বন্ধেও এ বিষয়ের ব্যতিক্রেম করিতেন মার্ট ভাহাদিপকে কিছু ৰলিতে হইলে, এমনই ভাবে বলিতেন বে, বেন বাহা বলিতেছেন, ভাষা করা না করা ভাষাদের ইচ্ছার উপরে নির্ভর করে। দাস দাসী প্রভৃতিকে তিনি কি দৃষ্টিতে দেশিতেন, তাহা তৎপ্রবর্ত্তিত উৎসবপ্রারস্তকালে দাস্বাসীলণসম্বন্ধে যে প্রার্থনা আছে তৎপাঠে সকলে বুরিতে পারিবেন। কেশবচন্দ্র কর্মণ্ড কাহাইও ষাধীন তিয়াতে হস্তক্ষেপ করিতেন না, ইহাতে ভাঁহার कोनटन वक्तविटक्कन्छ विविद्यास्त्र। व्यस्त द्यान द्यान वक्त উহোর প্রতি অবিধাস সমুপদ্বিত হয়, তথন ডিনি তাঁহা-দিরকে পাঁচটা কথা বুঝাইয়া বলিলে হন্নতো সে **কালের জন্ত** • বছুবিচ্ছেদ নিবাৰণ হইত, কিফ তাহা করিতে পারেন নাই; কেন না তাহা হইলে কথায় বাৰ্তায় ভূলাইয়া লোককে দলে বাৰিবার জন্ত বহু তাঁহাতে উপস্থিত হইত এবং এই**রণে অপরতে মুদ্ধ ক**রিয়া রাধিবার প্রবৃত্তি জন্মিত। এক সময়ে এক জন তাঁহার বছু কোন একট্ট পরোপকারের কার্য্য করেন, তিনি জানিতেন এ কার্য্যের **छत्रच कन जान हरे**दर ना ; किछ उश्कारन जिनि छाहात कान थाजिरवाच कविरामन ना। यथन छिनि विभागवाच रहेरामन, छवन কেশবছল্র বলিলেন, আমি ইছা পুর্কে জামিতাম। বন্ধু বলিলেন, **एटर (कन छड़न रागन नाई ? लिनि छेखत निर्मन, जारन दिनता** 3

বিলে কি, আর নিজা হইও ? পরীকাবিপনে পড়িয়া লে নিজা হয়, কাহারও তাহাতে হস্তক্ষেপ করিয়া লে নিজা আ করা উচিত নর, কেশবচক্র ইহা বিশক্ষণ জনিতেন। পুনি নিকটে এ সকল কার্যপ্রধানী অবোধা। এ পথ বাহারাই আ করিবেন নিশ্চর তাঁহারা অবোধা হইবেন।

খাধীনতা ও কমতা এই হুই মূলতত্ব হইতে তাঁহাতে छेनचिछ हरेन, अधन छाहारे बना साछक। अक श्राधीनछा हरे ठाँहारक विचाम, विद्युकं ও প্রার্থনা সমাগত হইরাছে, ইহা আ পূর্বে দেখিরাছি, কিন্তু বৈরাগ্যও যে দেই স্বাধীনতার অবশ্রস্ত ফল ইহা অবশ্রমানিতে হইবে। কোন ব্যক্তি বা বিষয় যখন তাঁহা আবন্ধ করিয়া রাখিতে পারে নাই, তথনই বৈরাগ্যের সাত্রা। তাঁহাতে সম্পদ্ধিত। বিশ্বাস, বিবেক, বৈরাগ্য, প্রার্থনা ও স্বার্ধ নতা তাঁহাকে সকলের অধীনতা হইতে বিমৃক্ত করিল, এখানে ৰদি সকল শেষ হইয়া ধাইত, তাহা হইলে তাঁহার জীবনে আ ৰে সকল ভাবের বিকাশ হইয়াছিল, তাহা কথন সভবপর হইং না। অধীনভাষাত্রকেই বধন তিনি ছুণা করিতেন, তথন তিনি भागद्रात्क चारीम कतिरायम वा चारीम हारेए पिरायम हेशा मार्च कृतिराख পারিতেন না। ইহাই প্রকৃত স্বাধীনতার লক্ষণ। লোভে অপরকে অধীন করিয়া আপনার স্বাধীনতা প্রকাশ করিয়া বাকে, অক্সায় প্ৰভূত্বশাভের আকাজন হইতে এ ভাৰ উপদ্বিত হয়। আমিও त्यम काबीम, व्यन्ति ए एमिन काबीम, ध त्याव अमाणामूनक, दहे সমতা তাঁহাকে আপনা ব্যতিবিক্ত অপরের প্রতি সম্ভ্রমপ্রকাশে वाधा कदिल। नाथीमछा छ ममछा ध कुरेरत्रद धरे मांज करण विष छोरात कीयन (भव रहेछ छोरा रहेंद्र छोराएक नीचित्र शत

ভঙ্জিসমাগরের কোন সম্ভাবনা ছিল না। কেখবচল্লের খাবী-नंडा नेदराबीनणा हिन। नेदर्शक ना त्वब्रित नी शहर कडिटन जिनि कबनरे हित शारीन वाकिए नाडिएज ना, शारी-নত। ঠ:হাতে বেচ্ছাচার হইরা দাঁড়াইত। সাধীনতার মূলে বৰন তিনি ঈবরকে দেবিলেন, তবন অপরের সাধীনতার ব্লেও ঈশ-রকে দেখিতে পাইলেন। মাহুবের ভিতর হইতে বাহা কিছু ভাল, বাহা কিছু ঈধরের ৩৭ প্রকাশ পার, ভাছা ভাছার নিজের নচে স্বরং ঈরবের, সাধীনতা তাঁহাকে ইহা ভাল করিয়া বুরাইয়া দিল। তিনি যধন আপনাতে স্বাধীনতা বা ঈশ্বরাধীনতা হইতে দেব-গুণের সমাপম দেবিলেন, তখন অপরেতে ঠিক ভাছাই কেন বিশাস করিবেন না ? কেশবচক্র অপরের ভিতরের সেইটি বুঁজিরা বাছির করিতেন, বেধানে সে কোন রিপু বা বাসনার অধীন নতে, ঈবরের অধীন। এই ঈবরাধীনতান্তলে ভক্তি প্রেম বৈরাগ্য প্রভৃতি অপর লোকের মধ্যে তিনি দেবিতে পাইতেন এবং সেই সকলের নিকটে প্রণতি স্থাকার করিতেন। এইরূপে উল্লেভ ুস্বরাধীনতা এবং স্বরতনরগবের অধীনতা মুগপং উপস্থিত হইল ; তাঁহার শিষাপ্রকৃতি উজ্জ্বল বেশ ধারণ করিল। ঈশারা-ধীনতা এবং ঈশ্বরভনয়গৰের ভক্ত্যাদির অধীনতা তাঁছাতে উপস্থিত ইইবামাত্র, জাঁহাতে ভক্তিসকার হইল। এখন সঙ্গতের পর মুক্তেরের ভক্তির সমার সমাগত। তাঁছার চল্ফু হইতে বাই ভক্তির অঞানিপতিত হইন, অমনি শত শত চলু হইতে ভক্তি-বারি প্রবাহিত ছইল। কেশবচক্র সংধীন পুরুষ, তাঁহার আন্ধ-সংবরণ করিবার সামর্থা প্রচুর। ভক্তির ^{প্}বিকার সম্লায় ডিলি बाननात कारत जारतक तानिएक मसर्व किरनम, चन्नरमत स्म

नाक्री हिल ना। प्रख्यार छक्तिय कक्ष्मभाउ, ध्रवस नूरा, हिर-কার, জেন্দনের রোল ইত্যাদি ভক্তির বিকারে ত্রাক্ষসম ত পূর্ব ্হইরা উঠিল। কলিকাতা ও ঢাকা প্রভৃতি খলে ইহার এত দ্র আতিখৰা উপস্থিত হইল যে, নিশীৰ বাতিতে চিংকা ধনি জেন্দ্রনাদি ভাবণ করিয়া লোক মনে করিত, ইহারা বা সুরাপান করিয়া প্রমন্ত ছইরাছে। এই সময়ে মুঙ্গেরে ভক্তির এত দর আতি-শব্য হুইল বে,প্রকার্য্য পরে ধূলিতে অংলুটিত হুইয়া পরস্পরের পদ-ৰূলির জন্ত কাড়াকাড়ি উপস্থিত হইল,কোন লোক সন্মূৰে আছে কি না তৎপ্ৰতি দৃক্পাত বহিল না। এসময়েএতদূর প্ৰমন্ততা ও উৎসাহ হইরাছিল বে, এক স্থন ভক্তকে কাঁকড়া বিছায় কামড়াইয়া বক্তপাত করিল, অধ্চ ভক্তের পদধূলি ভিন্ন অন্ত কিছুরই তিনি আশ্রয় করিলেন না। প্রচারকের পদ ধৌত করিয়া দিয়া পথীর কেল-থাছে তাহা পুঁছাইয়া দেওয়া এত দূর পর্যান্ত বাড়াবাড়ি উপন্থিত ष्ट्रेन। क्यांवहरत्यंत्र नारम नत्रभुकात अश्रवाम छेक्रिन, किक् छक्छ-পৰের প্রতি তৎকালে ভক্তিপ্রকাশ সাধারণ ব্যাপার ছিল। ভক্তির বিকার বাঁহাদিনেতে অধিক দেখাদিল, কালে ভাঁহারা আপনাদিনকে (कमन्द्रक्त श्रेटाउथ (अर्थ अरन कदिए नानितन, अतर उक्ता-বিপের নিকট কেশবচন্ত্র অবোধা হইয়া পড়িলেন। বধ্ব গ্রাছা-भिरात निक्रे वारवाधा दश्लाम, एचन काशातत किया है (ए। इहेर्स्स्हें।

কেশবচন্দ্রে ভক্তির উদয় হইল, তাহার মধ্যে সভে ভক্তি ব্রাহ্মসমাজে ছড়াইরা পড়িল, মৃদক্ষাদি উক্তির উপকর্মবর আদর সর্ব্বতি বাড়িল। একটি বিষয় এখনও সর্বাসাধারবের হয় নাই, সেটি বৈরাগা। কেশবচন্দ্রের বৈরাগা নিউক্তি নিগৃত। তিনি অক্তত্র কপটাটরবের বিরোধী ছিলেন, কিন্তু অন্তরের বৈরাগা নিগৃত্

রাধিবার মন্ত্র বে কুপটতা তাহাকে প্রেষ্ট মনে করিতেন। অভ্যক্ত নিপুৰতা সহ মাহারা তাঁহার আহারবাবহারাদি পর্যবেশণ না করিয়াছেন, তাঁছারা তাঁছার বৈরাগ্য নির্কাচন করিয়া বাছির করি-বেন সম্ভাবনা ছিল না। তিনি বালনাদির মধ্যে শাক ভাল বাসিতেন, আর সকল ভারা স্পর্নাত করিয়া আহলাদ ও ভৃত্তি-সহকারে শাক দিয়া ভোজন করিতেন, ইহা অল লোকে জানিত। বয়ং ভাল ভাল সামগ্রীতে তাঁহার বিশেষ তৃপ্তি ছিল, এক জন সাধারণতঃ ইহাই মনে করিত। তাঁহার বন্ধুগণ এমন এক অবস্থায় আদিলা উপান্ধত হইলেন যে, প্রকাঞ্চে বৈগ্রাগাসাধনের ব্যবস্থা করিতে তাঁহাকে বাধ্য হইতে হইল। তিনি সহস্তে রন্ধনা-দিতে প্রবৃত্ত হইলেন; বদ্ধুগণকেও তাদুশ্যাধনে নিযুক্ত করিলেন। এখানেও স্বাধীনতা অহার রাখিবার জন্ম এক বেলা সাধারণের হস্তে অনুগ্রহণের জন্ম রাথিয়া দিলেন। এই প্রকাশ্য বৈরাগ্য-मायदनत्र कन कि इहेल हेशहे (एथा প্রয়োজন। देवतात्रामाधन করিতে গিয়া লোকে উদাসীন বৈরাগী ফকির ছইয়া সংসারের প্রতি कर्ड ग्रियुथ रम्न लाटक देशहे काटन, अवर देश साटन विश्वाहे ইংলও প্রভৃতিতে এ সময় আন্দোলন উপস্থিত হইল। কিন্ত কেশবচল্রে এক দিকে কউব্যপালন, অপর দিকে বৈরাগ্যাচরণ পূর্ণ পরিমাণে ছিল। এই বৈরাগ্যাচরণসাধনে লোকে বাহা মনে করিছা-ছিল তাহার বিপরীত ঘটল। কোবার তিনি উদাসীন বৈরানী কুছে সংখনে নিরত হইবেন, ভাহা না হইরা খনতর খোলে ঈশব ও মানবকে তিনি আপনাতে অবকৃত্ব করিয়া কেলিলেন। বৈত্তাপের উত্তাপ সহ করিতে না পারিবা তাঁহার আত্মা বিহন্ন অন্ত ক্রিবা-কাৰে উড়িন, আশ্বা প্রমাশ্বার সহিত একত্বপুধ অভুতর ক্রিড়ে

লাখিল। বৰন 'আবিঃ' ডিরোখান হইল, ডখন কেলবচন্দ্র আপ্রি किছू नहें हरेवा रवरनम । अहे नवरव जिनि अक्कि विस्थव मेड প্রভাগ করিলের – আমি পুর আর সকলে ত্রায়াব। এবানেই স্বামরা দেখিতে পাইডেছি, আচার্যানাম সেবকনামে পরিবর্তিত হইবার কারণ উপস্থিত। এ সম্বন্ধে তিনি মিরারে একটি অতি **স্থপর প্রবন্ধ লিখেন, বাঁহারা ভাহা পাঠ করিবেন, অভি** বিশদভাবে উহোর এই মত তাঁহারা বুঝিতে পারিবেন। আমিকে উড়াইরা দিরা ঈবরের সহিত একত্ত্পাধ্যি, শ্রন্থ ভাব উড়াইয়া দিয়া শৃদ্ হইয়া মানব মানবীর দেবায় প্রারুতি, এ ছই ভাঁহাকে কে:ধার লইয়া পেল এখন দেখা প্রয়োজন। ব্রহ্মের সহিত অভিন্ন ভাবে খিতি করিতে ধিনি অভিনাষ করেন, তাঁহার আমিত থাকিলে কথন তাহা সিদ্ধ হয় না, ইহা আমারা সহজে বুলিতে পারি। আমিত্ব বেশে আত্মাতিরিক্ত অপর সমূদার নরনারী ব্রাহ্মণ এ ভাব উপস্থিত হর কেন ? পূর্কে তিনি মানবমাননীমধ্যে ভক্ত্যাদি দেব-ওণ প্রত্যক্ষ করিলেন, এখন তাঁহাদিগের মধ্যে সহং দেবতাকে थाउगक कतिरामन। छकापीरक वतन कतित्रा संबंग जिनि वामारामन, ^{*}बांभनाटक निरम भेरेत ४३१ छाहा हरछ मन, बांभनाटक बांक्किन করিলে তাঁহার প্রতি আঘাত করা হয়, আপনার অভ্যন্তরে তিনি অবস্থান করিতেছেন, আমি সেই ভক্তবিহারীকে প্রশাস कति," उचन क्षेत्र बचनवनस्वरः क्षेत्र दश्मन दश्मन भीतत्म क्षतान इस्तारक, देश आवता व्यक्ते क्षतायम कतिराउ नवर्ष रहेरजहि। वावयवर्ग हिन्छ व्यविहे रहेरन काहि काहि নরনারীর সহিত একড় লাভ হর, এই বে ভাঁহার চিন্তপাৰিত बंड हिन, अबन डाहा बीनत गतिबंड हरेंन । अक्टर व अका-

শ্বভার আরম্ভ হইরাছিল এখন তাহা বাহিরেও প্রকাশ পাইগ।

অনেরা এড ক্লণ বাছা বলিলান ভাহাতে কেলবচল্রকে না ৰু কৰাৰ মূল কি ভাষা এইকলে দেখিলাম ৷ প্ৰথমতঃ তিনি স্বাধী-मठा नरेषा कीरम बादक करवम, अहे वादीमणाए ममेला बाद-নিছিত ছিল। স্বাধীনভাবশতঃ তিনি মধীনতা আপনাতে ও অপরেতে সম্ভ করিতে পারিতেন না। আপনাতে ও অপরেতে অবানতা সহু করিতে না পারা হইতে সমতা উত্তত হইল। আমিও স্বাধীন, অপরেও স্বাধীন ইহাই সংতার মূল। লোকে বাহা-দিনকে স্বাধীন বলিয়া বিশ্বাস করে তাঁহারা অপরের স্বাধীনতা অপহরণ করিয়া তাহাদিবের উপরে কর্তত্ব স্থাপন করিয়া বাকেন, কেশবচন্দ্রে তাহার সম্পূর্ণ বিপরীত ভাব, স্থতরাং তিনি এম্বলে অবোধ্য হইবেন না তো আর কি হইবেন ৭ যে সমভাবশতঃ তিনি অপরকেও সাধীন বলিয়া গ্রন্থ করিলেন, সেই সমতা আবার রপান্তর গ্রহণ করিল। বেধানে সমত। আছে সেধানে বঙ্গতা হহতে পারে, কিন্তু ভব্তিতে প্রবৃত হইয়া পদতলে বসা ইহাতো चाामा पाद ना। चापना के महात्व श्राच वर्षन कांव्या অপরেতেও তাঁহার প্রভাব দর্শন করিলে অপরের দেবভাবের নিকট প্রবাতিয়াকার উপস্থিত হয়। এই প্রবাতিখীকার ভাক-সঞ্বের মূল, এবং ভক্তিস্থার হইতেই খিষ্যপ্রকৃতির উচ্চ্চলতা। बाश्चारक मेर्रावंत क्षानाव क्षाकाय कविद्या रह मेर्यवं मर्नी है। जाहा কাঞ্চং পরোঞ্চ। স্বাধীনভার মূলে তিনি বে ঈশ্বর দর্শন করিয়া-ছলেন তাহ। এই প্ৰভাবদৰ্শনমূলক। "প্ৰাৰ্থনা ক্তিতে কচিতে मश्रहत वल, हर्कत वल, खगाय वल लाक क्रिएंड नाजिनाय। वि व्यात स्म नदीव मारे, स्मरे छाव मारे। कि क्यात वन,

কি প্ৰতিজ্ঞাৰ বন ! বলিনেই হয় এতিজ্ঞা কৰিলেই হয়। পাপকে ঘুলে বেৰাইতাম, আৰু প্ৰাৰ্থনা কৰিতাম।" "বুদ্ধি এমনই পৰিকাৰ रहेन क्षार्थना कतिया एन मन नश्मन विमानरत साम्भाव, বিজ্ঞানশাস্ত্র, কঠোর শাস্ত্র সকল অধ্যয়ন করিয়া আসিলাম 🗗 এ সকল কথা ঈশবের প্রভাবদর্শনজ্ঞাপক। এই প্রভাবদর্শন ষ্থ্র অব্যবহিত দর্শনে পরিণত ইইল তখন তাঁহাতে যোগের সঞ্চার হইল। ঈশবের সহিত বধন তাহার যোগ হইল, তথন তিনি কেবল আপনাতে ঈশ্বর দর্শন করিলেন তাহা নহে, তাঁহার যোগনরন অপরের ভিতরেও ঈশ্বরকে প্রত্যক্ষ করিল। আপনাতে ধাহা দেখিতে পাই, অপরেতে তাহা প্রত্যক্ষ করা সাধীনতা ও সমতা নিয়ত এক সঙ্গে না থাকিলে কখন ঘটে না। মন্দের দিকে সাধারণ লোকেও আত্মসম অপরকে করিয়া লয়, কিন্ত আমিত্বের প্রাল্র-ভাববশতঃ আত্মসমত্ত্ব অপরেতে দেখা ইহা সাধারণ লোকেতে কিছুতেই সক্তবশর হয় না। (যাগস্কারের সঙ্গে সংস্ক যধন আমি পাৰী উড়িরা গেল, তখন আপনি শুক্ত হইয়া সকল লোকের প্ৰজলে তিনি সেবক হইয়া রহিলেন, এবং এক্ষেতে স্কলের সহিত জাঁহার একাশ্বতা উপন্থিত হুইল। এই একাশ্বতার পরিপতি-সমঙ্গে নৰবিধানের অভ্যুদয়। ব্ৰাক্ষধৰ্ম্মে নবভাব প্ৰবিষ্ট ষ্ট্ৰয়া "নৰ ব্ৰাহ্মধৰ্ম" নধবিধান নামে খোষিত হইল। এই একাজ্বন্ধী পূৰ্বে ছিল না পরে আসিরাছে। যে সাধীনতা মল্লে ডিনি দীফিড হইয়াছিলেন, সেই স্বাধীনতা মন্ত্ৰবলেই একাল্পতাও ভাঁহাতে উদিত হইরাছে। সাধীনতা তাঁহাকে কিছুতে বন্ধ থাকিতে বের নাই বলিয়াই তিনি একাস্থতায় আসিয়া উপস্থিত, অঞ্চৰা ভিনি হয় ব্রীষ্টে, নয় গৌরাঙ্গে, নয় বুছে, নয় অক্স কাহাতেও বৃদ্ধ

ইইরা পড়িতেন : অন্ত দ্বল লোক বে প্রকার সেই প্রকার ভঞ্জি প্রেম, বে প ও কর্মের কোন একটিতে বন্ধ হইয়া চিরজীবন ভাষা-ভেই কাটাইতেন। তিনি বলিয়াছেন, "কে জানিত ঐশাকে মানা উচিত र यथन मिलाम जीत्रीशक्षक अकत ना कवितन करन ना. তখনত নবদ্বীপে গেলাম: নবদীপ হইতে জ্রীগোরাম্বকে জদরে আনিয়া বসাইলাম। বুদ্ধের আবহাক হইল, অমনই বুক্তল ছইতে বৃদ্ধকে প্রাণের মধ্যে অানিলাম। কে জানিত, তিন জনকে একত্র আনিতে হইবে ? কে জানিত, ভগবান এইরূপে এক এক করিয়া আনিয়া ভক্তমণ্ডলী রচনা করিবেন! ভিতরে ভিতরে কেছ যে এরপ বৌশল অবলম্বন করিতেছেন, ভাষা জানিতাম না। ভাবসম্বন্ধেও তাঁহার ঐ একই কথা। কোন ভাবে মন অধিক কাল আবদ্ধ থাকিতে পারে না. অদ্যাবধি দেখি-তেছি, এই ভাবই প্রবল। অধিক কাল কোন একটি থংপর मर्था (य वह शकित, जाहा शांकिए भारति नाहै।" "बाहै (मधि-লাম সেই নৌকা এক দিকের স্রোতে ভাসিরা বাইতেছে, জাবার টানিলাম। এইরূপে লদয়কে প্রকৃতিত্ব রাধিবার জন্ম চির্দিন্ট 'চেষ্টা করিতেছি।' **তাঁহার স্বাধীনপ্রকৃতি কোথাও তাঁহাকে** আবদ্ধ থাকিতে দেয় নাই, তাই তিনি তাঁহার জীবনত্রী কোন अक चाटि वाकिया दाबिए भारतम मार्ड : व्यमस्त्रत है। सम्बन **উत्र**ভित्र मिटक উद्यादक क्रांडिया मियाटकन : ঈत्रदेश निष्ठा नृष्टन শীলাভূমি হইয়া তিনি নিভা নৃত্য বৰ্ণনে ও নিভা নৃত্য কথা এবংশ কুতাৰ্থ হইয়াছেন 🕶। স্বাধীনতা, সমতা, একাস্থতা, এ তিন ঠাহার জীবনের নিত্য ভূবণ ছিল।

चारीमठानियक्त जिले क्षेत्र किंद्र चाढ काशास्त्र कानिएकन ना

ক্ষেত্র বর্ধ একাছ লা উপত্তিত হইল, তথ্য তিনি এক আক্রি বৃত্ত প্রচার করিলেন। বে কোন ব্যক্তির আছা হইতে বে কোন প্রতিনা উবিও হউক মা কেন উরা ক্রম তাহার নিজের জন্ত নর সকল মানবম্মগুলীর কন্ত ক। বর্ধন তিনি রোজে কর্ম নর সকল মানবম্মগুলীর কন্ত ক। বর্ধন তিনি রোজে কর্মান করিতে প্রবৃত্ত হইলেন, তর্ধন ইহলোক এবং পর-লোকের ব্রশ্বতনরপক্ষে এক প্রাণে প্রাণ্যক প্রত্যক্ষ করিলেন। বে কোন জীবে কেন কল্যাণ, মঙ্গল, উন্নতি ও পরিপৃষ্টি হউক না, প্রাণ্যকিবলে গৃঢ়রূপে উহা সকল হীবের কল্যাণ, মঙ্গল, উন্নতি ও পরিপৃষ্টির কারণ হইবে; কেশবচন্ত্র এই বিখালে বে সকল ক্যা সময়ে সময়ে বলিয়াছেন, তাহাতে তিনি আপনার ও অন্ত গোকের নিতান্ত অনোধ্য হইয়ছেন। ভার্থপর প্রিণী অপনাকে চিনে অন্ত আরে আছোল্য বোগ রহিয়াছে,

স্তঃ। ইপরের নিকটে সকল কবা জিজালা করিয়া উচাকে মীমাংলা করিয়া লাইতে চুইড, এজন্ত ইপরের কবা প্রবৰ্গ অভি প্রথম চুইডে উচাকে জিল। পরিলোবে ঘবন উচার ইপরদর্শন বোগপ্রভাবে উজ্জাতর চুইল, ভবন দেশিলেন ইপরের কবা প্রবণ ও উচার দর্শন চুইডেই নক্তিনের নৃত্তনত উপছিত। "আমি যদি ভোষার কবা নিরাকার মূব চুইডেই ত্নাই ইঙাই নৃত্তন। ভগবান্কে দেশিজেছি, ইচা ক্ষরভেগী সূভ্যন। আমি নৃত্তন দেশাইছাই এই বে, ভোষাকে দেশা গাল, কাপের কাছে মূব দিয়ে দুখি কবা কও, এ ভোন লাগ্রে লাই।"

^{* (} মকলবার, ৮ই পৌর, ১৭১৯ বৃক No prayer is individual but every prayer offered is related to the whole economy of entire humanity and tends to quicken the universal regeneration of mankind.

ववान चाचनत्र रहत कता रक्तन चळात्रण, देश नृतिरी श्विरत কি অকারে 🕆 এই বিশেষ মতের আছুর্ভাবে কেশবচন্ত্র বে সকল কৰা ও মত প্ৰচাৰ কৰিয়াছেন তাহা আনাছিলের নিকটে অবোধা वरिवादक । वाहाता छाहार धरे मकल कथा नहेवा धाकारण किछ বলেন, তাঁহারাও ক্ষবোধ্য হইয়া পড়িতেছেন। তাঁহার পথে वैश्वाता हिन्दिन, छाँदारमत स्नीयन यमि मिन मिन स्नारकत निकटी অবোধ্য হয় তাহা হইলে এই বলিয়া তাঁহারা সাস্ত্রনা লাভ করিতে পারেন, অবস্থ সে পথে তাঁহার। অগ্রসর হইতেছেন। কেশ্ব চল্ডের জীবনের যে মূলতত্ত্ব, সেই মূলতত্ত্ব यक्ति আমাকের জীবনে না হয়, তাহা হইলে আমরা আর উাহার পথে কোথায় চলিতেছি 🕈 অবশ্য ভিন্ন পথে ভিন্ন দিকে আমাদের জীবনের গতি হইতেছে. देशारे मानिए इरेरव। शाबीनणारे यथन कमनकात्त्वत्र कीवरनव श्रवान मृत्रुष्ठ, ज्यन मि मृत्रुष्ठाकृत्रुष्ठ इटेल अवस्त्रित नार्याहरू জীবনে কি আর কিছু বাকিতে পারে ? আমরা খত বার এ কথা বলিলেও আমাদের প্রতি বিক্রছভাবাপর ব্যক্তিগণ এরপ ছোবণা • করিতে নিবৃত্ত হইবেন না, কেশবচন্দ্র ইহাদিগের পেয়াগস্থর, তিনি ইহাদিলের মধ্যবর্তী, ইহারা নবসংহিতাকে কোরাণ করিরাছে, ইহারা ব্রাক্ষ নহে মুসলমান। আমাদের কবিত কথা সমুদারের অগ্র পশ্চাৎ বিচার না করিয়া কেবল নিন্দা করিবার জন্ম হাঁচারা এরপ বোষণ। করিবেন, তাঁহার। আমাদের কিছুই ক্ষতি করিতে शांतित्वन ना, त्कन ना ममन् व्यामित्व त्र ममत्त्र छविद्यार अस्मीत्त्रवः। সকল প্রকারের মিখ্যা সংখ্যার ও বিদেধবিধার্কত হুইয়া আমাদের म कल कवा एव छव कविया दिहात कहिरदेन, ब्दर ए ,शासन दिहारब আৰৱা নিৰ্দোষী বলিয়া প্ৰতিপল হইব। যাহারা আমাদের মিখ্যা

নিশা খোষণা করিয়া স্থী হইতে চান হটন, আমরা যাহা কর্ত্তব ভাহা করিতে বেন কদাপি ভীত না হই। বর্তমানে অবোধ্য ছইলে ভবিষ্যতে অবোধ্যত্ব অবশ্য তিয়োহিত হইবে।

लाटका निमान्दर कनवहत्त्वत राहा आणा लाहा हटेए আমরা জাঁহাকে কথন বঞ্চিত করিব না। তাঁহার জীবন আরম্ভ ছইতে শেষ প্র্যান্ত যে একটি পত্না আবিকার করিয়াছে ইহা বলিতে আর ভর কি ৭ তাঁহার জীবন বংসর বংসর প্রকাশ্যে আলোচনা করিবার কি প্রয়োজন ছিল, যদি ভাহা সাধ্রুগণের জীবনের পক্ষে স্হায় না হয়। কেনবচন্দ্রে জীবনে যে সুকল মূলতত্ব প্রকাশ পাইয়াছে, সে সকল তাঁহার নিজস্ব সম্পত্তি নহে। তিনি পৃথিনীতে খধন জীবন ধারণ কবিয়াছিলেন তথন একা সে সকল মূলতত্ত্বের কল্যাণকর প্রতাপ সম্ভোগ করেন নাই, কিন্তু সমূদায় ব্রাহ্মসমাজ खेश माखान करिवारक। श्वामता कि कामि मा, डाइएड यथन एर ভাৰ বিকাশ লাভ করিয়াছে, উহার প্রভাব তৎমণাৎ সমাজের স্কলের জীবনে বিস্তৃত হইয়া পড়িয়াছে। পৃথিবীতে দেহে अवस्थान कारल यादाव क्षीतरमव প্রভाব এইরপে সকল বিভানী জীবনে বিস্তুত হইয়াছে, তিনি এখন প্ৰিবীতে দেহে মাট বাৰীয়া কি সে প্রভাব তাঁহার সঙ্গে সঙ্গে তিরোহিত স্ইয়াছে স[ু] এ স্কিল জীবন কোন কালে প্ৰিণী হটতে অভুহিত হয় না, হইতে পারে না। কেশবচল্রের জীবনের মূণতত্ত্ব সকল চারি দিকের বার্মগুল मर्दा निष्ठ चात्रश्राचा विकाद कदिएएक। मृत्यु वर्षे (कन्तिक আই বলিয়া আক্ষেপ করিতে করিতে চলিয়া রিয়াছেন বে, উত্তরি এক জনও মনের মাতৃত রহিল না, কেবল কয়েকবানি প্রভূমাত রছিল: এ সমরে ভাঁহার পরিভাম সমুঠত ফল বছন করিল না,

क्षेत्र अस्य अध्यव नार्व नार्व अववा करो कर्मान रहेरक १.१.४ र वाक्षेत्रका क राज्य अ कुलाब शोध दिन यूगन करिशाहित्यन, টাহার বস্তুরণ এট দূর ভারীন হইরা পড়িলেন বে, জীহাকে বা পর-প্ৰক্ৰে আৰু অহে করেন না; স্বাধীনতা ৰাড়িন ডাহাতে ক্ষতি নাই, কিন্তু প্রেমের বীজের অনুরোলাম ছইরাই বে অকালে। বিনষ্ট প্রায় হইল। তিনি আমেপ প্রকাশ করিলেন বটে, বিশ্ব তাঁহার সঙ্গে মধে আশা ও বিবাসও ভূয়োভূর প্রকাশ করিয়া প্রিরাছেন। তাঁহার আক্ষেপ বাক্য ভনিয়া বেমন এক নিকে নিরা**লা** উপস্থিতত্ব, অঞ্চ দিকে আবার আশা ও বিখাসের কথা তনিরা মন 🦻 উৎসাঁহাৰিত হয়। তিনি ৰণন ত্ৰ'ক্ষসমাচল্পৰোগী মুগতত্ত্ব অসুসাইৰ " ক্রিডেছিলেন, তথ্ন বন্ধুগণ উচ্চার মঙ্গে অগ্রসর ছইডেছিলেন; ষ্ট নববিধানের মৃণভত্ত একাশতা উহেতে একাশ পাইল, অৰ্নি স্ভাবে প্তাদ্ধন্ন ক্রিতে লাগিলেন; তাঁহার আজেপের পরিদীয়া রহিল না। কেলবচক্রের শেষ একাল্মতার জীবন ও একাস্ত্রতাকে মণ্ডলীগত ধর্ম করিবার জন্ত বত্ব উচ্চাকে পূর্ব্বাপেশা **আ**য়ন্ত অংশব্য করিয়া তুলিয়াছে। শেষ জীবনে তিনি Utopia (ম্নংক্ষিত রাজ্য) লইরা ব্যাপ্ত হইরাছিলেন, এই নিস্থা উ:হার সম্বন্ধে বহিলা নিলাছে। আদ্রা উ:হার বন্ধুগণ স্বাধীনভার মাৰে স্বেক্ট্টারিতা আগ্রহ করিয়া ঠাহার মাৰে নিক আরও চ্চ সুস করিতেছি। এখনও আনাদের জাতাং হইবার সময় অভিবাহিত स्त्र नारे; जेनडळात्रारम र्यम अनम् साम्रा साणिता छेत्रि, अन्ध কেশবচন্ত্ৰ বে পৰ বিয়া একাশভাতে আনিয়া উপত্তিত হইয়াছিলেছ स्मरे नथ मृत्रकान जालक वृत्ति, दिनि बाहा क्षणक वृत्तिविहरूक খানুৱা ছাহা প্ৰত্যক কৰিব, ভিনি বাহা সম্বোগ কৰিয়াছিলেন শ্বিরা ভাষা নভোগে করিব। আমরা কও দূর অপ্রসর হই।
সামিনাক করিব। আমরা কও দূর অপ্রসর করিব।
অমন বল শক্তি উন্যান উৎসাহ নাই দে, সকল অবসমতা দূরে পরি
ভার করিবা আবার সভেলে কেশংচন্দ্রের গান্য পাণ দিরা ক্রমারণে
অপ্রসর হই। সকল প্রকার অবসমতা ও ঔলাসীত হর্জন না করিবে
সেপেবে চলা কিছুতেই সভ্তরপর নহে। যদি একবার আমরা এক
মার স্বীবরক আপ্রস্তর করি, অতা দিকে দৃষ্টি ভার ভিলার্কের জন্ত
না রাখি, তিনি যে দিকু দিয়া লইরা যান, সেই দিকু দিরা চলিতে
থাকি, ভবে আমাদিপের জীবনেও অসভ্তর সভ্তর হইতে পারে।
আক্র কেশবচন্দ্রের জন্ম দিনে এ সন্তর্জে নবীন প্রতিজ্ঞা করিরা
আমাদিপের অপ্রস্তর হওুরা কর্তব্য। স্বীবর আমাদের সহার,
আমরা সকলপ্র সাবের ভন্ম ভাবনা চিন্তা পরিভ্যার করিবা, কেশবের
জীবনপথ অবলম্বন করি; তাঁহার জীবনপথে অবিপ্রান্ত চলিবা
ছতক্ত্য হই।

কেপবচন্দ্রে স্থবিরোধিতা কোন অর্থে। •

चराकांत चारनाठा विवति (र निकास वसीय, देश सनिका-माजरे छनवरच एर। , धरे बचीत विवद कान कविया नक्नरक বুৰাইয়া নিতে পারি উন্ধ সামর্থ আমার কোবার 🕆 কলজঃ विष जाति व विवाद जिल मामार्थात व्यक्ति निर्कत कति, निर्णय व्यासीटक व्यक्त डार्ब हरेएछ हरेएत । विदासिक व्याध्यास्क विषयि सकर त्वत्र निकटी निवस्तु हे इटेटन, टेशर्ट बाबाव बटनत बाना। वरूवा-বিষয়ট বেরপ আব্যায় অভিহিত হইয়াছে, ভাষাতে প্রোভ্বর্বের সহজে মনে হইতে পারে বে, কেববচন্দ্রে অবস্ত পবিরোধিতা ছিল, তবে সে পৰিরোধিতার অর্থান্তর ঘটাইরা বক্তা উহাকে লড় कतिराय करे कें।शार चिकार । चर्याच्य परे देश परिराधिकार গরুত্বশাদন নিডাত অধিকিংকর, কেন না সেরপে উহা বঙ ८कन मधु इंडिक ना छवानि छेहात चनिरतादिला बाक्सा चात्र। বর্তমার সময়ের বিজ্ঞান ও দর্শনের মত এই বে, আগাড়তঃ বে: সকল বিষয় বিরোধী বলিয়া মনে হয়, সে সকল বিষয় বৰন উচ্চতর ভূৰিছে আহোহণ করিয়া দেখা বাহ, তথ্য ভাষাদের অবিরোধিত। শ্বষ্ট প্রতিভাত হয়। এ মডের আসরা বিশেব সমানর করি, কিন্তু বে সকল জীবন বিয়োধিকা বা অবিব্যোধিতার দিকে কোন দৃষ্টি না कतिया समावदय आजितिक त्यात्रपात असूनर्छन, कतिया स्रीयनगृह्य

अवस्थित वारवास्त्रश्यामात्रः >> महिल सक्य वक्षांत्रम् ।

অপ্রসর হয়, সে সকণ জীবনসহত্তে আমেরিকার একঞ্জন সুগতীর চিস্তালীৰ ব্যক্তির উকি একান্ত সত্য। ইনি ক্রান্তের অধিকাংশ ৰুবকৈর নিকটপরিচিত এবং বিশেষ ভাবে সন্মানিত; স্বতরাং ই হার नाम फेट्राय ना कतिरलेश हैं हात कथा छनिरलहे अस्तरक हैं हारक চিনিয়া লইবেন। ইনি বলিয়াছেন, "নির্ক্ত্বিভাস্চক প্র্বাণর-সম্বতি কুত্র মন সকলের বিভীষিকা, কুত্রমনা রাজনীতিজ্ঞ, দার্শনিক ও বৃশ্বীচাৰ্য্য পৰ উহার পূজা করিয়া থাকেন। মহাত্মার পূর্ব্বাপরসক্ষ-जिंद कि**ष्ट्रेरे** व्यात्राजन मारे।" (कथरहत्त्रप्रश्वरक वहे दर्शाहे प्रकार ভাৰিয়া চিস্তা করিয়া পূর্কাপরসঞ্চি রক্ষা করিবেন, এরপ ভাবে किनि कीरनगर्थ कथामत इन नारे। किनि काछतिक त्थादमाङ চলিতেন। যথন তাঁহাতে যে প্রেরণা উপস্থিত হইত, ভিনি जालनादक (महे (अत्रवात जारीन कतिराजन। जिनि वाधित इहेराज किछू धारन करवन नारे, चनि कविशा बारकन छारा आध-विक ट्यावमाव चलुवर्त्तन कतिवाह कविद्राद्यन । केंहारक कवन कि छन्दिछ इटेरर जिनि किछूटे कानिएक ना, क्लबार न्सानद-সম্বতি রক্ষা করিয়া চলা উচ্চার সম্বন্ধে কি প্রকারে সম্বর্গর হইতে পারে। এরপ করিয়া চলাতে কেশবচন্দ্রে কি স্ববিরোধিতা ৰটিয়াছে ? না, স্বিরোধিতা ঘটে নাই, স্থ-অবিরোধিতা ঘটি-शाहा । दक्तगहत्व परितारिका कान् वार्थ अपन मकरण चुनिरंप नाहिर उरक्म। छाहार्छ प्रविद्याधिका किन ना, क् अनिदर्शिक ছিল। স্বিধোধিতা এ শক্টির মত আর কোন ভাষাতে একট भक्त द्वाता विद्याध अकाभ कडिया व्यावात रुपे भारति विद्यार व्यक्तिया अपनित कता बाहरण भारत, अक्रम भस्य मारे। विकित्त थि । भवति स्वतीः क्मनकृत्य त समाप्र अनिस्ताविका कि ভাষা দেবাইবার পক্ষে নিভান্ত উপবোরী। একজন দেবীর
স্পণ্ডিত ব্যাক্ত কেলবচন্দ্রের বিবর বলিতে পিরা তাঁহাতে পবিরোবিতা দোবারোপ করিয়াছেন। তাঁহা হইতে এই পবিরোধিতা
লকটি গ্রহণ করা হইরাছে। কেলবচন্দ্রে তিনি পবিরোধিতা
লোব ঘটিরাছে বলিরাছেন বাত্র, কিন্তু পবিরোধিতার কোন দৃষ্টান্ত
প্রবর্গনিক করেন নাই। আমি বলিতেছি, কেলবচন্দ্রে পবিরোধিতা
পবিরোধিতা মহে, সু-আবিরোধিতা।

है जानूर्ट्स क्यानिहास सम्बाधित "क्यानिहास स्वाधी क्या १" ইহার ব্যাখ্যার ভাঁহার জীবনের তিনটি মূপতত্ব নির্দিষ্ট হয় :---चाबीनजा, ममजा, अङ्गाचला। अहे जिन्हीतहे महत्र चरिहाविका আছে কি না প্রথমতঃ দেবিয়া তৎপর সে সমুদায়েতে বে কবি-स्मिषिका नाहे, ए-व्यविद्याविका चारक, देश स्मिष्टक हदेरकाह । गर्फ धार्याम पानीमणात विवह विकाद करिया (वर्षा पाकेट)। चाबीतचा त्व त्वचनहत्त्वत्र चीवातत्र मृतवत्र हिन, अवर অভি ব্যক্তির ভাষীনতা বে তিনি সম্বিক সন্মান করিতেন, ইছা चात्रवा श्रक्तिवादव विरम्बद्धारा चारणांच्या वृद्धिका विश्व विशास मीरनी श्रदेख देशात विनतील क्या जाननारम्य निकटी শাঠ করিয়া ভনাইতেছি। ১৭৯৭ শকের ১৪ আবাঢ় ভিনি बश्चमित्र धरेक्न छेनत्त्र (एन, "ब्र्यन सेनात्त्र श्रीष्ठ (श्राप्त এবং নপুৰের প্রতি কোনে মনুষ্টজা প্রবিষ্ট ছইরা আত্মকভাব বিদীন কৰিয়া কেলে, তথন আত্মা অধীনতার উন্নত পূব উপজোন ক্ষে া আক্ষৰে স্বাধীনতার ত্রত পালন করিতে বিয়া ভিত্র चित्र व्यक्तरत हृत्य गरू कविर्द्ध हत्। चाचा चरीन हर्देछ পাৰিলে ঈশবেৰ সহায়তার বৰ্ষের সহায়তার, পরের অধীন হইতে

gice : cq-milion year sure : brice con mis mis निया नाव दशः श्रेष्टास्य वयोजः बोटस्य व्यक्ति स्टेटनः कृति चेत्र प्रोटेंक तो। अहे साहू चानच्याच्टर निमय रन मेराह चीत ইবংৰৰ পদতলে,ভাতা জ্বীৰণের গদতলে সংখাপিত হয়। 🕢 महार संग्राह्य सम्म प्राप्तनात गलन अक स्टेडा गर, किसडि ক্রেশে বিশুদ্ধ তথ লাভ করিতে বাকি। সাধীন কৃতি। অপত্রকে আকর্ষণ করিতে পিত্রা সমূলার বর্ত্তামুক্তালে, মানুষ ,বিৰৱে নিচাৰ কলহ জ্ঞান্দোলন বুদ্ধি পায়: জ্ঞানব্ৰের সহ महत्व हो है जिलांकि प्रदेश सम्भाष्ट्रक स्थानक करहे नहें करत শ্ৰেমিতা ক্ৰুত সভৱ। ইহাতে পাঁচ কেটি পাঁচ সহত্ৰ লো এক হইরা মার্য 🐧 পরস্পারের কল্যাপ অধীনতার নেতা, রুদ্ধি নঙ্কে বুৰিতে পারিজের না তথাপি অধীন হইব। ইহাতে আম इकु रहेट भारत, हैवानि खबीन हरेव । शहर भारत विभन् ह , इष्ट्रेक, अर्थनरकात्र अधावना अधा। इत्राह्य विश्वनवद्यन क्षात्रा बरेंगा फेर्ट, लग्रहारा सामस्राध एव । सीय सुन्धि विसर्कन विस শাস ইক্ষা পরের ইক্ষার হলে মিলিড হয়। পরের শাট্ট . १ देश स्थाप्त अपीन रहेता विनी**छ हरेन छन्। और छा**हा (DEL) प्रथम क्षेष्ट व्यवसास निरम्ब देखा, वारका देखा, स्थाप কৰি।, এ তিৰের বোল হয়। সামীন যুদ্ধিতে বেন মুদ্ধিতে ল , एवं अदेशा देखा दरेश शादा । अ महरद विशव कामिएन। समान एत । पुष्टिएण तक निकास काता निकास कतिएण एक्टो एक हैकारण जारा हर या। अभीनजात मदा निका सर्वत बारमात ক্লাকুলে প্ৰায় ৷" কেবল গে কেশবচন্ত এ ক্লাতে ক্লাইনভার আহায়ায় হৰিন ক্ষরিদেৰ ভাষা নহে, তিনি প্রচারকর্মকৈ প্রদীনভারত

अवर्थ कविष्यतः। किया क्षीति हरेरक स्थे प्राप्त साई क्षा nitroca : "folis cufuras, Grein alle ant nomice ্বাতি বাৰাজা না অভিনে প্ৰচাৰজবৰ্ণের মধ্যে কোন কালে পাতি ब्रोफि सम्योगिक रहेतात मकावना गाहे ; नाथमार्थक काँएावा ामक्षक रहेटल भातिरदम सा। धारे राषिश किनि अकु पिन आहा-রক্ষর্বকে অপরাছে আপনার পূবে হাইতে অভুরোধ করিলের। ভূতীর তবে তাঁহার পৃত্বে হার অবক্রছ ছিল। ডিবি এক এক জন করিয়া প্রচারককে পুত্রত্যে ভাকিয়া লইলেন। কেপুনচক্র আসনে উপৰিষ্ট, সমূৰে একধানি আসন পাতা বহিয়াছে। नमात्रक बांघात्रकरके राष्ट्रे जागरन छेशरवर्धन धर्वः बरन बरन প্রার্থনা করিতে বলিয়া পরিশেষে উপছিত প্রচারকের হয় বছনপূর্বক প্রায় করিলেন, 'ভূমি কাহার গু' উপস্থিত প্রচারক (উঁহোর প্রেরণার উত্তর দিলেন) 'আমি আচার্য্যের ও পরস্পরের'। তিন বার প্রশ্ন ও তিন বার উত্তর কালে তিন বার উত্থান ও উপ-বেশন করিলে পর সেই প্রচারককে কি করিতে ছইবে বা ছাড়িতে হইবে কেৰবচন্দ্ৰ ভাহা বলিয়া দিলেন। এক একটি করিয়া व्यक्तात्रक्रमन गृहरू व्यक्तम क्तिरल शृक्तिक प्रमुखात क्रियलन । व्यक्ता-বৰুপৰ বাহাতে বিনীত হন, উদ্ভক্তাৰ প্রিহার করেন, প্রস্পুরের अशीन इन, अधक (खूनारे >৮१४) शावन क्षवर्तिक स्टेन ।"

বিনি আপনার জীবনবেদে শান্ত বাবের বলিবেন, "অধীনতা বিনি কেছ বলি ঠকু বছরা এথানে তুকিরা থাকে, সে ঠকুকে বাহিব করিরা দিব; দিবই দিব। অধীনের দল এথানে নয়;" তিবিই আনার সকলকে অধীনতারতে বাহিতে বহু করিলেন, ইয়াকি ছবিরবাহিতা দোন সহে গুলি ইয়া ক্ষরিবাহিতা গোল ক্ষাপ্তম,

वात्र पॅरिटराविका स्थाप काशरक वर्गी पारेरव १ वर्गी 'प्र-व्यविदशिका " (कावाद १ ' छ-व्यविदशिका चारक कि अ विटन्छमा कविता स्वया बाउक। निट्या मन छात्रात पर ভাশাইয়া তাঁহার তু-অবিরোধিতা প্রতিপন্ন করিতে বন্ধ করিব না ভাহার নিজের মতে উাহার স্থ-অবিরোধিতা স্থান্ট সকলে জনগ্ৰহ্ম হইবে, ইহাই আমার আশা। সকলেই জানেন কেশক্ট জিনীতি (Trinity) মতে বিশ্বাস করিতেন। ঈশবের প্রকা সম্বন্ধ এই ত্রিনীতি তিনি সর্বত্ত প্রয়োপ করিয়াছেন; বাঁহা উহার প্রার্থনা পাঠ করিয়াছেন, তাঁহারা জানেন পিতা, পুত প্ৰিত্ৰাত্মা 'এই তিন ভাবে তিন গুৰুতে তিনি এক গুৰু স্বীকা ক্রিছাছেন। তিনে এক যে গুরু তাঁহার কথা শুনিয়া চলা কেশই চল্রের বিশেষ মত। ইহা স্বাধীনতাবিরোধী নহে। তাঁহার স্বাধীনত स्वकाष्टात हिन ना, जेबबाबीनजा हिन, देश स्ववाद आत्नाहि हरें बाह्य । अध्यक्षीन हरेहछ जिल्ल किन खल अशीनका श्रीक করিতে হয়, গিভার নিকটে, পুজের নিকটে, পবিত্রান্থার নিকটে খ্রীষ্ট্রসমাজ কথায় পিতা, পুদ্র ও পবিত্রান্তা বলিয়া থাকেন, বি কাৰ্য্যকালে ভাঁছায়ের নিকটে পিতাও থাকেন না. পবিত্যান্ত্রা ৰাকেন না, এক পুত্ৰেরই সামাজ্য। এ পুত্ৰৰ আবার ইভিহারে পুক্ত, তিনি যাহা বলিয়া গিয়াছেন স্বীয় বুদ্ধির আলেডক ভা विश्वा हला खातक बीहेरांगीत मछ। शुट्टात अञ्चल करिया জন্ত তবে কি জ্রীষ্টসমাজের শর্ণাপত হইবণু না, ডাহা হইতে পারি ना । कामाद्वत त्वाविद्वत जिल्दा हिम्मुजाव विमामान प्रशिक्षात्व, (भो ভাবের অনুরোধে পিতাও পবিত্রাত্মাকে(পরমাত্মাকে) ছাড়িয়া আমং পুত্রের সমাণর করিতে পারি না। ব্রহ্ম, পরমান্তা ও তগবান এ

कि भारत सेपरता कितिक स्थान विश्व पारतन । किस व विश्वक ংসেই এক পরব্রম। এই সাধানুরোধে কেপবচল্র ভিন প্রকার এক ্ৰায় ৰশিয়া শীকাৰ কৰিয়াছেন, অৰচ তিনি তিনেৰ ভিতৰে প্ৰভেক্ত বক্ষা করিয়াছেন। "গুরু হয়ে তিন জারগায় ভূমি একালিভ। পিতা, পূত্ৰ, পবিত্ৰাস্থা তিন, কিন্তু এক : পঞ্জর মত তিন প্রকারে ভিন প্রধানীতে আসিতেছে। ই হারা ঈশরতনয়, ই হাদের ভিতৰ দিয়া বা আসে তাও ভোমার কথা। চন্দ্র, পূর্ব্য, নিরি, নক্ষত্র লভা, পাতার ভিতর দিয়া যা আসে তাও তোমার কথা। আর আমার অন্তরে পবিত্রান্তার ভিতরে বিবেককর্ণে বা ভনি, তাহা ব্রহ্ম-ৰাৰী। তিন দিকু দিয়ে শুনি অথচ গুৰু এক। পিতা বেদ, পুত্ৰ বেদ, পৰিত্ৰাত্মা বেদ, ত্ৰিবৈদ।" "তিন মত অথচ এক মত। তিন শুকু অবচ এক গুরু।" "ছিলেন এক, হইলেন অনেক গুরু, তাঁর নাম ব্ৰহ্ম।" "গুৰু কথা কও, যার ভিতর দিয়া কথা বলিতে চাও বল। ষার ভিতর দিরা কথা বলিবে, আমি তার পাদপত্তে প্রণাম করিব। স্থানিটোর কথা যার ভিতর দিয়া প্রেরণ কর আমরা নমস্তার कृतिशा खर्ग कृतिय।" अ मकल कथा कि त्नवाय ? अरे त्नवाय বে ঈশবের অধীনতা অভি বিস্তত। এই বিস্তৃত অধীনতাই কেশবচন্দ্রের স্বাধীনতা।

এই বিষয়টি আর এক দিকু দিয়া দেখা যাউক। কেশবচন্ত উল্লের দৈনিক প্রার্থনার বলিয়াছেন "মহর্ষি ঈশা বলিয়া গেলেন 'বেধানে থাকিবে ডোমরা পাঁচ জন, সেধানে থাকিব আমি।' 'অ'মরা বেন ঈশার মত বলিতে পারি, বেধানে ধর্ম সেধানে লভ্য; বেধানে সত্যান্তরার সেধানে আমি, ইনি, তিনি থাকিব।' এই কথাগুলির মধ্যে 'আমি' ইনি? 'তিনি' এই ভিনটি সর্কানান- নিম্নপদ করিয়া থাকেন । তগতের কর্তৃত্বে তিনি যাই তগৰ কর্তৃক্ শহুমিত : অসতের ভিতর দিরা তিনি ক্রিপ্রেলিবর নিকটে শ্রকাশিত । ব্রন্ধ বা পিতাকে লক্ষ্য করিয়াই কেশবচন্দ্র বলিয়া-ছেন, "চন্দ্র, সূর্য্য, মিরি, নক্ষত্র, লাতা, পাতার ভিতর দিরা বা আনে ভাও তোমার কথা।" 'আমি, ইনি, তিনি' এ তিনের বিদ্যুমানতা কোথার ? 'বেখানে সত্যান্তরাগ দেখানে'। সত্য কোথার ? 'বেখানে ধর্ম সেবানে সত্য'। ধর্মের জন্ম বে ব্যক্তি জীবন অর্পণ করে, সভ্য তাহার নিকটে আত্মপ্রকাশ করেন। সত্য দর্শন করিলেই অসুরাগ উপন্থিত হর। এই অসুরাগেই উপরের ত্রিবিধ প্রকাশ সে ব্যক্তির নিকটে ব্যক্ত হর এবং তদধীন হও্মা তাহার জীবনের সার্থকতা।

वर्देल पार्वत नव बात ना, पार्वत नव ना भारत ध्वरम । হইবে কি প্রকারে ? বাহার খার্ব আছে সে কি কবন আণ্-নাকে ছাড়িয়া নিতে পারে १ সে বাহা করে আপনার প্রপ্রাই করে। व गिक्टि विश्व थाम बाह्य, जाशास्त्र विदयक बाकिटवर्दे वाकिरतः विरवक मकल ध्यकात धारुति वामनात वस्त हरेरा আমাদিগকে মুক্ত করে; এই মুক্তভাবই স্বাধীনতা। স্বভরাং স্বাধীনতা বিবেকম্লক। যদি এক ব্যক্তির প্রার্ভি বাসনা চলিয়া পেল, তাহা হইলে তাহাতে সার্থের তিরোধান এবং প্রেমের আবিভাব অনিবাধ্য। •এ অবস্থায় কি হর ? "কগতের মকন আপনার মঙ্গল এক হইয়া বায়।" প্রেম কি না কল্যাণ চার, ভাই আপনাকে ভুলিলা পিয়া যখন উহা পরের কল্যাণ সাধন করিতে প্রবৃত্ত হর, তথন তাহার সঙ্গে সংস্কৃত আপুনার কল্যাণও অমুস্যুত হইরা বার। মানিলান বিবেক আনাদিগতে প্রবৃত্তি বাসনা हरेट**छ मूक क**तिया वाबीन कतिन ; और वाबीनफात महक महि নিমাৰ্বভাৰ উপস্থিত হওয়াতে আমানিদের মধ্যে বেমের উদ্যু परेन : किस caters छन्त अरीनांत छन्त हेश कि afette चैनिरण्ड । जानिरण्ड वरे क्य (न, ध्यम नक्न धकाराव वासू-एक क्रिकें बार्किका त्वक, त्करमाहै बावंड रहेता बागदाव त्ववा कृत्व । "बाक्टबर क्रवी जालगार विक् बन्ता करत ; बागटकर क्रवी शहर মৰুল ছাৰ বি জেবেৰ ভিতৰে স্থাপনাকে স্বত্তীকাৰ এবং প্ৰকে সর্বাহ করা রহিয়াছে। আপনাকে অধীকার করিয়া পরকে সর্বাহ করিনেই বাড়ুত্ব বেল বাসত আসিল, বাসত আসিলেই অধীনতা পৰিবাৰ্থ্য হটরা পড়িন। আপনাধে অধীকাদ করিয়া পরকে मर्कव कता नादीवाणित वार्त्रिकः नश्ची चामनारक वारीक

STANDED FOR ALCOHOLD THE WARE THE PARTY WHITE नाह क्षेत्रन पर नवर्गर सरक, क्षीत्रक केंद्रन कीवन्त कर वृत्तः। अ क्योमणाटक रक निषाः कडिरन १ अ क्योमकातः रमकोः त बाबीत क्लान । क्लान बरीनचार त्रचा, बक्क बनात बाननाव देखा वानीत देखा ७ जेपटतक देखा जिन जर्क रहेवा ষায়। নারীতে বিবেকের কঠোর ভাব বেধিতে পাওয়া বাছ না এ জন্ত তাঁহাতে বিনেকের অভাব সাব্যক্ত করিতে পারি मा । कांशाक त्यम ७ वित्यम ध्यमरे मिनिता नित्राहर एक প্রেমের কোমলতা স্পর্যা সকলের নরনগোচর হইলেও প্রযুক্তি বাসনার বিক্রম পথে গতি নারী বেমন দৃঢ়ভার সহিত অবক্রম बार्त्रम, अमन शुक्रस्यत कदियात जामर्था मारे। मात्री संख्यिकः नुवासकी, एउकार डांशास्त्र क्षयम स्टेस्ड क्षायन क्षान-বাৰ্য্য উচ্চাকে কাহার বিবেকসভূত ভছতা শিকা দিতে হয় ना, छाहाद श्रेष्ठात्वद्र मूल एवजा नर्सना दिशमान। औरहण्ड ভজিৰ অবভার। প্রেম ভাঁহার জীবনের মূল উপাদান। ভিনি বিশ্বমার ভন্নতার কতি সহ কবিতে পারিতেন বা। তিনি মারী-ভাব খীকার করিয়াছিলেন, ভাষাই ভঙ্তার প্রক্রি জাবার জীবুল ক্রেমন অনুবাদ ছিল। বিবেক পুরুষ, শ্রীতি নারী, ও ক্রিটের मुचिनात्म छक द्यात्मन क्रेमप्ताः स्वतंत्रतः क्रम्प मुक्काक्षे द्यातिक बाइवित जार शीकार करतन, व वक द्यांके दरिवासक जैकिनक न्यन वर्तिन स्टान, प्रथन छात्रात कारक छिनि और अपनित WASIRCON.

काकि हरेश नात कहकितवात्रकार अञ्चलक प्रदेश मा कार्य वर्षका

गाराव दरपाल महनाजीकक्षि स्थित एउ महि रमनारम-स्थापन केना प्रेटेक गांद मा ; मसना अने, बीन ब भेत्रदात करीनका देशहित हत्र माः; श्र्वा शरिवकात्र माजाका विकात रहे मां। (क्षेत्रक्त 'बकाबाद महनाह क्रिक्टि' दिवाद क्रमारतम वानकारम विनवारक्त, * "जिनि (ब्रिटेडक) धवाधारत রাষা কৃষ্ণের মিনন, যোগ ভঞ্জির জ্বীন্য, প্রেম পুলোর যোগ, এবং নরনারীর বিবাহ, অসুরাগ বৈরাব্যের বিসন দেখাইলেন।" "পृथितौरा পूक्रव नाहीरक विवाह करत, नाही পूक्रवरक विवाह করে; কিন্তু ধর্মারাজ্যে পুরুষ আপনাকে বিবাহ করে, নারী ভাপনাকে বিবাহ করে, এই বে নরনারী ভাপনাকে ভাপনি বিবাহ করে, ইহাই ফর্লীর বিবাহ। এই ফর্লীর বিবাহপ্রাধা चंद्रमादि केण्ड निव्हरे निव्हर जी हरेलन " चरति विक्-विश्रा अपन महामित विक्थित हरेलन। देव्छ त्रविलन ভিনি ত্রীপ্রকৃতি ভক্তি লইরা জনগ্রহণ করিরাছেন। স্বয়াল প্রহণের সময় ভক্তচ্ডামণি আপনার ঐ প্রকৃতিকে আপনি °বিবাহ করিলেন।" এই আধ্যাদ্মিক বিবাহে বিবেক ও প্রেম, হাবীনতা ও অধীনতা এক হয়।

ন্থাৰীনতাতে ধন আপনার ভিতরে বন্ধ থাকে, অধীনতাতে উহা প্রমৃত ভাবে সকল নরনারীকে আলিঙ্গন করে। জগতের কল্যাণের অধীন হইলে কি আর মাসুব আপনাতে আপনি বন্ধ থাকিতে পারে ? কেশবচক্র ভালই বলিয়াছেন, শক্ত ঈনা কৈতন্তের ভার সম্যাসী, বাহালা একটি বার পরিবর্তে সকল

[&]quot; वक्षणांकारम शारकः वाहा स्रोतिष्टिक व्हेनाहिन अरन् साहा सारम बहुत स्टेनरामानि वरेटक स्टेबन स्टेबन स्टबन ।

वारक वनम करतम, ममछ शृथियोरक छावे छत्रिनी बरम करतम अवर इरे अवि चित्रित शनिवर्ध सनवगृदर महता महता অতিথির সেবা করেন। ধিনি প্রকৃত স্ব্যাসী ভিনি ছোট সংসারের সক্ষে এক প্রকাণ্ড মংসার বোগ করেন, এক গানি ৰৱের পরিবর্ত্তে তিনি কোটি কোটি বর এবং অল করেক জুন বন্ধর পরিবর্ত্তে অসংখ্য ভাই ভপিনী লাভ করেন।" সন্ম্যাসী কে ? বিনি সমুদার ঈববের জন্ম, অপরের জন্ম অর্থণ করিরাছেন। এরণ অর্পণ অধীনতা বিনা কোন কালে সম্পন্ন হয় না, অধীনতা ও থেম এ জন্ত চিরসংযুক্ত। এখন কথা হইতেছে, অপতের কল্যাপের অধীন হইলে কোন মাত্র বা মাত্র-সমূহের অধীন হওয়া হইল না, কেবল এক কল্যাণরশী ঈৰরের অধীন হওয়া হইল; কিন্ধ কেলবচক্র বে অধীনতার ব্রত দিয়াছিলেন, তশ্বধ্যে ব্যক্তিবিশেষের এবং দলের অধীনতা-সীকার রছিয়াছে, এখানেও কি এ অধীনতাকে প্রেম বলিতে **ছইবে ? ডিনি বখন প্রচারকবর্গকে ত্রত দিলেন, তথন আচার্য্যের** এবং পরস্পারের অধীন হইবার প্রতিজ্ঞার তাঁহাদিগকে বছ করি-শেন। "অধীনের দল এখানে নম্ন" এ কথার সক্ষে ভাঁছার দ্বিল ৰাকিল কোৰায় ? তিনি বে প্ৰচায়কগৰকে প্ৰতিজ্ঞানৰ ক্ষিত্ৰা अकृष्टि चरोत्नत मेंन क्षेत्रक कतिवात क्षेत्र क्षात्र नाहरून। क्विम भारत्व अवीम हहेरछ माह निरमद अवीम हहेरछ । কেশবচক্ৰ প্ৰতিজ্ঞা ক্লাইবা শইরাছেন, ইহাতে কি শোণের অধিকার প্রহণ করিবার অভিলাব ভাঁহাতে প্রকাশ পাইতেছে ना १ वरणव रकररे अरोनजांत्र सीविज तर्रक, किंग पारीनजांव । নাৰি কাহাকেও বাভার শেষণ করিছে মানস করি না

मार्थान्तक पानीन रामित्व गारे। वाशास्त्र क्षेत्र सर्वा नीननंकती विन्ति की , मेश्रवतके (करण चन्न थ नाममक्डी ৰ্শিরা জানি।" এ সকল কৰা এবন কোৰায় রহিল ? আপনার बेक्ट भारामादाह असीन कत्रियांत छन्न बोठ ध्याम (कन १ वांबीनणात्र क्षीविक वाक्रिक मा वित्रा अवीनणात्र क्षीविक त्राविवात क्र वंड कि वार्य वह मार ? "अ माना (क्ष्य है स्थीन स्ट्रेस्स मा" थ क्वा अवन जिनि विश्वात रहेरलन किन ? अंत रामा प्रशिष খাৰীনতা প্ৰচার করিয়া পরে আবার অধীনতার গুণব্যাখ্যা चनीनकाथवर्ज्यन थाउकि, हेश कि शनिताविका मत्र ? शनिताविका নর, ইহার মধ্যে সু-অবিরোধিতা আছে, ইহাই দেশা প্ররোজন। আচার্য এবং পরস্পরের অধীন হইব, এ প্রতিজ্ঞার কি এই অর্থ দতে বে, আচার্ব্যের প্রতি এবং পরস্পরের প্রতি প্রেমে সর্ব্বাধা দাপনাকে উড়াইরা দিব ? বদি এ অর্থ হয়, তবে কেমবচক্র এ প্রতিজ্ঞার বন্ধ করিরা কিছু খাধীনভাকে উড়াইরা বেন নাই। বাহারা স্বাধীন নহে স্বার্থের অধীন, তাহারা কি কর্মন এ প্রতিজ্ঞা পালন করিতে পারে ? যদি প্রচারকরণ ক্ষীবনে -এ প্রতিজ্ঞাপাদনে অসমর্ব হইরা থাকেন, তাহার কারণ অভাধীনতা । चार्यानित व्यक्षीनण, चारीनण नरह । अ पिक् नित्रा ना स्वित्रा মন্ত দিকু দিয়া দেখিলেও মু-অবিরোধিতা লাই প্রকাশ পার। राष्ट्रांच अवर भन्नन्यात्रव व्यथीनका मरमाटक्त व्यक्टरतार्थ, मा धर्णात অস্তোৰে ? বৰি বৰ্তের অস্ত্রোৰে হর, ভালা হইলে সেধানে সত্য থাকিবে, সত্যের প্রতি অনুরাধ থাকিবে। আচার্য্য ও পর-শারের সহিত সাংখারিক সময় না হইয়া ধর্মের সময় হইলে भ नज्ञक वस्तान कातन हरेरन ना, प्रक्रित कातन हरेरन।

ন এই ব্যক্ত হয়তে সংক্ষাত আবা কাঁলে; বতা সৰ্বাহ্য ভাইছ কাঁহিব। আমাণ কাঁহে যে সং ধৰ সংক্ষাত নিজ্ঞ আমান কাঁহত সংগ্ৰাহি সহয়ৰ বা ধোন বৰি আবীনভাৱ কাৰণ হয়, ভাইছ কাঁহতে সংগ্ৰাহত কাঁহৰ কোঁহাছ। নাম উহা বাসনা আহুছি ভাই ভিৰোহিত কৰিয়া ভাইনিতা আৰও দিন দিন বাৰ্ক্তই কৰিবে। আগম দাত্ৰ বলিয়াক্ত্ৰ,—

> আসতা শিববজে জো গডক গিরিজাননে। মহত ভদহাতোকে জনাদানন উচাতে ঃ

দীৰর হইতে এক ব্যক্তির নিকটে সত্য জ্বাসিন, সে সত্য অস্ত দশ কবের হাদর অনুযোদন করিল, তথন সভ্যের আগম হইরাছে বুকা গেল; কেশবচন্দ্র সভ্যের আপ্রমনন্ধকে কি এইরূপ কথা বলেন ৰাই ? ডিনি আপনি বলিয়াছেন, "আমি কি ইচ্ছা করি ৰে, चाँमि এই সকল रानिनाम रानित्रा छामत्रा अन्दर्भ कतिरत ? क्यम নর, আমি বিচারিত হইতে অভিলাব করি। আমার মত সমুদায় স্থতীক্স বিচারের অধীন হউক। গৃহে পমন কর, আফি বাহা বলি-রাছি, ভাহার প্রভ্যেকটি ভর ভন্নকরিয়া দেধ, 🗸 🌉 লিভ কর, আমি বে সকল মূলতত্ত্ব স্পষ্ট নিৰ্দেশ করিলায় 🗳 🏕 প্ৰত্যেকটি বৰ সহকাৰে চিন্তা করিয়া দেখ, তংপর বে কোন পত্য ঈদৃশ একান্ত পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইবে দেইটি প্রহণ কর, 🕬 ভান্ত বলিয়া প্রমাণিত হইবে, সেটিকে অগ্রাছ কর। আমার ওঠাণর হইতে যে কোন কথা বিনিঃসত হয় ভাষা আমার খনেশীয়গণ কর্তৃক গৃহীত হইবে না যদি তাঁহাদের অন্তরন্থ প্রয়াত্মা কর্তৃক অনুযোগিত না হয়।" জিনি আপনার মছছে হাছা বলিয়াছেন মগুলীর নেড্বর্গ-স বৰে ভাছাই সভা। তেশবচন্ত্ৰকৰ্তৃক মিন্ত ইবরের কংখাপকথনে

nice, "To consider capes cultulates a families, com CAN BRIGHT WHERE STATES WHEN FOR HE WEST अधारत कान करन करिक को " (कमन्त्रत बाली कि बालिया करदम नाहे, "बाद फिड्य दिया क्या युनित्व आर्थि कांत्र नाहनत्त्व द्रांत्री कहित। पर्वताच्यात कथा तांत्र किएत विद्रा द्रांत्र कर व्यामना ममधात कतिता वाश्न कतित ।" किन्तु मेचदान कवा व्यामित युक्तित कि व्यकारत ? "जारत कि बनत करणा निरनरकड़ क्रिकत विद्या ্ভনিতে হইবে।" ভুডরাং বিবেক বা তমুলক সাধীনতা না বাকিলে মত্য বুরিবার বা গ্রহণ করিবার কোন উপায় নাই। আপনি व्यञानिष्ठे ना क्रेटल नमान्य मणा वृक्षित्य वा अक्न क्रिक्ट भारत काशांत्र भाशाः १ अरे मछारे क्लायहत्त कार्यनाम विनिम्नाहकन, "दश्य পৰিত্ৰাস্থা ছাৱা প্ৰত্যাদিষ্ট হুই, তখন মাচ কথা কয়, পাছ কথা কয়, ইশুর ছুঁচো কর্মরাজ্যের সংবাদ আনে।" সাধীন আত্মা পবিত্তাত্মার আবাসভূমি, এবং পবিত্তান্থা আমাদিপকে সভ্যের প্রতি অনুরাগ ও অধীনতা বা শিষ্যপ্রকৃতি শিক্ষা দিয়া থাকেন। আচার্য্যের ভিতর দিরা যে সত্য আসিল তংপ্রতি অনুবাগ ও তদধীনতাই আচার্য্যের , অধীনতা। পুতরাং ইহা অক্স কথার ঈশ্বরাধীনতা।

আচার্য্যের অধীনতার কি অর্থ, এবং তমধ্যে বে স্থবিরোধিতা নাই প্রকশিত হইল, এবন পরস্পরের অধীনতাসমূদ্ধে বে বিশেষ কথা আছে তাহা বলিতে বন্ধ করা বাউক। বর্মা, সত্য ও ঐপরের নারে বাহারা একত্র হন, তাঁহারা ঈবরনির্দিষ্ট মওলী। এই মওলীকে আমরা কবন সামাক্ত ভৃত্তিতে পেথিতে পারি না, ইহা প্রিত্তাক্তার আবাসভূমি। বীইপাক্তে ঈশাকে বর, এবং সংক্রীকে কক্তা বলিয়া নির্দ্দেক করা হইয়াছে। এ উপরাটী অতি স্থারঃ

ব্য ও কন্তার সহিত বেষদ অভিন বোদ দীশা ও নওলীৰ সহিত তেমনি অভিত্র বোগ। মীইলাল্ডের এ উপনা হাড়িয়া দিয়া আসরা অন্ত দিকু বিয়া ঈশা বা ঈশবভনর ও বঙলীকে একেবারে এক বলিয়া উপস্থিত করিতে পারি। মণ্ডলী পবিত্রাস্মজাত ঈশ্বর-ভনর। তিনি ধাহা বলেন, যে বিচার করেন, তাহা পুত্রের বলা, পুত্রের বিচার। আমি পুর্বের বলিয়াছি, ঈশরতনর ঈশা জুডিয়া দেশে জমগ্রহণ করিয়াছিলেন, এখন তিনি নাই, উদুখ ঈশ্বরতন্ম আমাদের বিশাসভাজন নহেন। তিনি আমাদিপের নিকটে आयारमत मध्य आह्म । कि छार्व आह्म ? किवाल आहम ? সাধকগণের মিলিডভাবমধ্যে আছেন, মওলীরূপে আছেন। ঈশা বলিয়াছেন, তাঁইার উপরে ঈশ্বর বিচারের ভার দিয়াছেন, তিনি আসিয়া সকলের বিচার করিবেন। তাঁহার শিষ্যপূণ বন্ধ দিন হইল প্রতীক্ষা করিয়া আছেন, কৈ তিনি তো বিচার করিতে আসিলেন না! তাঁহার শিষ্যেরা মনে করিয়াছিলেন, তিনি পুনরায় শ্রীর ধারণ করিয়া ধরাধানে আসিবেন, সিংহাসনে বসিয়া স্কল জ্ঞাতির विठात कतिरवन। याँशाता अक्रम छात मत्न छान निशाकिरणन. তাঁহারা ঈশার কথার মর্মা বুরিতে পারেন নাই। তিনি বলিয়া ছিলেন, "আমার নামে যেখানে চুই জন বা তিন জন একতা रप्त. छारारमत मत्था आमि विमामान।" এই विमामानी मका করিয়াই তিনি বিচার করিতে আসিবেন বলিয়াছিলেন। কেন না ভাঁছার নামে বাঁছারা মিলিড, ভাঁছারা বে বিচার করেন স্বর্গে ও পৃথিবীতে ভাষা দৃঢ়ভর থাকিবে, এ কথা বলিয়া ভিনি বিচারের: ব্যাপার কির্মণে কিপান হইবে, তাহা আপনি হুক্টে বলিয়া পিয়া-(हम। धर्मन करे मकन कथात चारनाटक निवाद कतिया (संबद्धाः

শ্বন্ধতের অধীন হবরার জন্ম কেশবচন্তা প্রচারকারনের প্রতিজ্ঞানিক কেন করিরাছিলান, তাহা জনারাসে মুন্নিতে লারা বার। প্রেমে উহারা পরতার লরতারের অধীন হইবেন, ইহা সর্কা প্রথম কথা, বিতীর কথা এই তে, পরতারের অধীনতা দীকার করিবেন। এ অধীনতা এত দূর বে উহাহাের মধ্যে কোন এক হাজি ধনি মনে করেন বে, তিনি অমুক বিষয়ে স্থাবরের আলেল প্রাপ্ত হইয়াছেন, অথচ সকলে যদি সেই বিষয়ে ভাহার বিপরীত আদেল পান, ভাহা হইলে কোন কথা না বলিয়া আল্মানকে ভাতজানে মকলে যে আলেল প্রাপ্ত হইয়াছেন উহাহােক সেই আলেলের অমুবর্তী হইতে হইবে ও প্রতিব্যক্তিকে মণ্ডলীর নিকটে এইরশে প্রণত হওয়া বথন বিধি, তথন পরস্পারের অধীনতা দীকারের প্রতিত্যাক্ত মণ্ডলীর শাসনবিধির অধীন হইবেন, ইহা প্রতিত্যাক্ত মণ্ডলীর শাসনবিধির অধীন হইবেন, ইহা

^{*} ১৭১৭ পাকের আঘাচ মানে অধীনভারতসথকে উপাংগণ হল,
প্রায়ণ মানে প্রচারকসভায় নিরম হল "বিধাতা হটতে স্মাগত আদেশ

বিধানত সকলের নিকট এক সময়ে একই প্রকারে আমিবে, ভিন্ন যাজিতে ভিন্নপে আমিবে না। ভিন্ন হটলে উহা আদ্বি বলিবা গ্রহণ করিছে হইবে।
কোন নির্দ্ধারণ বাজিগত আবেশের বিপরীত ঘইলেও এই ক্রন্ত জাহা বিনা
প্রক্রে মানিতে হইবে।" এই সময় প্রচারকগণ অধীনতত্তত্তাগনে প্রস্তুত্ত কিলেন। এই বিধান যে ইহার পূর্ব হইতে জিল এক বংসরের পূর্ণের
কিলিতে তাহা আমরা দেবিতে পাই। (২বলে প্রায়ণ ১৭১৬ লক) প্রচারতের। এই সভার অধীন, যবি কেছ ক্রম প্রই সভার শাসন অভিক্রম
উরিয়া বিপ্রকাশী হন, ভিনিইহার কোন বিধান আক্রমণ করিতে পারিকেন
না।" এ সক্রে প্রচারক্রণ আগ্রালিবলৈ অস্থীকারণানে বর্ধ করেন।

अधिका कविद्या प्रदेश कीशांत मुख्यीपुर्क म्हेप्रार्क्स, एवन উ হার। সে অধীকার করন ভক করিতে পারের মা। সঙ্গী केंद्रारम्ब मन्द्रक विष्ठात्रकणस्य अधिष्ठित । अधिक स्व विष्ठात করিবেন সে বিচার স্বর্গে ও পৃথিবীতে স্ব<u>চ্ছা</u>ক্তবে। সঞ্চীকে व्यक्षाक करिया त्कर वर्श श्रम कदित्वम ए। हार मच्चावमा मारे। ঁবুৰিতে পারিতেছি না তথাপি অধীন হইব, ইহাতে আমার মৃত্যু হইতে পারে ভ্রাপি অধীন হইব," সমবেত সাধকপণের আতি এরণ দুঢ় নিষ্ঠা বিনি পোষণ করেন না, তিনি কথন ধর্মসমাজে থাকিবার হোগ্য হইতে পারেন না। আপুনাকে বিনি সাধকগণমধ্যে উড়াইরা দেন নাই, তাঁহার হারা প্রেম-পরিবার সংখাপিত হইবে, ইহা কি কবন সম্ভব 📍 "প্রেমত্রত खर्क कतिया काशीन हैक्का, काशीन युक्ति अतिकात कत, अकं मिनि-টের মধ্যে অন্তভঃ তোমাদের পাঁচজনের মধ্যেও মিল হইবে, দকল প্রকারের কলহ, বিবাদ, অপ্রব্য ভিরোহিত হইবে"; আপনাকে সকলের ভিতরে উডাইয়া না দিলে এ স্ত্য কি এ সংসারে প্রত্যক্ষীভূত হইতে পারে ? আপনাকে বজার রাধিরা काम मिन त्थम रह मारे, रहेए लाइ मा, करे बच 'बबीनख ত্রতের' অপর নাম 'প্রেমব্রড'।

কেশবচলের কথা বলিতে গিরা আত্মকথা বলা যদিও শোভা পার না, তথাপি কেশবচলে যে মূলতক্ত আপন করিলেন উাহার অস্থ্যামী বলিরা হাঁহারা প্রসিদ্ধ ইন্নাহার উাহার সেই মূলতক্ত কড বুর আপনাবের কীবনে প্রহণ করিয়াছেন পৃথিবী ইবা আনিতে চারঃ আনার সম্বন্ধ মঞ্জীমধ্যে একটি অপুবাদ প্রচলিত আছে, বে অপুবাধ্যক আনি আনার স্থাতে ভাষা

मर्टन कविता वाकि। आमारवर बर्दा अस्मत्क और कवा वर्रकर, আমার আপনার বলিবার কোন হত নাই : আমি আন্ধরত চলি না পরের মতে চলি। এটা আমার দিডার্ড ইর্জনতা, ইহা সকলের সিভান্ত। কিন্ত আমি এটাকে চুর্বলতা হলে করি না, আমার জীবনৈ ইহাতেই বলাবিষ্ঠান। কোন একটি বিষয় উপ-ছিত হইলে তৎসম্বন্ধে আমার কোন মত নাই, ইহা মনে করা সভ্য নহে, সে সম্বৰ্কে আমি আমার মত পশ্চাতে রাধিরা দি, তৎসম্বন্ধে মিলিত সাধকগৰের মত কি তাহাই জানিবার জন্ম উংস্কৃতিও হই। বুদি তাঁহাদিনের মতের স্থিত আমার মত মিলে (অনেক সমরে এইরপই বটিরা বাকে) আমি আন-निष्ठ रहे, दीने ना मिल आयात ये छेड़ारेश विशे छाँशावत মতের অন্তবর্ত্তন করি। কোন এক ব্যক্তির সহিত আমার मरखंत्र चरेनका इटेरन चामि चाल्रमर७ वृक्षेतिवै शांकि, क्यन উাহার মতের অভুবর্তন করি না, কেন না সমবেড সাধকগণের মতে আত্মত বিসর্জন করিতে আমি ঈশর কর্তক আদিষ্ট। সমবেত সাধক বলিতে আমি বিধানান্তৰ্গত ব্যক্তিগণকে বৃধি। ' প্রেরিওবর্গের সলিধানে আমার মস্তক চির অবনত, বিক্ত ভাং। বলিয়া আমি ভদভিবিক্ত সাধকদৰেব নিকটে মন্তক অৰমত করি না তাহা নহে। স্ক্রিছেরে প্রেরিডমগুলীর অধিষ্ঠান-ভূমি জীনবাবের অধীনতা স্বীকার আমার জীবনের ব্রড, কিন্ত ভারতের মানা ভাবে বিধানাত্তর্গত বে সকল ব্যক্তি আছেন, আমি ধ্রম উচ্চাদের সেবা করিতে বাই, তবস তত্ততা সভগীর व्यक्तिका क्षेत्रात करिया छ।शायक त्यवा करिया शकि। व्यक्ति बाराउन क्षेत्र महे, मकाल बामान क्षेत्र, श्रेनरक्रगांव वर्ष सुव

वारा और वका वाज्यालात रह स्रवितः वेदीनसञ्ज्ञादक चाहि वर्षातां वर गत करि, वर्षे वर्ष तम विवस्ति व्यक्तिक वार्किटक भावि, देशारे जालांक क्षारपक ब्यानिना । दकान आक् ব্যক্তিৰ স্থৰে বিভাৰ কৰিবাৰ অধিকাৰ স্বাবেত সাধ্ৰপদ্ধত এ ত্রিবি কেশবচন্ত্র অভি বড়ের সহিত শালন করিটেন। "কোন ব্যক্তির বিচার করিতে আমি দাই" এ কথা যে জিনি মূৰে বলিয়াছেন, ভাহা নহে, বাভবিক্ট ভিনি আপনি ক্ৰন काशात्रकु विकारतत छात धार्य करतन मारे। विकारतत विवय উপস্থিত হইলে ডিনি প্রচারকগবের সভার (পর সময়ে জীলর-বারে) উপস্থিত করিতেন, আপনি তৎসম্বন্ধে কিছু করিতেন না। এক সময় একটি অত্যন্ত কেশাবহ বিচারের বিষয় উপ-विक रहा क्षतमबाद्यद निकटि शालन कतिया स्म विवास विकात कर्डवा किन, क्षणतार अका विकात कतिराहर मकन গোল মিটিয়া বাইড, কিন্তু তিনি একা বিচার করিতে পারেন না ৰলিয়াই সকলকে প্রচারকসভার সমবেত করিয়া উচ্চাদিপের নিৰটে বিষয়টি উপছিত করিলেন এবং তংসম্বন্ধে বাহা বিহিত ভরিবার ভার প্রচারকবর্গ হইতে আপনি গ্রহণ করিলেন। বিচারসম্বন্ধে বেমন তেমনি প্রচারকসভার উপস্থিত বিষয়-দশ্বৰেও তাঁহার অধীনতাতীকার ছিল। কোন ক্রিয়া সভার উপস্থিত করিয়া সভাষ এক জনেরও মত না পাইলে তিনি নিবৃত্ত হইতেন। ভাঁহার এই অধীনতাখীকার বলি আমার জীবনে) অকুর ধাকে, জামি আপনাকে কৃতার্থ মনে করিব।

খাৰীনতা ও জৰীনতা এ চুই সম্বন্ধে কেলবচন্তে খবিরো-বতা মটে মাই মু-জনিরোবিতা মটিয়াছে, ইয়া এক প্রকার

त्नवीन स्टैन, क्षेत्रन कीशाव विकोध वाहमस्या मुगलक महार्थ-मचटक चनिरवादिका चछित्रातक कि मा विकाद कतिया स्तवा वाक्रेक । मारम्यव विस्ताची देवका । वर्षि त्वविद्ध गोलता बाव শে. ভাঁহার আপনার সহিত অপরের সমতা তিনি বীকার করেন নাই, তাহা হইলে ভাঁহার জীবনের মূলতত্ত সমতা ছিল প্রতিপর रह ना। **फिनि रा विधान धाँ**ठात कतित्राह्मन, जारा क्रेस्ट्र-वर्णनक्ष्याम । वाहारमञ्ज स्वेदत्रपूर्णन हद मा, स्थवा वाहाता वर्णन क्रेन्द्रवर्णन रह ना, छोहात्रा क विश्वादनत रणाकत्रास्त भवा नरहन । जकरनद्र शरक है जेबदार्गन मच्चर, आहे वंदी टाहाद করিয়া খনি কেশবচন্দ্র বলিরা থাকেন "আমার মাকে কি দেৰেছিদ তোৱা বল সভা করে," ভাহা হইলে তিনি আপনার কথা আপনি ব্রুন করিয়াছেন, ভাঁহাতে ম্বব্রোধিতা দোষ উপস্থিত হইয়াছে। বিশাসিনাতেই ঈশারকে দর্শন করেন, এ ক্থা বলিয়া ভিনি আবার বলিলেন, আমার মাকে কি ভোমরা দেৰিয়াছ ? বছুবর্পের প্রতি ঈশ্বরদর্শনস্থাকে এরপ সন্দেহ একাশ কেন ? 'আমার মা' এজপ বলিবারই বা অর্থ কি ? তাঁহার মা এবং তাঁহার বন্ধবর্ষের মা এক নহেন, ইহাই কি তিনি ইহার দ্বারা বলিতেছেন না 📍 এক স্থানে যদি এরপ একটা क्या जिनि वनिरुक्त, जादा रहेरत बरम बहेज, रहार अञ्चल कथा युव रहेएछ वाहित हहेतात्व, किन्न श्रवण दिवसा श्रवण श्राह्म ভাঁছার অভিগত ছিল, ইহা মনে করিবার বিশেব কারণ আছে। তিনি আর এক ছানে বলিয়াছেন, আমার হরি সভা হরি, আর नकरनत हति वूँ हो। हति। त्मरे मकन बूँ हो। हतिक किनान কৰিয়া সভা হবিৰ সামাজ্য বাহাতে স্থাপিত হব, ভাহার ক্ষম

किनि क्षांच्या महिलाहरून । क मकत क्यांत स्थाननाटक महिलाहरू অব্য স্কুলতে কি কাংকোণ দ্বা হয় নাই ং তাঁহার হয়ি নাতা कात मकरणा हिंद कुँकि। व कि लकारक क्या । हैर । प्री रेवरमा ना वशुणाहा वरेटन देवनग्र जात कालारक वरत ? क जातात क्षिक मामाण विवस नदेशा दिवसा मह, अदक्वादक बर्ट्यात सून सहैशा देवस्या । अधन दनवा वाजिक श्रेष्टे देवदस्यत्र माना ज्यादक कि না 🕈 'আমার মা' 'আমার হরি' বলিয়া অপরের না অগরের হরি ছইতে কেশ্ৰচক্ৰ আপনার ঈশ্রকে খড়ত্ত করিলেন কেন 🕫 প্রাচীন ও নৃতন এ প্রকারে বিভাগ না করিয়া ধর্মের ইতিহাস কখন পাঠ করা বাইতে পারে না। ঈবর চিরদিনই এক, তাঁহাতে কোন পরিবর্ত্তন নাই, কিন্ত মানবের নিকটে জাঁহার প্রকাশ এক প্রকার নয়। কেশবচল্র তাঁহার একটা প্রার্থনায় বলিয়াছেন, **্ৰেয়ে**নার বিস্তীর্ণ দরবারে বসিদ্ধা **ভাই বন্ধু সকলে** মিলে ভোমার পুজা করিতেছি। আসে তুমি বেমন ছিলে তেমনি রয়েছ কি না বল; অর্থাৎ আবে আমরা তোমাকে বেষন দেখিতাৰ তেমনি করিরা দেখি কি না বল। ঈশ্বর আছেন, তিনি ে চিরকার সমান, কিন্ত প্ৰাপ্ত ঈশ্বর তিনি কি সমান ? তবে ক্লেকৰ্ম বাড়, न्हांत किছू हारे मा। अमन शहिर अमन नाष्ट्रिक हरेलाम अप विरंत ? अपने कृषेणा कृतिक आधारमत ? जूनि नवीन ? जरव তুরি ধাও। তুরি বল আমার হরি, এই কথাটী সহজ করে বল বে, বা ছিলে তুমি ভাই কি না ? ভোমার সম্বাহ তুমি ভাই বাক আপতি নাই। যদি না বাক আপতি আছে। কিছু আনার স্কুৰে বঢ়ি সমান বাৰ, আমার হারা লভ হরি বঢ়ি চিত্ৰকাল जमान बाक, छटन जामाद यहा जान।" कहे क्या जिल्लान

ক্ৰিয়া বিচাৰ ক্ৰিয়া ৰেখিলে বাতে বাতে প্ৰকেশ ছবিতে ছবিতে ब्राइक रकन इह कारा निमान समझ्यम हरेरन । मा हिन्निम বেৰৰ ভেমৰি আছেৰ, ছবি বেৰৰ চিবদিৰ তেনৰি আছেৰ; কিব আছিৰ কাল হুইতে আৰু পৰ্যন্ত নৱনাৱী কি স্থান ভাবে कीर्याटक राविद्यारक ? फाशांकिरनंत्र खर्गनावना अस्त्राटक जोहोंना किन किन मनता अक**रे मेनन किन किन कार्य दर्शन**-बार्ट्स । चारनक मृद्य वाहरू दंव ना, विद्यमित्रत्वेत विरहाना आवर স্বৰার শিতা, এ উভরের মধ্যে কত তারতমা। অসভ্য মুক্তর জুলু বে ভাবে ঈধরকে ধর্শন করে, সভ্যতার উচ্চ ভূমিতে জারচ वाक्तिन कि त्मरे छाटव जेवबटक मर्चन करवन ? अक मध्यनारम ঈর্বরের ভাব বে প্রকার অক্ত সম্প্রদারে ঈররের ভাব ভাছার **এই ভাবের প্রভেদবশত: সম্প্রদারভেদ হট্যা** পড়িরাছে। ব্রীষ্টান ও বৈশব একত্র মিলিতে পারেন মা কেন 🛊 কেবল বিজ্ঞাতীয় বলিয়া মিলিতে পারেন না ভাছা নছে। উভন্ন শর্মের বিষয় বাঁহারা বিচার করিতে সমর্থ, তাঁহারা এ ভুইয়ের मर्ता এত नार्वका स्तर्वन रव, ध प्रहेरक किछू उहे अक कितिएड পারেন না। আমরা সকলে এক সমরে বাস করিতেছি, আলা क्या राष्ट्रेरा भारत त्य, आमारमह मत्य प्रेचरत्व छारमचरक अकला थाकित। किछ এक्ट जमात्र अक्ट निकाशीत थाकिया देखन সম্বন্ধে আমাদের ভাবের কড ভারতম্য ৷ এক অখণ্ড ইবর বুৰিজেদে ৰঙিত হইয়া পড়িয়াছেন, নানা জন ভাঁছাকে নানা ভাবে এছণ করিতেছেন। এই বৃদ্ধিতেদ নিবারণ করিয়া এক व्यं । विश्वतक खर्म करा कमरहाता कीवान केछल्य लका। তিনি আপনি অবত ঈবরকে গ্রহণ করিয়া বত ঈবর ঈবর

con back affentur affens and affencers, while the कार्यक्री, कार्य मन्त्रांत में दो। यदि । अ-स्त्रा स्नादक सामि-क्षात्मक विश्ववद्यात् आयर्ग जिति वहीकात कविरव्यक वी. कि जेरतम्बाद लाग कान स्टा गरिएस विशा नया केन-बाक श्रादिशात क्या अकाराय कतियाकन । विश्वतक्रमान श्राद्धा (क्रमंत्रकत क्रमः बात मकत्वर यसन देश क्रिनि क्षेत्रात क्रिन (का.) विश्व लाहक बावज बक्कात स्थीन इट्डा स्थानमान्त्र क्षक कामनाद्यंत अभूमात्र कामत्र मन श्रीन ममर्शन कदत ना श्रहे सक्ष মতা ক্লব্ৰ আহাদিগের নিকটে প্রকাশ পান না, 🞉 জাঁহার এছপু বলিবার উদ্দেশ্য। তিনি ঈশ্বরের মাজভাব ফ্রেন্ট্র উপাদরি করিয়াজেন, তাঁহার বন্ধুগণ প্রাচীন ভাবের সহিত এ এও সংযুক্ত आहम रिनश (मक्र छेपनिक करत्र नारे, धरे क्छरे रिनिशास्त्र, "আমার মাকে কি দেখেছিল তোরা বল সত্য করে।" জাঁহার मारक छाहात वक्षान कथन त्रविह्य शाहेरवन ना, अन्नभ वन्ता काशात के दिए मार कि मनता अनदे बादक प्रपत कर्मन, को बामना एटेए क कथा छाहान कमन दरेए प्रेचिक হট্টাছে। সকলে মিলিয়া এক সভ্য হরি, এক স^{্তা} মাকে वर्षन कतिरवन, अदे छिक्षेत्र छिनि स्वरुभाउ करिनन। এ मचाम (कह खाँहाएँ दिवसा चार्तांश कवित्त हैंहा এकाल WENTS !

এই ঈগরদর্শনসমঙ্গে আর এক নিজু দিরা কেখবচন্ত্রে স বি-রোধিতা আছে, অনেকে বলিতে পারেন। কেখবচন্ত্র ঈগরদর্শনে মধ্যবর্ত্তিতা অধীকার করিয়াছেন, আবার বলিয়াছেন, "মিশ্রুই তোমনা পুত্রের মধ্য দিয়া বিনা পিতার নিকটে পৌছিতে পার না।

करे जरमाकारी पुरुषक मराजिका तक बसीवार करिय witte mit fo freite bais batte nicht nicht nicht मन बाजनर्यन बान, व्यवह राहे बान रक्तनहरू जानकि विके কৰিতে উৰাত। ইহা বনি কৰিবোদিতা সাংগ্ৰ, আহা কৰিনে শ্ৰিরোধিতা আর কাহাকে বলে । ইহা আগাততঃ বেশ্বিতে নিভাৰ কৰিবোধী বলিয়া মনে হয়, কিউ কেলবচনের প্রাকৃত মত সমা-লোচন করিলে ইহা বৈ ছ-অবিরোধী ভাছাতে আর কোল वरकर बाहर मा। (कनकटा क्रदबात्मर (Evolution) ब्रह्म শব্দশাতী ছিলেন। . তিনি মানুৰে বড়, শত, মানুৰ ও দেখ্টা। পর পর অতর অবহিত ধীকার করিতেন। মানুত ধ্বন নিয়া আলস্য ঔণাসীন্য প্রভৃতির অধীন, তবন ভাহাতে অভের আবিপত্য। কুৰা তৃকা প্ৰান্ততি প্ৰভাব নিয়ন্তৰ সংগ্ৰাৰ ক্রিয়া জড়ের আধিপতা নষ্ট করিভেছে, কিন্ত এই পশুভাৰ আবার মানবকে নীচ বাসনা নীচ প্রস্থৃতি সমুগারে বন্ধ রাবিরা তাহার মহন্ত ও গৌরব হরণ করিতেছে। মালুব পভ ভাব নির্ক্তিত করিয়া মানবত্ব লাভ করে, কিন্ত ইহাতেও ভাষার পূর্ণ ক্রমোন্মের সাধিত হইল না। নীড পতার্ভি সমূ-मात्र दश्न विदिकादीन रहेन छवन बानक्य धाक्त हिए रहेन। বানবত্ব প্রকৃটিত হইয়াই শেব হইল না। যধন নীচর্ভি ও বিবেকের মধ্যে সংগ্রাম নিঃশেষ হইয়া বিবেকের আধিপত্য चानिङ इहेन, जबन शूर्वाद चाविकाव इहेन्ना मानवरक स्वय-দান করিল। কেন্দ্রচক্র প্রতিমানবসক্ষরে এই জ্রুমোগ্রের স্থাপন করিয়াছেন। তিনি বেবানে ঈশ্বরতনবের মধ্যবর্তিতার একাত অপরিহায়িত প্রদর্শন করিয়াছেন, দেবানে এই ক্রেবামেবের বর্ত

बरै विकारत साथा। कतिहारकत ;—"मिन्छहरै माह्यास नहीत अक्षे অকাত বাৰারদ বান্ধ। এটি একটি হুদুছে ইড়োৎপদ হয় বাহার मध्या मानवर्गक वाम करत। क्षेट्र मानवर्गकत वाश्रितत चारतम **উন্মোচন কর মনুষ্যত দেখিতে পাইবে। আর একটু গভীর** धाराष धाराण कर मक्राएक छिला जेगा चात्र त्रशिक्षा क দেখিতে পাইবে। দেখ। ঈশার ভিতরে পবিত্রাদ্মা সুকায়িত, সেই গৰিতান্থার গভীর প্রদেশে গমন কর, তুমি অবশেষে অনুভ মহান্ কার সত্য বিনি তাঁহাকে দেখিতে পাইবে। মানুষ এবং ঈশ্বরের ভিতরে এই কি তবে মধ্যপত বোগপুখন মহেম ? প্রত্যেক মানবের আন্তার গভীরতম স্থানে মহান্ ঈশ্বর বিধ্যমান। কিন্ত ৰে বিভৰ পুত্ৰৰে গৃঢ় ঈশ্বননিলয় পরিবৃত, তথ্যা দিয়া না সেলে সে নিগারে ঘাইতে পারা যার না। প্রতিব্যক্তিতে পুক্রের ংৰ চরিত্র ও ভাব নিহিত আহে তাহার মধ্য দিয়া না গেলে কেহ দেবতে প্ৰছিতে পারে না। এই অর্থে এট আফাদের মধ্যবর্তী।" অভিব্যক্তির মধ্যে পুত্রত্ব অবছিত, সেই পুত্রত্ব कास रहेता ना छेठितन केनत्तत महिए ग्राकावर्नन रह ना, কেশবছন্তে ও কৰা কড ছানে কড ভাবে বলিয়াছেন। মে সকল কৰা বাঁহারা ভাল করিয়া প্র্যোলোচনা করিবেন তাঁহারা আর এ কথা বলিতে সাহস করিবেন না বে, কেশবচল্লের মধ্যবন্তি-ছের মত কোন একটি বাহিরের বিষয়। আত্মাতে আমরা পর-ৰাস্তাকে দৰ্শন করিয়া থাকি। কিন্ত আস্থা বৰ্ণন পভভাবের শ্বীন তথন ধর্ম আমাদিগের হইতে দূরে। বধন ধর্ম পতাত্তর केंगात कर्ज्य नाम करत, उथन बांगता मानगरएव अधिकाती हरे। करे बानवज्ञात ज्वनरे नूर्वजा जांच करत त्रवन देवरात रेक्डाड

আহুগত্য আমানের জীবনে বভাবমিত হয়। ঈশবের ইক্ষার আহুগত্যই ঈশা বা ঈশবপুরনায়ে অভিহিত, হতরাই উহা আর আমানের বাহিরের কোন বিষয় হইল না। আমরা বর্ধন সর্কথা ঈশবের অধীন হই তথন তাঁহার আবির্ভাবে পূর্ণ হই, জন্য কথার উহােতে বর্গন করি। পুণ্যপ্রভাবাধীন আত্মার মধ্যে আমরা ঈশবের গর্পন করি। পুণ্যপ্রভাবাধীন আত্মার মধ্যে আমরা ঈশবের গর্পন করি। পুণ্যপ্রভাবাধীন আত্মার মধ্যে আমরা ঈশবের গর্পন করি। প্রত্থাই আহু। কেশবচন্দ্রের নিকট মধ্য-বর্জিভার মতও ভাহাই। হতরাই এ সম্বন্ধে উহােতে পবিরোধিতা লাই, স্ব-অবিরোধিতাই আছে। কেশবচন্দ্র সহজ ভাবা অবশব্দন না করিয়া ঈশা বা প্রত্থাকে এ ছলে আনিলেন কেন, এ কথার বিচার এধানে না করিয়া পরে বধান্ধানে করা বাইবে।

ইবরদর্শনসম্বন্ধে স্থানিরেছিত। স্থ-জানিরেছিতার পরিণত হইল, এখন ইবরের বাণীপ্রবণসম্বন্ধে বে স্থানিরেছিত। উল্লেখ্য উল্লেখ্য আরোল করিরাছেন,তৎসম্পর্কীর বিচারের অবতারগা করা ঘাউক। ইহার মধ্যে বিরোধিগণের প্রাচীন পাত্রিকা পাঠ করা আমার প্রান্থান্য হইরাছিল,তমধ্যে দেখিতে পাইলাম, কেশবচন্দ্রের এক জন নিতান্ত স্থানিষ্ঠ সন্ধী তৎপ্রতি এই দোবারোপ করিয়াছেন বে, কেশবচন্দ্রে তাঁহাকে বলিয়াছেন, যত দিন ভিনি জীবিত আছেন উহার বন্ধ্যণ কথন সাক্ষাৎসম্বন্ধে ঈশবের আদেশ প্রবণ করিবেন না। কেশবচন্দ্রের প্রতি বলি এ দোবারোপ সত্য হর তাহা হইলে সকলেই আদেশ প্রাপ্ত হইতে পারে কেশবচন্দ্রের প্রকাশ্যে প্রচারিত এ যত গোপনে প্রচারিত রুত্ত হারা বিরোধে বে কথা প্রচার বন্ধ্য বন্ধ্য হইরা কেশবচন্দ্রের বিরোধে বে কথা প্রচার করিলেন, তাহা কথন সত্য সহে, ইহা আমি বলিতে চাই না; কেন না তাহার বনির্ক্তির ব্যক্তির ব্যক্তির বনির্ক্তির বিরোধি বির্ক্তির কেহ

এ বিখাস পোৰণ করিভেন এবং করেন বে, এক কেপবচন্দ্র ঈশারের আদেশ প্রবণ করিতেন, আর কেছ ঈশরের আমেশ প্রবণ করেন নাৰ কেশবচন্ত্ৰ কখন এমন কোন কথা বলিয়া থাকিবেন, বাহা ভনিরা তাঁহাদের এ একার জপ্রতার উপস্থিত হইরাছে, ইহা বিশ্বাস করিবার হেতৃ আছে। কারণ আমি এক জন বছুর মূৰে ভানিয়াছি বে, এক সমরে কোন এক জন প্রচারক অমুক প্রবেশে প্রচার করিতে আদেশ প্রাপ্ত হইরাছেন এই বলিয়া তথার ৰাইবার ব্যঞ্জা প্রকাশ করেন, তাহাতে তিনি গোপনে কৌতুকছলে: এই বন্ধকে বলিয়াছিলেন, অমুক অমুক ছানে বাইতে আদেশ व्याल परेवारकन । कांदात करे कथा अनिवां करे कन परेवारक বে, কেশবচন্ত্র ছাড়া অপর কেহ বে আদেশ প্রাপ্ত হন, তৎপ্রতি এ বন্ধৰ আন্থা শিধিল হইয়া পড়িয়াছে। কেশবচন্দ্ৰ এরপ কেন-ধলিয়াছিলেন, ় ডাছার আমূল বিচার করিবার ইঁহার সামর্থ্য নাই, স্থুতরাং উাহার সে কথার গভীর ভাব ইনি বুরিতে সমর্থ - হইলেন না, কেবল আপনার কিবাসকে চিরলিনের জন্ত শিধিক করিয়া ফেলিলেন। কেশবচক্রের একটা সামান্ত কথায় যথন ভাঁহার প্রতি আছানীল ব্যক্তিগণের ইট্টানিট উভয়ই হইছে গায়েত্ব, ভবন মত্য হউক মিধ্যা হউক, লোকের মনে উল্লেখ কোন কৰাৰ যদি কোন সংখ্যৰ উৎপন্ন হইয়া থাকে, ভাষা হইলে, (महे चर्थामः दावनिवयन्तव वया एक दवा निष्यक्त धाराकन। (कंभवहरतात चारिममञ्जद कि २७ हिन, छाशा विहाद शब्द बहेरल मिथिए शास्त्रा चात्र, जिनि अ मान नियाम कतिएक ना- तकल मकन विश्वादे चारकन थाश वरेका चारकन । विनि বে কার্য্যে ঈশ্বরৰ র্ম্ব ক নিযুক্ত, সেই কার্য্যে তিনি ঈশ্বরের আনেত

ৰাপ্ত হন এই তাঁহার বিলেব মত। চিকিৎসক চিকিৎসা कार्ट्य, निजी निजनपुरम, कवि कविषविवटन, विकासी विकास-সিদ্ধ আৰিকাৰে আনেশ প্ৰাপ্ত হন, কেশবচন্ত্ৰ বদি একণ বিধাস থাকাৰ্শ করিয়া খাকেন, ভাহা হইলে কেহই আর সে বিবক্কে ভাঁহার উপরে দোষারোপ করিতে পারেন না। কেশবচক্র ছে এইরপই মত শোষণ করিভেন ভাহা তাঁহার নিজের কথাডেই ব্যক আছে, স্তরাং উহা আর সপ্রমাণ করিবার প্রয়োজন নাই ৮ অধ্যান্মরাজ্যেও এক এক ব্যক্তি এক এক বিবরে ঈশবের আদেশ প্রাপ্ত হন, কেশবচক্রের ইহা বিশেষ মত। 'প্রত্যাদিত্ত' বিষয়েত্ত **উপদেশে কেশবচন্দ্র বলিয়াছেন, "আমাদের মধ্যে এমন সকল** লোক আছেন, বাঁহানিগের হাবর মনের মধ্যে ঈরর অবতীর্ব; বাঁহাদিগের চরিত্রমধ্যে আমরা ঈবরের ভাব বুঝিতে পারি। **बरे कथा हाता क्वर अक्रम मत्न कविन मा (व, क्वेबर क्वन** আমাদের করেক জনের মধ্যেই অবতীর্ণ, আর সাধারণ লোকের। ঈশ্বৰ হইতে বিচ্ছিত্ৰ হইয়া নৱকে বাস করিতেছে; ভাহাল স্থার ঈপরের কোন সত্য, কিংবা ভাব লাভ করিতে পারে না। ইহা অবতাত জমত মিখ্যা, ইহা ছকিত অনুত বাক্য ' হাঁহার ভিতরে ঈশবের প্রত্যাদেশবার্ ঘ্রিতেছে, তিনি বে সকল विवाहर अञाबिक रन देश विका क्या। विनि এक बारम প্রত্যাদেশ পাইয়াছেন, তিনি বে সকল মাসেই প্রত্যাদেশ পাই-বেন ইহা মত্য কথা নহে। অখবা বিনি এক বিষয়ে প্রত্যাদেশ र्भन, जिनि दा मकन विरुद्धि क्षजासम् नाष्ट्र करतन, हेहा मिथा।বাঁহারা ঈশবরের নিরোরপত্র পাইরা কার্য্য করেন, জাহা-দিনের কণাবে ধকু ধকু করিয়া অর্নের জ্যোতি জনিতে খাকে,

काँकात्रा जाननाताहै बरलन, अहे अहे विस्नित कार्य मन्नात्र कर्ति-বার অন্ত ঈবর আমাদিগকে এই পৃথিবীতে প্রেরণ করিয়াছেন প বিনি বে বিষয়ে আদিষ্ট সেই বিষয় ছাড়িয়া অন্ত বিষয়ে তাঁছাৰ इन्हरक्रण करा जम्हिए मह रक्ष्यकातात और विश्व मछ। जिनि এ সম্বন্ধে স্পষ্ট বলিয়াছেন, "তুমি কমা ঘারা তোমার শক্র-দিনকে পরাস্ত করিতে আসিরাছ, আর কিছু করিতে পার আর না পার, তুমি জগতে কেবল ক্ষমার দৃষ্টান্ত রাশিরা যাও, ইহাতে बन्धर উद्धात हटेरत । जुनि क्य जिनामीन, मनीत हटेश शृथिरीएज জনিয়াছে, ঈবর হইতে ক্কিরী ভাব পাইয়াছ, তুমি জগংকে কেবল সেই লক্ষণ দেখাইয়া বাও, তাহাতেই জগতের পরিত্রাণ ছ্টবে, তোমার অন্ত লক্ষণ দেখাইবার প্ররোজন নাই ৷..... ঈশবের আদেশে বিনি পান বাঁধিতে আসিয়াছেন, তাঁহার বাদ্যে হস্ত দিবার প্রয়োজন কি ৭ খিনি ক্ষমাচন্ত্র প্রকাশ করিতে আসিয়া-ছেন, তিনি খেন বিনয় অথবা সাহসের দৃষ্টান্ত দেখাইতে চেষ্টা "না করেন। বিনি বিনয়ী হইতে আসিয়াছেন, তিনি স্থর্গের আর कान नचन त्रवारेट उपन अरकात ना करतन। अरकातमृष्ण रहेब्रान আপন আপন নিরোগপত্র দেখিরা কার্য করিয়া চলিয়া রাজ: (कप्रहे अनिविकाद (हेंद्री कदिश ना।" अक्रेश अनिविकाद क्षेत्री (कन (कर कतिरवन ना, छादात कातन छिनि धरेकाल स्वचारेगारहन. 'বিদি বে কাৰ্য্যের জন্ম প্রেরিড, ডিনি বেন কেবল নেই কার্য্যই কৰেন, সেই কাৰ্য্যসম্পৰ্কে বত দ্ব আবস্তক তিনি প্ৰত্যাদেৰ অধ্যা ঈ্ররনিশাস পাইবেন এবং পৃথিবীও সেই বিষয়ে তাঁছার अनुकृत रहेता छाराव धाराक्रनीव नगुनाव खरा जानिवा निर्दा (कनव्यक्त जेवन मेठ बाठात कतिहा बालियाकिमयाक जे**न**रतर

ক্রিয়া সন্থচিত ভূমির মধ্যে আবদ্ধ করিলেন, সকল ব্যক্তিই সকল হইতে পারেন উত্থ মানবীয় সামর্থ্যকে ধর্ম করিলেন, কোন কোন ব্যক্তিকে বিশেষ মৰ্য্যাণাসন্পান করিয়া অপর बाक्षिमकनरक छाँशानिश्वत हरेएउ शैन कतिरामन, अवन साबान ৰোপ তাঁহার প্রতি অনেকে করিতে পারেন, কিন্তু বাঁহারা তৎ-প্রতি এরপ লোষারোপ করিবেন, তাঁহাদের জানা উচিত বে, কেশবচন্দ্র বিজ্ঞানবাদী ছিলেন, ঈশ্বর বেরূপে কার্ঘ্য করেন ভাছাই দেখিয়া তৎসম্বনীয় সভ্য প্রচার করিতেন, এ সম্বন্ধে লোকে আত্মাভিমানবশতঃ কি প্রকার অসত্তোব প্রকাশ করে তৎপ্রতি তিনি জ্রক্ষেপ করিতেন না, অস্তবা তিনি ক্ধন এ কথা বলিতেন না, ^{*}কার্য্যের জন্ম অহকার এবং ঈর্বা পোষণ করিয়া পারস্পরের সংক্ বিবাদ করিও না। ভোষার **পাঁচ থানি কার্য্য আছে**, আমার না হয় ছই ধানি কার্য আছে,ভাহাতে আমার ছঃথের বিষয় কি

পূ এবং তোমারই বা গৌরবের বিষয় কি

কিমান বাহাকে ৰাহা করিতে বলিয়াছেন, ভাহাই ভাহার পক্ষে বধেই।" अन-সমাজে यनि मकल वाकिहै क्यूक कार्या टार्ड विनन्ना स्मिहै कार्छ केतिक, छाहा हरेल कि সমাজের भृथना शांकिक, ना विविध প্রব্যক্তন নিশার হইত ? সকলেই বলক হইলে বন্ত থৌত कतिएछ निछ दक १ अकरनारे स्मोती सरेरन स्मोत कर्म कतिछ কে 📍 প্ৰত্যেকে এক বিষয়ে প্ৰত্যাদিষ্ট হইলে ঠিক এই প্ৰকারই বিশৃথলা হইত। কেশবচল্র তাই বর্লিয়াছেন, কেহই আপনার অধিকার ছাড়িরা অন্তের অধিকারে হস্তকেপ করিও না। ঈবর বাঁছাকে বে ভানে রাধিয়াছেন, তিনি বেন সেই ভানেই বসিরা ৰাকেন, ভাষা হইলে সকলের কার্যা নির্মিত্তে সলান হইবে 🐔

AL PROPERTY OF NOW THE REF CITE OF र्वे क्षांबारमान् वर्वमार्थः जावान कर मृत्र केवा प्राच्येतका कार्य पेश (गया केकिका जिलि पनि कीएम स्थान स्थाप मेनिस ৰাকেন, জানি বাকিতে খণ্ড কাহাৰত খাতেৰ পাইবাৰ সন্তাৰনা बाह, कारा स्टेरन त्निर्फ स्टेरफर्ट, कालाई बाननाव कीनरनव / कार्यभवत्व त्व भक्न कारमनं भारेरचमः त्वर मक्न विस्त शका करिया व कवा विशादकत, अथवा छारात्र कीविणावसात्र रक्ट रकान व्यकारतत्र जारनाक नाहरतम मा अहे छीहात मछ ছিল। এরপ যে ভাঁহার মত ছিল না তাঁহার আপনার লেখাতেই अवरल (मशिए जाहेरवन। अका कमरहता मकन कार्या करान. আর কেংই কিছু নহেন, এই কথার প্রতিবাদে তিনি লিখিয়া-हिट्लन हेटा मिथा। कथा, हेटा वार्थ टाबारमामवाका। जिन আচাৰ্য্য এ সম্বন্ধে তাঁহার বাহা প্রাণ্য তাহা প্রহণ করিতে তিনি কুট্টিত নহেন, কিন্ত আচাৰ্য্যকৃত্য ছাড়া অন্ত বছবিং কাৰ্য্য আছে, যাহার জন্ত তিনি অপরের নিকট হইতে দর্জনা সাহায্য লাভ করিয়া থাকেন। তিনি এ সকল কথা বলিতে িয়া স্পষ্ট विविधाह्य "अविके कारकत माधानमा कतिल मा, कि ममुनीप বেহের স্থাননা কর।" * তিনি স্বর কর্তক আচার্যপদে

Too much adulation like too much reviling is disagreeable and ought to be proscribed; specially if there is untruth or unfairness in it. The minister of the New Dispensation may justly be honored and respected as such, and any love or attachment he may win by personal influence,

व्यक्तिण हरेस निवासकार्या छ जल सद महा, तर स्व महस्त्रकात स्वर्धका कर्य स्वा श्राम क्रिएम, एक महस्त्रकात स्वर्धका कर्य स्वा महारू सह देश कार्य निवास स्वर्धित श्राम अवा ग्राम क्रिएम क्रिएम क्रिएम इति देशियान श्रेम निवास क्रिएम क्रिएम क्रिएम क्रिएमान श्रेम निवास क्रिएम क्रिएम क्रिएम क्रिएमान श्रेम निवास क्रिएम क्रिएम क्रिएम क्रिएमान श्रेम निवास क्रिएम क्रिएम क्रिएम "श्रामित्रे" श्रेम क्रिएमहात क्रिएम क्रिएम क्रिएम व्यक्तिमाद । खाँचा क्रिएमहात क्रिएम क्रिएम क्रिएमहात क्रिएम व्यक्तिमाद । खाँचा क्रिएमहात क्रिएम क्रिएमहात क्रि

will not be grudged being his due. But let him not receive more than is due to him. There are others too connected with the movement who are deserving of honor, and if would be unfair and wrong to transfer their share of the credit to the minister... It is a lie to say that the leader does everything and that he can get on without his brothers. No. Their assistance is material. They are valued auxiliaries. Their special abilities and talents for their respective fields of work, the minister does not possess. He does his work; they do theirs. Let not ignorance or flattery exclaim, he does the whole work. Such praises would not be honest. Honor not a limb; but honor the whole body, that you may glorify the God of the Church.—

The New Despensation, May 5, 1881.

गर्पर क्लकत्तर बलात्मनाएक अपि विकृत सूनि क्रिय নে স্থান তিনি স্থাপনি অধিকার করিবা জিলেন, স্থাপনে মে স্থান व्यविकात कतित्व, कारण व्यविकात व्यवस्थ क्रीहार विकास कतित्व, देश दिन काम काल विकास क्रिएंस ना, क्रांट्स क्रिस क्रीरिक ৰাকিতে উচ্চাৰ কাৰ্য্যকৰকে কেছ আজাহনৰ বাভ কৰিবে, देश यनि जिनि विवास मा कवित्यम, छाहा हर्देशन छदमबाब তংগ্ৰতি কোন দোবারোপ করা বাইতে পারে মা, কেন না এ সম্বন্ধে উহার ছিবতর মত ছিল, এবং লে মত তিমি কোন কালে গোপন করেন নাই। কোন এক ক্রব অভারক অযুক অদেশে প্রচার করিতে বাইতে আদেশ পাইরাকে ইবা বলিয়া বলি তিনি ব্যশ্রতা প্রকাশ করিতেন, তাহাতে ক্রেশবঢ়জের অপ্রভার অবত গোৰের বিষয় অনেকে বনে কভিজে কিন্তু এ সম্বন্ধে স্থীবরালোকে বে বিধি প্রতিষ্ঠিত আছে, তৎপ্রতি বাঁহাদের বিৰাস আছে, তাঁহারা আর তজ্জ্ম কেশবচক্রে দোষারোপ ৰবিতে পারেন মা। কোন প্রচারকের কোন ছানে প্রচারে গমন ব্যক্তিগত আলোকে নিৰ্দাৱিত না হইয়া সমবেত আলোকে নিৰ্দ্ধান্তি হইবে, ইহাই ছিৰতৰ ব্যবস্থা। কেছ কোৰাও প্ৰচাৰে ৰাইতে আদেশ পাইয়াছেন বলিতেছেন, অথচ জাঁহার সহবোগি পৰের তাছটেত স্বাস্থ্যোদন হইতেছে না; এ ছলে সে প্রচারকো खांचि म्यूनिचित्र दृक्षिरण श्रेरर। असन चर्नेना धानातकमधाः লিপিবন্ধ আছে, বাহাতে এক জন প্রচারক আদেশ মনে করিয় দ্রতম দেশে গমন করিয়াছিলেন, কিন্ত তাহাতে তাঁহার সহবোগি नेत्वत अस्तामन इत मारे। अ क्षत्न अहेत्रभ गुरुका हरेण ৰ্ণিৰ জিনি আপনাৰ সালেখতে কাৰ্যতঃ সত্য বলিয়া প্ৰতিশাল

i wa i

আর একটি বিষয়ে কেপনচন্ত্রের সমতা হ্পতন্ত একেবারে থান্নিত হাইছা বিয়াছে, ইহা বে কোন ব্যক্তির মনে প্রতিভাত হাইবে। তিনি অনেক স্থানে পানও, ঈরবের পাক্র প্রভৃতি পান্ধ এমন তীব্রভাবে ব্যবহার করিয়াছেন বে, ভাহাতে তিনি এ নামকে মুসলমালগণ হাইতে কিছু মাত্র ন্যুন ছিলেন, ইহা মনে হুর মা। কতকগুলি লোক ঈরবের প্রের, কতকগুলি লোক উহারর আপ্রির, কতকগুলি লোক উহার হুলং, কতকগুলি লোক তাহার পাক্র, এরুপ প্রভেদ বে ধর্ম তিনি প্রচাব করিয়াছেন, তাহাতে কি সম্ভিত ও বে পালে মানবজাভিতে সম্বর্জনারীর উন্নত ভাব ছিল না বে কালে এরুপ প্রভেদ শোভা পাইত, বিনি সম্পার মানবজাভিকে সম্বরের পিতৃত্ব ও মাত্রুছে এবং সৌত্রাত্রে এক করা আপনার ভীবনের সর্কোচ্চ কার্য্য বিশ্বাম করিতেন, ভাঁহাতে এ প্রকার বৈশ্বা কিছুতেই পোভা পার না। তিনি একবার নার হুই

বাদ আৰু প্ৰাক্ষমানের ভিত্তমতের লোকনিগতে অনেকবার আক্রম क्षितांत्वम, असन कि जिनत्त्र भारत अ कथा रक्षाचात्र छीता इंटेर्डि क्रांनिंड इरेपार्छ। छिनि बार्गनि बनिप्रास्ट्न, ८५ अमस्य খাৰীনতার স্বাদ স্মাণর নে স্মাজে ভিন্ন ভিন্ন শব্দ হওয়া অপ্রি-हार्ग, अवह छिनिरे वटाक्रमानि जना छीउ बाक्रमण करिनाटक्न ইহা কিরাণ কথা গুনতভেগের জন্য কেশবছলে কর্বনও কাহাকেও ভীব্রভাবে আক্রমণ করিয়াছেন কি না, ইহা গভীর প্রশ্ন। জ্ঞান-श्रु देवस्या क्रमा व्याक्रमण अवः मुक्ता छ वर्ष हरेएक व्यनम क्रा আক্রমণ, এ দুই কিছতেই এক নহে। সমাজের জনীতি ও অধ-শ্বের প্রতি আক্রমণ অন্তরের গভীর প্রেম হইতে সমুখিত হর, ইহা ঈশা প্রভৃতি মানবজাতির হিডাকাজ্যিপণের দৃষ্টাত্তে আমর্ দেখিতে পাই । বাহারা লোকের পাপছুংখে উদাসীন ভাহার। ভাছার কোন সংবাদই লয় না, কিন্ত বাঁহারা ভজ্জন্য আকুল ভাঁহারা কি কৰন উদাসীন থাকিতে পারেন । পালের প্রতি তীত্র দৃষ্টিতে দেখা ইহা তাঁহাদিনের পক্ষে একান্ত সাভাবিক। এই সকল ব্যক্তি কোন সামূৰকৈ কোন কালে আক্রমণ করেন নাই তাহার পাপকে আক্রমণ করিয়াছেন। ব্রাহ্মসমাজে এক্টি মত গাড়াইরা সিরাছে, পাণীকে আক্রমণ করিও না ক্রিছ ভাছার পাপকে আক্রমণ কর। কিন্তু লোকে বলে এরপ মত কার্য্যভঃ জীবনে প্রতিপ্রাণিত হওয়া কি করন সম্ভব গু কেলবচল্ল ববি এবত প্ৰচাৰ কৰিয়া খাকেন ভাষা হইলে ভিনি জীবনে এ মত প্ৰতিপালন कतिबाहित्तन जाना कता गाँदेर गाति, त्वन ना काशांक जीवन ও ৰত চুই ৰতন্ত ছিল না; বাহা তিনি জীবনে প্ৰত্যক্ত করিয়াছেন, ছোই জনতে বাচার করিয়াছেন। স্বিখনের পঞ্জে এ পজ ভিনি

কোনু কৰে ব্যবহার করিছেন, বাহারা ভাষারা উপদেনারি পাঠ কৰিরাছেন, ভাহারা ভাল ভানেন। 'পাণ ঈশবের প্রতি শক্ততা' ইটি ভাষার বিশেষ সভ। আনরা প্রতিজন বর্বন পাপাচরব করি, ভৰ্ম উত্তর শক্ত হই। ফলতঃ আনাদিদের মধ্যেই ঈবরের প্রতি শক্ততা ও মিত্রতা উভয়ই আছে। বাঁহারা মনে ইরেন, কেশবচন্দ্র আশনাকে বাদ দিয়া অভ লোককে ঈখনের শক্তে নাবে অভিভিত্ত করিরাছেন, ভাঁচাবের এ মহতে তম ঘটরাছে। ভিনি তীত্র-পাশবোৰে আপনার কৃষ্ণ কৃষ্ণ পাশসভাৰণা দেবিয়া আপনাকে रियम मिर्फ मिर बराम नेपारतन भक्त र्गमहा खरन विवाहकन, এনন কাহাকেও করেন নাই। জুড়াসের তুল্য ছবিত এ পৃথি-ৰীতে আৰু কে আছেণ কেশবচন্দ্ৰ কি বলেন নাই, 'আৰি দ্বীনা নই, কিন্তু আৰি সেই ছবিত জুড়াস যে রোবপরবৰ শক্তে-হতে সঁলাকে সমর্গণ করিয়াছিল ?' তিনি আপনার সম্বত্তে একপ বলিলেন কেন ? বলিলেন পাপ লক্ষ্য করিয়া। "আৰি তওঁ দূর জুডাসের মত বঙ দূর আমি পাপ ভালবাসি।" কেশ্ব টক্র আপনাকে এবং পরকে বে সমান দেখিতেন, পাপের প্রতি তীত্র আক্রমণব্যাপারেও তাহা কোন দিন বিষ্ঠিত হয় নাই। ডিনি আপনাতে পাগ দর্শন করিয়া ভীব্রভাবে তৎপ্রতি কৃষ্টি করিতেন, তাই অপরের পাণের প্রতি সেই ভাবে নৃষ্ট্ৰ করিরাছেন। বদি কেছ বলেন, তিনি আপনার পাণের विक् ना द्विता रचन जा किक् द्विद्वालन छवन द्वित वानिनारक प्ररकामन वृत्तिरा स्विर्धन, तम अकाव वृत्तिरा कि বাঁহাদের পাপ আক্রমণ করিতেন, তাঁহাদিবকে দেখিতে পারি-জেন ৰ বোৰ পালাচরণ করিয়া জীঞ্জ আক্রমধের বিষয় ইইয়া

জাতার নিকটে আমিয়াছিলেন এমন কেছ বদি আল বৰ্ডবান বাকেন, তিনি ক্ষত সাক্ষ্য দিবেন বে, কেশবচক্র তথপ্রতি श्रुरकायण श्रुशह कतिए कदन कृष्टि हम माहे, श्रुर्स ह প্রকার ব্যবহার করিতেন, পরেও সেই প্রকার ব্যবহার করিয়াছেন। हेहा (व छावरभागम नरह, जाहा छाहात छेगात राजहारत है নিয়ত প্রকাশ গাইত। 'পাপ ঈরবের প্রতি শক্রতা" ইহাজে শাধারণ কথা, বিশেষ ভাবে কেশবচন্দ্র ঈশবের শত্রু কাছাকে ৰলিতেন দেখা মাউক। 'বেখানে বিধাতা ঈশ্বর সহজে ধর্ম স্থাপন করিতেছেন সেই স্থান বৰাৰ্থ বিধানুভূমি। এই বিধান-ভুক্ত লোকের। ঈশবের হক্ত দারা পরিচালিত। ঈশবে বিশাস তাঁহাদিগকে প্রত্যাদিষ্ট করে ৮ স্বয়ং ভগবান যাতা করেন তাহাই তাহাদিলের ক্রিয়া। এই বিধানভূমির বহির্ভাগে বে সকল बसूबा चारक छाराता देशत अवर विधारनत मञ्जा अरे विधान নের ভিতরে আমাদিগের প্রক্রের এবং ভক্তিভাজন পরলোক-वानी बहाशानन बहिबाटकन। हिन्दुवर्श, ब्रिक्ति वर्श, बीहे वर्श, (बोक धर्च अबर शृथिवीत व्यक्तांक अमूनात धर्च अहे विधारमत আন্তর্গত। সুতরাৎ বাহার। বাহিরে দাঁড়াইল তাহার। ঈশ্বরের শুক্র এবং কেবল শরীর ও ইন্সিয়ের উপাসক 🗂 এ সালে ক্রান্তলেই राष्ट्रिक शाहेरवन, रक कथात्र रक्तमतहत्व क्रेनरवत्र भेरक निर्देश कतिवादकन (म कथा धारावा क्षेत्रत श्र श्रामनावन कारावा त्य স্প্রাংবর হউন না কেন তাঁহাদিবকৈ পার্শ করিতেছে না। 'बाहोट्ड नद नाती छेगामना मा करत, तथा चय मा करत, तथा प्रतीन अवर ब्राम्बर्गी अवन ना करत, अधिक सन्। ब्राम्बरान मा करत' अपन बाहावित्तत्र छाहे। अमन कि चेत्रत प्रती थ सेपदार कथा

लेवन बाहाता केमचेर शत्न करत, छठात बर्ग करत, वृद्धित নৈতা করিয়া আত্মকর্ত্তে কার্য করে, তাহারাই ব্রহের শত্রেরণে নিৰ্দেষ্ট। এক্লপ ভাৰাপম লোকেরা ৰদি কোন ৰক্ষেৰ নাৰে পরিচর দিয়া ছত্মবৈশে বিচরণ করে তবে তাহারা উপরের विरमय मझकरण निर्विष्ठ हहेरव, हेहाहै वा विक्रित कि १ आहे বৰ্ষণ ব্যক্তির প্রতি কি প্রকার ব্যবহার কেশবচন্দ্রের অভুমোদিও ছিল, মোহত্মদ সমাগমের ওটিকরেক কথা ভনিলেই সকলে বুৰিতে পাৰিবেন। ইহারা নিষ্টুর ডাকাড, ভোমার (ঈশবের) नक क्षीनित्रा व्यामता हैशारमत विकृत्क चल धातन कृतिव, हैशारमत শরীর শার্শ করিব না, আকেল কাটিব।" "আর ভাই মোহমণ व्यात्र ; भाष्ठि थाँ जा निरंत व्यात्र ।... व्यामता जाहारनत भरीत हीत না, তাহাদের মঙ্গলের জন্ম তাহাদের মন্দ ভাব কাটিব।" ঈশব-বিরোধিগণের মঙ্গলের জন্ত তাহাদের মন্দভাৰ তাহাদের মন্দ বুদ্ধি কাটিবার জন্ম কেশবচন্দ্র যদি প্রতীক্ত বাক্যাপ্ত চালনা করিয়া থাকেন, ডজ্জান্ত তাঁহার উদার প্রেমের ধর্ম কিছুমাত্র সম্ভতিত হইল. ইহা কে বলিবে ?

এখন দেখা বাউক ভাঁহার জীবনের তৃতীর মৃশতক একাশ্বতা মধ্যে শ্ববিরোধিতা দোব আছে কি না ? এই একাশ্বতাই কেখন-চন্দ্রের জীবনের বিশেষত । এখানে বলি প্রবিরোধিতা দোব প্রকাশ পার,তাহাহইলে বলিতে হইবে ভাঁহার সমঞ্জীবন নিক্ষণ ইইরাছে । তিনি সর্কাসামঞ্জের ধর্মপ্রচার করিরাছেন, এই সর্কাসামঞ্জ একাশ্বতাম্পক । পৃথিবীতে বত বিধান আসিরাছে, সকলের সঞ্চে একীভ্ত হইরা বাঙ্গা এই একাশ্বতার প্রধান কার্য ; বোলী, অবি, কৃষ্ণ, মুখা প্রভৃতি সহকারে ভাঁহাদের বর্ষে ও সত্যে এক

रहेशा बाधवा, देशारे छाराव अनावित अनावता। हिन् अ विश्वनी वर्षामचरण करे दाशन स्थापित द्योपितिय कुक ७ खेरेरक লক্ষ্য করিয়া ডিনি বলিতে পারেন, "বিরোধীদের প্রাণের মধ্যেক নৰবিধান প্ৰবিষ্ট হইতেছে। জীষ্টান হিন্দুতে পরস্পার আসক্ষ ছইভেছে। ভূকে বীপ্তে মিলন হইভেছে।" কিন্তু কাৰ্য্যকালে द्विचिट्ड भारता वात्र कृष्ण्डक द्रायश्चित द्याय द्यावर्कक विनदा জাহাতে সরাইয়া রাখিয়াছেন, এইতে লইয়া যত বাড়াবাড়ী স্করিয়াছেন। তিনি জাতিতে হিন্দু হইয়া একজন বিজাতীয় লোককে আনিরা ধর্মারাজ্যে সর্কভ্রেষ্ঠপদ অর্পণ করিলেন ইয়া এজাতি সহিকে कि टाकारत १ (मर्टनेव लाटकत मृद्ध धारे निम्मी छनिएक भावता बाह्र বে, কেশবচন্দ্র খ্রীষ্টকে এও দূর বাড়াইয়াছেন ছে, সময়ে যদি সমুদায় ভারতবর্ষ থ্রীষ্ট্রের শরণাপন্ন হয়, তাহাতে তাঁহার বিশেষ আফ্লাদই হইবে। সর্বধর্মসমন্ত তিনি প্রচার করিলেন, কিছ এক ঈশাতে প্র্যায় ধর্মের সমবয় দেখাইয়া আর সকল ধর্মকে কার্য্যতঃ অকর্মন্য করিয়া ফেলিলেন। কেশবচন্দ্র কি বলেন নাই, 'বে স্বর্গরাজ্য কোন সম্প্রদায় জানে না, কোন সম্প্রদায়িক মত निका (एव ना, बादान भूगण्य प्रेशनरक कानेनामा भानवरक कालवाना, बाहा नमुनात्र मानवका जित्क अक अन मानूरत, अवक কি ঈশবপুত্র বিভঞ্জীয়ে এক করে, সেই বর্তনাকে ভাঁহারা (हिन्नु, कुछ, भूगनमान) मिनिछ रहान।" विनि मकन वर्षा, गर्कन ् वन्, मकल वर्षाध्यवर्षक, मर्काविष स्वाप अक कतिरदम, छाहात मूर्य में हुन कथा कि श्रविद्धादिका ध्यकान कृद्ध मा ह हिन्तेक ভাবে উদীপ্ত হুইয়া তিনি কেন কুম্বেড সকলকে একীভুড ভবি-(सब ना १ कृटकर ভिতরে বোগসমূহের একডাসম্পাদনের বে

कार किन, कारा नरेंत्रा कारात्क प्रकारक बकीवृत्व करा कि उक्तिक नव र अ विषय नक्तिक क्रिन । देश कि देशांकी निकार कर नह १ त्यांवन् च विडेटक कर करिया त्यांचरम मकराक क्षक कर्ता वार्यका शुक्रवावणात क कृतक मकनत्क क्षक कतिरन कि ক্ষতি ছিল ৭ হিন্দুগণ অবস্তা বলিবেন, কেশবচন্দ্ৰের ঐত্তৈর প্রক্রি বিষম শক্ষণাতই স্নীচুল অনুক্ত আচরদের হেতু। কেলবচন্দ্র আনলের ভূমিতে একাছতা ভাগন করিলেন; ঈশাতে আনন্দ কোধার হ জানন্দতো কৃষ্ণেতেই। এ দেশের সমুদার ধর্ম বে জানন্দে পর্যাবসন্ত । এ দেশের ধর্মের সঙ্গে অন্ত দেশের মিলন করাই স্বাভাবিক: অস্তু দেলের ধর্ম্মের সঙ্গে এ দেলের ধর্ম্মের মিলন করাইরা লই-বার কোন কারণ নাই। অবস্ত কারণ আছে, অন্তর্গা কেশবচন্ত্র ঈশাতে সকলের একতা সাধন করিতে বন্ধ করিতেন না। ঈশ্বর পিতা, মানৰ প্ত্ৰ, পিতা পুত্ৰের একড় পরন্ধর্ম। মাসুষকে मासूब ना बाबिल, जेबाद क मासूरव रवान क्वनक निष्क इहेटक शास्त्र मा। छिखदुखिद निद्धांथ मृत्रायांत्र मत्र, स्थात हुई बखन একত্বসম্পাদন। এক মানবে সমুদায় স্কানবন্ধাতিকে এক করিয়া দ্বৰ সহ সেই মানবের বোগদস্পাদন ন্বীন বােগের প্রবালী। হিলুপপের মধ্যে মানব বিল্পু, কোষাও মানব বা ঈশ্বরতনয়ের ছিতি নাই। কৃষ্ণ ঈশ্বরতনর নহেন স্বরং ঈশ্বর। এ দেখের বত অবভার, সকলেই ঈখরের অবভার, ঈখরতনম্বের অবভার নহেন। জীচৈতক্ত আগনাকে ভকাবতার বলিয়া ব্যক্ত করিলেন, কিন্ধ छेरा अ रमत्मत छारविरताथी सक ठाँदान मिसानन ठाँदारक मेथना-ৰতার করিয়া স্থাপন করিলেন, এখন এত দূর হইয়াছে বে, অনেক গৌড়ীর বৈক্ষৰ চৈতক্তের নিকটে নিবেদিত অসহারঃ

rent som ber alema - erribbereit aleit erb affi Carrier our fours referen (dimerancies) 2001 without and find a province of the activity named to the क्रमहार्थ वासम काशाउँद तकार्यम कराम, ७७ एव दर वाक कर्मा का महार्थ किमीन प्रदेश बाब । विक्रिमार्थन क्रिया मेकी-किए (Transcendental) ; अहे नकी छी छए पर वादाय कर नेमा ৰোগী হইয়াৰ অপরকে উপদেশ দেওবার সময়ে 'বর্গছ শিক্তা' বলিতেন। হিন্দু বে ব্যক্তিতে ব্ৰহাবিতীৰ অসুভব করেন সে बुक्तिरे तथा रहेवा बान, रमबारन चात्र करे छीव करे तथा कर्म ভেদ থাকে না। ঈশা বোপের একত্ব নিয়ত অফুডব করিডেন সভা, কিন্তু পিতা ও পুত্র এ ভাব ভাঁহাতে বিলুপ্ত হইত নাঃ "আমি এবং আমার পিডা এক" এ কথা বলিয়া ডিনি বোলের একত বাঁক্ত করিলেন বটে, কিন্ত 'আমিও আমার পিতা' এ ভেদ কিন্ত তখনও তাঁহাতে অন্তৰ্হিত হয় নহি। "আমি এবং আমার পিতা এক" এ কথা শুনিয়া য়িছদিগণ এই বলিয়া ভাঁছাকে অপ-রাধী করিল যে, তিনি আপনাকে ঈশ্বর করিলেন । তিনি তাহা-দিগকে স্পষ্ট বুরাইয়া দিলেন, আমি বলিলাম আমি ঈশবের পুত্র ৮ আপনার জীকত রক্ষা করিরা বোলের একত ঈশাই আপনার জীবনে দেবাইরাছেন। কৃষ্ণ প্রভৃতি যত অবতার এ দেখে হইয়া গিয়াছেন সকলেই ঈশ্বরাবভার; কেহ পুতাবভার নহেন।

^{*}In Hinduism God Himself appears on earth as man. The Avatar is the identical Creator of the universe, the Infinite Supreme Brahma Himself. In Christianity it is the Son of God we see in listory, not the Creator, the Unborn,

ব্যালয়ার আ ক ইনে সকল মান্তব্য আন নান্তব্য বার বিশ্ব বিশ্ব

স্বাধীনতা, সমতা ও একাস্থতা, এই তিন মূলতত্ব কেন্বচল্লের

Eternal, but the First Begotten Son. The Hindu identifies the Lord of Heaven and the Avatar on earth in an essential and indivisible unity, recognising no distinction and repudiating the very possibility of a difference. The Christian, while recognising the identity, distinguishes the one from the other as the Father from the Son.

Krishna is nothing if not the Almighty God. Christ is nothing if not the Son of God.—The New Dispensation, July 22 1884.

विवेश सनिर्देशित आरमान्द्रहें नांद्र, श्रुषक अविरक्षिक सार अंत्रिक पर्य हर अक्य पारा क्या क्षेत्र जाहारूउ अक्टाहाड **श**ाकित विवाह । इक्तवहारक बोल्ड और अन्य दुर्गक विदारत विव and some or alterialismic falle ethics but allows विविध वार्थात्पत्र छात्र राज्यिनत्पत्र कि मांच । व्यागादम्ब कीनस्म ৰদি কাৰ্যানতা ও অধীনতার নিগন না হয়, বৈধন্যে সামা প্রকাশ শা শাৰ, অংকতে সকলের একামতা সাধিত না হয়, ভাছা হইলে এত কৰ নিক্তৰ আলোচনাৰ টুৰা সমনকেন হইল। আমরা বিবেকী হঁইয়া স্বাধীন হইব, শ্ৰেমিক ছইয়া অধীন হইব, রিপুগণের निकटी आजता दर्गन पिन आधारमत मचेक थानंछ कतिव मा क्ति जैवत्रजनवनत्वत्र निकटि जामारमत मछक कित जननज ताबित, चॅमित्रा चार्मारतत्र जीवरन जैवरतत्र खेळारतम नाच कतिया কুডার্ব হইব, কিন্তু বে বিষয়ে আমরা প্রত্যাদেশ পাইলাম না, শ্বৰ্ণৰে সে বিৰয়ে প্ৰত্যাদেশ পাইলেন বলিয়া অসুৱাপরবৰ হইব না, বরং উাহাদের প্রত্যাদেশের ফলডোপের জন্ম তাহা-বের নিকটে প্রণত হইরা উহা গ্রহণ করিব, **অ**ধিাত সর্বাদা ভক্তর প্রস্থা সম্ভয় জনয়ে পোষণ করিব, কোন ভাই বা ভরিনীকে कारत्वत वाहिरत वाश्वित ना, लानमन्त्रित लाउनेश्वरतन তলে তাঁহাদের সৰুলকে একপুত্র এককস্তারণে যিলিভ সর্মাণ **त्विक श्रे मक्ता**त मान वक कुरेता सहैत। क्वानकारलात कीवटनेड स्टाउड धनि विन कामादक कीवटम क्षकान मा नाह, अवर छेरावा प्रचत व्यविकारी छात अकान मा करत, छारा वहेरन छ। वृद्धि कीवन आसादम्ब नक्तक विकत वहेरा। दिल्ला জীবনের তত্ত্ব আলোচনা কৰিতে গিলা বদি আমরা কেবল বিশাস্থ

हरने यह रहे कि अक्ष भीरन प्रथमान क मूल राज्यस्थात क्षकांच करिशाहित्सम गाँगहा कीशास्त्र यह राप पि, काश प्रदेशके to minima fauce tres vier our firms ut in बार्डकर ब्यांसून ब्यारश सकरन रकनपट्ट रह कारना ब्यान्स शिला हारे बाद बाद्य रहे, त श्रेपत्त विनि बाहरी मर्बार कृतिशाहित्मन, तारे प्रेयवत्क बाबात्मव शालव मर्बार कति। दिन्दरुक्त किहू निक्ष श्रद्ध बाहुए कीदम, गांच करात नारे, উৰৱেৰ ডংগছৰে ৰে বিশেষ অভিপ্ৰায় ছিল মেই অভিপ্ৰায় অনুসরবপূর্বক তিনি ইম্বর হইতে তারুণ জীবন লাভ করিয়া-**ছिल्म**ा चात्रात्वत्र मञ्चरक चात्राद्वतः देशस्त्रतः चिक्रीतः कि তাহা বুকিরা বদি আমরা ভাহার অতুসরণ করি, নিশ্চম স্থানরা (कमरकीरनाष्ट्रज्ञण कीरन लाख कतिहा कुछाई रहेर। विक आयात्मव साह वाकिनात्मव कीवत्म का वानाव मिक मा एक ভাহা হইলে বিধান পৃথিবীতে আমিবার কি প্রয়োজন ছিল 🕈 কুপান্ত ঈশ্বর কুপা করুন, আমাদের প্রতিজ্ঞানের জীবনের স্ববিরোদ ধিতা দোল, পু-অবিরোধিতার পরিণত হউক।

কেশবচন্দ্রের অন্তর্বাহ ।

পুটা পংক্তি	404	77
h se	गांगा विवि	नानाविध ।
38	भेजगांशावन कार्य	পভদাধারণ বৃত্তি।
Application of Manager	etter ett gradigiskum regionalise	Day retter and r

কেশবচন্দ্রের অন্তর্বাহ্য 📲

হে প্রাণের অধিষ্ঠাত্তী দেবতা, তুমি আমাদের আম্বার প্রাণ।
বিদি আম্বার মূলে থাকিরা প্রাণ সঞ্চারিত না কর, তাহা হইলে সাবা
কি বে তোমার রাজ্যের গৃঢ়তর সকল আমরা অবগত হই। হৈ
কুপানিধান, আমরা অনুক্তগতি অনক্ষমনা হইয়া তোমার শরণাপর
হইতেছি। তুমি আমাদের প্রাণমন্দির তোমার আবির্ভাবে পূর্ব
কর; বকাও প্রোতা উভয়কে গৃঢ় তর গৃঢ় সত্য শিক্ষা দান কর।
আমরা সকলে মিলিত হইয়া ভোমার সত্য অবতরপের জন্ম ভিন্দা
করিতেছি। বেধানে তোমার প্রতি আমুগত্য ও বাধ্যতা নাই,
সেধানে সভ্যাবতরপের হার অবক্রছ। তাই গুলিও তুলাপেন্দা
নীচ হইয়া আমরা ভোমার আপ্রের গ্রহণ করিতেছি। দেখিও,
নাধ, অধ্যকার গন্তীর ও মহত্তম বিষয়ে যেন কোন প্রকারের অসত্য ও
মিপ্রতা বিনত্ত কর; রসনার সহায় হও; এই তব পাদপত্রে
বিনীত ভিন্দা।

অন্য মাথের একাদশ দিবস। আজ কেশবচন্দ্রের কথা কেন १ ব্রাহ্মসমাজপ্র উঠার সঙ্গে পিতামহ রাজা রামমোহনের নাম চির-সংযুক্ত। ১১ মাথের দিনে উঁাহার নাম সর্কাগ্রে মার্থীয়। আবহ-মান কাল যে নিয়ম প্রচলিত রহিয়াছে তাহার ব্যতিক্রেম সাধ্যক্তঞ্জ

^{*} वर्षे १ हि उम भारया मरबायनात्म द्यम् ।

আজ এ নবীন বহু কেন ? প্রাহ্মসমাজের প্রতিষ্ঠা ও পৃষ্টিপে রাজবি রামমোহন ও মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ হইতে নিশার; তাঁহান নামোন্নেথ না করিরা কেশবচন্দ্রের নাম কীর্ত্তন, ইহা কি মানিগ মানাপহরণে বহু নহে ? রামমোহন ও দেবেন্দ্রনাথ বিনা যদি কে* চন্দ্র স্বতন্ত্র কেহ থাকিতে পারেন, কেশবচন্দ্রের নাম করিলে য সত্যই তাঁহাদের নাম ও গৌরব বিলুপ্ত হয়, তাহা হইলে >> মানে দিনে কেশবচন্দ্রের নামকীর্ত্তন গুরু অপরাধ। অদ্যকার আলোচ বিষয়, কেশবচন্দ্রের অন্তর্কাহু'। এই বিষয়ের সঙ্গের রামমোহন ও দেবেন্দ্রনাথের সম্বন্ধ কি ? এই বিষয়েই কি তাঁহাদিগকে বিষয় করাইয়া দিতেছে না ? না, তাঁহাদিগের সমিকর্ষ্ব এই বিষয়ের আরঙ্ হনিষ্ঠ হইতেছে। কি প্রকারে হইতেছে, এক বার দেখা যাউক।

অন্তর ও বাহু, এ বিষয়ে পিতামহের অতিপ্রায় কি ? তিনি কি বাহিরের সমৃদায় বিষয়কে মায়িক ও মিধ্যা বলেন নাই ? জগৎ মিধ্যা হইয়া দৃষ্টির সয়িধান হইতে উড়িয়া না গেলে পরমায়্মসাঞ্চাৎবার হয় না, এ কথা বলিয়া কি তিনি জগতের মিধ্যাত প্রতিপাদন করেন নাই ? শকরের অনুসরণ করিয়া পিতামহ যাহা বলিয়াছেন, তাহাতে এই প্রকার মনে করিবার বিশিষ্ট কারণ আছে, কিন্তু তিনি কি সেরূপ মায়াবাদী ছিলেন যাহাতে জগৎকে তিনি যথাওই স্বপ্ন মনে করিয়া তৎপ্রতি সর্কাদা উপেক্ষা করিতেন ? ব্রহ্মসাক্ষাইকার হইলে তাহাতে মন এমনই মর্ম হয় বে, আর কোন বস্তু আছার সম্মুধে প্রতিভাত হয় না, এই অমৃত্তি অবলম্বন করিয়া তিনি জগতের মিধ্যাত্ব প্রতিভাত হয় না, এই অমৃত্তি অবলম্বন করিয়া তিনি জগতের মিধ্যাত্ব প্রতিভাত ব্য় না, এই অমৃত্তি অবলম্বন করিয়া তিনি জগতের মিধ্যাত্ব প্রতিভাত হয় না, এই অমৃত্তি অবলম্বন করিয়া তিনি জগতের মিধ্যাত্ব তাল করিয়া জ্ঞানে মায়াবাদ সীকারপুর্কক মৌধিক জগতের মিধ্যাত্ব তাল করা, ইহার তিনি একান্ত বিরোধী ছিলেন। অনুস্থা যধন ইংরাজী

শিক্ষার পক্ষপাতী হইয়া সংস্কৃত কলেজ ছাপনের তিনি প্রতিবাদ করেন, তথন বেদান্তদর্শনপাঠের বিরোধে কেন তিনি এ কথা বলিলেন, এই দৃশুমান জগৎকে মিথ্যা কাল্পনিক মনে করিরাবেদান্তা-ধ্যারিগণ লৌকিক ব্যবহার হইতে বিরত হইবেন, ইহাতে জন-সমাজের খোর অকল্যাণের সম্ভাবনা *। এ কথা বলিয়া কি তিনি লৌকিক ব্যবহার ও জনসমাজসংরক্ষণ অবশু কর্ত্তব্য প্রতিপাদন করেন নাই ? অধিকন্ধ তিনি ইউরোপীর বিজ্ঞানসমূহের প্রতি একান্ত পক্ষপাত প্রদর্শন করিরাছেন ।। ব্রহ্মসাক্ষাৎকার সকলের পক্ষে এমন স্থাত নহে বে জগৎ বাহার তাহার নিকট স্থাবৎ মিথ্যা হইয়া যাইবে, স্বতরাং তিনি পাকতঃ বাহা জগৎ ও বাছ-

^{*} Neither can much improvement arise from such speculations as the following which are the themes suggested by the Vedanta;—In what manner is the soul absorbed in the Deity? What relation does it bear to the Divine Essence? Nor will youths be fitted to be better members of society by the Vedantic doctrines which teach them to believe, that all visible things have no real existence, that as father, brother &c. have no actual entity they consequently deserve no real affection, and therefore the sooner we escape from them and leave the world the better.—The Letter of R. M. Roy. to Lord Amherst.

[†] We were filled with sanguine hopes that this sum would be laid out in employing European gentlemen of talents and eduction to instruct the Natives of India in Mathematics, Natural Philosophy, Cheimstry, Anatomy and other useful sciences, which the natives of Europe have carried to a degree of perfection that has raised them above the inhabitants of other parts of the world.—Ibid.

জ্ঞগংসম্পর্কীণ ব্যবহারসমূদায়ের অনুমোদন করিয়া অন্তর ও বাছ, এ উভয়েরই স্মান সমাদর করিয়াছেন।

পিতামহ ব্রহ্মজ্ঞান বিস্তার করিলেন। ব্রহ্মজ্ঞান বিনা ধোপ অসম্ভব। ঝ্যিগণের ব্রহ্মজন—ব্রহ্মভিন্ন অন্যবন্ধ উড়াইয়া দিয়া—যোগে সাধকের মন নিবিষ্ট করে। পিতামহ ব্রহ্মজ্ঞানে ষিতি করিলেন ত্রহ্মযোগে প্রবিষ্ট হইলেন না। তিনি কেবল এই প্রদর্শন করিলেন, চরমে ব্রহ্মজ্ঞানে ধর্মন পরমাত্মসাক্ষাৎকার হয়, তখন ব্ৰহ্ম ভিন্ন অক্সনন্তৱ ক্ৰুড়ি থাকে না। তিনি ব্ৰহ্মজ্ঞান ব্ৰহ্মযোগে কেন পরিণত করিলেন না, এ প্ররা উত্থাপন রখা। তিনি যদি ব্রহ্ম-খোগ তথন আনিতেন, অন্তর ও বাহির এ চুইয়ের সমপরিমাণে সমাবেশ হইবার পক্ষে মহানু অস্তরায় উপস্থিত হইত। স্বতরাং ব্রক্ষজ্ঞানে তিনি আপনার গতি স্থগিত করিলেন, ব্রহ্মযোগের কথা দৃতভাসহকারে উত্থাপন না করিয়া সামাজিক কর্ত্রাদির প্রতি জনসমাজের চক্ষ বিশেষ ভাবে আকর্ষণ করিলেন। তিনি বিজ্ঞা-নের প্রতি উপেক্ষার নয়নে দেখিতে পারেন নাই। পাশ্চাত্য ঁজালোক তাঁহার নিকট যৎসামাক্ত ছিল না। দুলুমান জগৎ মেই আদিকারণের অধিষ্ঠানে সঞ্জীবিত, ইহা তিনি অন্তরের সহিত বিশ্বাস করিতেন। পিতা মাতা ভ্রাতা প্রভৃতি সম্বন্ধ 🗯 🖼 রুমতে মাধিক হইলেও তাঁহাদের প্রতি শান্তনির্দিষ্ট কর্তব্য ক্ষাপ্ত পালনীয় ৰলিয়া তিনি গ্রহণ করিয়াছিলেন। ফলতঃ বেদাস্থের অস্তরবাদের প্রাধান্ত তাঁহার স্থতীক্র মনীযাকে আক্ষম করিতে পারে নাই। এক্ষয়ই তিনি (১) পার্মার্থিক ও (২) লৌকিক ভেদে এক দিকে বেমন অন্তৰ্জগতের সভ্যত খীকার করিয়াছেন, অন্ত দিকে বাছ অপতেরও সেই প্রকার সতাত্ব কার্যাতঃ দৃঢ়মূল করিরাছেন।

আমরা দেবিতে পাইতেছি, পিডামহ রামমোহনে যে অন্তর্কাছ অসংশ্লিষ্ট ও আপাতবিরোধী ভাবে অবস্থিত ছিল, কেশবচক্রের कीरत छाटाई अर्थाहे । अविद्याधी छात धामर्गन कविजारक। এ সম্বন্ধে পিতা দেনেপ্রনাথের উল্লেখ নিপ্রায়েকন। কে আর জানেম না বে, নহুদি বিপুল সম্পতি ও পরিবার মধ্যে পুর্কাতন রাজ্বিপথের স্থার বাস করিয়া প্রক্রদর্শন সাধন করিয়াছেন। স্কর্পৎ মায়া বা মিখ্যা, এ মতের তিনি কোন দিন অকুবর্ত্তন করেন নাই। বে উপনিবছাক্য প্রথমতঃ জাঁহার চিতকে ব্রহ্মের দিকে শইয়া স্বায়, मिट फेलिनियहाका छाँहात्क अहे भिका त्मत्र, "अहे ममुनात्र विश्व, এই বিশের সমুদায় পদার্থ সেই ঈশ্বরকর্তৃক পরিব্যাপ্ত। অতএব আস্কিপরিত্যাগপূর্মক সমুদায় ভোগ কর, কাহারও ধনে লোভ कति । कि जान्हर्या, तामरमाज्यन वाका जानतिक है किन, দেবেল্রনাথে ভাহা পরিফুট হইল; অথচ তৃতীয় ব্যক্তি মত দিন আগমন করেন নাই, তত দিন অন্তর্কাছ যে কি খনিষ্ঠ যোগে সম্বন্ধ এবং এ ছুইকে কিছুতেই বিচ্ছিত্ৰ করিয়। বাণিয়া পূর্ব ধর্ম্মের মাধন হয় ৰা, এ কথা আমাদের কাহারও মনে প্রতিভাত হয় নাই। মূল কথা ুবলিবার পূর্বে এখানে একটা কথার উরেধ নিভান্ত প্রয়োজন। আমানের দেশ ও অপরাপর দেশ রামমোহনকে জ্ঞাত বা অক্সতি-मार्ट शहर कविवादकन, मिट्टलनार्थभन्दक महरूप वर्णा साम ना (यवादनहें स्क्रानहर्कात श्रानला, मिचादनहें बाक्षा,वामरमाहन। अ अनदा कान्डकीर बारला कार्यन नारे ? विश्वाकमभाष्य ना वक्त ব্ৰহ্মদর্শনের আদর অতি অল তাই মহার্থ আলিনার উপযুক্ত প্রাণ্য काशाव किक्छे नाहेटएएक ना, किन्छ अ क्शा निष्ठत, छांशाक श्रद्धन मा कतिला काहारक मध्मारका रा गएम निवादन हरेरव मा।

কেশৰচল্লের অন্তর্কাত, চুই প্রকার অর্থে গ্রহণ করা বাইডে পারে ৷ প্রথম কেশবচন্দ্রের অন্তর ও রাহির; হিতীয় কেশব-চল্লের সম্বন্ধে অন্তর ও বাহির। বে কোন অর্থে কেন গ্রহণ করা ৰাউক না কলে একই দাঁড়ায়। কেশবচল্ৰ কেবল অন্তৱের পক্ষ-नाजी हिलन मा, क्वन वाहित्वदश नवनाकी हिल्लन मा, হুভরাং তাঁহার অন্তর ও বাহির চুইয়ের ক্রিউল, এবং অন্তর 👁 বাহির চ্ইরের প্রতি তাঁহার সমান আছা ছিল। ভিনি ৰোগী ছিলেন, তিনি ভক্ত ছিলেন, কেবল ৰোগী বা কেবল ভক্ত ছিলেন না। তাঁহাতে বোগ আগে, না ভক্তি আগে ? তাঁহাতে ভুইরেরই যুগপং সন্নিবেশ ছিল, কেন না তিনি বাহিরের শাস্ত্র শুরু ইত্যাদি পরিত্যাপ করিয়া একমাত্র ঈশরকে আশ্রয় করিয়াছিলেন, ইহাতে তিনি বহিনি রপেক বোগী বলিয়া গণ্য হইতে পারেন, কিন্ত তিনি বাহিরের সম্বন্ধ গুলি কোন কালে পরিত্যাপ করেন নাই, ঈশরকে এই সকল সম্বন্ধটিত বিবিধ কর্তব্যের কথা জিজ্ঞাসা করিতেন। এক সময়ে তাঁহাতে ভব্তি বাড়িয়া গেল, অপুর সমরে যোগ প্রবল হইল, এরূপ হইতে পারে, কিন্ত প্রথম হইতে ছুইই ভাঁহাতে নিগুঢ়ভাবে ছিল ভাহাতে সন্দেহ নাই। অন্তর 😘 বাছ—বোগ ও ছক্তি, এরপ খনিষ্ঠ সম্বন্ধ নিয়ত কাল ভাঁহাতে দৃষ্ট হইরাছে। তিনি ব্রাহ্মধর্মকে বর্বন দার্শনিক ভূমির উপরে স্থাপন করিবার জন্য হয় করিলেন, তখন তিনি কোন এক দর্শনের পঞ্চ-भाषी **एदेश अक्षत नर्गामत धा**ष्टिक्न एदेराम मा, अस्त्रीय छेखाइत মত্যৰ প্ৰতিশাসক বৰ্ণন ভাহার বৰ্ণনশাস্ত হইল।

হোরী খিনি ডিনি কেবল অন্তরের রাজ্যে বিচরণ করেন। উাল্লাম্ব নিকটে পরনাত্মবন্ধ সত্য, আর সমুদার মূঁরার মত অপ- হার্য। বোগী অহৈচবাদী। তিনি বলেন, আদিতে ত্রন্স ছিলেন, আর কিছু ছিল না; স্থতরাং ব্রহ্মাতিরিক বাহা কিছু প্রতীত হয়, উহা স্মুবার অজ্ঞানতামূলক: উহার বাস্তবিক সভাব নাই। বোদী যত কৰ এই প্ৰকাৰ কেবল অন্তৰবাজ্যের পক্ষপাতী, বহি-জ্পতে পদার্পণ করিতে অসমত, মিধ্যার রাজ্যে ছায়া ভক্তৰ করিতে কৃষ্টিত, তত দিন তাঁহাতে ভব্তির প্রকাশ অসম্ভব। বোগী ভগবানের লীলা দেখেন না, মায়ার খেলা দেখেন। তিনি কোন বিষয়ের क्षां खरुवाती मन, गर्समा खगन ७ डेमाजीन। छक खड़वदाकात প্রতি বিমুখ হইতে পারেন না, কেন না অন্তরের অন্তরতম পরমান্ত্রা ভক্তির উপজীবিকা। উঁাহার মতে ক্রন্ধ সত্য, তপ সত্য, शृष्ट সত্য। তাঁহার মতে পরমাস্মা বিচিত্রশক্তিসম্পন্ন, স্টি তাঁহার বিচিত্র শক্তির व्यकान । मिल्यान त्र व्यकात मछा, मिल्छ मिर व्यकात मछा. শক্তি ছাড়া শক্তিমান অপ্ৰসিদ্ধ। ব্ৰহ্ম অৰু কড় বা মুক নহেন, অনেষকল্যান তুণবিশিষ্ট: জীবগণের প্রতি অসীম উদার তাঁহার ব্যবহার। বোণী ও ভক্ত শ্রেণী সামাস্ত নহেন। ইইাদিপকে नहेश मन्निमित्र छेर शक्षि। जान्या (Spirit) ও कड़ (Matter), এ চুই চিরবিবাদের ভূমি। কেহ আত্মা বিনা আর কিছু দেবেন না, কেহ বা জড় বিনা আর কিছুরই সত্যত্ব স্বীকার করেন না। কেছ জনতের দিকু দিয়া সকল বিষয়ের মূল অবেষণ করেন, কেছ আত্মার দিক দিয়া জগতে গিয়া উপস্থিত হন। স্তরাং এই চুই প্রশানীর চিন্তা হইতে জড়বাদ (Materialism) ও অধ্যাপ্তবাদ (Spiritualism) উৎপর হইয়াছে। আছা, চিন্তা,জ্ঞান (thought), এই সকল এক মতে সত্য, আর এক মতে চিস্তা জ্ঞান প্রতৃতি গৈহিকজিয়া-(function) সমুৎপন ! এ ছুই প্রকার মত, অন্তর ও বাহির, এ হুইবের কোন একটির আবাজ অন্ত্যারে সুইয়াছে, ইহা জার কে জা জানেব গ

ক্ষমি ও ইংগও সভত্র সভত্র ভাবে অন্তর্কান্থ প্রণালী ক্ষমদন্তন করিয়া পরস্পার হইতে ভিন্ন হইরা পড়িরাছেন। জন্মনির অন্তন্ন হইতে এবং ইংলতের বাহির হইতে দার্শনিক গতি। এ ভূইয়ের দাসঞ্জ বিনা দার্শনিক জগতের বিরোধ কোন দিন তিরোহিত হইবার নহে। আন্ধা বা আমি (Subject) একান্ত অপরিহার্য্য। বাহিরের জগতের বিৰয় অত্থাবন, চিন্তা ও পৰ্যাবেকণ, এই আমি বা আক্সাবিনা অসম্ভব। চিস্তাবিনাকিছুই জ্ঞানের বিষয় হয় না, দেখানে চিস্তা সেখানে আমি প্রবিষ্ট। এই আমির এত প্রাধান্ত বে, কিছু নাই বলিতে গেলেও এই আমি বা চিন্তার প্রয়োজন। বাহিবের চতুর্দ্ধিকের অবছা (Environment) যাহাদিনের মতে সর্কাদ, ওাঁহাদেরও স্বীকার করিতে হর, আনিতে প্রোধিত না হইলে এই চার্নিকের **অবস্থা কোন স্থা**য়ী ক্রিয়া রাধিয়া যাইতে পারে নান বাহিরের ক্রিয়া হইতে দেহাদির নানা বিধি পরিবর্তন হয় সভ্য, কিন্তু দেহা-দির পরিবর্তন একটা আন্তরিক প্রতিষ্ঠার (typeর) অসুবর্তন করে, **অভ্য**ণা একই প্রকারের উপাদান সত্ত্বে ভিন্ন দেহাদির উ[্]পত্তি কি প্রকারে সম্ভবে ? এক কলা (cell) ক্রমাবন্ধে উভিন্ন ক্রেড ছইডে লেছ উৎপদ্ম হইল, ভিন্ন ভিন্ন দেছের ক্রমিক পরিবর্তন ভিন্ন ভিন্ন **জী**ৰ হ**ইল, এ সকল ৰাহিবের চতুর্দিকের অবস্থার প্র**িবভন হারা নিম্ম করিতে গেলেও আন্তরিক প্রতিষ্ঠা (type) বিনা উপাদান সকলের ভিন্ন ভিন্ন ভালে ভিন্ন ভাবে সমাবেশ কিছুভেই প্রতিপন্ন হর না। স্থাবার বলি কেবল প্রতিচাষাত্র গ্রহণ করিয়া উপাদান ও চতৃৰ্দ্দিকের অবস্থা অধীকার করা যায়, তাহা হইলেও ক্রমিকোঞ্চেই

অসম্ভব হব। স্তবাং কেশবচাক্ত কোৰ ও ভক্তি বেমন সমন্ত্র ভাবে মিলিত, তেমনি অভৱ ও বাছ সমগ্রস ভাবে মিলিত হইবে; ইহাতো সাভাবিক।

ঈবর, জীব ও জনৎ, এই তিন প্রার্থসন্থৰে অন্তর্ব জিপ্রাণালীর প্রয়োগ হয়। ঈরর সক্ষে ভূই বিক্লম মত প্রচলিত। প্রবম মতে ব্ৰহ্ম অসম উদাসীন, তাঁহার হৃষ্টির সহিত কোন সম্বন্ধ নাই, ডিনি গুণাতীত। দ্বিতীয় মতে ক্ৰশ্ন ক্ৰিয়াশীল; জগৎ ও জীব জাঁছাইই ক্রিয়ায় উৎপন্ন, তাঁহারই ক্রিয়াতে বিশ্বত হইয়া অবস্থিত; বন্ধ অ: শ্ৰক্ল্যাণ-চৰবিশিষ্ট ৷ ব্ৰহ্ম বলি আপুনি উদাদীন ছইলেন, সর্বপ্রকারের ক্রিয়াবিশব্জিত হইলেন, তাহা হইলে এই স্টি আদিল কোখা হইতে ? ডিনিই যদি জগতের কারণ ও উপাদান উভয়ই হন, তাহা হইলে হুদ্ধ হইতে বে প্রকার দধি সমুৎপন্ন হর, তেমনি কি জগৎ ও জীব তাঁহা হইতে উৎপন্ন হইয়াছে ? একপ স্বীকার করিলে ব্রহ্ম বিকারগ্রস্ত হয়েন ; তাঁহার স্বরূপের একেবারে অক্সথা হইরা যায়। এই মতকে পরিধামনাদ বলে। দেশীয় পরিধাম-বাদিগণ ব্রহ্মের জ্বগৎ ও জীবরূপে পরিণাম স্বীকার করেন, কিন্ত তিনি অপেনি বিকারগ্রস্ত হন, বা তাঁহার সরপের অন্যুখা হয় স্বীকার করেন না। এক মৃত্তিকা হইতে হটাদি বিবিধ আকার উৎপন্ন হয়, এক স্বৰ্গ হইতে কুণ্ডলাদি নিনিধ অলমার প্রস্তুত হয়, কিন্তু মুন্তিকা ও স্বৰ্ণ পদাৰ্থ বাহা ভাহাই থাকিয়া যায়, ব্ৰহ্ম ছইতে জগতের উৎপত্তি ইহাদের মতে দেইরূপ। ব্রহ্ম প্রকারী, জগৎ ও জীব ব্রহের প্রকারমাত্র বৃদ্ধ আর্ম্ছানীয়, জগৎ ও জীব তাঁহার দেহস্থানীয়। বিবর্ত্তবাদিগণ বলেন, আকাশ বর্ণ ও রূপবিবহিত, অথচ তাহাতে নীলিমাদি বে প্রকার ভ্রান্তিবশতঃ প্রতীত হয়, তেমনি ৰূপ ও বৰ্ণবিৱহিত ব্ৰহ্মে জগৎ ও জীব ভ্ৰান্তিজ্ঞানে আরো-পিত হইয়া বাকে।

কেশবচন্দ্র কারণে কার্য অন্তর্ভূত স্বীকার করিলের। ঈররের

চিচ্ছকি বর্ধন ক্রিরোর্থ হইলেন, তর্থন সেই চিচ্ছকির (সমুদার

স্বাধ্ ও জীবসম্পর্কীণ জ্ঞানের) প্রথম প্রকাশ করে তব্দস্তর্ভূত্ত
(শক্তিরপে অবস্থিত) জন্দং ও জীবরণ কার্যে উৎপন্ন হইল *।

ক্রেম আপনি নিরাকার নির্মিকার, তাঁহাতে কোন প্রকারের পরিবর্জন

সন্তবে না; অনস্ত জ্ঞান, অনস্ত প্রেম, অনস্ত পুণ্য সর্ক্ষ প্রকার
পরিবর্জনের অতীত; কিন্ত চিচ্ছকির প্রথম প্রকাশ (Logos)

সমুদার জন্পং ও জীবের উৎপত্তির হেতৃ হইলেন। সেই জন্মং ও

জীবের অন্যান্তরে ঈরর আপনার কল্যাণগুণ এমনই মিলাইয়া

দিলেন বে,জন্মং ও জীবের কল্যাণের দিকে স্বাভাবিকী গতি। কল্যাণ

ভিন্ন তাহালের হইতে আর কিছুই উৎপন্ন হইতে পারে না; ক্ষমিক

বিপরীত ভাবে ক্রম্মেটিত করিতেছেন। জনতের ভিতরে জীবের

নির্নিপ্ত ভাবে অবস্থিতি করিতেছেন। জনতের ভিতরে জীবের

^{• &}quot;धक निन पृष्ठि इस नारे, निजा पृष्ठि इरेराज्य । सांशांता राज अही धक निन धरे विश्व प्रसन करियारहन, जाशांता अहुक पृष्ठिक सांत्र ना ।• पृष्ठिवीरहात कांद्रा क्रमांत्रक तिल्लाहात, तक यूर्ण पृष्ठि कृताहरत ना ।...... यांता इरेमारह, बाना न्टेरजरह, मांशां करेरत, मम्बाध वीरस्ता जिक्क विका । क्रमांत्र निम्मांत्र वीरस्ता जिक्क विका । क्रमांत्र वालाव कर्मांत्र वालाव कर्मांत्र वालाव कर्मां वालाव कर्मांत्र कर्मांत्र वालाव कर्मांत्र कर्मांत्र वालाव वालाव कर्मांत्र कर्मांत्र वालाव वालाव वालाव कर्मांत्र कर्मांत्र कर्मांत्र वालाव वा

[&]quot;What was creation but the wisdom of God going out of its secret chambers and taking a visible shape, His potential energy asserting itself in unending activities?"—Loci. Ind.

ভিতরে সর্ব্ধ প্রকারের পরিবর্ত্তন ঘটিতেছে, সে সকল তাঁছাকে স্পর্লপ্ত করিতে পারিতেছে না, অথচ জগৎ ও জীবের ভিতরে উাহার কল্যাণগুণ প্রবিষ্ট জন্ম নিরম্ভর কেবল কল্যাণই হুইতেছে । ত্রজেতে কোন পরিবর্তন নাই, জনং ও জীবে পরি-

• "ব্ৰক্ষের দাস্ত্ৰকে চাক্ষ্য অথবা বিকার জনিতে পারে না, নংমা-दाउ क्रकि जामकि जनवा पूर्वा, जमुत्रांत जनवा विरवन छोहात शरक छेछत्रहे অস্তব। ভি।ন ছির গভীর প্রদান্ত অনত সাগর, প্রবৃত্তির ভরক জাঁহাতে উথিত হয় না। তিনি আর্থড্যালী ফ্কীর, এবন আর দাই।......ভিনি কঠোর ক্কীর নহেন, প্রেমিক উদানীন। সম্ভাদপালবের স্থুদায় উপায় क्तिएएहन, किंव निर्द्ध बनानक। शंकात लांक केलिया छेटिल केलिय क्रिम रूप मा, रामिया छेटिंग कारात खेलाम रूप मा। मृष्टित विक्रिय पर्वेगांव बरना छेत्रामीन महाराष छेक देवडाबालकंटछ यानामरन दिव हरेवा बनिवा আছেন। সমন্ত বক্ষাও বৰি প্ৰলয়দশা প্ৰাৰ্ত হয়, ভবাপি বক্ষাওপতি ছিৱ বাকিবেন। উচার লক্ষ লক্ষ সম্ভাবের বলি মৃত্যু হয়, ভবাপি ভাহার মন बाक्टवत क्याय त्यांकार्ड रुदेश कैं। किटन मा। मृद्धित बातक रुदेशक कक রাজ্ঞার বিলাপ হইল, কড দেশ সমভূমি হইল; কিছ সর্জরাজ্ঞাবর স্থাইত ও শান্তভাবে বিরাজ করিতেছেন। নির্ভ'ব ও নির্জিকার ব্রহ্ম বছ ও ब्बिटबब जात्र किछूरे (पविशास ना, श्रमिटबस ना, रायम विशास ग्रेक राजसि द्वहिल्लम । उत्कार वास्त्रिक जीना प्रविद्ध कि प्रमथ्कात । केल कार्या, केल ঘটনা, কত রূপ, কত শ্বণ, কত শক্তি ৷ যোর দংসার ৷ এক্সের অন্তর কি পভীর। একটু ঢাঞ্জা নাই, এক রূপ, এক ভাব, এক নিডম্ব অচল পদার্থ। त्रकोद नमाथि । महत रुत्र त्यन वहिवांग्रीहरू कार्या, सूमशास, स्थमवाकाद, मःनाहनीता, समस अवर्षा, किंद सम्बन्धानुद्र अक त्यांनी मिड्निय उन्य हुन করিছা বলিছা আছেন। বাহিরের সমুদার কার্য্য সূচারু নির্মে চলিতেছে। ৰপুৰা মধারীতি পরিজ্ঞান করিছা ধন ধান্ত সঞ্চয় করিছেছে, ভজেছা নিৰ্দিষ্ট নিম্মে আৰ্থনা ও সাধন ভঞ্জন ক্রিমা প্রমার্থ ও ধর্মান্ন সক্ষ ক্রিভেছেন ঃ বর্ত্তন আছে। ব্রম্কের সায়িধ্য বশতঃ জগং ও জীবে ক্রমান্তরে পরিবর্ত্তন হইতেছে, কিন্ত সে পরিবর্ত্তন ব্রম্কের কল্যাণগুল সর্ব্বর্ত্ত প্রাবন্ত জ্ঞান্ত ক্রমান্ত প্রাবন্ত জ্ঞান্ত ক্রমান্ত করে ও তাঁহার হার্টি অন্তর্কাহিতাবে সর্ব্বলা সম্বন্ধ হইরাও ক্রমান্ত করে ও তাঁহার হার্টি অন্তর্কাহিতাবে সর্ব্বলা সম্বন্ধ ক্রমান্ত করিছে পারা বায় না; স্তরাং এ মতে অন্তর্কাহ্যের সত্যন্ত স্থীকার অপরিহার্য। যোগী হইরা সাধক অন্তরের অন্তর ক্রমের সহিত একীভূত হইলেন, অথচ ব্রমের অনের ক্রমান্ত ক্রমান্ত ক্রমান্ত করে করে ক্রমান্ত ক্রমান্ত করে ক্রমান্ত ক্রমান্ত ক্রমান্ত করে ক্রমান্ত ক্রমান্ত করে ক্রমান্ত করে ক্রমান্ত ক্রমান্ত করে ক্রমান্ত করে ক্রমান্ত করে ক্রমান্ত করে করিয়া জ্ঞান্ত ক্রমান্ত করে ক্রমান্ত করে করে ক্রমান্ত করে করে ক্রমান্ত করে ক্রমান্ত করে ক্রমান্ত করে ক্রমান্ত করে করে ক্রমান্ত করে ক্রমান

কেশবচন্দ্র বিজ্ঞানবাদী। জীবসম্বন্ধে তিনি একজন ক্রমো-শেষবাদী ছিলেন। সমুদার মানবজাতির ক্রমোন্মেরসম্বন্ধে বিজ্ঞা-নের যে মত তাহা সন্দিম, তাহা সপ্রমাণ কর' সহজ নহে, কিন্ত প্রত্যেক মানবের সম্বন্ধে ক্রমোন্মেযের নিয়ম এক প্রকার প্রত্যক্ষ। ক্ষড়, উদ্ভিদ, বিবিধ জীব, পরিশেষে মন্ত্রা, তৎপর দেবতা, এ ক্রম

ব্ৰহ্ম নিজে নিলিবি, অবচ উাচার সমস্ত রাজা, সমস্ত সংসাল বিভেছে, মুহৎ মুহৎ বাাপার সকল স্নাপর চটতেছে। তাহার নিমনে স্থা আলোক এবং উরাপ দিতেছে, মেঘ বারি মুধণ করিকেছে, বারু সঞ্চালিত চইতেছে, আমি কংল করিতেছে, সমুদ্র দেশ দেশান্তরে বাাণিজ্ঞা বংল করিতে পারে নাই নিমনে ব্রহ্মান চলিতেছে, কিছু তাঁচাকে কেছ ম্পান করিতে পারে নাই। তাহার সেহতেও ভাহার পালনা শক্তিতে সাভার স্থানের ভিতর দিয়া শিক্তকে পোষণ করিবার জন্ম ছুছু আসিল, শিক্ত বা ছুছু পাল করিল এবং পার্ভিইই ংইল, কিছু ভিনি নি.লিবি রহিলেন। বি, বি, ০১। ৪০ পৃষ্ঠা)।

প্রতিমন্ত্রের মধ্যে দেখিতে পাওরা বার। আমাদের জীবনের আরম্ভ কুদ্র বিন্দু হইতে। এই বিন্দুতে প্রাণশক্তি আপনার ক্রিয়া প্রকাশ করিয়া তেনে তাহা হইতে মামুব উৎপাদন করে। কেশবচলের আস্থার সহকে একটি মত অতি অনৃত। তিনি একই আস্থার ভিতরে নিয়ত চুই আত্মা প্রত্যক্ষ করিতেন। এক আত্মাতে দেবতা— দেবাংশসমূত মানব—দর্শন করিতেন, অন্য এক আত্মার মধ্যে জড় ভাব, পশুভাব ও মানবীয় ভাব অবলোকন করিতেন। জড়, পশু ও মানবভাবাপন্ন আস্থার তিরোধানে দেবাস্থার আবির্ভাব হয়; সেই আত্মাকে তিনি আপনা হইতে অভিন্ন জানিয়াও ভাহাকে নমস্কার ও বন্দনা করিতেন। "এ আমি যদিও আমি, তবু তাহাকে ভাল বাসি তাহাকে নমস্কার করি', এরপ কথা কেশরচন্দ্র অনেক সময়ে বলিয়াছেন। আমাদের দেহ মন প্রাণের ভিতরে যে সকল ক্রিয়া চলিতেছে তাহা অনেক সমরে আমাদের অজ্ঞাতসারে। যাহাও বা প্রথমতঃ জ্ঞাতসারে নিপ্পন্ন হয়, তাছাও পরিশেষে দেহের এমনি স্বভাব হইয়া পড়ে যে, তৎসহকারে আমাদের চৈতন্তের কোন ক্রিয়া থাকে না। দৈহিক নিমেষ উল্মেখনি ক্রিয়া সর্বলা অকুনভাবে চলিতেছে, অধ্ব তৎসহকারে আমাদের জ্ঞাতসারে কোন সম্বন্ধ নাই, ইহাতে ইহাই প্রতীতি হয় যে, দেহসম্বন্ধে আমা-দের ক্রিয়া অতিপ্রিমিত, আমাদের প্রাণশক্তির ক্রিয়া অতি বিস্তৃত। এই প্রানশক্তির ক্রিয়া স্মৃতির আকারে প্রকাশ পায়। এই স্মৃতির নাম বিজ্ঞানবিদেরা Organic Memory (সাংস্থানিক মৃতি) অর্পন করেন। এই স্মৃতিশক্তি আমাদের আত্মার প্রতি কোন লক্ষ্য না রাথিয়া নিয়তকাল ঘান্তিক, স্নায়বিক, গৈশিক, সকল প্রকারের ক্রিয়ানির্কাহে সাহায্য করিতেছে। স্বতরাং বলিতে হইবে আমাদের মধ্যে নিরবছিল উত্তিপোর্চিত জীবন চলিতেছে, আর একদিকে পশুসম্চিত জীবনেরও অভাব নাই। ক্লুবাতৃষ্ণা প্রভৃতি পশুসাধারণ কার্য্য বিনা আমাদের দেহরক্ষা না, বংশবিস্তার সম্ভবে না। জ্ঞান ও নীতি আমাদের উত্তির হইয়া আমাদিগের মানবোর্চিত জীবন সর্কাদা প্রদর্শন করিতেছে। জ্ঞান ও নীতিতে মানবের মহত্ব প্রকাশ পায়, কিন্তু এখনও তাহার প্রকৃত গৌরবের বিষয় প্রকৃতিত হয় নাই। যখন তাহাতে দেবত প্রকৃতিত হয়, তখন সে আপনাকে ভূলিয়া যায়, সর্কাদা পরের জন্ম জীবন নির্কাহ করে, ইহলোকে থাকিয়াও সে হর্গে অবন্থিত; সে ভখন ব্রহ্ম ভিন্ন আমা কিছু জানে না, ব্রহ্মের ইচ্ছা তাহার সমগ্র জীবনের নিরামক হয়। 'আমি কিছু করি না, পিতা এ সম্দায় করেন' এই বলিয়া সে পিতার সহিত এক হইয়া যায়। যে অনন্তশক্তি সম্দারের প্রাণশক্তি, সেই শক্তির সহিত জীব এক হইয়া এখন স্তত্ত্বা।

কেশবচন্দ্র আত্মার দেবাংশের প্রতি সর্কান নৃষ্টি ছির রাখিতেন।
তিনি কেবলই বলিতেন, ভিতরের ডিক্ষ কৃটিয়া তাহার ভিতর হুইতে
নূতন মান্তবের জন্ম হয়। সেই মান্তবের বাহাতে জন্ম হয়ু,
তাহারই জন্ম তিনি আপনার সর্কপ্রকারের বন্ধ ও সাধন নিয়োগ
করিতেন। তিনি আপনার ভিতরে আপনার ভাইদের ভিতরে
কেবল সেই মান্তবকে মুঁজিতেন *। বিজ্ঞানবিৎ সামান্ত প্রাণ-

^{* &}quot;সামতা প্রত্যেকেই হজন হজন মাস্ব। একজন মাস্বের বেলা প্রায় শেব হুইরা স্থানিয়াছে, আর একজন মাস্বের বেলা আরভ হুইবার এবনও কিছু বাকি আছে। আমার মাস্বের দিন শেব হুইবার সময় হুইল, ভোমার মাসুব বে, ভাহার জন্ম হুইবার সময় হুইল। এই কোটার ভিত রে

শ্কিযুক নাংসৰত হইতে আরম্ভ করিয়া মানুষে পিয়া পৌছ ছিলেন, সেধানে পিয়া তাঁহার পতি ছপিত হইল, স্মৃতি, সংস্থানিক স্মৃতি, ইত্যাদি কথা রচনা করিয়া ডিনি মানবের ভিন্ন অবস্থার বর্ণনে প্রবৃত হইলেন। তিনি ধণ্ডদর্শী অধণ্ডদর্শী নহেন, অধণ্ড মহাপ্রাণশান্তিতে সকলকে একীভূত করা তাঁহার কার্য্য নহে। नर्गन अहे शक्षा धानर्गन करतन, व्यशाश्वितिकान अक व्यवस्थरण সমুদার ধণ্ডগুলি একীভূত করিরা সকল বিবাদের মীমাংসা করিয়া-ছেন। অধ্যাত্মবিজ্ঞানের এ কার্য্য কল্পনা নতে মিখ্যা নতে, ইহাই সম্দায় সত্যের মূল সত্য। কেশবচক্রের সম্দায় জীবন এই মহৎ কাৰ্য্য সম্পাদন অক্স অভিবাহিত হইয়াছে। জীব ও ব্ৰহ্ম এ চুইয়ের যোগসাধন অন্ত প্রয়াস কত প্রাচীন কাল হইতে চলি-তেছে। প্রকৃতির সঙ্গে বিরোধপরিহারের জন্ম প্রাকৃতিকশক্তিকে সেই মহাপ্রাণশক্তির সঙ্গে একীভূত করিয়া লইবার প্রবালীও নিতান্ত নৃতন নহে। কিন্ত উদ্ভিদ হইতে পশু, পশু হইতে মানব, মানৰ হুইতে দেবতাকে বাহিৰ কৰিয়া লইয়া দেবতে সকলের একত। স্থাধান, এ বহু নূতন বহু। এ বছু কাহার ? কেলবচজের। কেশবচল্ৰেৰ অন্তৰ্জাভ প্ৰদৰ্শন কিছুতেই হয় না, বদি এই মধ্যেৰ भीतव अकृ है।कारत अमर्गन कता वाहरत ना भारत ।

মানিলাম,মানুৰ এ পৃথিবীতে সর্বাদেকা গ্রেষ্ট। আন ও নীতিতে সে পশু চুইতে সর্বাধা কতর; ডারউইন প্রভৃতির লভ চেষ্টাসত্তেও

चात्र अकी। जीव, अहे शाबीत किकटत बात अकी चका...... नवास्त्र क्रेकाम शहिता नवित्व कृतिन, हेस्टिक केस्टिक वादित स्टेस । चार्टिक मजीरतत किकत किस्टि नामून यूनाच । चआंक श्रास्त्र किस्ति चनक चीकृष्ठ स्टेरिन, अनन कि भूबाहेटकासन ।" (आ, २० अस्स्रेस, ১৮৮२)।

পত ও মানবের ভিন্নতা বিলোপ হয় নাই। বিলোপ না হউক কিন্তু মাতুৰ মাতুৰ থাকিলেই কি যথেষ্ঠ হইল ৭ মাতুৰের অপেকা কি আর উচ্চ জীবন নাই ? ক্রমিক উয়েষ হইতে হইতে এখানে আসিয়াই কি উহার গতি ম্বলিত হইল ৭ এথানেই কি স্টির চরম সীমা উপস্থিত ? সকলই খণ্ড বংগ্রহিল; কেবলই ভিন্নতা, क्वितन्हें व्यक्ति, क्विका कार्यात्र मन चर्छ मस्हें नरह, स्म একতা চায়। সে যে একতা চায়, সে একতা কিরপে নিস্পন্ন হইবে ? পভতে পভতে একতা নাই, কেবল বিরোধ, বিসংবাদ, সংগ্রাম। জ্ঞানেতে নীতিতে উন্নত হইয়া মানুষ পৃথিবীতে এত কাল রাজত্ব করিতেছে, কৈ পৃথিবীতে কি নির্কিবাদ শান্তির রাজ্য সমাগত হইয়াছে ৭ ঐ কর্গরাজ্য আসিতেছে. ঐ স্বৰ্গরাজ্য আসিতেছে, যত বার সাধু মহাজনগণ পৃথিবীতে আসি-लन, এই भक्त भूर्य लहेशा श्रामित्लन। छाँशाता कि कल्लमात तारका বাস করেন, মিথ্যার রাজ্যে বাস করেন ৭ বর্তমান তুঃখ ক্লেশ ভূলাইবার জন্ম তাঁহারা কি দীন দুঃখী লোকদিগকে মিথ্যা স্তোভ-বাক্য বলিলেন ৭ তাঁহারা মিথ্যাবাদী, না সভ্যবাদী ৭ যাহা কখন সম্ভব নহে, লোক্দিগকে সে কথা ভনাইয়া মিখ্যা আখা উদ্ভেক করিবার কি প্রয়োজন ছিল ৭ তাঁহারা সে রাজ্য ক্ষম দেখিয়া लाकिनिशतक सरवाम मिहारक्षन १ मा, मा एमिहा मरनह अकठा कन-নাকে সতা বলিয়া মনে করিয়াছেন ? যে সকল মাত্রৰ আজ সংসারে বিচরণ করিতেছে, কার্যা কর্ম করিতেছে, কত কি কীর্ত্তি পৃথিবীতে স্থাপন করিতেছে, ইহারা না মরিলে, না চলিয়া গেলে যদি সে पर्गडाका ना चारिएन, তবে এরপ মিখ্যারব তুলিবার कि প্রয়োজন हिन १ राष्ट्रा बाक लात्कर निकार क्षेत्रक हरेन ना. महल्लाहि বংসর পরে তাহা পৃথিবীতে সিদ্ধ হইবে; এ কালনিক বিশাস লইয়া কি ফল ? কেশবচন্দ্র বলিতেছেন, পরে নহে এখনই সম্ভব। কি প্রকারে সম্ভব, তাঁহার প্রদর্শিত প্রবালী আলোচনা করিলেই দেখা বাইবে।

टकनव विलिएएछन, प्रकल शास्त्रपत श्राह्म कृष्टे छन कृष्टे छन मानुष चाह्य। এक छन मानुष थाकितात नहर, हिनता गरित, মরিয়া যাইবে, আর এক জন মানুষ নিতাকাল থাকিবে। যে মানুষ পশুর মত থায় পরে, নিদ্রা যায়, মাগড়া করে, কলছ করে, হিংসা দেব নীচ বাসনা নীচ প্রবৃত্তির বশীভূত হয়, সে মানুষ মর্ণশীল, त्म थाकित्व ना, कमाणि थाकित्व ना। (महरे क्वल मन्नेनेल ধ্বংদশীল তাহা নহে, আমরা যাহাকে আজ আমি বলিভেছি, সেও व्यत्कित। यत्रभनील ध्वःभनील। अहे यत्रभनील ध्वःभनील श्राप्ट्रावत মধ্যে আর এক জন মানুষ আছেন, তিনি নমস্ত, তিনি পঞ্জা, তিনি ঋষি, তিনি ব্রহ্মতনর। তাঁহার আগমনের জন্ম চারিদিকে এড আয়োজন, এত স্টির ঐর্ঘ্য ও সম্পং। জড়, উভিদ্ বা পশু এ জগতের লক্ষা নয়, লক্ষা ব্রন্ধের অনন্তসম্পদের উত্তরাধিকারী ব্ৰহ্মতনয়। ইনি দেবতা; ইনি Godman (নুহরি); ইনি প্রতি মানবের আত্মার মধ্যে আজও নিদ্রিত। কে ইটাকে জাগাইবে দ কে ইহার চেতনা সম্পাদন করিবে १ ধর্ম। ধর্ম কি আকারে আসিবেন ? সত্যাকারে আসিবেন। বেখানে ধর্ম সেখানে সত্য, বেবানে সত্যান্তরাগ সেবানে ব্রহ্মতনরের জাগ্রং ভাবে স্থিতি। এখানে ইনি, উনি, তিনি এ সমুদায় ভেদ তিয়েহিত। এখানে এক অধণ্ড ঈশবে এক অধ্ও মনুষ্য বিরাজমান। এখন বুরা বাইতেছে, মানুষ মানুষ থাকিলে চলিবে না ; সামুষ দেবতা হুইলে

তবে সর্পরাজ্য অবতরণ করিবে। ইহাকি প্রকারে সম্ভবে ? ইহার কি কোন নিদর্শন পৃথিবীতে আজ পর্যান্ত দেখা গিয়াছে ? যদি না দেখা গিয়া থাকে তাহা হইলে চিরদিন ইহা কথার কথা ছিল; আজগু ইহা কথার কথা থাকিয়া হাইবে।

মান্থৰের পৌরবাকাজ্জা বড়ই প্রবল ্রেন পৃথিবীতে বড় হইতে চার, আর সকলকে পদতলে শেলিবার জন্ম তাহার বছু। र्य यठ धनी दश, छानी दश, विधान दश, शमक दश, कीर्छिमान इश, তত তাহার আর সকল ব্যক্তি অপেক্ষা বড় হইবার স্পৃহা বাড়িতে খাকে। জিগীয়া মাতুষের স্বভাব। সে অপরকে সকল বিষয়ে জয় করিয়া আপনি প্রভু হইবে, সকলে তাহার অধীন হইবে, তাহার কথা শুনিয়া চলিবে, সে ভিন্ন আর যেন কেই দ্বিতীয় ব্যক্তি পৃথি-বীতে না থাকে, এই তাহার সর্বাদা অভিলাষ। পতি পত্নী, পিতা সম্ভতি, ভাই ভগিনী সকলেরই মধ্যে এই পাভাবিক প্রবৃত্তি যথন প্রবল, তখন নরনারীর মধ্যে ভাতৃভাব ভগিনীভাব স্থাপিত হইবে এ আশা নিতান্ত গুরাশা। মাসুষের হভাবের ভিতরে ষধন এক জন হওয়ার বাসনা এত প্রবল, তখন এই একজন হওয়া সম্ভবপর। তবে একজন মানুষ যে প্রণালীতে সে হইতে চায়, সে প্রণালীতে কোন কালে হইতে পারে না, হওয়া একান্ত অসম্ভব। সকল মানু-बत्क अक्कन मासूच कतिवात क्रम वह महत्व वरमत हहेरा स्कू চলিতেছে, দে বত্বের ফল কিছু কিছু দেখাও গিরাছে। বলি সেই পৰা ধরিরা বাছা অবশিষ্ঠ আছে আমরা তাহা সমাধা করিতে পারি, তাহা হইলে ভ্রান্তম্ব নহে ভগিনীম্ব নহে, একড় নিম্পন্ন হইবে, স্বৰ্গ-রাজ্য পৃথিবীতে অবতরণ করিবে।

এ অতি আ কথা, ষধনই পৃথিবীতে কোন বিধান অবতরণ

করিয়াছে, তথনই মানুধকে একজন মানুবে পরিবত করিবার জন ষ্তু হইয়াছে এবং সে বতু কতক পরিমাণে সফলও হইয়াছে। বত मिन थरन, ज्यारन, भोन्नर्स, विष्णारक, प्रक्षरम, श्लोबरव माधून व्यनव সকলকে আত্মসাৎ করিবার জন্ম যত্ন করিরাছে, তড দিন তাহার সে বত্ব বিফল হইয়াছে, কিন্তু বাঁহারা ধর্মের নামে আগমন করি-দ্বাছেন, ধর্মাই আপনাদের জীবনের সর্বান্থ কচিয়াছেন, ধর্ম ও সভ্য বিস্তারের জন্ম অকাতরে আপনাদের দেহের শোণিত, মনের বছ, জনদের অকৃতিম প্রেম, ইচ্ছার বিশুদ্ধি বিতরণ করিয়াছেন, আপনার বলিবার পৃথিবীতে কিছু রাখেন নাই, তাঁহারা লোকদিগের সম্ভ্রম গৌরব আদর বাড়াইগ্নাও তাঁহাদিগকে আত্মসাৎ করিয়া ফেলিয়া-ছেন। তাঁহারাই বাঁচিরা রহিয়াছেন আর সকলে মরিয়া পিয়া তাঁহাদের সহিত একীভূত হুইয়া গিয়াছেন। বিজ্ঞানবিদেরা বলেন, উচ্চপ্রতিষ্ঠ (higher type) মানবেরা বাঁচিয়া থাকিবেন, নিয়-প্রভিষ্ঠ লোকেরা ধ্বংস হইরা যাইবে, একথা এখানে সভ্য দেখিতে পাওরা বায়। তবে বিজ্ঞানবিদেরা যে অর্থে একথা বলেন, সৈ অর্থে উহা সংলগ্ন হইতেছে না, কিন্তু নিয়প্রতিষ্ঠ লোকেরা উচ্চপ্রতিষ্ঠ ুহুইয়া নিমপ্রতিষ্ঠত্বসম্পর্কে মরিয়া বাইতেছেন, এ অর্থে ভাঁহাদের কথা সভা হইভেছে। ইহা সভা হইভেছে কি প্ৰকাৰে, শোকের বিহিষ্ট এক ব্যক্তির দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিয়া উহা প্রতিপন্ন করিতে বছ कदिर उछि ।

মুসলমান জাতিকে অনেকে ছুণা করিয়া থাকেন। ছুণা বিষেষ হিংদা কটিকোটি মারামারি বিষয়ে উঁহোর। পৃথিবীতে এক প্রকার প্রসিদ্ধ হইয়া পড়িয়াছেন। তাঁহারা যে কেবল মুসলমান ভিন্ন আজি জাতির সঙ্গে বিহেৰস্তে এথিও তাহা নহে; নানা নীচ বিষয়

नदेश के। हात्र। वाभनात्त्रत वश्नीत त्मात्कत मत्त्र मर्कमा वित्त्राव বিবাদ বিসংবাদ ও ৰোণিতপাতে অবৃত হন। ফলতঃ তাঁহাদিগের विविध क्षेत्रादत प्रतिष्या, अथेठ क्षेत्र त्यांस्पारतत मास्य, स्थास्पारतत ধর্মের নামে তাঁহারা সকল বিবেষ ভূলিয়া যান, ধর্মের জন্ত প্রায়ো-খন হইলে কোটি কোটি লোক একজন হইয়া প্ৰাণ দিতে প্ৰস্তুত হন। বোহ্মনের নামে কত লোকে কত প্রকার গ্রামি উপস্থিত करत, बेहोन अठातकश्रम त्रवारन राजारन डांशास्क व्यक्त वर्ष ইত্যাদি আখ্যা দান করেন, অখ্চ দেই মোহমুদ এই নি শোককে এমনই করিরা আস্থানাৎ করিয়াছেন যে, তাঁহারা উত্তির জন্ম তাঁহার গ্রহারিত ধর্ম রক্ষা করিবার জন্ম প্রাণ দিতে অকুলিছা এরপ হইল কেন ? মোহ এদ যে ধর্ম লইরা পৃথিবীতে আভিনুন, সেই ধর্মের সহিত এক হইয়া তিনি দেবত্ব লাভ করিলেন, কে দেবত্বে তিনি ভাঁহার অন্তরবর্গের হাদয় অধিকার করিয়া রহিয়াতে মুসলমান-পণের হাদরে একবার সেই দেবত্ব জাগ্রং ক**ি**ূতিতে পারিলে, তাঁছারা অরি সভন্ন থাকিতে পারেন না, এক হইয়া 🛒 ভ্ৰান একজন মোহত্মদ থাকিয়া যান, আর সকল মুসলমান তঁহোটে সর্কাধা বিলুপ্ত হন। এ সমরে তাঁহাদিগের এক মত এক হৃদয় এক প্রাণ হয়। উচ্চ-প্রতিষ্ঠ মোহত্মদ নিয়প্রতিষ্ঠ অসুষায়িংর্গকে যে আপনাতে একীভূত করিয়া উক্তপ্রতিষ্ঠ করিয়াছেন, ভাহা এই সকল বিশেষ সময়ে লোকের হান্যক্ষম হয়। দেশের জন্ম, পজাতির জন্ম, আত্বর্গের জন্ম অনেকে অনেক সময় একত্র হইয়া সমর করিয়াছেন, কিন্তু এ সকল ভাবে একত্র মিনিত হওয় চিরন্থারী হয় না। কুরু ও পাওবদিশের জাত্রবিরোধ চিরপ্রশিক্ষ। তাঁহারাও এক সময়ে শরণাপত্ম দতী রাজার নিষিত্ত ক্লেব বিপক্ষে বিরোধ ভূনিয়া গিয়া সমবেত হইয়াছিলেন।

বুৰ বীষ্ট নামক টেভক প্ৰভৃতি ভৰংসভাগানের একজসাৰৰে কি প্ৰকাৰ মূপ হইয়া আছেন সকলেই নিভা প্ৰভাক কৰিতেছেন। লোকে বলে, তাঁহাদের পৌরবাকাজ্ঞা ভারি ছিল, তাঁহারা লোক-দিপের চিত্ত আপনাদের দিকে আকর্ষণ করিয়াছেল, তাঁহাদিশের ৰত্ব কেবল আপনাদিগকে প্ৰতিষ্ঠিত কৰিবাৰ জন্ত। তাঁহারা আপনা-দিপকে প্রতিষ্ঠিত করিবার জক্ত খত করিয়াছেন, না ভাঁহাদিপের মধ্যে যে কথা যে সভ্য অবভরণ করিয়াছিল ভাষার প্রতিষ্ঠার জন্ত ৰত্ব কৰিয়াছেন ৭ ভাঁছাৰা আপনাদিদেতে অৰতীৰ্ণ কৰা ও অৰতীৰ্ণ সত্য ভিন্ন আপনাধিগকে আর কিচুই জানিতেন না। তাঁহার। जालनारमञ्ज रमवजारान मर्कामा खणिष्ठिक शांकिरणन, जमात मामवी-শ্বাংশ অনুষায়িবর্গের চকুর সমিধান হইতে তিরোহিত করিয়া রাধিয়াছিলেন। তাঁহারা বধন্ই অনুগামিগণকে আহ্বান করিয়া-ছেন, তথনই মানবীয়াংশের নামে নতে, দেবাংশের নামে আহ্বান করিয়াছেন। দেবাংশে সৃত্দার মানুষ এক হইবে, ইহাই জনংপতির অভিপ্রায়। সে দেবাংশ বদি গ্রীষ্ট বুদ্ধাদি মামে পৃথিবীতে প্রচলিত হইয়া থাকে, ভাহা হইলে জুপংপতির •অভিপান খণ্ডিত হইল কি প্রকাবে বলিব ? দেবাংশ আপনার দ্বিতির জন্য আধার অপেক্ষা করে, এই বুদ্ধাদি সেই আধার खिन खात किनूरे नरहन । हेहाता राष्ट्र खाञ्चरणीतताकावती हहेराजन তাহা হইলে গুজন লোককেও একজন করিতে পারিতেন না। তাঁহাদের আত্মনোরৰ বলিরা কিছু ছিল না, তাই তাঁহারা আপনা-एकत एनवएच चारमकत्क अक कतिएल अमर्थ इटेबाएकन । देहाता बाष्टा স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র ভাবে সম্পন্ন করিলেন, তাহারই অধওত্বসম্পাদন**ত্ত** কেশবচন্দ্রের আগমন। তিনি কি করিলেন দেবা হাউক।

रमन्त्रहाता अ मनाव वाकितात वाकि केक। तुव क्षेत्रे वाकृष्टि व प मन्तानारवत राक्तिश्रयद्व प प रहराय अक करियारकर, কেশৰচন্ত্ৰ সকল সম্ভাদারের সকল প্রকারের লোককে সাধু অসাধু ছঞাৰ ব্ৰাহ্মণ প্ৰভৃতিত্ব দেবাংৰে এক করিতে কৃতপ্ৰতিক্ষ। ছবন লোক বাঁহার বল্পে এক হইল না, তিনি এত বড় উচ্চাভিনাৰ হাদরে পোৰণ করিয়া কি আপনাকে উপহাস্থালাক করেন নাই ? তাঁহার কোন কোন কতবিদ্য বন্ধুর মধ্যে সংশয় এই, কেলবচন্দ্র বাহা বলিরাছেন, জীবনে তাহা দে 💮 🤛 পারেন নাই, তাঁহার কথা কেবল কথামাত্র বহিন্নাছে, ফলে কিছু দাঁড়ায় নাই। বাঁহারা তৎপ্রতি এরুণ সংশয় প্রকাশ করেন, কেশবচন্দ্রের অমুকৃলে কেহ চ্চারিটী কথা বলিয়া তাঁহাদিগের সে সংশ্বর নিরস্ত করিবেন সম্ভবপর নছে। ভবে কেশবচন্দ্র যে প্রণালী যে উপায় আপনার भीतत खरलखन कतिग्राहित्तन धावर अवलखन कतिग्रा छाँहात रख মিধ্যা নর প্রত্যক্ষ করিয়াছিলেন, আমরা কেবল তাহারই উল্লেখ করিতে পারি। আমরা পূর্কে বলিয়াছি, পশুতে পশুতে বা মানুবে মান্থবে মিলন হয়, কেশবচন্দ্র ইহা স্বীকার করিতেন না। দেবতায় দেৰভাত্ম মিলন, ইহাই **ভাঁহার বিশেষ মত। মাছবের পভভাৰ ও** মাছবের মানবীর ভাব সর্কাধা অপনীত হইয়া সে দেবতা হইবে করিয়াছে ? কেশবচন্দ্র বলেন, হা, ইহা নিভাপ্রতাক বিষয়। অভিনিন মাত্ৰ বৰ্বন সংসাবের নিকটে বিদায় গ্রহণ করিয়া ভর-বানের চরণতলে গিয়া উপস্থিত হয়, সেই প্রাণম্কণের মহিত बारिय मृगरियन अकीकृष्ठ रह, उपन मि चाह मासूप पीरक ना, (त्रवण रह। कन्नणः शृथितीत स्वा रहेरण स्टिक सारताहन ना

করিলে, যথে প্রবেশ না করিলে আছব আপনার দেবত সাক্ষাৎ প্রত্যক করিতে সবর্ব হয় না। উপাসনা আর কিং পরব ধেবতাতে প্রবিষ্ট হইয়া আপনার দেবত উপাসনি।

मानिनाम, मेश्रदार अविष्ठ आचा मेश्रदार पूर्व हरेश आनेनाव পশুত্ব ও মনুষাত্ব ভূলিয়া বার, এবং ডাহাতে নেবত অবভরণ করে। দে আপনি দেবতা হইল তাহাতে সমুদায় নর নারীর সহিত ডাহার একত ছইল কোৰায় ? ঈৰৱের সহিত এক হইবার জন্ম বেমন সাধ-নের প্রয়োজন, তেমনি ভাই ভিনিনিগণের সঙ্গে এক হইবার **জভ** সাধন আবশুক। ঈশরেতে আপনাকে এবং আপনাতে সমুদার ভাই ভগিনীকে এক করিয়া লওয়া, ইহাই এ সম্বন্ধে সাধন। আপনাতে কোটা কোটা ব্যক্তিকে এক করিতে হইলে যে সাধনপ্রণালী অবলম্বন করা প্রব্যেক্তন, ভাহাতে একটি মানবীয় মধ্যবিশু চাই। কেশবচল্ল এ সম্বন্ধে বাহা বলিয়াছেন, তাহার পূর্ব্বাপর সামনত করিয়া লওয়া অনেকের পক্ষে একটু কঠিন হইরা পড়ে। এক ঈশাকে মধ্যবিশ্ ক্রিয়া উত্তাহার সহিত তিনি সম্পায় সর্গত্ব কবি মহাজনগণকে এক করিরা লইয়াছেন। স্তরাং মানবীয় মধ্যবিশ্ বলিতে হইবে, কেশব-্চল্ডের নিকট আছি। সম্বায় স্বৰ্গন্থ স্বৰি মহাজনগণকে ঈশাতে তিনি এক করিয়া লইলেন কেন ? ঈশার প্রতি এরপ অংশা পক্ষপাত কি বিজ্ঞানাসিত নহে । না, বিজ্ঞানাসিত নহে। সমুদায় ক্ষি মহাজনগণের সাধারণ ভাব কি ? সাধারণ ভাব ব্ৰহ্মতনমুত্ব , ব্ৰহ্মতনমুত্বে তাঁহারা সকলে এক। ধনি সকলকৈ এক করিতে হয়, তাহা হইলে এই ব্রশ্নতনয়তে এক করা সন্তবসর। ঈশা পৃথিণীতে ব্ৰহ্মতনয়াবভার, স্বভরাং তিনি সকল বোনী কৰি মহবিকে ব্রহ্মতনয়ত্তে একীভূত করিয়া আপনার সঙ্গে এক করিয়াছেন । । বাঁহারা উহোর দক্ষে এক হইনেন, ভাঁহারা স্তরাং সকলের দক্ষে এক হইবেন।

কেশবচন্দ্ৰ যদি এই পৰ্যান্ত করিয়া নিরস্ত থাকিতেন, জাঁহার বিক্লব্ধে অভি অভ লোকেই কিছু বলিত। শেষ সময়ে তিনি বে সক্র প্রার্থনা করিয়াছেন, তাহাতে আপনার পূর্ব্ব কথার বিরোধে আপনাকে তিনি বন্ধুগণসম্বন্ধে মধ্যবিশ্ করিয়াছেন স্পষ্ট দেখা ৰায়। ধিনি গুরু নন, মধ্যবর্ত্তী নন, তিনি আপনাকে মধ্যবিলু করিয়া मकनरे ररेतन, এ দোষারোপ কে আর তাঁহার উপর করিতে ছাড়িবে ? শেষ সময়ে অবশ্য আত্মনিমাত হইয়াছিলেন, অঞ্যথা নিজে নিজের কথা খণ্ডন করিয়া সাধু অসাধু পাপী চণ্ডাল প্রভৃতির মিলনভূমি আপনাকে কেন করিয়াছেন ? জিজ্ঞান্ত এই, এটি একটা সাধনপ্রণালী কি নাণ যদি একটা সাধনপ্রধালী- হয়, তাহা হইলে তাঁহাতে এ সাধনপ্রণালী পূর্ব্ব হুইতে ছিল কি নাং যদি আপনি সাধন করিয়া যখন সিজ ছইয়াছেন তথন সেই সিদ্ধ বিষয় বৃদ্ধুগণের নিকট ব্যক্ত করিয়া থাকেন, ভাহা হইলে অন্ততঃ সাধনপ্রণালী বলিয়া গ্রহণ করত ইহার অতি বিস্তৃত ব্যবহারপ্রকর্মপূর্কক প্রশালীর নির্দ্ধেষত্ব এবং ভাঁহার পূর্ববেধর কথার সামঞ্জন্ত দেখান বাইতে পারে। 🕬 🕃 অতি পূর্ব্ব হইতে এক নী সাধনপ্রশালী তাঁহার মধে। কার্য্য কার্রতে-ছিল। তিনি বলিয়াছেন, "পরিবার এক ; এক জনের সঙ্গে ঘদি

Behold the central figure of the divine son. The radii of all human races and nationalities from the remotest parts in the circumference of humanity converge and meet in him. He attracts all into himself and reconciles all in a common fellowship with himself and with his God.—Leat Ind.

প্রকৃত কর্মীর ভাবে সাধিকন হয় ভাহা সময় জনতে ব্যাপ্ত হয়বে। दक्स ना मूरन क्रिक्नान शृथिनीएंड अंक निवनान्हें गाकिरन कि केनादा करे महावानात जिल्ल हरेरव उरज्ञवा जिलि. विनिहादक्त, "'बामि' 'जुमि' 'जिमि' अ मकन कथा थाकिरन ना । सियात जुकल अक रहेता वारेव हेरावरे क्षण जामारमव अफ चारताचन, देशावर क्छ चामारमत अकड छेनामना ।" अ माधन कि रक्षण जञ्चराई बांकित ? मा, वाहित्तक ध्वकांग गाँहैता। "युवन व्यवदा शांक व्यन क्षेत्रदर्श अक श्रेद्र, उपन वांक्रिय । পুৰ্ববাজ্য প্ৰকাশিত হইবে।' ভেদ বাংখ প্ৰভেদ অন্তৰে, এ মূলস্ত্র কেশবচন্দ্র স্থানেক দিন পূর্ব্বে বোষণা করিয়াছেন,— "मृद छारे এक छारे, मृद छत्री এक छत्री, खदशास्त्रास खामता অনেক, কিন্তু ঈবরসম্পর্কে আমরা সকলেই এক" স্টিখর এক এবং তিনি সকলের প্রাণ, স্থতরাং তাঁহার মধ্যে সকল নরনারী এক।" ইহা কি তিনি প্রত্যক্ষ করিয়া না অসুমান করিয়া বলিয়া-**ছেন ।** সাক্ষাৎ প্রত্যক্ষ করিয়া বলিয়াছেন। "এই উৎসবের সময় যদি দেখিতে পাই, আমরা দকলেই এক হইয়াছি, ভূমি মাহা বলিতেছ, আমিও তাহা বলিতেছি,তুমি যাহাকে দেখিতেছ, আমিও তাঁহাকেই দেখিতেছি, তুমি যাঁহার কথা শুনিডেছ, আমিও ভাঁহাওই কথা শুনিতেছি, এমন কি অনস্ত স্থান এবং অন্তকাল বদি আমা-দিনকে বিচ্ছিন্ন করে, তথাপি তোমার মধ্যে আমি এবং আমার মধ্যে তৃমি এবং সকলের মধ্যে আমি এবং আমার মধ্যে সকলে वाकित्व।"

এটা সাধনপ্রধালী হইলে পূর্জাপর সকল কথার সামঞ্জ হয়, কেখনচন্দ্রে কোন বোব পড়ে না, ইহা দেখান থায়েজন।

की शास्त्रकानीए प्रस्तवान किन क्रेमानन-वक्त क्षांक्यक वरेता केनामना। अर्क कर केनामना कडिएएकन् हेरीका डीरोड शतक दराव निवादकत । विनि छेनालेना कृति-কেবের, অনত আনের সহিত তিনি মিলিত হইবাছেন, দেই অনত শ্ৰীৰ স্বাৰ কৰা কৰাকৈ উহিচাৰ মহিত মিলিত কৰিবট্ছেল। এখনে এক बरन इस जन धन एडेन, धन विन्द्र नमनिन् मिनिन, विक একসে নিশিবার কারণ দেই এক ব্যক্তি, না অবস্কল ঈশর ? विक ब्यानवन्त्रभ क्षेत्रन मिन्द्रनन कान्न क्षान छोटा व्हेरन त বিশ্বতে গণবিশ্ মিশিল সে বিশ্ব মধ্যবিশ্ ইইরাও গরং অকর্মণ্য, व्यक्तिन मधानको ना मधानिन्द मछ नत्र, त्कन ना थाकीनकात्न ৰীছারা মিলিভ হইডেম, তাঁহালের ভৃষ্টি সেই মধ্যবর্জী বা মধ্য-বিশ্বতে ছিব, এখানে দেৱপ হইবে বোগ কাটিয়া যায়, অৰও এক ৰূপ নাসুবের অবও এক জীবরেতে প্রবেশ হর না। প্রতরাং কেশবচন্ত্র नोडे छात्राव विवासन, म्एन विवासन आठीन विवासन वछ वशक्ति वा मनावर्धी नारे, उदन माधनार्थ (व मनाविन्यू, जारा मनाविन्यू रहेनार विकारिक् नटर, दकन ना अवादतरण मृष्टि यक ना ताबिता छेराएण मृष्टि বন্ধ রাখিলে বোগ কাটিরা বার। ঈবর এক জনেতে দশজনকে अक करतन, देश जेवातत गीना, मानूरवत देशांख कान शक नाहे, ছ'ৰৱাং আমি মধ্যবিশ্ বা মধ্যবন্ধী এ অভিযান জ্বরে পোৰণ করা (कान मास्ट्रवंद्र शक्क (भाष) शांत्र ना। छट्द मेचटवंद्र विट्मंब লীলাসভূত নবীন সাধনপ্রণালী ঈশ্বর বাঁহাকে শিধাইরাছিলেন, দে সাধনপ্রণালী জগতের নিকটে ব্যক্ত করিবার জন্ম বতটুকু প্রয়ো-জন ডডটুকু জীহাকে বলিতে হইয়াছে। সাধকমাত্রেই বধন জগর সহজ ব্যক্তিকে লক্ষ্য ছলে রাধিয়া এ প্রধালী নিজ নিজ জীবনে

আবোৰ কৰিছে পাৰেন, তথ্য ইহার সাৰ্যভৌগ্ৰহত সকল স্বেট্ট অপন্যন কৰিছেছে।

আমি এত তলি কথা বলিয়াও একটা কথা এখানে বোপন क्रींतर्ड मानि मा। तम क्या अहे,—अहे मदीन क्रमानी विनिष्टे सीयत्म প্রয়োগ করিবেন কেনবচন্দ্রের সহিত জাহার একামতা অবক্রমানী। रकेंद्र नाम धार्म कक्रम वा ना कक्षम, करत धक्रम ना परेश बाकिएछ भारत मा, रकम मा मरदिशारमत अशास दिरमयत । हेशा आहीम ওজবাদ নহে। একাশ্বতালাভে বে ব্যক্তির বাসনা আছে, তীহার ৰাত্ৰ ওঞ্জ অবলম্বন করিয়া কৃতার্থ হইবার সম্ভাবনা নাই, কেন না व्यात्वत्र मृत्व निद्रा व्यावश्वतत्वत्र महत्र व्यवस्थः मरमूक मा स्टेर्ल একটি ব্যক্তিকেও বাহিরে রাধিয়া তাঁহার সঙ্গে এক হইবার উপায় माहे। এখানে ঈশবসম্বাদ্ধ বা জীবসম্বাদ্ধ অবৈতবাদী হইবারও मञ्जावना नाहे, त्कन ना हेशांख ग्रल त्वन जेवन ७ कीत्वन महिल একত অনুভূত হয়, তেমনি ধরণ ও অবস্থাগত ভেদ কোন কালে অনুভৃতি হইতে বিলুপ্ত হয় না। হৈতন্ত্যে অহৈত দর্শন, শিব্যন্ত্যে ভক্ষদর্শন, এছুই বিপরীত ভাব অভর ও বাহির এ ছুইয়ের একত্র মনাবেশ আছে বলিয়াই নববিধানে সম্ভবপর। কেশবচল্র বেমন मकल नवनादीटक छत्रवाद्मव भागभन्नमृत्ल এक पर्णन कवित्नन, एवर्नन তাঁহাদিসের অবস্থাপত পার্বক্য দর্শন করিয়া তাঁহাদের প্রতি ভক্তি ममर्गत्वत्र केशात्र केहारन कतितान । दकरन तान हरेल करन ना ভক্তি চাই, এজন্ত কেশবচন্দ্র মাসুবকে প্রাণম্বরূপে এক করিয়া গ্রহণ করিলেন, আবার তাঁহাদের বেধানে দেবাংশ অবন্ধিত সেধানে ভক্তি चमुतान चर्नन कतितान, निरावृत्ति चरनचन कतिता वाहात निक्के हरेए बाहा निविवाद निवित्तन। **अ जरून माध्याद विखल क्या**;

CONTRACTOR OF THE CONTRACTOR O

क्षा वस्त क्षा शहेन, क्षांत्र क्रेनकरहांड क्षात्रकर ক্ষান্তব্য কে স্বত্য ও নাহ্*ব উভা*নে প্ৰশানী ছিলেন, তাহা क्षत्र । । कांक भरमान कतिरक्षकः। (रात्र धनस्मान) काक (काबुगक) धन छ तब, ध इटेराव मस्य विनि गमान छार জ্ঞানত প্রতিত পারেন না, তিনি বোগ ও ভক্তিকে সমপ্রিয়াণে **রাজন হল। করিতে আসমর্থ হন। এক ও বর**্ভাচন ও অভেন, अ हरे फोनरक क्षेत्रके नमात कीवरन कार्यक्री करनरका शाक **পটিন, কেনল ডিনিই এ সহজে কুতাক্ত্ম ইহুতে পাবেন, বিনি** जबकियादनक स्पील (साटन रक्षानी स्रेजारकन । व नरीन स्थाप प्रेपन ব্ৰহুৱা নে বিবাৰ পুৰিবীকে চলিকেছে সহজে তাহার নীমাংসা হয়; ক্ষিত্ৰসম্বয়ে স্থান ও বিভাগ, এ কুই মত এখানে অভৱ ও কাহিত্রের সমপরিমাণে সম্বন্ধ রক্ষা করতে সমঞ্জস হইরা ধার। প্রের অন্তরে ঈশরের সহিত বোগয়ুক্ত ব্যক্তি ভাঁহাকে অৰও নির্দ্ধিকার নির্ধিকল প্রুষদ্ধণে দর্শন করেন, আবার তাঁহারই বেষের বিচিত্ত শীলা প্রস্তৃতিতে নরনারীতে দর্শন করিয়া কৃতার্য ছন। নক্ৰিবানের সাধক বেমন ঈশবের সহিত এক হন, তেমনি बर्मनाइ वित मराजन नजमाती जनरमत मरण धक रन। ध धकप ক্ষেত্র পর্তের বা নতুব্যকে নহে। এ একত্বও ভক্তি বা প্রেমণুক্ত নছে। অভৱে এক হইৱা বাহিবে নরনারীর দেবাংশে ভভি ভাগন क्षीक केशिएक राजा कतिए वा शाविरा किहुई रहेन ना। প্ৰাক্তরাং শিতাৰত রাজা রাজনোহন যেনন শারমার্থিক ও পৌকিক এই ক্ষাৰে অন্তন্ন ও ৰাছিয়কে বিভাগ কৰিয়া প্ৰমান্তসাকাৎকার

s কলোনে বিশিষ কৰিবা পালন উভয়বেই নকা কৰিয়াহিতসং avene जाराहे प्रीताजाय । हेहारच अपनाम (Materialism) अतः चनामनातः (Spritualism अ) त निवान किन जारोक वासिर्ड स्टेरकार, तकन मा बाहत व गारित बर्ट्ड अवनेतिमारन লোকে যকা কৰিতে পানে নাই বলিয়া পৃথিবীতে উভয়বালের বিরোধ চলিতেছে। উপরের সাক্ষাৎসম্বৰ বিনা-পবিত্রাপার সাক্ষাৎ জিয়া বিনা ঘৰৰ নৰ বোৰ নৰ ভক্তিৰ প্ৰৰাশীতে ইপৰ,জীব ও প্ৰকৃতি সহ একামতা ও অনুবাদের সময় রক্ষা সম্ভবশর নাহ, তথ্য প্রাচীন अक्रवान मगुर्वाहिंवीन धर्वात्म बामिएड नारत मा। धर्वात्म मैन्द्र थ कींद मह अकृष उपक्षिण हरेबाथ ब्योडिए थे दिए खारने विरामाण हरैराज्यक् मा, क्षत्रार ब्यांकीन देवजवाम वा बरेवजवारमक গুৰানে অবকাশ নাই। কেবল জ্ঞান ছারা অন্তর বাহিত্তের সামজ্ঞ রকা পার না, বোর ও ভক্তির একাড প্ররোজন, স্তরাং সাংন कवन धरवाणि मकरमारे अवरत धरताकन भूसंदर करवाम করিতেতে। সেবা ভক্তির অন্তর্ভ ; স্বতরাং এ গবে অসুরাগ-সংখিত্র কর্মবোল বিলক্ষণ বিদ্যমান।

• পরিশেবে আত্মসক্ষে ওটিকরেক কথা বলা প্রারোজন। আমি এবন প্রকাশ্যে বাহা কিছু সকলের নিকটে বলিতে বাই, কোন না কোন আকারে কেলবচন্দ্র ভাষার মধ্যে থাকেন, ইহাতে সহজে সকলের মনে এই আলক্ষা উপস্থিত হইতে পারে বে, আমি খতঃ পরতঃ কেলবচন্দ্রকে জনসমাজে স্থাপন করিবার জন্ম বন্ধ করিতেছি। আমার মতে কেলবচন্দ্র স্থাপিত হইবেন, তিনি আপনি আপনার প্রোপরি ক্রভারনান হইতে পারেন না, ইহা আনি কথন বিধাস করি না ব কেলবচন্দ্র বলিরা জেনাবরে চিৎকার করিলে তাঁহার স্থাপনা বন্ধ,

हैरा ब्रामान विभाजन विकास स्था। किन व शहा मनगदन कृतिका नियमत्नातम् रहेशात्कनः, त्त्र मका क्षीत्रतः करनकन ग ক্রিকে কেশকচতের ভাগনা হর ইহা কামার বিবাস নহে। ক্ষুৰকে ছাড়িয়া কেবল মামুৰ অবল্যন করিয়া কে কৰে মহা-বোদের অধিকারী হইরাছে ? বেখানে লোকে ব্রহ্মতনয়কে চাহি-লাছে, দেখানে সেই ব্ৰহ্মতনৰে তাহাদের চিত্ত আবদ্ধ হইয়াছে, সকল সাধু মহাজন সকল নরনারীর সঙ্গে তাহারা কখন এক হয় নাই। কেশবচন্দ্র ঈশ্বরকে স্বর্ধপ্রথমে গ্রহণ করিলেন এবং ঈশ্বরাব-লম্বনে সম্দায় ব্রহ্মতনয়গণকে এক ব্রহ্মতনয়ে নিবিষ্ট করিয়া আপনাতে উাহাদের সকলকে এক করিলেন। এত দ্র করিয়াও তিনি পাপী প্ৰাাত্মা সকল প্ৰকার নরনারীর সহিত এক হইতে পারিতেন না যদি আপনাকে পাপী হীন বলিয়া গ্রহণ না করিতেন, অকিঞ্চনতাবোগে যোগের সহিত ভক্তিকে না মিশাইতেন। তাঁহার প্রধালী অবলম্বন করিয়া বাঁহারা কুদ্র কুদ্র কেশব * না হইবেন, তাঁহারা উাহার যোগে যোগযুক্ত, তাঁহার ভক্তিতে ভক্তিমান্ হইবেন কি প্রকারে ? লক্, হিউম, কম্ট, লুইস, হক্সলে, স্পেন্সার প্রভৃতি সংশর্বাদিগণের শিব্যত্ আমি প্রকাম্ভে আরও স্বীকার করিয়াছি।

[•] কেশৰ হওয়া কি ? জীহার জীবনের মুবাডছ লায়জীবনের মুবাডছ করিয়া লাওয়া। "Those who profess to be my enemies are advocating my cause, and going about preaching my ideas and principles. They hold in their hands my banners. I see their lives, I watch their movements, and with a smile I say to myself;—why this is all my own self reproduced."—Lect Ind.

ভাষাদের শিশ্য হইরা কোন প্রকার সুসংস্কার বা বিজ্ঞানবিরোধী বিষরের আমি অন্থানাদন করিতে গারি না। প্রজ্ঞাবিজ্ঞান বাহাদের মড, তাহারা কোন প্রকারে কোন মডের দাস হইতে পারে না। প্রক্ষা অসম উদাসীন হইরাও সমুদার অসং ও জীবের মধ্য দিরা নরনারীসম্বন্ধে আপনার কল্যাণাভিপ্রায়সকল ব্যক্ত করিতেছেল, এ মতের বদি আমি পক্ষপাতী না হইতাম, তাহা হইলে হয়তো বোগের পথ অবলম্বন পূর্বক হাঁহাদিগের ভিতর দিরা ভগবানের কল্যাণাভিপ্রায় প্রকাশ পাইতেছে তাঁহাদিগকে অগ্রান্থ করিতাম, না হয় ভক্তিপথের পদিক হইরা একত্বকে তক্ষ কঠোর ব্রহ্মজ্ঞানীর পথ মনে করিরা হ্ণাপ্র্কিক তাহা পরিত্যাগ করিতাম। বে পথে আসিরাছি, সে পথে ভগবানের অভিপ্রায়ের মহিত সংমুক্ত একটা ক্ষুদ্র নরনারীকেও * অগ্রান্থ করিতে পারি না, ভক্তির বিষয় না করিরা থাকিতে পারি না। ঈশ্বর আপনি বে সকল উপার নির্দ্ধিক করিরা থিরাভেন, তাহার একটিকেও অগ্রাহ্ণ করা এখানে অপরাধ । বিদ্ধিক অন্তর্ম ও বাহির, চুই সমভাবে আমরা গ্রহণ করিতে না পারি

[•] Ejae us sai afaire first at sicas a scars sai afaires scars sai afaires scars said special scars acaifacts sai set touching thing about the religion of Christ is its amazing trust in the least of saints (Italicised). Here is the mightiest enterprise ever launched upon this earth, mightier even than its creation, for it is its re-creation, and the carrying of it out is left, so to speak, to haphazard—to individual loyalty, to free enthusiasms, to uncoerced activities, to an uncompelled response to the pressures of God's Spirit.—The City without a church.

ভাষা হইলে বর্তমান বিধানের স্বহিত একতা কি প্রকারে হইবে ইছার ইউক, অনিচ্ছার হউক, জ্ঞাতসারে হউক, অজ্ঞাতসারে হউক, অজ্ঞাতসারে হউক, বর্তমান বিধানের ভাব, সত্য ও মূলতত্ব বিরোধিগণকেও গ্রহণ করিতে হর সত্য, কিন্ত যদি জ্ঞাতসারে ভক্তি অহুরাগ সহকারে এ সকল গৃহীত না হর, আত্মন্থ করা না হয়, তাহা হইলে বিধানশীকারজনিত জীবনের সার্বাপ্রীণ উন্নতি কি কর্বনও সম্ভবগর ?
আমার অহুরোধ, এখান হইতে যাইবার পূর্কে আমরা বেন বর্তমান বিধানের মহাযোগ ও মহাভক্তি গ্রহণ ও আত্মন্থ করিবার জ্ঞাক্ত ক্ষত্রমন্ত হই। পুন: পুন: কেশবচন্দ্রকে লইয়া আলোচনা করা বেন কেবল বচনরচনামাত্র না হয়। সকলে ক্ষ্ ক্র ক্র হউন, এ অহুরোধ বোধ হয় কেহই আর অমুক্ত মনে করিবেন না *।

কুদ্র কুদ্র কেশব হইতে গেলে সর্বপ্রথমে ঈশবদর্শন, ঈশরের কথা প্রবণ, তদনভর ঈশা মুদা প্রভৃতিকে গ্রহণ, ঈশরেতে সকল মানবজাতির সহিত একত্ব সাধন প্রয়োজন। এই পছা অবলন্থন প্রকি আমরা সকলে নবযুগের নবধর্ম্মে বাহাতে দিন দিন জগ্রসর হইতে পারি, কুপানিধান ঈশব আমাদিগকে তদিবরে আশীর্কাদ কল্পন।

ভিনি খার ক্ষুক্ত কেবৰ হইছে হইবে, এ কথা গয়ক মনে করিছে পারিবেন না।

কেশবচন্দ্ৰ কে এবং তাহার সাহত আমাদের সমস্থ কি ?

কেশবচন্দ্ৰ কৈ এবং জীহার সাহিত্য আয়াদের সহস্ক কি : *

श्रीको किछामा कडिएएक (क्यवहत्त एक श्रीके आहे क्य বংসর হইল এই পুৰিণী হইতে চলিয়া পিরাছেন ভিনি 🚁 बादर छीवात महिल जामात्मत मशक कि १ त्व (क्षावहन्त, कृति-কে • ডোমাকেই আমরা এই প্রশ্ন কিন্তাসা করিভেছিত ভূমি কে বু তুমি কি মহং কাৰ্ব্য করিয়া হর্লে চলিয়া পিরাছ বু তুমি আপনার কথার আপনার বিষয় না বলিলে, ভূমি যাহা নও দেই প্রকারে তোমার যে পৃথিৱী গ্রহণ করিবে ৷ ডোমার বাহিরের কৰা নিস্তন্ধ হুইয়াছে, ভাই বলিহা কি ভোষার বাণী চিহুদিনের समा निष्ठक १ (छामाद छि उद घडेएड दर वांबी निश्च हदेशाह. দে বাৰী আজও পৃথিবীতে বিদ্যমান। তুমি বাহা, ভাষা সেই बानी ভाल कतिया श्रुभिरोटक तुबाहेबा विक्। এই सनएड खैशाना विशास खानक मश्रामात्री खानिशाहित्तन, मकत्नहै ব্ৰিয়া পিয়াছেন যে, আমাকে কেছ ঈশ্বর বলিও না, কিছ ভাঁছা-দিৰ্দের শিৰোৱা ভালা অগ্নাহ্য করিয়া ভাষার বিপরীত করিয়াটেন। क्षीरामित्वव वांनी छारामित्वत भियानन स्थाना कविहा (सन्धनिक्र সারন করিয়াছেন, ভোষার অনুগামী বছুগণ কি ভাতাই করি-(वस १ देश (वम मा हत, अ समा जामता (कामा कर्जन जारका CA अध्यक्षा कथा कविट्ड भाविता चावता चावानिका समा

क्ष्युविदेश बीरवात्मरगानगरक अवक नक्ष्यात मोतः।

পুরুষণিগের শ্রেণীভূক কংহন। ডিনি আপনাকে ঈশা মুখা প্রভৃতির দলে ফেলেন নাই এবং আমরাও চাঁচাকে ঐ প্রেণী-ক্তক করাকে নবধর্মসকত মনে করি না। যদি ঠাহাদিপের সহিত তাঁহাকে শ্মান করা হয় তাহা হইলে তাঁহার সম্বন্ধে আন্যার বিচার করা হইবে। এই জন্য তিনি বলিয়াছিলেন, 'আমি Prophet (ভবিষাদ ত্রপ্তা) নহি । ঈশা প্রভৃতির সহিত আমি কোন কালে প্রতিযোগিতা করিতে পারি না। যদি আমাকে কেছ ঈশার প্রতিযোগী মনে করে, তবে আমি কে, তাহাদিগের জানা উচিত। আমি সেই জুড়াদ দ্বেরিয়ট বে ঈশাকে শত্রু হল্তে অর্পণ করিয়াছিল। আমাতে বে পরিমাণে পাপ আছে, ঈশা হইতে ভজ্জনিত বিজ্ঞেদ আছে, সেই পরিমাণে আমি জুডাস। আমি সেই অমিতাচারী সম্ভান, যে ঈখরের গৃহে वाणांत्रमन कतिवांत जना एक कतिएएक।' खिवशान्छक्षे मध्-পুরুষগণ বে কার্য্য সাধন করিতে আসিয়াছিলেন, কেশবচন্দ্র সেই কার্যা করিলেন, অথচ ভিনি আপনাকে মে শ্রেণীতে ভুক্ত করিতে কেন কৃষ্ঠিত হইলেন ৭ এ কি বিনম্প্রকাশ ৭ কেল্ব-इस मिथा विनय धकाम कतिवात (लाक किल्लन ना किले বাহা সভা জানিতেন, ভাগা অক্ভোভয়ে জনসমাজে প্রকাশ कतिराजन । यनि जिनि कालिन जैंदानिरानत नवाच दरेराजन, रम् কথা প্রকাশ করিয়া বলিজে কদাপি তিনি সক্ষৃতিত হুইতেন ना। अपूनांत्र श्रवंदर्शे निधानरक आश्वष्ट करा -- गकलरक अक्रेड्ड করা ভাঁছার বিশেষ কার্যা ছিল। বদি তিনি পূর্ম মহাপুরুষগণের এক বেলী হন,তাহা হইলে ভাঁহারা বেমন এক এক জন, তিনিও CEप्रति अक चन एन, कीहाता जकान कीहारक कि

अक सन रहेरतन, हेश रन अवस्था कि अकारत निक रहेरत ? वैश्वामिनात्क आश्वय कविटा द्य, वैश्वामितात्र महित अक रहेटा इब, छांशांवित्वत निवासानीत ना रहेरन क्यांनि करन ना। (कन्वहता करे सनारे सेना सूचा अपृष्ठि मार् बराशावित्तन অনুগত সেৰক ও শিষ্য বলিয়া আপনাকে গ্ৰহণ কৰিয়াছিলেন। धामानित्त्रत (गत्मत (यात्री समिन्दित दान्यस्त क्रिकेत निम्ना (यात्रीरनंत मान्न (कमवहास्त्रत अक्षा अविशासत शहरखी विधानश्चवर्तकन्त्वत विद्याव विद्याव छार आश्चर (कमवहत्त काश्वामात्रव महिल এक रहेबाइन । ममश्र व्याहीन ইতিহাসের সঙ্গে কেশবচন্দ্রের যোগ আমরা ইকাতে দেখিতে भारेटाहा, देखिशारमत खनीनियक्त **बरे अकार्य एरे**श থাকে। বিবিধ বিধানের ঐকাভূমি এই বিধান কেশবচল্লের यश मित्रा आमित्रात्क, दक्षेत्रहत्त आश्रीन हेट्रा विविद्यात्वन, चन्द्र हेश विलाद दम चार्यका बार्यन गरि। अ अश्रव पूर्व-वर्की महानुक्षमान मह हें हात ममछ धारी क दश मालह नाहे, किन्छ जिनि क्यार कि व विवास विनयारहन, मन्तारक विव्वहा। चिनि विलिशाहिन, क्वारेडे, मूसा, हिजना, युक्त अकृति महर, আমি কুজ। সে বারে বড় বড় লোকের ভিতর দিয়া ভগবান্ विधान लाठीहेबाहित्लन, अवादत अरे मात्राना मूटित मावाद भिश्रा विश्वान भाग्रेहिहार्छन । जिनि विश्वार्छन, 'वड्ड वड्ड शास्त्रद्र উপর বড় বড় এমারং হয়; বড় বড় লোকেরা বড় বড় ধর্মের হুছ क्ये । अवाद फाँटनद शनदानु भाषात्र निटल शादत ना अवन मामान চুৰ্মাণ লোকের উপর বড় খর্গের ভবন (হে ঈখর) ছাপন করিলে क्षेत्रे अक खर्लीकिक बालाइ।' छाराइ अ मनन क्याइ मेना

सङ्खिः निवास, अवह विधानकार्वास्त्रभणः निरम्पः व इद्दे अधि एक्षवत्रभ वाक एरेडाहि। शास्त्र कान क्षेत्र मृद्धाः श्राप्त कान क्षेत्र कानि मृद्धिः प्रमान वालात वृक्षित्र नारत ना। जारावा मकरन्त्र कानि मृद्धिः स्मान वालात वृक्षित नारत ना। जारावा मकरन्त्र कानि मृद्धाः प्रमान विधान कि विधान करित्र ज्ञान विधान करित्र कानि क्ष्मकार् का अवज्ञात कर्म कर्म कर्म का क्ष्म कर्म कर्म विधान करित्र का विधान करित्र ना। ज्ञान विधान करित्र ना। ज्ञान कर्म करित्र ना। ज्ञान करित्र का विधान करित्र ना। ज्ञान करित्र ना।

ক্রনা, মুবা, চৈতন্য প্রাভৃতির ধর্মকে একীভূত করিতে কেশবচল্ল আমিরাজিলেন; এই কার্য্য সাধন করিবার নিমিত্ত নববিধাকের অভ্যুগর। কেশবচন্দ্র কে ? এক কথার বলিতে গেলে
বলিতে হয়, তিনি বিজ্ঞানাদ্রা পুরুষ। বেদারবাদিগণ বাঁহাকে
বিজ্ঞানাদ্রা পুরুষ বলেন, সে অর্থে এ শব্দ আমি ব্যবহার করিভেছি না। বিজ্ঞান বহুকে একে পরিণত করে, বহুকে এক করা
কেশবচন্দ্রের নিয়তি জিল। এই নিয়তি অত্যুগরণ করিয়া তিনি
আন্ধ্রনীবনে ও আত্মনগুলীতে একডু সম্পানন করিয়াছেন।
ভিনি কেশল ধর্মামন্থ একডু সাধন করিয়াছেন।
বিজ্ঞানের সঙ্গে ধর্ম্মক একডু করিয়াছেন। বাহিরেদেবিতে বে
সকল পদার্থ ভিন্ন অকৃতির বলিয়া প্রতীত হয়, সেই সকল পদার্থের সাধারণ মুল নিকর্মণ করিয়া একীভূত করা বিজ্ঞানের কার্য্য।
সংবাহর্মণ ভার্মিতাকর্ম্ব প্রভৃতিকে এক স্বতিশ্ভিতে পরিবার
সংবাহর্মণ ভার্মিতাকর্মণ প্রজ্ঞাতকে এক স্বতিশ্ভিতে পরিবার

करिता विकान (व अक्कु मानन करतन, त्मके अक्कुमांवन (क्कूक ष्टिक विश्वानमञ्जदक निकास कविकारकम । विकासमञ्जद किक्कृरे तिरहाथी थाकिएक शारत ना, विश्वानवात्रान दक्षकारण्ड की पन छाराहे शक्ति हरेड। छिनि भूस भूस सहि बहरि দিবের আদি দিবা। তাহাদিবের ভিতরকার গুড় তত্ত্ব সকল তিনি প্রকাশ করিয়াছেন। সাধ্যাকর্থণ আবিষ্ঠান নিউটন মুখুন মাধ্যাকর্ষণের ভত্ত বাচির করিলেন, কে বলিবে ভালার পুর্বে माना कर्षण हिल ना ? रुपि अ अधाकर्षण भूति हरे ए हिल, छवाल निकेरन (व मधाकर्यत्वद आविकर्ता देश दन अशोकाद कांत्रदेव १ পঞ্জাতীর শক্ত বজাতীর বস্তর বিকেই আকৃষ্ট হয়। পাথিনির 'অন্তঃম' স্তের ভাষো পার্থির পদার্থ পার্থির পদার্থের দিকে বিশ্বা বাকে নিষ্টিত বহিদাছে। এ সকল নিৰ্দেশ আছে বলিয়া कि बाबराकर्षण जातिकछीत्र बाबाचा कि वर्त बहेरफर । जिति मधाक्र्यत्वत माच निर्वाद्य स्थान क्षित्री क्षात्रात रा क्षित्री व्यवधान র্ব + বিশ্বতেণ, ভাহাতেই মাধ্যকের্বপথিতঃ বে সকল পূর্বাভাল ভাছে, সে সমূষার নিউটন আবিষ্কৃত সাধ্যকর্ষণ নছে প্রসাধিত क्षेत्रा वाहेटल्ट ; व्यवह साम्याकर्षन शून्त क्हेटल किन, केलाइ ক্রিয়াও চলিতেছিল, লোকে উহার প্রাভাষও পাইয়াছে, এ मकलहे भुखा। धर्मन धरे हुद्देश्वाहे (कर्णन्दित कीन्ट्लिक कार्या निरमात्र कता वार्ड का

কেশৰচন্দ্ৰ কগতে আসিবার চুই সংল্ঞ তিন সহজ বৰ্ষ পূৰ্বে বিবাদের পর বিধাদের সমাগন হইয়াছে। পূৰ্বজন বিধাদের মধাপুক্ষদিপের শিষ্যাসুশিষাবর্গের ভিতর ছিয়া ক্রেন্থ ক্রম্থাদিপের মত সংক্রোবিত হইয়াছে। বৌদ্ধাদিগের মহ সহজ্ঞ

সংব্য গোৰেৰ ভিতৰ দিয়া আৰু পৰ্যাত সংক্ৰামিত ছই-त्याकः। (वानी नहाँद जेना म्यात कान अवर पूर्व पूर्व निवादन दं मञ्ज लारकता धामित्राहित्मन छारामित्तत कार विविध नाटक्षत्र जाकारत जनসমाटज ও जनश्चनरत्र विनामान त्रविताटण। এই সৰ্ভ বিধান ভিন্ন ভিন্নজনে লোকে গ্ৰহণ করে, ইহাদিপের ब्राबा (व धक्छा चाह्य, मूल शाख्या वा किन्नजा नाहे, धाक्त्रहे বিবিধ প্রকাশ মাত্র, এই বিজ্ঞানাগছ ব্যাপার কেশবচন্দ্র প্রদ-र्णन कतिशास्त्रन । विधाननमूनाम किल, छात्रास्त्रत गर्था निशृष् বোগও প্রচ্ছন্ন ভাবে বিদামান ছিল, কখন কখন এই খোগের আভাস বে কাহারও মনে প্রতিভাত হয় নাই তাহাও নহে, কিন্তু একটি বিজ্ঞানসিদ্ধ ধূপতত্ত্বে সে সমুদায়কে একীভূত করা কেশবচল্লের কার্য। এই জাবিদ্ধুত তত্ত্ব মাধ্যাকর্ণের ন্যায় পুরাতন সামগ্রী, ইহার জিলা চিরদিনই চলিয়া আসিতেতে, ইবার আভাসও লোকে পাইয়াছে, কিন্তু সেই ভর্টিতে সমুদার নিবন্ধ কাৰ্য়ী এক অখণ সামগ্ৰী জগতের নিকটে আত্র কেহ উপছিত করেন নাই। প্রতিব্যক্তির ঈবর সহ সাখাং স্থল্প এই তত্ত্ব, এই সাক্ষাৎ সম্বন্ধ দুৰ্বন ও প্ৰবৃণকোৱে প্ৰকাশিত, দুৰ্শন ও প্ৰবৰে বিপ্লন্ধ ইচ্ছাৰ নিবৃত্তি, বিক্লন্ধ ইচ্ছাৰ নিবৃত্তিতে 🕸 💘 ঈশবেক্তার সম্রাজ্ঞা, ঈশবেক্তা হইতে জ্ঞান প্রেম পুরা াখাস শ্ৰভৃতি বিবিধ ভাবের বিকাশ। এই বিবিধ ভাব বিবিধ বিধানের উপাদান। এই বিবিধ ভাবের গতি ঈশবরেচ্ছার সহিত একভার बिटकः। श्रेष्ठि ष्टेरण भाषा।कर्षणाभित्र विकास, शतिवारम छ।क्तिके नत्त्र अक्छा, अवारमञ्जूषा भावता मिरेक्रण मृण क्षेत्रदश्क्षात्र ममुनाव कारवत निवर्ग जिल्ला विस्ता (मिंग्रेडिंग) अवन विवरित हरे एउट्ह,

ক্ষেত্র বর্ত্তনীরনের প্রথম ইইন্ডে এই ওদ্বের প্রকাশ ইইন্ডিল কি না । তাঁহার বর্ত্তনীবদনর প্রাক্তে তিনি শাস্ত্র, ওফ, বা কোন ধর্মসম্প্রান্ত, হারও আপ্রর গ্রহণ করেন নাই, তাঁহার পক্ষেশাস্ত্র ওফ ধর্ম সকনই ঈবরের সহিত সাক্ষাৎসম্বন্ধ ভিল এবং এক দর্শন ও প্রবণ হইতে তাঁহার বাহা কিছু সকলই হইরাছে। কেশবচন্দ্র আপনাত্রে যে তত্ত্বে ফুর্রি প্রথম ইইতে দেখিলেন, সেই ভরের উপরে আপনার সমগ্র জাবন স্থাপন করিলেন, এবং তাহা হইতেই নববিধানের অভালর হইল। তিনি আপনাত্রে এ তত্ত্ব অবক্রদ্ধ রাধিলেন না, সমুদার মণ্ডলীতে ছড়াইয়া দিলেন।

কেশবচন্দ্রমান্তর তেওঁ দ্যানের সম্পাদক এক বার লিখিছাছিলেন, কেশবচন্দ্রের অনুবর্তিগণ বিবিধ বিধান এবং মহাজনগণরূপ কুমুম্বামের স্ত্ররূপে তাঁহাকে অবলোকন করিছা
থাকেন, ইহাতে গৃঢ়রূপে ই হারা কেশবচন্দ্রকে পূর্দ্ধর্থী মহাজ্ঞানপ হইতে অসমা শ্রেষ্ঠ মনে করিয়াথাকেন। এ কথার প্রতিবাদ
ভার কাহার করিবার প্রায়েজন করে না,কেশবচন্দ্রের নিজের কথাই
ইহার সমাক্ প্রতিবাদ করিয়াছে। তিনি আপনাকে কেবল
মহাপুক্রপ্রেণীভূক্ষ করেন নাই তাহা নহে, আপনাকে যেমন
স্থির কর্তৃক প্রেপ্তিত তেমনি স্থা মুখা প্রভৃতি মহাজনগণ কর্তৃক
প্রেরিত বলিয়া ঘোষণা করিয়াছেন। তিনি বনিয়াছেন "তোময়া
(প্রেরিতগণ) এবং আমি শাক্যপ্রেরিত, স্থাপ্রেরিত। তাহাদিগের ভাব প্রচার করিবার জন্য আমাদিশকে
প্রেরণ করিয়াছেন।... তোমরা এবং আমি উহোদিগের প্রেরিত।
ভাহারা আমাদিগরে পিতা, পিতামছ। তাহাদিগের বংশে

নান্দিবের জন্ম । কাহাদিবের ভাবে আমতা হিভালা।" "পৃত্তি नीं जंदनक करिकायन जेनस्टातिक बराशुक्रपतिस्तर मरक पूर्णात बावार्डक, मृक्तिक महात्र क्षेत्रा श्रीतादकृत महत्र आहे नत-त्वक भी एक है। हात्रा अब स्वतीपूक कड़िशन, अहे दनी छोहा। দিশকে বিধ্যানাদী ধনিতে কুঠিত নহেন। আবি তাঁহালিগের ক্ষিত এক ব্ৰেণীভূক ? এ কৰা নিভাগ আনার। বাঁখাণিপের জন্মনতে শুলান মন্তবে ধরিবার উপযুক্ত নই, তাঁহালিপের সহিত এক জেণাভুক্ত হইব १...এক আসনে বসিব না। নীচে বসিবা-ছেন বাঁহাল, দৃষ্টাভ প্টডেছেন বাঁহারা, উপদেশ ভানিডেছেন বাঁহারা, সেই সকল ব্যক্তির আমি অভত্ত।" * মৃহাভাষনপের বেরিত হইয়া শিষা হইয়া তাঁহাদিগের সমক্ষতা কেন্দ্রকলে কি धकारत मञ्चाद ? छीशाद अनुनामी वज्रुनगरे वाहि धकारत শিকৃপিভাষ**ৰ খানীর** ওক হানীয় মহাজনগণ হ^{ু ত}াহাকে শ্ৰেষ্ঠ মনে করিবেন ? কেশবচন্দ্ৰ প্ৰবিত্তী সাধ্যক ক্ৰিণ চইতে খাণনাকে শ্ৰেষ্ঠ মনে করিবেন ইহা একান্ত খ কি, তিনি তাঁছার সহধোগী প্রেরিড>র্গতেও বছু বিনা ক্রুন विवा विवा शहन करतन नाहे।

(क्ष्मवहरत्त्वत दि निरम्भगत हिल उम्मादा धरेक्नेश स्वथा हिल बिलाई जिनि खर्बामा वाकिमगद्र च वक्तू विलाफ कूछिड इन नाहे। जिनि हेश्मर्स्स पाइबात खवाबहिक शूर्स्स विलग्ना-हिर्मिन, "खानि दि किंदू केमरम्भ निवाहि, मिर्डहि, किश्वा मिन,

ৰ ৰশিষার সময়ে ভাবে কেশবচন্দ্রের উজিত্তীর উল্লেখ হইয়াছিল, এখন সে স্কৃতি স্থানে স্থানে উদ্ধুত করিয়া দেওয়া হইল, এবং এত্রিবন্ধন স্বৰ্ভরক্ষার্থ কিছু কিছু পরিবর্তনও ঘটনা।

মান্তাতে মনের সাহিত কারাকেও সম্পূর্ণ বিখ্যা বলিতে পারি মা ं बार्के स्थानाव गरक स्त्रीवरवत विवत । स्वरत्य स्थानारक कर বলিয়া চিটি পত্ৰ লেখেন, কিন্তু আমি বে কাছাকে এক বাৰও निया बनिया मध्याधन कविशक्ति अञ्चल स्वत्न यह मा। आमान विरुप्त मरका हिन् कामिरवात मध्य स्टेटफ मारव मा । आर्थात मधरक जामि (परिवास ना कति, जामाद अधरक जारना (पर्दम विषाम कतिरव देश मध्य नरह। आमारक तकह मामूर्य शक् বলিলে ভাঁহার পরিত্রাধের পথে সম্পূর্ণ ব্যাহাত হটিতে পারে : বিনি আমার মনোগত ভাবের অনুবর্তী হরেন, তিনিই আমার मिया दरेट पार्टन, अन्य छाटा दरेटन छात्राटक विश्वास कविरक ছইবে যে, আমি তাঁহার ওকু নহি, ঈবরই তাঁহার এক মাত্র শুকু।" ইলানীত্মন তিনি বলিয়াছেন "এবারকার শুকু সে, বে বলে আমার কথা কিছু ভনিও না, আমার শিকা মানিও না, যদি না পৰিত্ৰান্তাৰ সহিত মিলে বুৰিতে পাৰ ্ फिनि यथन दिशाम करिएकन "कामता मकरण अक," छथन ভাঁহার এরপ ভাব বে সতঃবিদ্ধ, ডাহাতে আৰু সন্দেহ কি ৭ গুরুত্শিবাতুসমন নিবন্ধ না হয় এ নিষিত তিনি একার मावशान कित्तन। এই উদ্দেশেই আমানিবের মধ্যে একাকী কেছ পিয়াকোন কথা জিজ্ঞাসা করিলে ম্পষ্ট উত্তর পাওয়া बाईछ ना, किन्र ७।९ अन बिनिया बाहेरन आह्नारणद मिन्छ कांबात केवत विरक्त अदर बानिकक श्रेटकन । रायान सम बन পাঁচ ক্ষম একত্ৰ মিলিড হন, সেধানে ভগবানের ক্রিয়া कारिक क्षकार्य शाह, क्रियंकाराहर अक्रम वावशास्त्र मुरम अर्थ ভাৰ নিগ্ৰয় ছিল।

পুর্বে যে সকল বিধানপ্রবর্ত্তক আসিরাছিলেন, ভিনি আপনাকে তাঁচাদিলের অনুগত শিষা বলিয়া প্রকাশ করিলেন কেন ? পুৰ্মতন মৃচালুকুৰ্দিপের শিষা না হইলে ভাঁহাদিপের ভক্ত সকল বুঝিতে পারা কখন সম্ভব নহে এই নিমিত। সক-ल्हे बात्मन, अकृष्ठित्र निकृष्टे अयुन्न भिया हरेश ना विनित्न কেছ ৰিজ্ঞানের ভল্ন বুঝিতে পারেন না। যদি প্রকৃতিনিহিত সভাসমুদার জানিবার জন্য শিষ্ত্পীকার প্রয়োজন, তাহা ष्ट्रेर् फेल्डिंग व्यथा श्रावादकात कार्यनिक्शनाएकत कना द्य শিষাত ত্বীকার করিতে কটবে ভাছাতে আর আশ্চর্যা কি প कीष्ट्रांत्र करे स्थान त्य कि शाकात स्थाप किलं, ककि एक्षाच शहन कतिर्ण भक्रण वृत्तिर् भातिर्वन । जिन यथन मिमला भर्तरण मंबन्द्रकिया लाखन, खबन बामात निकडे शत निविध्धितिन स्य. আমি বৰ্ষন সংহিতা লিখিতেছি, দেখিও বেন আমি মৃত্ প্ৰভৃতি সুংহিতাকারদিপের সহিত একাত্মা হইয়া সংহিতা লিখিতে পারি। এই অনুগতশিষা হলিবন্ধন ডিনি যে মহার্কনগণের ভিতরকার গুড়তত্ত্ব্রিভে সমর্থ হইতেন, ভাহার একটি দৃষ্টাপ্তই शर्थष्ठ । छ। शारक अक अगरप किन्छ। भा करा श्रेषाचिन, चार्नीन समक नामक है। इना अनुष्टिक आगत्तम कतिराम, किन क्रिक কৰে কেন আনম্বন করিলেন না ও ভাহাতে তিনি উত্তর করিয়া-हिलन, जीक्कमश्राम अधनत लाटकर कार काल नह । अक्रान कृत्कात नहांत्र महाम वाक्टिक लाहक वयायथ कादव खहन कहिएक পারিবে না। বরি ভাহাতে এ সমতে পোকের সন্মুর্বে আনমুন করা হয়, ভাষা হইলে পাশ্চাত্য শিক্ষা ও ভাবে ভাষার উধার আচৰণ বিচ্ছত ভাবে গৃহীত হইয়া দেশ বিলাসবাসনার ভূষিয়া शहरव । जिनि नाहे कादाव बनिरनम, लारक क्रीकृरकव हतिहा কলম আবোপ করিবাতে বটে, কিন্তু উচ্চাতে কোনৱপ কলম ছিল না, তিনি অতি পৰিব্ৰচয়িত ছিলেন। শান্ত অধ্যয়ন করিছা এ সমুদার সিদাতে উপনীত হওরা কেশবচল্রের রীতি ছিল মা। উপাসনা প্রার্থনার ভিতর দিঙা মহাপুরুষ সাধু ভক্তদিপের চরিত্রের মহন্ত ভাহাতে সংক্রোমিত হইত। তিনি সে সময়ে সহজে कृतिद्व त्रक्षम कतिएकन, अवर त्रक्षमकात्म औमस्राजनएकत अकावन স্বন্ধাত্ত পাঠ করিতেন, কিন্তু দুশ্মস্বন্ধ বা অপরাপর স্বন্ধ ক্বন भार्र करतम नाहे। अकामन ऋच भार्र करिया औकरकड छडिएउड বিষয় দৃঢ়তার সহিত নির্দ্ধারণ করা আধ্যাত্মিক দৃষ্টি ভিন্ন কথন ষটিতে পারে না। কেখবচন্দ্রের নিকট শ্রীকুঞ্চের বিষয় ভূমিবার পূর্বে আমি প্রীমন্তাগরত পড়িয়াছিলান, অবচ পড়িয়াও একুচের বিশুষ্টবিত্রত বুনিতে পারি নাই। কেশবচন্দ্রের নিকট ত্রীকৃকের বিশুদ্ধচার ভার কথা ভানিয়া যধন দশমন্তজ্ঞের রাসপঞ্চাধ্যায় পাঠ করিলাম, তথন দেবিলাম ব্যার্থই প্রীকৃষ্ণের বিভয়চারিত। 🕮 মন্তাপৰ জালাষ্ট বাক্যে লিলিবছ করিয়াছেন।

তিবং শশাকং ভিছিন্নাজিতা নিশাঃ
স সত্যসকলোছ সুরজো বলাগণঃ।
সিধেব আত্মনাবকু ছসৌরজঃ
স্বাঃশারং কাব্যক্ষা বসালাগাঃ।

শ্রীবর খামী এই প্রোকের অর্থে স্পার্টবাক্যে শ্রীকৃষ্ণের নির্দ্ধোষত্ব খীকার করিয়াছেল, সহাখ্যা চৈজন্যের অনুস্থারী শিষ্যবর্গ এ প্রোকের অর্থ আরও বিষয়ভাবে শ্রীকৃষ্ণের চরিত্রবিভারিসাধন্থ-ক্ষণে ব্যাখ্যা করিয়াছেল। শ্রীকৃষ্ণের কথা ভূরে থাকুক, যে, কোল আৰাজের ভিতর হুইতে তিনি তাঁহার আভাছরিক নিবর প্রহ্ন
ক্ষিত্র ক্ষমণ ছিলেন। প্রীমন্ রাস্কুলনর হুংনের নিবেররা
ক্ষিত্র থাকেন বে পরসহংসের নিকট হুইতে কেশবচন্দ্র স্বীবনের
মাছভাব শিক্ষা করিয়াকেন। পরসহংসের ভিতরের গভীর ভাব তিনি
ক্ষার ক্ষমে সভ্য আছে। পরসহংসের ভিতরের গভীর ভাব তিনি
ক্ষার ক্ষমাছিলেন। তিনি বখন ইংহার নিকট হাইতেন, তাঁহার
ভিতরকার বাহা কিছু সার শিষাভাবের প্রাবস্যবশভঃ জনারাসে আত্মন্থ করিয়া লইতেন। তাঁহার এ ভাব আমালিগের
নাই, ভাই আমি, রামকক পরসহংসের নিকট একানী বাইতে
পারিতাম না, আমার বাইতে সাহস হইতে না, পাছে আমার
ন্যায় ক্ষমিণ্ডির ব্যক্তির মতের বিকার হুটে। কেশবচন্দ্র লোক
ভিনিভেন, কি ভাবে কাহার নিকটে হাইতে হইবে জানিভেন,
ভাই কাহার ক সংসর্গে ভর করিতেন না, কিছু আলার না
করিয়া কাহারেক গাড়ের দিতেন না।

কেলবচলের সংবোগাসনার বল ছিল। তিনি এক উপাসনাখ্যাপে সমস্ত যোগী মহর্ষিদিগের সভিত মিলিত হুইছাছেন। এক
উপাসনার ভিতর দিয়াইছার নিকট সম্পায় তল্প আসিত। কেলবচল্র কেণ এ প্রখার খেলু উভরে ইহাই বলিতেছি,তিনি আচ্লাইছা
ভিনি ভবিষাদ্ধ টা (prophet) নহেন, গালু নহেন, মধাবর্তী
নহেন, অবতার নহেন—ভিনি আচার্যা। তিনি আচার্যা; এ জন্যই
ক্ষান্তলিতে বেলীর আসন খুন্য রাখা হুইয়াছে। এই রাগানের জন্য
কন্ত বিবাধ হুইয়াকে এবং ভবিষাতে আবো কত হুইবে, কিছু এই
ক্ষেমী চিধনি অবভাষাদের ভারবাদের ক্রতিবাদ ক্ষিত্রে
এবং খাল্পাচন্তের সহিত আমানিধের সহোলাসকত্ব ক্ষান

করিব। এই সংহালাসকত জাঁহার বজাবের বুলে কুচরকে
ক্রিব কিল। সভানকে ব্যবিদ্ধে সাভার তবে সভাই বেষর
চুল্লের সঞ্চার হর, ভেননি সংহাপাসক বন্ধুলিগকে দেবিকে
ভাষার ভাবের সঞ্চার হইত। হিমাপরের নির্ক্তন আন্তর
পর্যান্ত তিলি একাকী উপাসনায় সুধী হইতে পারিতের না।
পাঁচ সাভটি বন্ধু মিলিলে ভাঁহার অপুর্ক ভাবের সঞ্চার
বইত। বন্ধুবর্গকে নইরা উপাসনা করা তিলি জাবনের কার্য্য সনে
করিতেন। আনালের সৌভাগ্য এই যে, আমরা ভাঁহার পরীরে
ভিতি কালে সংহাপাসক ছিলার, চির দিন সংহাপাসক থাকিব।

কেশবটন্দ্র কে । এ থামের উত্তরে অভাবপক্ষে আনরা দেখিতে পাইলাম, তিনি ঝবি মহর্ষি ধর্মপ্রবর্ত্তক মহাপুরুষবর্তের শ্রেণীয় নহেন, অবভার নহেন, মধ্যবর্ত্তী নহেন, ওক্ষ নহেন। ভাবপক্ষে দেখিতেছি, তিনি নবধর্ম নবভাবের প্রবর্ত্তক, তিনি বিভ্যানাখ্যা পুক্ষর, তিনি নিভ্যা কালের জন্য আচার্যা। এবন হিচার করিয়া দেখা বাউক, উল্লার সহিত আনাবের সম্বন্ধ কি । এই সমন্ধ বিচার করিতে বিয়া কর্মপ্রথম প্রশ্ন উপস্থিত হাই-তেনে, আমরা কেশবচন্দ্রকে সহযোগাসক বলিলাম, ইহাতে কি ভালাকে বধোপসুক্ত সম্বান করা হাইল এ

ভিনি আপনার সম্বক্ষে আপনি বে সকল কথা বলিরাছেন, ননেকের মনে হইবে, ডাহার তুলনায় জামরা দাহা বলিলাম ভাহা কছুই নছে, এবং এতদ্বারা তাঁহাকে ধর্ম করা হইল। কেলব-জ্যের এ কি জন্ন বাহসিক কথা, "সর্বোভে তুলি এক জন মানুষ ভিত করিরাছিলে সেই মানুষ জানি। বর্থন আনি হইলাম, াসির ইস্তাপদ নাসিকা কর্ণ সমুদায় হইল। ধবন কুলি সৃথিবীতে

प्रमानक पानिस्य क्रमन पानि किमाम सन्तर अवंत । "नर-विवास अक क्षान प्रतिवाह न्दर्स आवात व्यवक एडेटर करे तावन बारह । बाबि विमन ७ बरडारवर मरिए विमरणह बाबि बामि नान अक नहेता जानाटन काढ़ क छनाहेटन।" "अँतास ৰা আৰিও ভা, আমিও বা এঁরাও ভা। আমি আর এঁর अकडी। " अर्ड कवा श्रीन प्रश्व मेना नाना जनिवास्त्रम्, धाना क्रेटिं न्।म नटर, दबर चिविक। (कम ना बश्वि प्रेमा विमानन 'ছে আমার শিষ্যগণ, তোমরা এবং আমি এক।' এ কথা কহিয়া जिनि चानकरक बान जिल्लान, किन्छ दिन्नेदहता बनिलान "अक ने पत्र छेलदत् । এक मञ्चान नीटा... मध्नाहः सनुशामसाक । अकः" धरै क्या करिया जिनि भागी भूगाचा, माधू चमाधू, धनी निर्धन, कानी पूर्व मकला मत्य कालनाटक अक कविटलन। अ कि मामाना क्या। देशांटा कि जिनि शृद्धवर्शी मध्नात महाका दहेरा আপনাকে শ্রেষ্ঠ করিলেন না ৭ যদিও ডিনি বলিলেন, ভাঁহারা (ঈশা জীপৌরাজ) ব্রাহ্মণ আমি আমি চামার,কিন্তু এতই ব্যবসা, ভবাপি লোকে এই সকল উক্তি ভনিয়া এ কথায় 💌 🖏 করিবে देवन १ जिनि जालनाटक छविशाम हो ना बलून, मधावकी नी वसून, एक ना वसून, अ क्क्षा श्वीत छनित्रा त्वाक कि विलाद १---"चायता (शाए। यति ना मानि, स्यथान (शरक संस्थित कथा चान्रह ভাতে মৰি বিখাস না রাখি, বল দেখি, পিতা, নরকের উপযুক্ত हरे कि ना ? विवि निटंड यनि क्वांति रहा, वि बागानी विश्वा विश्वान আস্তে ভাতে যদি অবিখাস অভক্তি হয়, ভবে ভয়ানক পাপ क्टेन। **राज्यात कारनरभ कानिडे** श्रष्ट रच नवविधान काहात कतिदव, छात्र आख्टा मसीद्य भिट्यांशाद्य ।" "मलशक्ति कवा दक्ष

ৰদি অগ্ৰাহ্য করে থাকেন সেই বিধিসম্বন্ধে, তা হলে আলা वक्षे मत्त्रक नार्डे, जारतः सना नत्रक सारकः। स्वित्राम कतिरम छोता महरक पारवस कहे। सिण्डत । आगारक मूर्व स्थान, नानी (कंग्निक चामन विविद्य कावना (वंचाटन, नवविधाटनक सहस्रा) रायारम, (मधारम माफिरम या थान, का खँदा विचान करवन कि ना १ व्यामि यनि (मदादन दांफिटा क्यान निरंख विन, व वा क्यान बिएड नारतन किना ? विव भारतन छाटक विन विद्याम !" श्रेषी মুখা প্ৰজৃতি ভাঁহাদিলের অনুষারিবর্গকে বাহা বলিয়াছেন ভাহা हरेए **अ जकन कथा कि कोन अश्ले नाम : "अक वफ अहसारश**त कथा त्य, आमात कथा शहर ना कतिरत छाहेरतत लेतिजान हरत मा १ किछ अंतर्भ ष्यदकारत्व कथा (मानाव ष्यक्र द तथा थारक। এ বে পরিত্রাণ পইশ্ব। বিষয়। এজন্য ভ্রাত্সপত্তে আমার এও खादना हतू।" a छेक्ति कि अब जाहितक । एतु अहे गर्वास বলিরাই কেখবচন্দ্র আন্ত হন নাই। তিনি বলিরাভেন, "বিধির এই অভিপ্ৰাৰ ছিল, থকু হউক না হউক, আচাৰ্য্য উপদেই। (अर्छ रुष्डिक ना रुष्डिक, अकलन मधाविम्ह प्रमालन चाकृडे, দৃশক্ষন মিলিত হইবে। যেখানে দৃশ ক্ষন শত ক্ষন ডোমাতে এক ছইবে, সেধানে একটা অবলম্বন চাই। একথানি প্ৰতিষাতে नभवानि मुर्खि विन शांक छाहा इहेरन विमर्कात्मत्र ममत्र सिविए ভাল। থকু বলে মধাবভী বলে মানিতে হর না, কিন্ধ ভগ-वारनव नीना वरल अधिकात्र वरल क मव मानिट एव।"

কেশবচন্দ্রের এ সকল কথা শুনিতে আপাত একাছ বিকৃত। বিনি আপনাকে ওক বণিলেন না, সধ্যবর্তী করিলেন না, বর্ত্ত-প্রবর্তক মহাপুরুষ্পদের প্রেণীতে আপনাকে ভুক্ত করিখেন না, ভিনিত্ব আবার আর এক বিক দিয়া যে সকল দাবী দাওয়া উপ
ভিক্ত করিলেন, তাহাতে সংশ্লাপরি আপনার আসন তিনি আপ
করিলেন, ইহাই কি আসিতেছে না ং তাহার সক্ষে যাঁহারা সম্বঃ
রক্ষা করিতে যাইবেন, সাধীনতার বিসক্ষেন দিয়া অনুগত শিব
ইইবা কেশনচন্দ্র যাহা বলিনেন তাহাই তাহাদিগকে করিতে
হইবে, ইহাই কি সিদ্ধান্থ হইতেছে না ং এরপ আসুগতা ফীকান
না করিলে তাহাদিগের পরিত্রাশ অবক্রক হইবে, এই ভয়ানক
নত কি ইহাতে প্রচারিত হইতেছে না ং একর পাছ পড়ে থাকা,
ক্রুলর সংস্পৃত্র বেড়ান, কাশার মত গুরুর পথ ধরা, সে চের
প্রবিবী দেখেছে; " এ কথা যিনি বলিলেন, ডাগার আবার ত্রিপ
রীত কথা বলা কি সালে ং এরপ বিক্রকভাবণ কেন ং এ সকল
বিক্রভভাবণ নহে, ইহার আসা গোড়া মিল আছে। এই মিল্
দেখিতে পাইলেই তাহার সঙ্গে আমাদিগের কি সম্বন্ধ পাই
প্রকাশ হঁইয়া গড়িবে।

প্রথমতঃ তিনি আপনাকে এক অংগু মানুব বলিয়া গ্রাহণ করিয়াছেন। পর্যেও পৃথিবীতে তিনি এক জন, চুই জন নাহেন, ইহা কোবার বিভার মত নহে, ইহাই ঠাহার জীবন্দিক প্রভার একান্দিতার মত নহে, ইহাই ঠাহার এই প্রকল কথার মধ্যে বিশ্বনার অংকার নাই, সর্বাধা আন্ধাবনার বিদ্যান। সকল্পের একার জানা উচিত, তিনি ঈবংসম্বন্ধে অইডভানী জিলেন না, বামুবের সম্বন্ধে পূর্ব অইডভানী জিলেন। উচ্চার মতে উপরে ব্যান বিশ্বনার প্রক্ষাত্তীবং এক্স ডেম্বিনিম্ন "একমেবাভিতীবং এক্স ডেম্বিনিম্ন "একমেবাভিতীবং এক্স ডিলেন। মনুবাভিতীর মুক্তরার মহাত্ত জালবাতে নিছ দেখিয়া বলিয়াকে, আমি মেই আর্থত মানুবাভ

जिमि এই रूप এका प्रशा थाश्व दरेशकित्वन विवाद छ। इति বিজ্ঞানাত্মা পুঞ্ৰ বলিছা আমরা নির্দেশ করিয়াছি গ তিনি अयुगात स्थि-यहर्वि महासन- ग्रमात मानवमक्षी करिए अका-चुना नाम कहिया प्रकल वाद्धिए पारे अवादाना शक्तिक किर्यात सना প্রেরিড হইয়াছিলেন। এই सना ভিনি श्रीव প্রম প্রভার নিকটে অভিলাষ প্রকাশ করিয়াছেন, "এক শরীর এক আত্মা হয়ে ভোমার ভিতরে মিশিতে চাই। ভিন্নতা. ভাষী-न्छा चल्कला 'बागि वागि' (पर्वात्न, (गर्वात्न कात्रात राश नाहै, चामि (म 'चामि उ एउत' दार्क्या चाकिए । हाहि न। " वर्खमान कारलाज मर्भन e विकान वाहारक Organic Unity (बकायाण) यत्न, छेश छिनि बाजुक्षीयत्न मिस्र कविशा मकन्तक त्वरारेशाहन। মানুষ মানুষনিরপেক হইয়া জন্ম গ্রহণ করে না, অভি সামান্য কাৰ্যাও একাকী নিপান করিতে পারে না। আমার এই গাত্তের বন্ত, षायात करे (मरहत (मानिए काथा रहेए प्राणिताह ? महत्व সহল বাজির (চপ্তাৰ এই বস্ত্ৰ প্ৰস্তুত হুইবাছে,সহল সহল বাজির (बानिक कहे (बरहत (बानिक्त मर्फ मिनिता चाह्य । युक्तार मम्बाद मायुर्वे अक्ष अकारत क्वन अभीकृष हरेएक शांत ना । এই এক पाछ। সাধক कि खेकार अधन कतिरान ? धरे माध्रानत छेलात (कमवहता कि निर्देश कतिशाहन ? "पुनि रामी बाबाल, बाब बानत्म (महे वैं।भीत तरव मॅक्टन नुष्ठा कक्रक," हुवाहे अहे अकाचाछा माध्यात छेलात । अङ्क मेम्द्र केंच-(बर बानी अवन कविता मा हलिएन 'अक कहि' 'अक केक्का' 'अक बान' क्वन (कह इदेए शास मा। बाहिए प्रकारित मिर्टन दक्षाम কালে একাজতা হয় না, অন্তরে পবিত্রাম্বার বোগে এই নিশ্ব

সম্পাদিও হয়। এই উদ্দেশেই তিনি প্রার্থনা করিয়াছেন, "পরি-ভালা কপোত আহ্ন, শরীর ধর, বৃধ্করে পুত্ক। নৃতন অধি,
অধি বিনি তিনিই লগ হয়ে ভক্দের বাঁচান। তার ভিতর
ভূপবান্ ও তাঁর সন্তানেরা সকলেই এছেচেন—একে তিন
তিনে এক।"

८कमेराहास क्रायुखा, वर अन्तरकल वकाया करिराह क्या এक इ উপাসনাগাধনপ্রতিষ্ঠা, এ সম্বন্ধে কোন সলেহ ভিষ্ঠিতে পারে না ; কিন্তু তিনি ষে এই একাশ্বতাসাধনবিষয়ে चाननाटक मधारिक कतिशास्त्रन, डाहाएड कि डाहात चाजु-श्रीवाना त्रका कतियात यह श्रीकाण शाईटल्ट मा १ व मधा-विकृत्वत व्यक्तिवात कि ? "(यथारन मभ वन भंड कन (डामारड क रहेर्त, (मर्थात ककी अवनयन हारे। कक्षानि अधिमार्छ मन थानि मुर्कि यनि थारक छाटा हरल विज्ञाहित्व जगर एमिएड खाल।" मम खनरक এक खन हटेरड (तरल এरकत अरक मम « **ब**रनत छारव छारव मिलन हार्रे। (मृ এक छन् (मृर्रे वाकिः, বাছাতে বিবিধ ভাব আসিয়া মিলিত হইয়াতে। খাক্য জ্বী চৈত্ৰা প্ৰভৃতিকে লক্ষ্য করিয়া ভিনি প্ৰেরিভবর্গকে বলিক্সটেন, "उँहाभिटनत छ। दर व्यामता विकाला"। दक्षेत्रहेत्स अकल ভাব সম্মিলিত হইছাছিল। বাঁহারা এক এক ভাবের প্রতিনিধি, তাঁহারা সকল ভাবের প্রতিনিধিতে মিলিও হুইলে সহজে এক व्यवं मार्च रम। এक এक सन প্রেরিড বে এক এক. ভাবের প্রতিনিধি, তৎসম্বন্ধে তিনি বলিয়াছেন, "এক এক ভিন্ন ভাবের প্ৰতিনিধি এক এক জন বিশেষ ভাবে চিক্তিত ছউন। এক এক জন अर अर शार्चन ममन कार ब्रह्म क विवद्यान कार ब्रह्म ।

দেবাইতে হইবে আমানের বাড়ীতে সমস্ত কেব দেবীরই আগন্ধ,
সমস্ত মিলিরা একটি দেহ। এক এক প্রেরিত হারা একটি একটি
অন্নের পূর্বভা হইল, সমস্ত অক্ত প্রভাগের মিলনে নরবিধানে
পূর্ব ধর্ম প্রকাশিও।" এই অক্ত গুলি যে অবর্বে মিলিও
চইরা একটি দেহ হইল, উহা কেশবচন্দ্র। কেশবচন্দ্র যে একাস্থতার ভাব আপেনাতে প্রদর্শন করিলেন, সেই একাস্থতার
ভাবে বাহারা বিজন্ত লাভ করিবেন, ঠাহারাই সকলে একাস্থা
হইবেন। যখন ভগবানের এবার এই বিশেষ শীলা, তথন
এরপ কথা কেশবচন্দ্র অকুডোভরে ব্যক্ত করিয়া বলিবেন
ভাহাতে আর শক্ষার বিষয় কি ?

কেশবচন্দ্র বিধানসম্বন্ধে যে কথা বলিয়াছেন, তৎপ্রতি বিশ্বাস ম্বাপন না করিলে দরক নিশ্চন্ন, ইহা বলিয়াতিনি কি জ্ঞান্ত ওফুপদে আপনাকে প্রতিষ্ঠিত করেন নাই ? 'ওফুর কাছে পড়ে থাকা, ওফুর সঙ্গে ঘুরে বেড়ান, কাপার মত ওফুর পথ ধরা' এ সকলের প্রতিবাদ করিয়া আবার সেই দোবে লোকে দোবা হইবে, ভাহার পথ কি তিনি ম্যংই উমুক্ত করেন নাই ? যে ব্যক্তি ঠিক তাহার অথসবণ করিবে ভাহার সম্বন্ধে এরপ দোব মটেবার কোন কালে সম্ভাবনা নাই, কেন না সে ব্যক্তি কেশব-চল্লের এই কথা দুত্রপে হাদরে ধারপ করিয়াছে, 'এবারকায় ওফু সে, যে বলে আমার কথা কিছু ভনিও না, আমার শিক্ষা মানিও না, যদি না পবিত্রান্ধার সহিত মিলে বুনিভে পার।'' ভিনি কি একথা বলেন কাই, 'এক্মন্ত হইলে বা এক পাড়ায় দশ বিশ বছর আছি বলিয়া, এক্স থাই এক বাড়ীতে থাকি বলিয়া, বা খুব বোমায়েদ করে, ওফ্ল বলে, ই হালিগকেও শ্রেম্ব

প্ৰীৰাৰ বলিয়া মানি না ।'' ডিনি ভাঁহাদিগকে আপনার কলে কাৰারা 'হরিতে অভিরহদঃ' চইয়াছেন 'আপনার' ইইয়াছে: 'একআৰ' ত্ইলাছেন। ডিনি আর্থনায় স্পন্ধ বলিয়াছেন, "ভোষ इन्टेलरे चामान, चामात क्रेटल्के (कामांत, चात्र चामांत्व मृत লের। ঠাকুর, কেছ আপনার নয়, ভূমি বাদের এক কর ভারা। আপ্ৰার। সর মুখ একমুখ হবে। বেখানে থাকুক স্কলে नाड़ी बैंक नाड़ो हरन, স + रलद आम अक हरत।" (कन रहत বিধানসম্বন্ধে বাহা বলিডেন, ভাহা কখন আপনার কথা মনে করিতেন না, "আমি যাহা বলি সমুদার তোমার কথা। এ বিহুত্ত মিধ্যা বলে না।" কেশবচন্ত্রের সহিত: একাল্লা হইরা এব সময়ে এক কথা ভগবানের নিকট হইতে শুনিয়া ওদমুসরণ করা যাঁছালের নিয়তি, আটবরাগ্য, সংসারাসক্তিবা গুঢ় পাপের জন্য সে নিয়তি হইতে বৃদ্ধি তাঁহারা খলিত হন তাহা হইলে তাঁহা-দের পক্ষে নরক নিশ্চয়, এ কথা বলিতে কেশবচন্দ্র কেন কুঠিত হইবেন ; আমি এ কথা প্রকাশ্যে সকলের সমক্ষে বলিতেছি, কেশবচন্দ্র ইপারের সংখে এক হইয়া যে বিধি আন্মুন্করিয়াছেন, এবং বে বিধির সঙ্গে আমি নিড্য কালের অন্য এধিড ছইখা রহিছাছি,ভাষার একটি বিধিকে যদি ইচ্ছাপুর্মক পুঞ্চন করি, ভাষা हरेटन व्यामात भटक नतक। व्यामता स्थेन व्याटनम ाही, उथन अवडीर्व जात्मभूतिहत्तक खेल्या कृतिहा नतक्ष ११६ मा, हेश কখন বিশ্বাস করি না। কেহ যদি কেশবচক্রের বিধানসমূহের দুঢ় কথা আহৰ করিয়া মনে করেন বে≯ তিনি অপরের সাধীনতা व्हर्भ कहिहारहन, अभरहद आरन्नलाबर्टन भर्य अन्त्रक कविद्या-ছেন, তাঁহারা তাঁহাতে কিছুই বুনিঙে পারেন নাই। বিনি

উভার মত প্রত্যেক বিষয়ে ঈশবের আবেশ লাগ্র করিয়া চলেম, ভিনি তাঁহাকে আপনাৰ বন্ধু বলিয়া প্ৰহণ করিয়াকেন, আপনাৰ मलक रिनिया चीकात कतिशास्त्रन । दक्षेत्रक निरम्न काबीन भूकंत किरलम, बाहाता मर्जधीकात्रदेवनियुक्त एहेवा वासीन ভাবে ঈগরের কথা প্রবণ করিছেন, ডিনি ডাঁছাদিগকে আগনার लांक विगएलन। मकरन बाढ वाद छोवनरवन नार्छ कड़िया (मंत्न, जिनि कि এ कथा बरनन नाई, "अधीन हा जित किए वि ঠকু হইয়া এখানে ঢুকিয়া খাকে, সে ঠকুকে বাহির করিয়া नियः; निवरे निव। अपीरमत मन अपारम मद्र। यात्र छेश्रस দলের ভার আছে সে নিজেই হবন অধীন নয়, সে নিজেই ययन अधीन छाटक छ्वा करत, खबन अ नरनत दक्ष स्थीन इहेरव ना।" (कर जेवरतत मरत्र धक्छा लाख ना कहिला, रक्षवहता বা ভাঁহার প্রচারিত বিধিনিচর আত্মন্থ হইয়া সহজে অনুসর্ভার বিষয় হউবে, ইহা কথনই সন্তবপর নহে। কেশবচন্দ্রের ভিডর দিয়া যে বিধান অব্তরণ কবিয়াতে, ভাহাকে কেহু কৈশ্ব বিধান ৰলিবে, এ প্ডা তিনি চির দিনের নিমিত্ত অবঞ্জ করিয়া গিয়া-ছেন। "এবার ব্রহ্ম ব্যক্তার বার বলিলেও কিছু হবে না, আর সাধুদের জুভো নিরে টানটোনি করেও কিছু ধবে না' এবার পবিস্থান্তার রাজা।

কেশবচন্দ্রের সঙ্গে আমানিগের সংহাণাসকত্মসন্ধ আচার্য্য-সন্ধন্ধ আমরা প্রধানরূপে প্রহণ করিছাছি। তাঁরার সহিত আরও বিবিধ সমন্ধ এই চুই সম্বভ্যুপক। তিনি অভিমে বিবা-লব্বের প্রার্থনার বলিয়াছিলেন, 'আমানে বে বণে এ ন্তন নৃতন সমাচার স্থাহিতে আনে, সেই মত্য বলে। আর বারা মুলে এ প্ৰণতি বড় লোক, এ কৰা আমি ভনিতে চাই না ভগৰাৰ, তুৰি আমাতে বে পদ দিয়াই আমি ভাই চাই। আ कि मणी। जात्रनात्र निरंत्र शहात कतिए एत कि करते, छा मियारक करमाह । जामि कि वुर्त १ महान क्याक, जा ट्रिकांड भारतत दानू, बाशांट मकरन मकात मधात बरत भा दमहे मक्न आयात कारह । आयारमत दम्दमंत चर्वत कः क्ष्मुएक होत्र मा। এहा या निरहरक काहारक क्ष्मी रूछ। बाब मा। मात काटक रव मखात कवा अधिवाहि छ। निर हात ना। এই হতেই তো शुःथ। 🙀 ात पूर्वत किए আতুক মজার মজার অরপ্যান সেই পাইয়াছি পোনাই তিনি কোন্পণ আপনার বলিয়া গ্রহণ করিয়াছেন ? আচা बा (मदक। (म भरनद कार्षा कि न जेवरदद महिल ... एदेश पर्रात्र मृष्टम मृष्टम मर्राष्ट्र चामग्रम करा। 🗯 मृष्टम मर्रा रमत खरीका काराता ? वाराता च्यांकाचा जर अकलमत्र ; कारा ক্ষর মধ্যে অবিষ্ট। "আমার বুকের ভিতর আত্ত মঞা মন্তার অরগ্যান সেভার পাইয়াছি শোনাই" এই ভাঁহার বিশে कार्या । यांशांश ठांशांत्र महिल मह्शामाक ना इन, मेंबहर्य একজনর একপ্রাণ না হন, তাঁহানিপের সহিত তাঁহার আচার্য সম্বৰ চির্দিনের অন্য অক্ষুর থাকিতে পারে না। বাঁহা এরণে ভাঁছার সহিত সংযুক্ত নহেন, ভাঁহারা অবভীব বিবি বিহান রক্ষা করিয়া চলিতে পারিবেন ভাহারও কোন সম্ভাবন मारे ।

ক্ষেত্রত ঠিক্ট বলিয়াছেন, "ধন্য সে বে বলিতে পার আত্মার প্রাণ পেয়েছি বা হতে, উচকে প্রাণের রক্তের চেকে:

ভাগ বাসি। প্রাবনাধ, বার কাছে ভোষাকে ভারিতে নিবেছি ষাঁর যারা তোমানে চিলেছি, ভাঁকে চিত্র বন্ধুগর। সে বে क्ष्रिक ना दकन, तम त्व अमृत बाहेरहरू, तम त्व त्मानांत प्राचा क्रिनिरहाक जांदक किनिएक शादत दिन चरकता अहे किका हिन् वृक्षवहरम हारे। जिलामडी बनिवाद बारवाकन नारे, त्मरी वक्षकांव माहे, दक्तन करे क्योंही (यन क्कूल्ड मत्न बादक, ककहे। जानन কথা এক জনের কাতে পিশেতি, বাহা মান সম্ভম প্রতিষ্ঠা ধর্ম माश्चि मरमारत मन पूरवत मृत्रा (म कामारत अधिका ध স্কলের মূলে এক জনের ইসারা। মার হাসির রহস্য এক करनत काटक काटन कामनानी स्टाहिल, अथन मर काइनाइ আমদানি হয়েছে।" এ স্কল কথায় ভাহায় সহিত কোনু अश्वस त्वराहेश त्वत् १ चाहार्या अश्वसः। "दम अक ममन द्रहत्न एरत कारक अरतरक, मा एरत कहरक अरतरक, विशेषक समय वस् इट्स अटस्ट । त्म विशामचलिक मद्र चाहायामध्यस्या বিৰিধ সম্বন্ধ আছে, এ সকল কথা ভাহারই ল্যোডক। বিনি সীহোপাসক নহেন, তিনি কি প্রকারে আচার্ঘ্য হইবেন ? আচার্যা এবং উপদেষ্টা এ চুইছের মধ্যে অনেক পার্থকা। এক क्षन छेनएम्य पित्रा निक्छ इहेरलन, किछ वाहापित्रक छेन्छम् पिरलन, डीहाफिरनेत मात्र डीहारक এक हरेएंड हरेरन, स्म निटक काँचान मुद्दि नारे। नवनिधातनत नव आंहार्वा, बाहीन विवारनंत खाहार्या नरहन। छिनि वाहाविरनंत खाहार्या, छाहा-বিদের সঙ্গে এক অভিনত্তম হইয়া ঈশবের নিকটশ হইলে তবে ৰগ ছইতে নৃতন নৃতন সামগ্ৰী আসিছা উপছিত হয়। জাচার্য বাহাদিবের সহিত উপাসনা করেন, তাঁহাদিপের আবোজা বাকিল, ভাষাতে কি আলে বার। তিনি মকি
নির্মেতে এক থাণ হইয়া ঠাহাদিগকে আণ্দার ভিতরে টানিয়া
লইতে পারেন, ফর্নের সামগ্রী অবতরণ করিবেই করিবে। এ
কথা আমানের মনে রাখা উচিত, আমরা যখন বেদীতে ব্রিয়া
কার্য্য করি, তখন যদি আমরা মনে করি আমরা উপদেপ্তা, তাহা
হইলে আমরা নরকের পথ পরিকার করিলাম। কেশবচন্দ্রের
সম্প্রে এক হইয়া বাহার। আচার্য্যের কার্য্য করিবেন, তাহারা
সকলের সম্প্রে একীভূত হইয়া ঈখরের উপাসনা করিবেন এবং
সকলের সভিত একপ্রাণ হইয়া তাঁহার কুণার ভিথারী হইবেন,
তাহা হইলে ঈখরের আলোক ও কুণা লাভ করিয়া তাহারা
কৃত্যেণ ইইবেন।

আমি পূর্প্নে বলিয়াছি, ক্লেশবচন্দ্র ও তাঁহার বন্ধুগণের মধ্যে একাদ্মতাসাধন পবিত্রাত্মার ঘোষ্ণেনিপান্ন হয়, অন্য কোন উপায়ে নহে। মানবীয় দিকে কেশবচন্দ্রকে মধ্যবিদ্ করিয়া সকলের তাঁহার সঙ্গে একাত্মতাসাধন, ইহাতে এক পবিত্রাত্মার অন্তঃএবেশ ভিন্ন কিছুই সিদ্ধ হইবার নহে। সম্মুখে কেশবচন্দ্রকে রাধিয়া সহন্দ্র বার ভক্তি প্রান্ধা কর, ইহাতে কোন ফলোদ্য হই বিন নহে। যাহার সহিত একাত্মা হইতে হইবে তাঁহাকে সম্মুখে বিলে চলে না, কেন না চই পদার্থ মিশিয়া গিয়া এত্মলে এক পদার্থ হইবে। এই জন্য কেশবচন্দ্র নবিধানজন্নীর সহিত সাক্ষাথ-সক্ষদ্রের বার্থায়ক সহেন। কেশবচন্দ্রের প্রতিজ্ঞা এই, বেখানে বভাট আত্মা স্থারেতে এক হইরাতে, সেখানে ভিনি ভাহাদিশের সহিত অভিন্ন ভাবে অবস্থিত। স্বভরাং তাঁহার সহিত যাহারা একাত্মা হইতে চান, ভাহাদিশের সহোপাসকত্ব সহমাধকত্ব সম্বন্ধ

না আর কোন গড়াছত নাই। কেশ্বচন্ত আর কোন নাজানের আরী নবেন, তিনি উপাসনায় সকলের সজে এক ইইডে ডানাং স্বেচন্ত্রের উপাসনা আন পান ছিল, উপাসনা সর্ক্ষ ছিল। অক্লীবনব্যাপী উপাসনা তাহার মহাযোগ ছিল। এই উপানা না তিনি বন্ধুগণের মধ্যে এরপ ভাবে প্রতিষ্ঠিত করিয়া গিয়াছেন তিনি চির দিন ভাঁহাদিগের সজে ঈশ্বরেতে এক অভিন্ন ইয়া ছিতি করিতে পারিবেন। সহোপাসক, সহ সাধক, আচার্য্য, সম্বন্ধ ভাহার নিকটেও মধুর, আমাদিগের নিকটেও মধুর।

কেশবচন্দ্ৰ শেষ প্ৰান্ত একটি অন্তৰ্যাবস্থান বিষয়ে অভ্যন্ত বহিত ছিলেন, সেটি শ্রীদরবার। যতই ভাঁছার পর্গারোছনের न निक्रें रहीं हरेए नाशिन, एउने नी प्रत्याद्वर श्रांख विद्यास দপাত প্রদর্শন <u>করিকে তুলি প্রে</u>র হইলেন। দূরতর বিমালরে वेष्टान कृतिशिष्ठ र बान-अकॅंडि में केंद्रो कृति कार्या कविएक स्टेरल সেম্বর্কে শির্কারণ করিবার জুনা ক্রীক্রবারকে তিনি অমুরোধ রিয়া প্রিটিটেডেন। শেক নিময় প্রাষ্ট্র জিন এ ভাব অক্ষম রাখিয়া बाट्ड के बीनतवादात लाजि दि। इति जेमुन जामत दकन १ माञ्चला नाम्या निकासी कार्यामिक अञ्चल । वास्त्र । ए। এখানে একমভা বিনাকোন কার্যা ছইতে পারে না। প্ৰ আপ্ৰ কৃচি মত সংস্থার প্ৰিত্তান্থার নিংশাস্বায়তে ভয়া পিয়া এখানে বিক্লৱ ভাবাপদ্বগণও এক ভাবাপদ্ৰ হট্যা মত্যে উপস্থিত হন, এজন্য নববিধানে ইহার এত সমানর। মাদের পাপ অপরাধের জন্য হুএক দিন কার্য্য বিশৃত্যাগ হুইত্তে রে: কিন্ত ইহার বলের নিকটে কাহারও বৈষ্ণ্য দীর্ঘকাল ষ্ঠিতে পারে না। পবিত্রাস্থার **প্রা**ভাবে

स्तारम् वास्य इतेश वादः विभिन्तं विशासका, स्वानिका स्वाबन वास्य मनिवान शृहकं ब्यानात व्यवश् वहीतः, सारा वर्षे व्यवश्रीवद्यात्व शृश्या वास्य वर्षिकारम् ।

hanje,

वंद्राच्याः

te of shading con-

विश्वनात्र विश्वन क्ष्याम् ति_{र्वत} वश्व सार

ifer a centre

Appl 441



কেশবচন্দ্রের উপাস্য 🔹।

সভাস ভ্ষিষ্ঠ ছইলে মাতা ভালার মুখ দর্শন করিয়া অপার आतम नाम करवन। अभान मिन मिन वर्षिक वरेटक बारकः আর ভাছার বংগারুত্তির সঙ্গে সঙ্গে সাভার আনক্ষের নীমা থাকে मा। भिल वयन तामन करत, छवन माछा चारख वारख वारेश ভাহার সেবার ব্যাপৃত হম। সম্বানের সেবা ব্যতীত অননীর क्षाकरम सूच नाहे, महत्म सूच माहे। मूट्स (व क्रममी अजाब (काश्विमात्रभवाद्यमा हित्तम, अर्खमा निका बालटक मिनाजिभाड कहिएलन, त्यथा यात्र, अञ्चान कवितात नत जिनि अभूनात (कांश-विनाटन सनाक्षान निवादहन। विश्व ज्ञिष्ठे हरेटन यात जानम, ভাহার বাক্যফুর্ত্তি হইলে আরও তাঁহার কত আনন। মার कथा पृत्त, वृत्ति चामत्रा भिलकीवत्तत्र ममुनात्र बुखाल च्यावन, अ निभिन्द कविटक भाति, काहा हरेल आमारतत आमरणत भीमा बारक मा। পृथिवीत क्लार्यंत्र क्ला खरनक महाचा खानमन कैतिहा পृथिवीतक कुवार्य कतिहास्त्रमः। कांशास्त्र वामास्त्रीवरमव বিবৰ এরপ খোর অক্ষকারে আচ্চুন্ন যে তাহা আনাদের নিকট व्यक्तांत । अरे मनन प्रशासा यदन कविष्ठाहित्सन, रवन नरकात भिक किरमन, त्मरे वरेट विन कावारनत मम्लाब दुवाछ वर्तिछ বাৰিত, ভাষা হটলে আনরা উহা পাঠ করিয়া বল্ল বইতাম, কড भूबी हरेखान; किक आमारतत कारता काला पटि नाहे। महाचा-

नक्षक्रित चार्चाःनरवागनस्य अवत वक्षाः।

বিশের বাদ্যজীবন বোর অভ্যকারের ভিতর প্রচ্ছের রহিরাছে, ধর্মের ইতিহাস এই জন্ম অসম্পূর্ণ।

बहर्षि क्रेमी यथन (लाक्त्रशाब्ध चानश्रन क्रितिलन एवन ভাঁহার বয়ক্রম ৩০ বৎসর। তিনি লোকসমাজে সমাগত হইয়া বর্ষন হইতে প্রকাশ্যে কার্য্য আরম্ভ করিলেন, তথ্ন হইতেই ভাঁছার শিষা প্রশিষাণাণ ভাঁছার জীবন লিপিবল করিয়াছেন। छाँदाव वानाचीवरनव विवय छाँदाव भियावर्ग किछू वर्गन करतन मारे, कुछतार छेरा लाकममात्म असकारत आकृत तरिवारक। महर्षि क्रेमा भूरवात व्यवजात किरमन । जिन वधन करनत निक्र व्यवास्त्रिक हरेए बारमन, जबन महाजा क्रम विवाहितन. ভোষরা ঐ পূর্ণোর অবভার মেবশিশুকে অবলোকন কর। কিন্ত काशात हित्रमक शिक्षिशन-एव वालाकीवन, (व र्योवत्नव व्यवस्था-मात्र जबकारत जाकत हिन-ति मगद जनगरन कतिता वाटा वर्गना कतिहास्क, छाहा (परित्न खराक हरेए हरू। छेरा अमनि ভাবে वर्षिक, राम कान काल महर्षि जेमात हतिल विकक्ष हिल दिव्हिमिरानंद रत्र श्रष्ट दिए । चात्रि निर्द्ध गाउँ कदि नार्टे बाबर (महान बास नार्ठ कविवात बावुखिरे वा (कन सरे(व ? किस आबादमत अक्षम वश्व-विमि (कथरहात्मत नाम देशमा अधिती-हिरान, जिनि अक्षन बेहेनिरशंथी कर्ज क अबुक्रक क्षेत्री छैटा। किश्मर्भ गाउँ कविशारे धुनात महिल पूरत स्कृतिश विशासितमा। अहर्षि क्रेमाहक अभवत कतियात सक काशात महावन कर वहरे ना করিয়াছে ব অপবান বাছাকে পৌরবাধিত করিবেদ, মনুবোর न्छ इल्डिशिश्व धारात किहुरे चनिष्ठे गाविक रह मा। मर्रि मैना খভাৰত: বিভৰ চনিত্ৰ, কৰমত ভাতাৰ জ্বতে পাণ অৱভূত

না হওয়া সম্ভব। লোকে তাঁহার ছরিয়ের কে বিকু বেকুক না त्वन, त्वरे निरक्षे शनिज्ञा। पर्शाव त्वन निक्रवात्वत वरवा তাঁহার নাম লিখিত। তাঁহার জীবনবুতে ওঁাহার জনমন্থতে আনৌ-নিক বৃত্তাত লিখিত আছে। উহার আলৌকিকাংখের সার কথা **बडे—डिमि ग**विद्धाच्याड, अनमीत्रार्ड छनवान छांशास गुष्ठ বলিয়া সীকার করিয়াছিলেন, তিনি জন্ম হুইতে জগবদ্ধানসম্পন্ন। चामारन का समावन लाटक काहाब हवित चान करिया वृतिराज भारत मा। जांदात कीवमवृत्त निवित्त चारक, समाधि-বেংকর পর কপোতের আকার ধারণ করিয়া পবিত্রান্তা ভাঁছার মন্তকোপরি অবতীর্ণ হইরাছিলেন, এবং সেই পবিত্রাত্মা কৰ্জ ৰ আকৃষ্ট ছইয়া তিনি খোর অরণ্যের নিকে ছুটিয়া গেলেন। क्रेमा (याद व्यवनानिक बारवर्ग कदिया क्याय हर मिन शरीक चनाशास बाम करियाहित्वन। छिनि क्रेप्रास्ट वयहिष्क श्रदेश क्यूबा एका जुलिहा विद्राहित्वत । जाशालह निक्छे देश जन्छत : (कम ना भागता अवनदे मंत्रीरवत भवीन (व. अक्कि विनश्च मुपा क्या क्रिया क्रमशास्त्रक सिविडेहिक हरे**टक शां**त्र मा। विकास আবিকার করিয়াছেন, ঘাহারা চেষ্টাশীল নতে, অভভাবাপর खाहाता अबिक मिन अनाहादत कीवनशात**न कतिएक ना**दत । काहन কুন্তীর, ভেক প্রভৃতি দীর্ঘকাল নিজার অভিবাহিও করে, সেই भीर्चकारणत मर्था अक वाबल चारात चरवम करत ना. छेरात কারণ এই অভভাবাপরতা। বোপশাল্রে স্পষ্ট উল্লিখিড আছে, कार्यानित व्यवद्या वर्णन कतिया नमाबिटक व्यनाशास्त्र व्यवद्यिक केलात क त्मरण केकाविक इवेतारक। मुर्ककारण व्यक्तिनन करे खेशारक व्यवाहारक निरन्धकारक क्रिक कविरक्षक । अक्रदन

ভেন থাকিতে পারা যায়, বোগবাশিষ্ঠ তাহার এই কারণ নির্দেশ
করিয়াছেন যে, সমাধির অবস্থায় সমুলায় থাতু সাম্যাবস্থা লাভ
করে, উহার জিয়া অবস্থায় অবস্থায় থিতি করে, শুতরাং থাতুসকল
ক্ষম্ম না পাইয়া একই অবস্থায় থাকে। নিশ্চেপ্ত ও সচেপ্ত স্থায়া
বাপর উত্তরবিধ জীবক জনাহারে রাখিয়া বিজ্ঞান পরীক্ষা করিয়া
দেবিয়াছেন, নিশ্চেপ্ত জীব দীর্ঘকাল অনাহারে জীবনধারণ করে,
সচেপ্ত জীব জলকাল অনাহারে বাঁচিয়া থাকে। এতজ্বায়া এই প্রমাণ
হয়—নিশ্চেপ্ত আহরের অবরোধক, সচেশ্চিপ্ততায় ক্ষম্ম উপ্যিত
হয়। প্রাণে বর্ণিত আছে, রাজা পরিক্রিৎ সপ্তাহকাল ভগবানের ওপকীর্জন প্রবণে এমনই নিময়চিন্ড ছিলেন থে,
কুলাপ্রে বিশ্বমাত্র জল গ্রহণ করিয়াও ক্র্যা তৃকায় অনুমাত্র
নিশীড়িত হন নাই। আমরা উনবিংশ শতালীর লোক, এ সকল
দৃষ্টাম্ব আমানের পক্ষে অসন্তর বলিয়া মনে হয়। আমরা শরীর
লইয়া সর্বাদা রাজ। মহাস্থা শাক্সসিংহ ৬ ছয় মাস বাল অনাহারে থাকিয়া তীর ভপশ্চরণ করিয়াছিলেন। বিনি বলিয়াছিলেন,

ইহাদনে গুৰাতু মে শরীরং গণহিদাংলং প্রকল্প প্রবাতু। অপ্রাণ্য বোধিং বহুদ্ধন্ত্ব ভাং নৈবাদনাৎ কামমতক্ষনিবাতি ॥

"এই আসনে আমার দরীর গুকাইরা বাউক, তৃক্, আছি, মাংস বিনই হউক, বহু জয়ে অগ্রাপ্য যে বোধি তালা প্রাপ্ত না হইরা এই আ্যান হইতে আমার দেহ বিচলিত হইবে না।" জারার দরীর জীপ দীর্গ হইরাছিল, ভাঁহার অবতা দেবিরা রাঝাল বালকেরা পিশচে বলিরা ভাঁহার পাত্তে ব্লি নিজেপ করিত। তিনি এরপ কঠোরখানে ময় হইরাছিলেন,আপনার দরীর নিজিত করিয়াছিলেন বে, খত খত লওবারা আহাত করিবে

বেরণ বরণ হয় সেইরণ বরণা তাঁহার মন্তিকের ভিতরে উপস্থিত
হইরাছিল। সুভরাং এ চৃষ্টান্ত বা ঈদুর্শ জীবন আমরা অনুসরণ
করিতে পারি না। চৈতন্তের প্রথম জীবনকাহিনী এই দেবাইরা
ক্ষের বে, লোকের উপরে বিবিধ প্রকারে তিনি উৎপাত করিতেন,
বিল্যাভিমানে স্টান্ত ছিলেন, স্থতরাং এ জীবনও আমাদের সম্প্র
জীবনসাধনের পক্ষে উপধোগী নহে। পূর্বত্বন কালের জীবনথালি অসমগ্রভাবে বর্ণিত বলিরা চৃষ্টান্তস্থলে আনরন করিতে না
পারিলেও এক জনের জাবন আমাদের নিকট বিদ্যুমান রহিরাছে,
নাট্যপালার অভিনেতার আর হাহার জীবন আমাদের সকলের
নরনপোচরে অভিনীত হইরাছে। স্থতরাং এই ব্যক্তির জীবন
আমরা গ্রহণ করিতে পারি। এক্ষণে এই ব্যক্তির জীবনের
প্রধান বিষয়ের আলোচনায় প্রবৃত্ত হওয়া বাউক।

কেশবচন্দ্রের উপাত্যনিষয়ে বলিনার জন্ত আমি উপস্থিত। কেশবচন্দ্রের জীবন লিপিবছ হইয়াছে। তাঁহার জীবনের প্রথম ভাগে কোন প্রকার জনোকিক ব্যাপার লিখিত হয় নাই। সত্য বটে, শৈশবকাল হইতে তাঁহাতে বিশেষ ভাব লক্ষিত হইয়াছে, কিছ উহা কভাবের অতীত নহে। তাঁহার জীবন ধর্মজীবন। আমরা এই দেখিতে চাই, কি লইয়া কেশবচন্দ্র ধর্মজীবন আরম্ভ করিরাছিলেন। তিনি বিখাস, বৈরাগ্য এবং বিবেক ক্ষইরা তাঁহার জীবন আরম্ভ করেন। এক্ষণে প্রায় হইতে পারে, বিখাস ঈখাবের কোন্ কর্মপ্র করেন। এক্ষণে প্রায় হইতে পারে, বিখাস ঈখাবের কোন্ কর্মপ্র সাধকের নিকট উপস্থিত করে গু প্রধ্যের উত্তরে হাই বলিতে হয়,বিখাসের নিকটে সকল কর্মপ্র প্রকাশিত হয়।
তবে বিবেক যখন জীবনের মূলে রহিয়াছেন, তখন কেশবচন্দ্রের নিকট তাঁহার সেই ক্ষরণ প্রতিভাত হইল, ধ্য স্করণের জন্ত ঈখ

बाका, छेनाछ राख्य आह महाख्यानक। अनावत अरे ध्यक्त युद्धि (मिष्मा जिनि कोछ हदेलन, किन्निछ हदेलन। धहे त्राक्षाधित्राक यथन भारता, (नडा, खक छ পরিত্রাভা इरेशा अक्रो कामन कार बादन करवन, उपनदे जिनि निका हन। যিনি পাপ দেখাইয়া দেন তিনি উদাত বজের আহ ভীৰণ, তিনি রাজা ও বিধাতা। রাজাধিরাজ বিচারপতি ছইয়া क्षेत्रह यांचात निकटि श्रकाणि चन, कांचात निकटि क्षीवरमह সমুদার পাপ প্রতিভাত হয়। আমরা কানি না কেখবচন্দের জীবনে এমন কি পাপ ঘটিয়াছিল যে, ভাঁহার এড অনুভাপের व्यक्षाक्रम इरेग्राहिल। विरायक्त श्रेषत क्रिकेट সর্মদা জাগ্রৎ ভাবে প্রকাশিত থাকিতেন, তাই পাপ মারণ করিয়া काहारक मर्रामा काष्ट्रित शाकिएक इहेल । स्वामता कास्त्र ७० वर-मत लेपादाव बाटका चामियाकि, चथक चामामित्रव निकेष्ठे जिनि কথন তাদুশ ভীষণ মূর্ত্তি ধরিয়া প্রকাশিত হইয়াছেন বলিডে পারি না। এই জন্ত আমাদিদের বিবেক সহ সম্বন্ধ সাভাবিক কি না তৎপক্ষে সন্দেহ আছে। আমরা আজও বলিতে পারি ना, आमारतत लेखत आमानितात निकृष दिला बहुत छ। । क्षीयन मुर्खि बादन कदिया धाकामिल दम । जेमा धाक्रालंड कीवम र्यमन कामारमुत कोवरनत लक्ष्य कार्याकत मन, एक्सनि (कनवहरत्तत कीरमत, मान एवं, अहे क्या कामात्मव (काम कार्या कारम ना। चामारमत कि च माछ, जारे विरव्हकत वाना चामता क्रिक्ट नारे मा। दक्र दक्ष किछाना कहिए भारतम, भागीत निकार केंच्र निश्व छेशाचरक, अन्य (कान कार्य किनि बाकाचिक दन ना. ब कथा पृष्टि मणा एवं छटन क्षेत्रत नानीत्व क्षमा क्रतम,हेहाव व्यव्यि न

ঈশ্বরের ক্ষমার অর্থ পাপ পোষণ করিতে উৎসাধ দান। নছে,পাপকে দুগ্ধ করা বিনষ্ট করা ক্ষমার প্রাকৃত অর্থ মানিতে হুইবে। স্তুতরাৎ ক্ষেত্রকার ক্ষীবন ক্ষামাদের পক্ষে ব্যর্থ নহে।

व्यामानितात टाएएकक कमन्द्रतात सात्र टाराम विवास महिक माश्राद कतिएक इटेरव। महाया विरवारकात नार्कारत कीवात्मत प्रविष्ठ क कीवामत न्याहे मार्थका त्रविष्ठ मास्त्रा यात्र। काहात लिपिक बार्क क वार्यनानिक भारभत केंद्रान व्यक्ति বির্ল। ওছের জীবনে পাপবোধের অভাব কেন হইল ভাহার বিশিষ্ট কারণ আছে। তিনি সপ্তম বর্ষ বয়:ক্রেম কালে এক দিন ভাঁহার পিতার ক্ষেত্র হইতে ফিরিয়া আসিতেছিলেন। আমেরিকার সরোবরে অভি বৃহৎ পদা উৎপন্ন হয়। তিমি পৰিছিত একটি সরোবরে প্রক্টিত পদ্ম তুলিবার জন্ম বাইয়। দেখেন, তদুপরি একটি কচ্চপশাবক বসিদা বহিরাছে। তিনি ভাহাকে প্রহার করিবার জন্ম হাই ভাহার হস্তবিত লওড় উত্তোলন করিলেন, অমনি শুনিতে পাইলেন, কে যেন ভাঁহাকে दिलल, "शार्कात्र शार्कात क्रेन्स कुकर्त्व कतिन्छ ना।" अटे निरंद्य बाबी लिनश পार्कात बादात ददेए वित्रक ददेश छादात सननीत निकृष्ठे राहेश भम्छ कथा छाहारक निर्देशन कृतिश क्रिस्टामा क्रिट्सन, मा एक आमारक निरंबध क्रिट्सन ? छाष्ट्रांत सननी जेचद भवावना माली तमनी हिलन। मञ्चानक काल महेवा अल्बाबन ভাঙ্গিতে ভাঙ্গিতে ভিনি বলিলেন, "वर्म, লোকে এই বাণীকে बिरक बरण, किन्द्र प्यामि विल देश माकार क्षेत्ररवत वाली। তুৰি যদি ই হার কথা ভনিয়া চল, ভোষার জীবন চিচবিভয় एकेटब।" विद्यारणात लाकीत विश्वारक्षत. छीवात स्थलतीत

वाका कीवात कावात वर्गाकात निवित्र हिन्। किया स्वेदण स्वाब क्यन छाहात की बटन विरवटकत महिए विशाध विनि सञ्चल करतम नाहे, छाहे छाहात कोवरन भागरनाया শ্ৰাৰ ৷ কেশবচন্তের জীবনবেদের পাপবোধ অধ্যায়টি বাঁহার পাঠ করিয়াছেন ভাঁছারা বলিতে পারেন, কেশবচন্দ্রের কিরণ **जी इ मामदाब हिल। दम व्यवाह भा**ठ कहितल महन रहा, हान **ভিনি কত প্রকার পাপে ব্যাপুত। নরকের অনলে** তিনি দিন রাত জলিতেন। ভাঁহার মনে হইজ, যেন কোন মাধুয়কে তিনি रुजा कतिबाह्यन । जिनि वनिबाह्यन, यनि चात्रि मन मन ভাবি অমুক ব্যক্তি আমার সন্মুখে না আসে; তাহা হইলেই আমি **ष्टा**त मधरक रूषा चलतार चलतारी रहेलाम । (य धर्च श्रावि-क्षेत्र वना जिन व्यामिशाहित्यन, जाहात नौजि व्यक्ति केन नोजि। এই উচ্চনীতিতে বিবেকীর জন্ম হইল। তাঁহার অভরের ভিতরে অতি সামাক্ত কোন বিস্তৃশ ব্যাপার উপস্থিত হইলেই অমনি ভীষণ পাপবোধ উপস্থিত হইত। মহর্ষি ঈশা বলিয়াছেন, যদি কোন নারীর প্রতি তুমি কুনুষ্টিডে ভাকাও, তবে তুমি ব্যাভিচার भार्भ लिख इंदेरन। किस (क्षतहता विवाहन, श्रीक (कह कर्खर्याभगदक दान नात्रीत निक्रे विमिन्ने अभी मुमूहिए, म चरल चात्र इहे शिनिने चिवक वित्रता बारक **करव रम शा**कि-हादी एवं। दे पृत्त व मिनिये थाका द्वाराधन, त्म प्रत ७ मिनिये কিংবা ৭ মিনিট থাকিলে অবশাই ভিতরে ভিতরে ভাহার প্রতি हिस बाक्टे रहेग्राह । यति (कान दाक्टित अक्टि क्रमत वश्व दिविश भरत देश रे के वेखि भागात एक, भागि भगति होई। चनताथ चनताथी रहेनाम । मनए: त्वाम नात्नत महायमा किकिश

ক ভাষা কেশবচন্দ্রের নিষ্টে ভীষণ আকার ধারণ করিও।
তীহার সহিত অনেককাল একত্র বাগ করিছাতি। দেবিছাতি,
তীহার সেবাকারী স্বাসদিগকৈ স্নের কৃষ্টিতে দেবিতেন। বলি
কিন স্বাসের বেতন দিতে বিলম্ম হইত, অমনি আর তিনি
কাকিতে পারিতেন না। বিবেক তাঁহাকে বলিত, "তুই স্বার্থপর তাঁহাকৈ কন্য ব্যস্ত, আর ভোর ঐ দাস বেতন পাইল না,
রি পুত্র কন্যা অনাহারে মরিতেছে ভাছার বেতন না দিয়া
কিরপে নিশ্চক্ত আছিস্।"

অকটি ৰুষ্টাত্ত দিলেই ভ্ডাগণের প্রতি তাঁহার সুকোষণ বিহার সকলে বুঝিতে পারিবেন। এক সময় তাঁহার একটি লৈক ভূতা চুরি করিয়াছিল। তাঁহার বন্ধুগণ নিডাল্ভ চলচিত্ত, কলেই ভাষাকে পুলিবের হল্তে অর্থণ করিতে উলাভ হইলেন। ক্ত ভিনি সেই বালককে ডাকিলেন এবং ভাছাকে লইয়া ज्यानास धाराम कविद्या छात्रात कलार्यात खना श्रेषात्रत निकर्षे প্রার্থনা করিলেন। বালক অঞ্চ বিসর্জ্জন করিতে লাগিল। শেষ नमर् प्रति वालक काँशांत (ताननगांत शांनेनरन रमवा कतिहा-ছল। আমরা মনে করিতে পারি, তিনি 'পেলাল কোডের' वक्राक कार्या कविरानन । जिनि विरावनी क्रिलन, छाँचात्र समृद्र र्दिक्त मुखाबा हिल। जिलि नाहा वान्छात निटक मुक-। । के विद्या विरव्हकत अञ्चलात्व मामहक क्या कतिलम। াছার কার্য্য আমরা অমন্তমোদন করিতে পারি না। সেই ानकरक दार्थमानवारच क्रमा ना कतिहा मिखक कविरण (म हिन रमित सन्। मन्तरित इरेडा चारेछ। असरहस सन्।शीता क्षित्र मिल्फ चरेत्रा कारावारम जाला स्मर्थाम करेए छात्रात्रा

পাবেশ পরিশাক ক্রীয়া আইলে। আলি পোলারেল কার্যা করিয়া ইরার চুইক্তি নিসক্ষণ অবলক আলিও আনার করিয়াকারেল, একট আলবছক চোর বরা পড়েঃ সে আলবা ক্রীয়েন্দ্র করি ক্রা ক্রান্ত করিয়া করা করি হয় নাই, ভূমি সে গুলি কের ক্রান্ত করিয়া করা করা হয় নাই, ভূমি সে গুলি কের ক্রান্ত করিয়া করা করা হয় নাই, ভূমি সে গুলি কের ক্রান্ত করিয়া করে বিশ্ব আনাকের অনেক ওভার আনালারে বাইতে পরিশে ভথার আনালের অনেক ওভার আলেন, তাঁহাদের নিকট এবার এমন শিক্ষা করিয়া আসিব বে, আর বরাং পড়িব না। কেশবচক্র নিক্রের ভারতিক প্রভিতর ক্রান্ত বিশ্বর অবগত ছিলেন; মুভরাং নিক্র ভ্রত্তকে ক্রমা করিয়া কিছু অভায় করিয়াছেন, ইহা আন্তর্বান্তে পারি না।

কেশবচল্রের জীবনে প্রথমত: বিবেকের সাদ্রাজ্য বলতঃ
রাজাবিরাজের মূর্ত্তি প্রকাশ পাইল। এই রাজাবিরাজ রিছনিশবের ঘিহোরা। রিছনিজাতিকে বিনি শাসন করিতেন, সেই
বিলোরা কেশবচল্রের নিকটে রাজাবিরাজ হইয়া প্রকাশিও।
বদিও এ দেশে উদ্যত্তবক্ত প্রভৃতি শব্দ স্থারের সম্বন্ধে শাস্ত্রে
লিখিও আছে, তথাপি বলিতে হইবে ভূমা মহান্দ্র স্থারের সো
ভার এদেশের সাধকনণ ভাতি অন্নই বুনিরাছেন। বাহারা
বাংগিকুলসভূত বলিরা আপনাধিগকে পরিচিত করেন, পাপের ক্ষয়
ভীত্র বাতনা ভোগ করিতে তাঁহাদিগকে দেবা বাহারা। পালের
প্রতি কটাক্ষ না বাকার আ্বাবের জীবনের সক্ষে তাঁহার জীবনের
বিশ্বের পার্থকা। প্রথমে রাজ্য নেতা পরিক্রাতা,ভংগরে পিভার বেশে
স্কর্মর কীহার নিকটে প্রকাশিত হইপেন। এইরপে ক্রমের বর্ষন

र्वक्यनिक क्रिंडका चर्चाकुक एरेडा चामिन, प्रवंग श्रेपड विषेत्रन रहेश (क्येन्ट्रस्था निक्टे खेकांचिक रहेरनन । अपन ভার স্থকোষণ হল্ডে ভিনি লালিড পালিড ছইছে লানিলেন। র্শবচন্দ্রের অন্তরে ভক্তির স্বাগম হওয়াতে প্রবরের মাড়যুর্ভি कार्य गारेश । किमि विविद्यारस्य, "बिश्वक देवतावा कृषे महाव धरम क्षत्र शहरक युनिवाहिमाम। अक कर्रकांत रव जीवरमत त्रच रमवारम छक्तित्रम किन्नरन रक्षा बाहेरव ? छाहात बाणा-ও তথন করিতে পারা যায় নাই। ভক্তি অতিশব আবশুক, ্তি ভবন মনে হয় নাই, মাড়চঃপক্ষণ কি, ভাছা বুঝিভাষ । বিবেকের রাজার কাছে প্রার্থনা করিভাম। অপরাধী বন্দী রাণী, তপত্নীদের ঈশবের কাছে থাকিব এই অভিনাম ছিল। চ অন বিশ্বাসী পরত্রক্ষের উপর নির্ভর স্থাপন করিল, এই लाहे त्रिविषात्र, खरकत त्येला त्रिवि नाहे।" विचान, विदयक वाता. এই जिन इटेट कीवरनत बावल बहेवा डीवार कीवन াপ্ৰধান হইল; পুণাভূমির উপরে ভক্তি সঞ্চারিত হইল। भेरतन धरे क्या एकित छेन्दरनकारन वनिवाहन, एकित द्विता भूत्वात कवा चात्रिए भारत मा ; त्कन मा चकि भूवा-मत छनत प्रानिछ। भूगा व्यक्त कीवत्व मकातिक मा वहेत्य ক আসিতেই পারে না। এদেশের ভক্তিশাল্লে ধ্রিক **রবিত আছে**.

> ন স্বপূাণ্যবভাং লোকে বুচানাং কুটনাস্থনার। ভক্তিউবতি গোবিষে কীর্ত্তনং প্রবণং ভবা ঃ

পूर्वा विना एकि एक्त्रा पृत्त, स्वयन कीर्जन भवाण निष एक , छवानि एक्तिमण्डल वारात्रा बीबारमा कवित्रारकन, कारास्मर মত এই বে, ভক্তেতে কিঞ্চিৎ ছোবের সংস্রব থাকিলে ভাষা নিক্ষনীয় নবে, চন্দ্রে কলকের রেখা আছে বলিরা কি চন্দ্র চিত্তহর নহে • এ মীবাংসা করিবার কারণও আছে, কেন না গীভাতে উল্লিখিত হইরাছে,

> ৰ্দ্ধি চেং স্পূর্বাচারো ওজতে মামসক্তাক। দাধুরের দ মন্তব্য: সমাক্ ব্যবসিতো হি দ: । ক্ষিপ্র: ভবতি ধর্মাকা শবচ্ছাতি: প্রবাস্ততি।

শ্বতি চুগচার হইরা যদি অনন্তমনা হইরা আমার জন্ধনা করে, তাহা হইলে ভাহাকে সাধুই মনে করিবে, কেননা তাহার সমাকু অধ্যব্যসার হইরাতে। সে শীস্ত্রই ধর্মাজা হইবে, নিত্য শান্তিলাভ করিবে।" প্রদ্ধা ভক্তির প্রথম উল্লেখ। এই প্রদ্ধা হইতে ভল্পনা উপ্থিত হয়। এখনে ভল্পনাই ভক্তি বলিয়া পরিগৃহীত হইরাছে। স্পর্যের ভল্পনা ক্রিতে করিতে চিত্তত্ত্বি হয়, চিত্র-ভ্ৰির পর ভক্তির উদ্যুহ্য, ইহাই য্থার্থ ভ্কির উদ্বের প্রক্রম।

এক্ষণে বাহা বলা হইল তাহাতে এই প্রতিপন্ন হইল, কেশবচন্দ্রের প্রথম জীবনে মুখার জানাধ্যা দেবতা বিহোৱা—বিনি
রাজাধিরাজ উাহার সহিত, তৎপরে মহর্ষি ঈশার পিডার সহিত,
তদ্দস্তর চৈত্তক্তর প্রেমমগ্রহরির সহিত সাক্ষাৎ হয়। জাঁহার জীবনে
প্রথমে মুখা, তংপরে ঈশা, পরিশেষে চৈতক্তের লহিত মিলন
ছইয়াছিল। বিবেক বে হালয়কে শাসনের ছারা বুব কঠোর করিয়াছিলেন সেই কঠোর জ্লয় প্লোল্যান হইল, সেই শৃত্ত ভূমিতে
ভক্তির কুসুর কুটল। জ্লয় পরিত্র না হইলে বর্গে ভক্তি হয়
মা। ভক্তাবতার জীচৈতক্ত বাহা বলিয়াছেন ভাষাতেও ইয়াই
প্রতীত হয়। ভিনি বলিয়াছেন,

[310]

ভূণাদপি সুনীচেন ভৱোৱপি নহিছুণা। অধানিনা নানদেন কীৰ্তনীয়া সদা হয়িঃ ।

'ভূগ হইতে অভীব নীচ, তক্ল হইতেও সহিষ্ণু, আপুনি मानी अथा अकारक मानतान करत, मेनून व्यक्ति एतिमाय-विंदन व्यविवादी।" जिनि करे नवाल विवाद काल हम मारे। ানি বৈরাগাপৃত্ত পুণাপৃত্ত ভাবুকভার নিকা করিয়াছেন। ভিনি াদৃশ ভাবুকতাকে ভাৰকালি বলিয়া ভাছা ছইতে ভাঁছার শিব্য-ণকে সাবধান করিয়াছেন। ছবি, আমরা ছরিনামে নুভ্য করি, ात रिन आंभारमत अञ्चल भाभ थारक, खरब आंभवा निन्छ्य है ावकाणि (नवारेशा , अनवादी शरेव। (व वाकि की डिटन চিতেছে আর পরক্ষণে ক্রোব করিতেছে, তাহার সম্বন্ধে আররা क्तप्रदे रिमाल भाति, ध राक्तित छात्रका जात्रविकात्रक्रमिक। किमाञ्चकावृत्रन विविध धाकारवय क्षत्रपट्ट मक्सन निर्वय कविया-[न । **उत्राक्षा এक धाकारतत क्षत्रहरू वळकत्र वनित्र।** निर्देश রিয়াছেন। এই বজ্রকর জ্বরে ভাবের অতীব গাঢ়তা ছয়, অথচ ছিরে ভাষা প্রক্টাকার ধারণ করে না। আমার পিতৃষ্য অভি লাঢ় অনুবাগী ভক্ত ছিলেন। কীর্ত্তনপ্রবণে ভাঁছার চকু ারক হইড, ভিডরে প্রাণ্ প্রেমানর হইড, অবচ চকু দিরা क विन्यु जाली निर्णाष्ट्रण रहेण मा। दे हात क्षत्रहरू वसक्त ।। बारेर्ड नारतः विभावहत्त्वत्र विरक्षितिमाधिक समस्त यथन ক্ত আসিরা দেখা দিল,ভখন ঈশ্বর রাজবেশ পিত্রেশ পরিভ্যাপ রীয়া মাতৃবেশে ভাঁহার নিকটে **একাশিও হইলেন** ৷ সুভরাং ণতে হইবে, কেশবচন্তের ছফি পুৰ্যক্তমিত্ব উপত্ন সংস্থাণিত ब्राह्मि । (कनवहत्त्वत्र निक्टे क्षेत्र वयन या प्रेश क्षानित्नम

তথ্ন তাঁহার ভাব ভিন্নবেশ ধারণ করিল। ভাহার সমুদার ভাষ পরিবর্ত্তিত হটয়া ধধার্থ বালকের স্তায় ভাব হটল : বালকের ভাষার শ্বায় ভাষা হইল। বছদিন পূর্বে ভক্তিভালন প্রধানাচার্যা ভাঁছাকে ব্রহ্মানক নাম দিয়াছিলেন। ভক্তিসমাসমের পূর্বে त्म मात्मक वर्षार्थ शोख विनक्ष छिनि चार्शमादक क्यम मत्न करतम নাই। তিনি বলিয়াছেন, "যদিও কোন কোন ছলে মাননীয় पश्चिमिरात निकटि 'अञ्चानम' नाम शरिशास्त्रिमाम, कि**ड ज**न्दत ভাছাতে সায় দিও না, বলিভ তুমি ইছার উপযুক্ত নও।" "এখন अधनहे एक जात्रियात जात विलाख शांति ना. अधन एकि অধিক কি বিবেক অধিক; আনন্য অধিক কি তপতা অধিক; क्ष अधिक कि करहेत्र धर्मनाधन अधिक।" आमारमत धर्म धाधरम সভ্যের ভূমিতে প্রতিষ্ঠিত হইয়া আনন্দে পরিসমাপ্তি হয়, এই क्षक्र भेषात्रत काम काम क्रमालत भन काम क्रमालत जावाधना कविरण अवर प्रज्ञानिक्रस्त महिक माजारकात हहेला माधरकत कीरन मर्काक पून्यत इत छाटा वला सात्र। (कथवहरत्वत्र कीवरन मकरम रिविध्यन, मरकारक कीवन कात्रक कतिवा छोटात कौरन चानान गतिमयाश ट्रेबाहिन। उन्नम्:-म्मार्ग बीर कि सकात बानम गांच करत (कथरहता जाहाहे निष भीवरन रक्षारेशकिरनन । एकिमकादा वर्षन कांश्व उक्षमाध्यादकात्रधनित मधीत चानावत्र छेन्द्र इदेल, छदन चामरम अभातायमा भर्गायमत स्हेल । এक सहान चमन द्रेश्वर क्रेमाण राज्य काम कीवन, कांशाबर अकारन हता. पूर्वा अस নক্ষরাধি পরিচাশিত হইডেছে, তিনিই রাজাধিরাজ, তিনিই गांधरमञ्ज हिर्फ क्षतिहे इहेजा जानम क्षतान करतन । जानरक

আদক,পূর্ব্যে আদক, ত্রন্ধসাকাৎকার ভিন্ন আনক কথন সমূদ্রি ক হয় না; আদকে এই জন্ধ সাধবের পরিস্থান্তি।

কেশবচন্ত্ৰেৰ নিকট ঈৰৰ রাজা, পরিত্রাভা, পিভা, মাডা,হইরা धकाषिक रहेरनन, **बरे नर्राचरे कि स्वय रहेन र मर्सा**भाव विमि वस्त्रता व्यवधीर्य स्टेरलन, भवम एकरमब स्मीकरमा जिनि व्यावहे ছইলেন। তিনি বলিতেন আমার প্রাণের মুক্তদ আমার জন্ত नर्रागरे काण्य: जिनि कडे अञ्चय कतिरागरे जेवत कडे অমুভব করেন। মাতুর কট্ট অনুভব করিলে ঈবর কট অনুভব করিবেন, ইহা অভি অভত কথা। তিনি প্রার্থনায় বলিয়াভেন, "বিশ'সীর চক্ষে, পৃথিবীতে যত ভক্তেব বাড়ী আছে, ভাতে ভূমি কেবল দৌড়িতেছ। কোমল ভোমার প্রাণ, বন্ধুর চুঃখে ভূমি বড় কাতর হও। লক্ষ লক্ষ ক্রোশ দূরে একটি ভড় ভোমার लाफ चारक, वसू नारे, बाराजा किल क्राय क्राय काफिन। कृति (भाग की हात दावा कविष्ठ । व्यविश्वाच त्यवा कर. कारह जारह বলে কত বক্ষে প্ৰাণ পরিভাষ কর। লোকে ছোমাকে পিড়া मांछा मुक्तिनांछा विनदा शृक्षा कविन । अहे त वस्कावित हेराव ভিতরে অমৃত রহিরাছে। আমার মূব ভকাইলে ভোমার মুব **करकात्र. जामात्र व्याताम स्टेटन त्यम त्यामात्रक व्याताम स्टेबाट्स ।** ৰণনীশ, পৃথিবীতে আন্তীয় সম্ভন আছে ভাহারা দেবা করে, केष जात्मत वर्ष करकाव मा। जाता निरस्ता चामना वर्ष तारा ारतः। एतित क्यांत्म करकत क्यांत अक एरत (शरहः। एक स्टालहरू रावात काटक रच विरमत रवनात रक्त बारक मा। क्रेनातात वेश एकि वृत्तिराम अवर छवम एरेएछ निरम कारक निया निरमम।" अ मनम क्या जानक क्षेत्ररात क्षा कि याति ?

এ বেদ এক জন সামূব আর এক জন সাম্বের কথা বলিতেছেন।
তিনি এক বার উপাসনার লমরে বলিরাছিলেন, বা আনার
অবিরুল থারে অঞ্চবর্থণ করিরা কাবিতেছেন। আমি তাঁহাকে
জিজ্ঞাসা করিরাছিলান, নহালার, আপানি এ কি বলিলেন? ঈশ্বর
কি কাবেন? তাঁহার আবার অঞ্চপাত কি? তিনি উল্লর
দিলেন, অনতে বাহা আছে, চিরদিনই আছে; অনতের অনত
সহামুত্তি, বল, আর কোন্ ভাবার প্রকাশ কর বাইতে পারে?
তিনি তথন বে অর্থে অধিরুল অঞ্চবর্থণ বর্ণন করিরাছিলেন,
ইলানীয়ন ঈশ্বেরর অনত বছুতা প্রদর্শনের জন্ম 'আমার মুখ্
ভবাইলে ডোমা্র মুখ্ ভকোর' ইত্যাদি বলিরাছেন, ইহাতে আর
সম্বেছ কি?

 সন্থান। তা আমার দৃষ্টিশকি, চিডাশকি, বিবেচনার্শকি, এ সমুদার
পঞ্চি ভোমারই কন্যা। এরা কেন তবে অনম্ভ মত্তে দীকিত হবে,
অনলস হবে, বিবানিশি হরিনাম করিবে না ।" নববিবান পূর্ণর্থ,
ইহা অনম্ভ বিনা কর্থন সভাই হইতে পারে না, তাই তিনি প্রার্থনা
করিয়াকেন, "কবে আমরা নববিবানকে বুক জুড়িরা আলিজন
করিব । সমস্ভ ওপ কোটি কোটি পূর্ব্যের ভাল হুলরে প্রকাশিত
হুউক; দেখিরা মুদ্দির্ভ ত হইরা বাই। অনজে লীন হই, আর
মাকে বুও বুও লইরা প্রত্তির বসিয়া বাকিব না। পূর্ণব্রহ্ম,
পূর্ণব্রহ্ম, পূর্ণব্রহ্ম এই শক্ত উচ্চারণ করিতে করিতে
পূর্বতা পাইব।"

এই অনত্যের সঙ্গৈ বোগে কি হয় তাহা তিনি আপনি এইরপ বলিরাজেন;—"অন্তরাজার সজে এমনই সংযোগ বে, প্রতিবজ্ব কেবিবামাত্র তংকশাং তংসকে সজে ব্রজের দর্শনলাভ। কাঠ আর কাঠ মনে হইবে না; আকাশ আর আকাশ মনে থাকিবে না। আকাশে চিদাকাশ দেখা ঘাইবে। সর্মন্ত এক জ্ঞান রক্ কক্ করিতেতে, এক শক্তি টন্ টন্ করিতেতে, এই অভ্যন হইবে। জ্ঞানের উজ্জ্বল প্রভা আকাশমর বিস্তৃত রহিয়াতে; আনন্দ প্রেম ব্যাপ্ত হইরা চারিদিক্ শীতদ করিতেতে, জীবকে শাভি দিতেতে।" প্রার্থনার অনত্যের সজে বোপের নবভাষ আরও জ্বন্দাই অভিব্যক্ত হইরাছে। "ব্রজ্ঞান এখন যে আমার ভাগোরে; আমার প্রভাগনের, আমার বজ্বের ভিতরে। জ্বী-দার অপেলা বড়, রালা অপেলা আমি বছ হইলাম। ডোমার সভান হইরা আমি ব্রজাণ্ডের উত্তরাধিকারী হইলাম। বোপেন্ডে ভ্রা, চক্র, নক্ষর সম্বভ ব্রের করের করিয়াছি। মাক্ডসা বেষন

ভালে পোকাকে ধরে, তেখনই ধরিয়াছি। এক এবং একাও, ব্ৰহ্মাণ্ড এবং ব্ৰহ্ম আমার মধ্যে করিয়াছি।" এই বিচিত্ৰ বোগে নধবিধানের নৃত্যত। সমুদার জনৎ ও জীব যোগীর জ্ঞানস্ত্রে বন্ধ। এক বার তিনি যাহা দর্শন করিয়াছেন, অনুভব করিয়াছেন, আৰু ভাষা ভাষার জ্ঞান হুইডে কখন অগহত হর না। কেশব-ठल वित्राह्मन, यनि ब ठक्क् अक वाड अन्नर नर्भन कवित्रा लड़, ভাতার পর চকু অন্ধ হয়, হোগীর পক্ষে ভাহাতে কিছু ক্ষতি হয় না। জগৎ দর্শন করিবার বে প্রহোজন ছিল তাহা ওঁাহার मचरक मिक हरेबाह्य। खनएक क्रमांकत स्वीवतरक सम्बा स्वीत्तत পক্ষে প্রয়োজন, বর্থন ঘোগী তাঁহাকে জগতে দেবিলেন, আর काराव क्यांक वारबाकन कि ? क्यां एहें एक साथी क्यांक मात्र चाकर्व कतिशा नरेशास्त्रम, धर्यन यति यात्री चक्र वन, जिनि জনংশতিতে জনং দর্শন করিবেন, অসংখ্য কোটি জীব তাঁহার আসার অকীভূত ব্রয়া গিয়াছে, ডাহারা আর ভাছা হইডে কোথায় দূরে প্লায়ন করিবে। যোগীর সঙ্গে একাজভায় সকলে वह। এक उत्सार हिनि भवन धरः मक्नरक वर्णन कति॥ कृष्ठार्थ। साहा मिश्रिमन छाराएडे छारात्र मिश्र सहैन লা। তিনি আহে। কেবিবেন, আরো জানিবেন, অন্তর্জাত অনজেতে বাস করিয়া ভাঁহার অনত দীশা দর্শন ও সভােতে क्षक्षा स्टेर्वन।

ने प्रवर्ध स्वरण जनसः, जात महणातरे ज्ञाविश्विते । स्वयंत्रस्य प्रवेत ने प्रवर्शन मार्था प्रवेत ने प्रवर्शन मार्था प्रवेत ने प्रवर्शन मार्था प्रवेत ने प्रवर्शन के प्रवर्शन के

াস ও সাইনাগিরি, ইত্রোপ ও এমেরিকা, জর্ডান ও জেক্ষালারকে তিনি উচ্ছার ক্যালকুটারে আনিছাছেন। এ সকল বিলামি উচ্ছার কোণা ক্ষতিত আসিল। অনজের মধ্যে বাস ইতে। তিনি ইংলতে অবস্থানকালে বক্তৃতার বলিছাছিলেন, বানে আমি ও ভারতবর্ধে আমার বন্ধুগণ, আমরা সকলেই ক ঈশ্বরেতে অধিবাস করিতেছি। এই অনজের সহিভ ধ্যেরে চনি ক্ষিণ্ডের সঙ্গের বৃদ্ধের সংল একত্ লাভ করিরাছিলেন।

অগৎ ও জীব এক অনম্ভশক্তিহারা অনুবিদ্ধ। ভিনি উপরে ামন এক ঈশ্বর মানিতেন,পৃথিবীতে তেমনি একটি মাছুর মানি-চন। সকল মনুষাই এক মহান মানহদেহের অন্তর্গত, বা অন্ত-ভাক। এই জন্ম ডিনি ভাঁহার বন্ধবর্গকে এক বলিয়া মনে করি-গ্ল। সমুদার অপৎ অনস্তের মধ্যে বিরাজ করিতেছে,ভগবানু ভিন্ন ার তিনি কিছু দেখিতেন না। তিনি পাগল ও যোগী বলিয়া করে-টি প্ৰবন্ধ লেখেন। ডিনি আপনি সেই যোগী ও পাগল। সূৰ্য্য, ज, गल, गकी, मासूब, मक्रुवुद क्रियुक्तिश क्षेत्रद डाँशाटक मर्गन তেন,তাহার সহিত ক্রা'বলিতেন। ত্রসাভুক্ত উচ্চার দৃষ্টি जिनि विवासियाती इस्टितन कार कर ।নি বলিতেন, পুনুষ্ট টুখন নির্ভন আমাধ্যে সূর্হিত কথা বলেন; हित वानी चार्क कि एउटे थारम मार्किक महिल खोन-गण्ड मक्ल विषयके लिए। রবাছিল। करि मृहार्ख : क्रम कनदारमंत्र देनि निवृत्त द्य नाहे । जेवन व्यमक, नि चारा करतन हिन्दिनिर करतन, और छारात मछ। जिनि हे जनअप्रहायुक्तिशूर्व ज्ञेचत्रस्य बार्यत्र बस्कर्म वद्रव রিয়াছিলেন। অনন্ত বিনি তাঁহাতে সহজ্র সহজ্র নর নারী বাস

कारणाहाः विभि वनिष्यनः, केनात अन्यविधि तेवाः, निष्य अन्यविधिष्ठेष्ठम् सम्बर्धः व्यावश्चा नन्दान अन्यविधि सन्दर्भ विधि कतिरण्डिः, व्यावाद्यत्र सन्दर्भतः द्वान्यविध्यः अन्यविध्यः विधि व्यवधः विध्यः अन्यविध्यः विधि व्यवधः विधि विध्यः विधि विध्यः विधि विध्यः विष्यः विध्यः विष्यः विध्यः विष्यः विध्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः

কেশবচন্দ্র অগ্রজন্যা।

কেশবচন্দ্ৰ অগ্ৰজন্ম। *

হে সারাৎসার পরম সত্য, তুমি আসিরা আমাদের হৃদর মন আছাদিত কর। সভ্যের প্রতি দৃঢ় বিশ্বাস, সত্যের জন্ত লক্ষাভর-পরিভাগে, সত্যের জন্ত প্রাণদান ভিন্ন তুমি কাহাকেও দেখা দেও না। তোমার নিকট এই জন্ত ভিক্লা করি, তুমি আমাদের লক্ষা, ভর, আশক্ষা, জীক্ষা, সমুদার অপুসারিত কর । তুমি আসারা সকলকে তোমার বারা এমনই উদ্দীপিত কর যে কাহারও মন অণুমার ভীত ও কুন্তিত না হয়। হে সত্য, সত্যপ্রকাশ করিতে যেন কোন কারণে ভীত না হই। ভরে ভরে জীবনমাপনাপেক্ষা ভীবনের ক্রেশ্যরণা বল আর কি হইতে পারে গুলে তুংখ তুমি স্বয়ং অপুসারিত কর। তোমার নিজের গৌরব এবং যাহা সত্য তাহা প্রকাশ করিতে যেন কথন ক্রম্ভিক না হই, তুমি এই আশীর্কাদ কর।

কেশবের জন্মদিনে বংসরাস্তে কিছু বলা এক প্রকার নিরম চটরা গিরাছে। এই উপলক্ষে যাতা বলা যার, ভাষা সমুদার বংদরের আন্দোলনের ফল। ইতঃপূর্ব্বে এখানে পঠিত 'Keshub—
the Reconciler of pure Hinduisn and pure Christianity' বিষয়টির চরমাংশের বিবৃতি এই বন্ধৃতা। একটি বিষয় বহুবর্ষ যাবং কথকিং অপ্রকাশ্তে ছিল, আন্ধৃতাহা প্রকাশ করিয়া
বলিব মনে করিয়াছি। যাহা ধনিব, এমন ইইতে পারে বে ভজ্জ্জ্ঞ অব্যবহিত ভারী বংশীরগণ্যদা জনেকের আমি বিরাগতাক্ষম হইব।

^{ু *} ব্যক্তিতৰ ভৰোৎসবোগলকৈ উপাধ্যাৰ নাৰত বজ্ভার নার।

অন্ত লোকের কথা দ্বে থাকুক, আমাদের নিজের লোকমধাও আনেকে আমার গোঁড়া বলিরা মনে করেন, এবং অনা সকল অপেকা সেই গোঁড়াম হইতে মওলীর অনেক অনিষ্ট হইতেছে, এ কথা বলিতেও তাঁহারা কুন্তিত নহেন। আমার প্রতি কে কিবলিতেছেন, কোন্ অপ্যল আমার প্রতি কে আরোপ করিতেছেন, তাহা ভাবিয়া আমি কুন্তিত নই। গোঁড়াম বা এ বাক্তি মওলীর খোর অনিষ্টকারী, এ দোষারোপ কেহ করিবেন বলিরা সত্য বলিতে কেন ভর করিব ? সত্য বলিব, ফলাফল কি হইনে, তাহা জানি না। সত্য বলিতে লজ্জা কি ? যদি সত্যবিরোধী কোন কথা আমি বলি তজ্জনা মন্তক অবনত করিব। আমি যাগ বলিতেছি, তাহাতে বিজ্ঞান ও দর্শন আমার সহায়। বিজ্ঞান ও দর্শন আমার বহায়, এই সাহসেই আমি অদ্যকার বক্তব্য বিষয় বিলতে অগ্রসং।

জামি এ কণা অনেক বার বলিয়াছি, আমার জন্ম সংশ্যাবাদিগণের মধাে। যথন জামি প্রচাবক লীবন গ্রহণ করি, তখনও
ইংাদের সম্ম আমি পরিত্যাগ করিতে পারি নাই। প্রচারের প্রথম
বাহির হইয়াই লুইসক্ত গ্রন্থ সহ আমার পরিচর বহন উাহার
গ্রন্থ গুলি পড়িয়া আমার বিখাস কোথায় আন্দোলিত হইবে, না
আরও দুড়মূল হইল, এজনা আমি তাহার প্রতি চিরক্তজ্ঞ।
তাহার একথানি গ্রন্থের একটা কথা আমার জাবনের উপরে
গ্রন্থীতাবে বিভার করিয়াছে যে, সেই এক কথার আমি চির
জীবনের জনা বিজ্ঞানের পক্ষপাতী হইয়াছি। কথাটী এই:—
"এক্তিমণাে বিরোধ নাই। একটা অধিচালা ঘটনা, আর কুড়িটা
অহিচালা ঘটনা হারা নিরাক্ত করিতে হইবে না; নিরাক্ত

করিতে হইবে না, কিছু যদি সন্তবণর হয়, সেটাকৈ সেগুলির সংস্থ কোন একটা সাধীরণ ঘটনাধীনে এক শ্রেণীতে নিবদ্ধ করা হইবে ।" একথা তিনি বলিলেন কোন্ উপলক্ষেণ্ণ তিনি লিখিয়াছিলেন, আমাদের নাসিকাপ্টস্থ স্ক্র রেমরাজি বাহিরের ধূলি প্রভৃতিকে ভিতরে প্রবেশ করিতে দেয় না। ধূলি প্রভৃতি প্রবেশ করিতে গেলেই উহারা সে গুলির অভিমুখীন হইয়া তাহাদের ভিতরের দিকে প্রবেশের গতি অণ্রোধ করে। যদি একপ না হইত তাহা হইলে যে সকল বাক্তি ক্রলার থনিতে,মিলে, লোহার কারখানায় কাজ করে, তাহারা কিক্রপে বাঁচিত পুণ এই

^{* &}quot;In Nature there is no contradiction. One positive fact is not to be set aside by twenty other positive facts; not to be set aside, but if possible to be ranged with them under some more general fact."—STUDIES IN ANIMAL LIFE, BY G. H. LEWES.

^{† &}quot;It is an interesting fact, that while the direction in which the cilia propel fluids and particles is generally towards the interior of the organism, it is sometimes reversed; and instead of beating the particles inwards, the cilia energetically beat them back, if they attempt to enter. Fatal results would ensue if this were not so. Our air-passages would no longer protect the lungs from particles of sand, coal-dust, and filings, flying about the atmosphere; on the contrary, the lashing hairs which cover the surface of these passages would catch up every particle, and drive it onward into the lungs. Fortunately for us the direction of the cilia is reversed and they act as vigilant janitors, driving back all vagrant particles with a stern—'No admittance—even on business?' In vain does the whirlwind dash a column of

কণার প্রতিবাদ করিরা কেহ লিখিয়াছিলেন, সুন্ধ রোমরাজির গতি যদি ভিতরের দিকে না গিয়া এইরূপে বাহিরের দিকে ফিরিভ. তাহা হইলে কয়লার থনি প্রভৃতিতে যাহারা কাজ করে ভাহাদের কথন ক্ষররোগে মৃত্যু ঘটিত না ; মৃত্যুর অস্তে দেহচ্ছেদে তাহা-त्मत्र कृतकृत इटेट क्यलात खँड़ा প্রভৃতি পাওয়া गाইত না। धरे श्राठिवारमत श्राठिवामञ्जल लुहेम धरे भर्गारकमण्डित जैल्लक করেন ;--একটি পরগোশের মুখ একটি স্ক্র চর্মাবরণে আবৃত করিয়া তমধ্যে ফল কয়লার গুঁড়া স্থাপিত করা হয়। সেই धतर्गामि यथनरे निःचाम किलिछ, छथनरे म्छलि हन्त्रावतर्गत মধ্যে চারি দিকে উড়িত। করেক মাস পরে ঐ থরগোশটর দেহচ্ছেদ করিয়া দেখা হয়, তাহার ফুফুদে কিছুমাত্র কয়লার গুঁড়া প্রবেশ করে নাই। তিনি এই পর্যাবেক্ষণটির বলে এই নির্দ্ধারণ করেন যে, সহস্র সহস্র লোক কয়লার থনি প্রভৃতিতে কার্য্য করে. **তाहार्मित मर्सा अञ्जनश्थारकत क्यार्त्वार्श मृज्य हम। हेहार** छ এই সপ্রমাণ হয় যে, যে সকল লোকের কারণান্তরে শরীর ক্ষীণ इहेश পড़िशाहिन, ভাহাদেরই एम রোমরাজির ধূলি প্রভৃতি অতিরোধে সামর্থা চলিয়া গিয়াছিল, অক্তথা করলার খনি প্রভৃতিতে কার্যাকারী প্রতিব্যক্তিরই ক্ষররোগে মৃত্যু হইত।

dust in our faces—in vain does the air darksmed with coal-dust, impetuously rush up the nostrils: the air is allowed to pass on, but the dust is inexorably driven back. Were it not so, how coal-miners, millers, iron-workers, and all the modern Subal Cains contrive to live in their loaded atmosphere? In a week their lungs would be choked up."—STUDIES IN ANIMAL LIEE, BY G. H. LEWES.—

একটা অবিচালা ঘটনাকে যদি বিংশতিটা ঘটনা ধারা নিরাক্ষত করা বিজ্ঞানসঙ্গত না হয়; অধ্যাত্মদৃষ্টিতে অজ্ঞাত বিষয় জ্ঞানগোচর ছইলেও অবিচালা ঘটনাবোগে প্রমাণিত না হইলে উহা যদি প্রমাণ বলিয়া গৃহীত না হয়, * তাহা হইলে জিজ্ঞাসা উপস্থিত হইতেছে, ধর্মরাজ্ঞা কেশবচন্দ্রের জীবন একটা অবিচালা ঘটনা কি না ? একালে ক্রমবিকাশের (Evolution) মত বিজ্ঞান ও দর্শনে সাদরে গৃহীত হইয়াছে। ইহাকে কেছ অগ্রমাণ বলিয়া উড়াইয়া দিতে পারেন না। ক্রমবিকাশ এখন প্রমাণমধ্যে গণা হইয়া গিয়াছে, কিন্তু এ ক্রমবিকাশ কি ? ইহা প্রাচীন ঐতিহ্য প্রমাণের † বিভ্তানিয়োগ ভিয় আর কিছুই নহে। ঐতিহ্য প্রমাণেক প্রত্যক্ষ ও অহ্নমান-মধ্যে অন্তর্ভুত করিয়া উহার স্বতন্ত্রহ সেকালে অনেকে স্বীকার করেন নাই বটে, কিন্তু প্রাচীন বেদাদি অবলম্বন করিয়া কোন একটি বিষয় স্থাপন করিবার যত্রমধ্যে উহার প্রাথান্থ যে বিলক্ষণ ভিল সহজে ক্রময়ম্ম হয়। ইতিহাসে যে সকল ঘটনা ঘটিগাছে ও খটিতেছে, তাহার একটাকেও আমরা

^{* &}quot;The profoundest minds know best that Nature's ways are not all times their ways, and that the brightest flashes in the world of thought are incomplete until they have been proved to have their counterparts in the world of fact. Thus the vocation of the true experimentalist may be defined as the continued exercise of spiritual insight, and its incessant correction and realisation. His experiments constitute a body, of which his purified intuitions are, as it were, the soul."—Scope AND LIMIT OF SCIENTIFIC MATERIALISM, BY J. TYNDALL

[†] প্রাচীন ঐতিভ্ঞমাণের বে লক্ষণ আছে, নে লক্ষণ ভূল ১ইলেও লক্ষণশোধনে অধিকার আছে জানিয়া আমরঃ উহাঞ্ছলে প্রহণ করিয়াছি।

অগ্রাহ্ত করিতে পারি না। এ ইতিহাস কেবল মানবদীবনের ইতিহাস নহে, দমগ্র পৃথিবী ও তন্মধাস্থ উদ্ভিদ-প্রাণী- প্রভৃতি সক-লেরই ইতিহাস ঐতিহ প্রমাণ বা ক্রমবিকাশের অন্তর্ভ । ধর্ম-জগতের ইতিহাসমধ্যে কেশবচন্দ্রের জীবন যথন একটা বিশেষ ঘটনা, তখন উহা অধ্যয়ন করিতে আমরা বাধ্য, কখন আমরা উহাকে অবহেলা করিতে বা উড়াইয়া দিতে পারি না। কেশক জীবন এখন ইতিহাসের বিষয়। উহা পাঠ করিতে গেলে তাঁহার কথা ও কার্যাগুলি যথায়থ আলোচনা করা প্রয়োজন। কি জানি বা সেগুলির আলোচনার প্রবৃত্ত হইলে এমন কথায় বিশাস করিতে ইয় যাহাতে দশ জনের নিকট নিন্দাভাজন হইতে হয় বা তাঁহাকে নিশাভাজন করা হয়, এ ভয়ে আমরা তাহার আলোচনা হইতে নিবৃত্ত হইতে পারি না। যখন ঘটনা ঘটিয়া গিয়াছে, আর রূপান্তর হইতে পারে না, তখন সভালোকে উহাকে অধায়ন করিতেই হইবে। ইহাতে নিন্দা আত্মক, অযুশ আত্মক, অবুমা ননা আস্কুক, ভাবী বংশীয়গণের নিকটে অপদস্ভ হইতে হউক, ক্ষতি নাই। সত্যই আপনি সকল ক্ষতি পূরণ করিবেন।

কেশবের জীবন অধায়ন করিতে গিয়া তিনি ঘোর অহন্ধারী, এইটিই সর্ব্বপ্রথমে চক্ষে পড়ে। কেশব এক জন বড় লোক। বড় লোকের জীবন যত চরম ভাগে উপস্থিত হয়, ততই জীহার মন্তিক উষ্ণ হইতে থাকে; পরিশেষে উহা উন্মন্তর্গতে প্র্যাবসম্ব হয়। ঈশা এবং অক্সান্ত সকল বড় লোকেরই জীবনের চরমভাগে এই দশা ঘটিয়াছিল। রেনান প্রভৃতি এই মত প্রচার করিয়াছেন, আল প্রান্তর জনেকে এই মতের পক্ষপাতী। প্রভিতবর মোক্ষম্প্ররের নিকটে আমি ঋণী, তাঁহার প্রতি আমি অক্তব্য ইইতে

পারি না, কিছ সভোর অহুরোধে বলিতে হয়, তিনিও এই মতের বাজ্ঞরার পড়িয়া কেশবচন্ত্রকে শেব সময়ে মন্ত্রিকের বিকারগ্রন্থ বলিয়া অবধারণ করিরাছেন *। আদ্ধ যদি তিনি কেশবচল্লের এই কথাগুলি পড়িতেন না জানি তিনি আরও কি
বলিতেন ? "হর্গেতে তুমি এক জন মাহ্রুষ প্রস্তুত্ত করিয়াছিলে সেই
মাহ্রুষ আমি। যখন আমি হইলাম, আমার হস্ত পদ নাসিকা কর্ণ
সমুদার হইল। যখন তুমি পৃথিবীতে আমাকে আনিলে তখন
আমি ছিলাম সদল অখণ্ড। গোড়ার কথা বলিতেছি ভগবান,
নববিধানের প্রথম অক্ষর ওঁকার। ত্যামি বিনয় ও অহন্ধারের
স্কিত বলিতেছি, আমি আসিলাম অক্স লইয়া, আমাকে
ছাড়ুক শুকাইবে। তেই ক্রিয়র, ইহারা আমার যোগেতে
আশ্রিত, এনের বসিবার পাহাড় আমি, যোগ করিবার গহুবর
আমি। দ্যাল হরি, নববিধান একটা। এঁরাও যা আমিও তা,
আমিও যা, এঁরাও তা। আমি আর এঁরা একটা। তেতে আমার

^{* &}quot;The most objectionable doctrine put forward by the liberal reformer of Hinduism was, no doubt, the Adesh, the claim of being directed by an inward voice which admitted no gainsaying..........It is the old story over again. Nothing is so difficult for a reformer, particularly a religious reformer, as not to allow the incense offered by his followers to darken his mental vision and not to mistake the Divine accents of truth for a voice wasted from the clouds. In this respect, no doubt, Keshub Chunder Sen has shared in the weakness of older prophets; but let us not forget that he possesses also a large share of their strength and virtue."

—Correspondence in 'Times' of G. Max Muller.

नतीत विनिधे श्राहित , विनि विश्वास्त यान आमि शहे। अंता এक नतीरतत अप्र । यिनि राशानि योन, यिनि राशानि श्राप्त করেন, সেই এক পুরুষ করেন। এই ঘরে ভূমি দরা করিয়া নববিধানের লক্ষণ বিবৃত কর, আমরা সেইগুলি চরিত্রের সঙ্গে मिनाहेबा नहे।" এই পगान विनाहे जिनि काल इन नाहे, जिनि আরও পাইবাকো বলিয়াছেন: - "এক ঈশ্বর উপরে, এক সন্তান নীচে। 'একমেবাদিতীয়ম' ব্রাক্ষসমাজ বলিরাছিলেন উপরে. 'একমেবাধি তীয়ম' নববিধান বলিতেছেন পৃথিবীতে। সমুদায় মফুবাসমাজ এক। নব জুগার সম্ভান নব মাফুব। শত শত হস্ত, শত শত কৰ্ণ, শত শত নাসিকা, শত শত চক্ষ্ণ, এই প্ৰকাণ্ড নবাক্ততি মাত্রৰ সেই আমি।" (১৯ নবেম্বর, ১৮৮২)। কি খোর অহলারের কথা। আজ উনবিংশ শতান্দীতে এরূপ বলিতে সাহস। একথা ভনিতেও গা কাঁপে। ইনি কি না বলেন আমি স্বৰ্গে অৰ্থ ছিলাম: আমার শত শত বাহ, শত শত কৰ্ণ, শত শত চকু, অপমি নবহুর্গার নব সন্তান। এ যে অখণ্ড বিরাট্পুরুষের বর্ণনা। এতদপেকা আরও সাহসিকতার কথা সকলে ভদুন :---শ্রপ্রাণনাথ, যার কাছে তোমাকে ডাকিতে শি**ধিরাছি**, যার দ্বারা ভোমাকে চিনেছি তাঁকে চিনে রাধুক মন। সে যে এউক না क्त, त्म त्य अमृत शहेराहे, तम त्य त्मानात ताका किर्मिताह. ভাকে চিনিতে পারে যেন ভক্তেরা এই ভিক্ষাট্র বৃদ্ধ ব্যাসে চাই। উপদেষ্টা विनिवास मतकात नाहे, সেবা कविबाद मतकात नाहे. **८करन এ**ई कथाडी रान वसूरमत मरन थारक, अकडी भागन कथा এক জনের কাছে শিপেছি, বাছা মান সম্রম প্রতিষ্ঠা ধর্ম শান্তি मश्मारत मन स्रत्यंत भूरत । तम स्थामारतत श्रियः। এ मकरतत भूरत

এক জনের ইসারা। মার হাসির রহস্ত এক জনের কাছে আগে আমদানি হয়েছিল, এখন সব জারগার আমদানি হয়েছে।" (১৫ মার্চ, ১৮৮০)। এ কি বোরতর গুরুবাদ নহে ? হাঁ গুরুবাদ বটে, কিন্তু এ গুরুবাদ অস্ত প্রকারের। 'এ আগেকার গুরু আচার্য্য নর, এ ভাই বলে পরম্পারকে খুব ভালবাসা দেওয়া, কোলাকুলি করা, বিখাস দেওয়া।' গুরু হলেন ইনি কোন্ ভাবে ? 'এক শরীরের সকলে অল' এই ভাবে। (২০ নবেম্বর, ১৮৮২ক)। ইনি সেই গুরু যিনি বলেন, "আমার কথা কিছু শুনিও না, আমার শিক্ষা মানিও না, যদি না পবিত্র আত্মার সহিত মিলে বুঝিতে পার।" (২১ নবেম্বর, ১৮৮২)

কেশবচন্দ্র অতি নির্ভীক ছিলেন। তিনি যাহা সত্য জানিতেন তাহা বলিতে কোন কালে ভর করিতেন না। তাঁহার মন্তকের কেশ হইতে পাদপর্যন্ত সভোর ভেজে পূর্ণ ছিল। তিনি তাঁহার এই সত্যপরতার বিষর আপনি প্রকাশ্যে বলিতে কুট্টিত হন নাই। তিনি বদি আপনাকে Prophet বলিয়া বিশ্বাস করিতেন, ভাহা হইলে তাহা স্বরংই বলিতেন। তিনি আপনাকে Prophet বলেন নাই, কিন্তু ভাই প্রতাপচন্দ্র তাঁহাকে 'Prophet of harmony' আখ্যার আখ্যাত করিয়াছেন । বেমন Religion of harmony, God of hamony বলা হইয়া থাকে, তেমনি Prophet of harmony বলা কিছু অসক্ষত মনে হর না, তবে

^{* &#}x27;How many of the great, good, wise, holy, I see ! Among them all Keshub, my friend, my guide, my master. Thou prophet of harmony and unity universal, thy glorious countenance draws me as thy own. Oh, forgive all, and accept me! I will daily frequent the courts of heaven."—HEARI-BEATS. P. 82

কেশবচন্দ্র আপনি যথন আপনাকে prophet বলেন নাই জ্ঞাচ বন্ধুগণকে এক শরীরের জন্ধ বলিয়াছেন, তথন তাঁহার আপনাকে prophet না বলার গলীর অর্থ আছে। যিনি prophet তিনি আপনি একা ঈখরের নিকটবর্ত্তী হন, আর সকলের ঈখরের সহিত সাক্ষাৎ কোন সংশ্রব থাকে না, prophet তাঁহাদের নিকট ঈখরের স্থলবর্ত্তী। বন্ধুগণের সহিত কেশব চন্দ্রের এরপ সম্বন্ধ নহে। ইহাদের সহিত তাঁহার অগগুলাব, ইহারা তাঁহার হস্ত পদ, চক্ষু, নাসিকা, কর্ণ, এক আলোকে আলোকিত। যদি ইহারা তাঁহার অঙ্গ হইলেন, এক আলোকে আলোকিত হইলেন, তবে তিনি আপনি কি, ইহাই নিদ্ধারণ করা অদ্যকার বক্তৃতার উদ্দেশ্য।

'কেশবক্ত অগ্রজনা' অদাকার বক্তার বিষয়। 'অগ্রজনা' এ শব্দের অর্থ ব্রহ্মা বা বেদপ্রবক্তা। এই অর্থে আমি 'অগ্রজন্মা' শব্দ বাবহার করিয়াছি। 'অগ্রজন্মা' শব্দ বাহার করিয়াছি। 'অগ্রজন্মা' শব্দ বাহার করিয়াছি। 'অগ্রজন্মা' শব্দ বাহার বেদ প্রকারী বেদ উৎপাদন করেন, এ ভাবে বাহ্মণের বেদপ্রবক্ত দিন্ধ পাইলে তাদৃশ অর্থে এখানে 'অগ্রজন্মা' শব্দ গ্রহণ করিতে আমার কোন আপত্তি নাই। কেশবের বন্ধুগণ যদি তাহার হন্ত, পদ, চক্তু, নাসিকা, কর্ণ হইলেন, তবে তিনি আপনি রস্প্রান্ধ বা মুধ। কেশবচক্রের বেদপ্রবক্ত তাহার বন্ধুগণনিরপেক নহে, এজন্ম ভিনি তাহাদের সহিত আপনাকে এক শনীরের অক্স বলিয়াছেন, এবং আপনাকে কক্ষা করিরা উল্লেখ করিয়াছেন, 'একটি অক্সেয় স্থাননা করিও না কিন্তু সমৃদান্ত দেনের সন্থাননা করে' (Honor not a limb but the whole body.)। বন্ধুগণ সহ ভিনির্ধ

বধন জগবানের নিকটবর্ত্তী হইতেন, তথন তাঁহাতে স্তা অবভর্ত করিউ, এবং দেই সতা যুগপং সকলের ফদরে প্রতিভাত ও গৃহীত হইত। এ দেশের আগমশালে স্তাবিতরণের এইরপ প্রণালীই নিবক আছে। 'আগতঃ শিববক্তেলো গতক গিরিজাননে। মগ্মন্ট হৃদরাস্তোজে তত্মাদাগম উচাতে।" ঈশ্বর হইতে ভক্তে সত্য অবতরণ করিল, সহসাধকগণের হৃদয়ে তাহা মুদ্রিত হইল, ইহাই এ মতে সভাাগমের প্রশালী। 'মগ্রণ্ড হৃদয়াভোজে' 'এছলে অংগমান্তরে 'মতং ত্রীবাস্থানবস্তু' এই পাঠ আছে তাহাতে অপ-: বের হৃদয়স্থ পরমাত্মা বা পবিত্রাত্মা কর্তৃক অবতীর্ণ সত্যের অসু-মোদন ব্কাইতেছে। এ ছই কথাই সতা। যুগপৎ সতা হনরে প্রতিভাত ও গৃহীত হওয়ার অর্থ ইহাই । আমেরা যথন তাঁহার সহিত এক হইবা ঈশবস্থিধানে উপনীত হই, তথন স্তা অবতর্ণ করে, এইটি প্রকাশ করিবার জনা এক্ষমন্দিরে আচার্যোর আসন শুকুরহিয়াছে। যথন সাধু অংঘার নাথ স্বর্গত হন, তথন তাঁহার সহিত আমরা সকলে সর্গগত হইয়াছি, এখানে আর আমরা নাই, কেশবচক্র এই মত প্রচার কবিয়াছিলেন। এ মতের অর্থ---উপাসনা, কাণ্য ও সংপ্রসক্ষময়ে সকলে মিলিয়া ঈশরেতে ন্তিতি। অনেকের ধারণা এই, বেদীসম্পর্কীয় নির্দ্ধারণ স্নামানের মঙলীর উচ্ছেদের মূল। বেদীসম্পকীয় নির্দারণের মূলে কি আছে তংপ্ৰতি যাহাদের দৃষ্টি নাই, তীহাদেরই এইরূপ ধারণা। আজ যদি বেনী সমূলে উৎপাটিত হইয় যায়, তথাপি আমি কুঠিত নই; কেন না আমরা ধখন উপাসনা করি, ভগবানে নিবিষ্ট থাকি, তখন আমরা কেশবের সঙ্গে অভিন হইয়া ভগবানের উপাসনা করি ও তাঁহাতে নিবিষ্ট থাকি। যদি এক্সপে কেশব সহ

ৰোসমুক্ত আ হই,ভাঙা হইলে সঞ্জনীর সহিত বোগ হর না, বিছি नावरकत त इर्थित तारे इर्गीलत सामना स्थीन हरे। छेशानन তির প্রকরের ভিরতা দ্র হর, সভ্যাবভারণার অসমর হয়। नमृद्ध शृक्षिनः सात्र विनृष्ठ, यस नक्षिण शतिकृष्ठ, तृष्कि विषत्राक्ष অনাবিত্র, স্থতরাং সভ্যাবভারণার অবসর উপস্থিত। হুদর নিশ্ব না হইলে সভা অবভরণ করেন না, সভোর আবিদার হয় না এ কথা টিণ্ডাল প্রভৃতি বিজ্ঞানবিদাণও বলেন। পূর্বমতাদি সংস্কার হইতে নিকুক্ত করিয়া মনকে সাদা কাগজের মত করিছে নুতন সভোর খতঃ সমাগম হয়, এ কথা বলিয়া তাঁহারা যোগে অমুকুল কথাই বলিয়াছেন। কেশব আমাদের সঙ্গে যথন উপাসন করিতেন, সংপ্রসঙ্গ করিতেন, তথন সত্য প্রকাশিত হইত, এজয় তিনি একলা এক জন লোককে প্রায় কিছু বলেন নাই, সকলে একত্র হইলে তবে বলিতেন। তিনি টাউনহল প্রভৃতি স্থানে যাহা বলিতেন, সে দকল অগ্রে এই প্রণালীতে তাঁহাতে অবতরণ করিত, বক্তৃতাকালে সেই গুলি বথাষ্থ একত্র সন্নিবিষ্ট হইয়া সমগ্র বংসরের সাধনের ফল প্রদর্শন করিত।

কেশবচন্দ্র আপনাকে কথন একা মনে করিতেন না। একাকী জীবনধারণ করা তাঁহার প্রকৃতিসঙ্গত ছিল না। যদি কেবল তাঁহাকে সন্মান করিয়া তাঁহার বন্ধ্বর্গের সামার এই জনকেও কেই তুদ্ধ করিছেন, তাহা হইলে তিনি মনে করিতেন, তাহাকেই ভূদ্ধ করা হইল, তাঁহাকে গ্রহণ করা ইইল না। তাঁহার এই জাব ছিল বলিরাই তিনি ঈশ্বরকে বলিরাছেন 'যখন তুমি পৃথিবীতে আমাকে আনিলে তখন আমি ছিলাম সদল অথও।' তাঁহার এ ভাব বিজ্ঞান ও দর্শন সম্ভত। একালে বিজ্ঞান

ও দর্শন মানবের এই একছেরই পক্ষপাতী *। বাঁহারা এই বিজ্ঞান ও দর্শন সকত সতাটি ভাল করিরা হলরক্ষম না করিরা কেশবচক্রকে অহঙ্কারী বলিয়া নিন্দা করিবেন, তাঁহারা বিজ্ঞান ও দর্শনে অনভিক্তঃ। বিজ্ঞান ও দর্শন বাহা সত্য বলিয়া নির্দ্ধারণ করে, কেশবচক্রের ভাহা জীবনসিদ্ধব্যাপার ছিল এবং আমারাও ভাহা জীবনে সত্য বলিয়া প্রত্যক্ষ করিয়াছি। আমরা দেখিয়াছি, আমরা বখন বন্ধুগণ সহ মিলিত হইয়া উপাসনা বা প্রস্ক করি, তখন নৃত্ন নৃত্ন সত্য হাদরে প্রকাশ পার, সংশঙ্ক অফ্রকার সহজে ঘুচিয়া যায়। আজ বহু বর্ষ এই ব্যাপার প্রত্যক্ষ করিয়া আমানের যে ধারণা হইয়াছে, তাঁহা আর বিচলিত ইইবার

[&]quot;* Is not the doctrine I and my brother are one, new?"
কেশৰ চন্দ্ৰ একথা বলিয়া ইহাই প্ৰদৰ্শন করিয়াছেন যে, নক্ষ্ম সাধককেই
লাভ্নপদ্ধে আনিও তুমি এক' এইলপ সাধন করিতে হুইব্ আনি
মন্ত্ৰ এইলস্থ বলিয়াছি, যিনি দশজনকে লইয়া উপাননা করিবেন, তিনি
আপনাতে দেই দশজনকে এক করিয়া লাইবেন, দশ জনও ভাহার দাহিত
এক হইয়া যাইবেন।

[&]quot;.....,the forces which are sometimes represented as struggling with each other on the field of man's life, are no longer independent; still less completely separable forces. They are the inner division by which the spirit re-establishes and makes secure its unity; their antagonisms are the breath of life. They form a certain hierarchy of organisation, in which however the higher or more developed does not merely supervene upon the crude, but in a manner supercedes it, and yet contrives to retain its worth and its real truth."—P ROLOGOMENA TO THE STUDY OF HEGEL'S PHILOSOPHY, B Y. W. WALLACE M. A., L. D.

নহে। ঈশা তাঁহার শিষ্যবর্গকে বলিয়াছিলেন, ষ্থন তোম বিচারাসনের নিকট নীত হইবে, তথন সেগানে যাইবার পূর্ব্ধে বিবিবে তাহা ভাবিও না, কেন না কি বলিতে হইবে পবিত্রাই তাহা বলিয়া দিবেন। প্রকাশ্যে কোথাও কিছু বলিতে হইবে আমরা এই নিয়মের অন্থ্যরণ করিয়া থাকি, এবং আজ পর্যা এরূপ নিয়মান্থসরণ করিয়া আমাদিগকে অভাবগ্রস্ত হইতে হ নাই। আরও যদি পঁচিশ বংসর জীবনের কার্য্য চলে তাই হইবে অভাবগ্রস্ত হইতে হইবে, এরূপ কথন আশক্ষা হয় না যথন আমাদিগকে নিতান্ত অজ্ঞান বলিয়া জানি, তথন ঈশ্ব হইতে অন্তরে সত্যের আঁবতরণের কোন বাধা ঘটিবে কেন ? নৃত নৃত্ন স্ত্য, নৃত্ন নৃত্ন কথা অন্তরে অবতরণ করিবেই করিবে।

কেশব যে আগনার সম্বন্ধে বলিলেন 'তাঁহার শত শত হত শত শত পদ, শত শত চকু, শত শত নাসিকা, শত শত কর্ণ এ কথা আমরা সতা বলিয়া কি প্রকারে গ্রহণ করিব ? গ্রহ করিব এই জন্ত যে, 'দিশা তাঁহার ইন্দ্রা, সক্রেটাস তাঁহার মত্তব চৈতন্ত তাঁহার সদর, হিন্দু ধারি তাঁহার আত্মা, জনহিতৈ বা হাওয়া তাঁহার দক্ষিণ হস্ত।' এক ঈশা শত শত ঈশা, এক সক্রেটিস শাঁশত সক্রেটিস, এক চৈতন্ত শত শত চৈতন্ত, এক ঋষি শত শ ধারি, এক হাওয়ার্ড শত শত হাওয়ার্ড হয়া তত্ত্ব শান্ধ নরনারীরে পৃথিবীমধ্যে বিচরণ করিতেছেন, দেই সকলের সক্ষে একাল্লা হইন তিনি 'এক প্রকাণ্ড নবারুতি মান্ধ্য।' তাঁহার বন্ধুগণের মােকেই ঈশার ভাবাপর, কেই সক্রেটিসের ভাবাপর, কেই বিভালে ভাবাপর, কেই বার্গনে, তাঁহার বন্ধুগণে সহাবাপর, কেই খাইলাবাপর, কেই হাওয়ার্ডের ভাবাপর, তাঁহার বন্ধুগণে

বিনি যে ভাবাপন্ন সে ভাবাপন্ন থাকিয়াও অপরাপরের ভাব আত্মস্থ করিয়া নববিধানের লোক হইবেন, এই তাঁহার সমগ্র জীবনের যত্ন ছিল। তাঁহার শেষজীবনের আক্ষেপস্টক প্রার্থনাগুলি তাঁহার এই যত্নের বিফলতা হইতে সমুখিত।

এখন দেখা যাউক, কেশব যে 'এই প্রকাণ্ড নবাক্বতি মাতুষ সেই আমি' বলিয়া অহলার প্রকাশ করিলেন,সে অহলার সভামূলক অথবা অভিমানমূলক। কেশবের বন্ধুগণের জীবন এখন সাধারণের **ठकूत मन्निधान विमामान बरियाटह। देशका मकटनरे विजात** করিয়া দেখিতে *পারেন, কেশব তাঁহাদের অগ্রজন্মা কি না ? প্রথমত: তাঁহার বন্ধুগণ তাঁহাকে আপনার সমান বলিয়া জানি-তেন। তিনি কোন কোন বন্ধুর বাড়ীতে স্বয়ং ঘাইতেন, তাঁহারা কখন শ্যাত্যাগ করিয়া উঠিবেন তজ্জ্ম বাহিরে প্রতীক্ষা করিয়া থাকিতেন, অথবা শ্যাপার্বে গিয়া বসিতেন। এ সময়ে তিনি दि उँ। हार्य नियक्त त्यांक. हेशांका महस्क क्रमंब्रक हेरेदा। দেখিতে দেখিতে তিনি এমন উচ্চ ভূমিতে আরোহণ করিলেন যে, আর তাঁছাকে লাগাইল পাওয়া তাঁহাদের পক্ষে কঠিন হইয়া উঠিল। পার্শ্বস্থ এই তাঁহার বন্ধু (ভাই অমৃতলাল বস্থু) একথার আপনি প্রমাণ বিবেন। তিনি অতাল্প দিন মধ্যে এরপ উচ্চ হইলেন কেন ? বিবেক, বৈরাগ্য ও বিশ্বাস, এ তিন তাঁহাকে শীঘ্র শীঘ উচ্চ হইতে উচ্চ ভূমিতে তুলিয়াছিল। সকল বন্ধু হইতে উচ্চ ভূমিতে আরোহণই তাঁহার অগ্রজন্ম হইবার হেতু। তিনি যখন প্রবক্তা হইলেন, আর তাঁহার বনুসকল একই শরীরের অঙ্গপ্রতাঙ্গ रहेरनम, उथन जिनि रहेरलम मूत्र चात छाराता हहेरलम हछ, शब, ठक्क, नामा, कर्व। छिनि अवका, এই कन्न आमारमंत्र मर्था छाँदात्र

আসন শৃত রহিয়াছে। বাহিরের শৃত আসন নিদর্শনমাত্র, কি বাস্তবিক তাঁহার আসন কোথার ? পূর্বেই বলিয়াছি, সাধু অঘোর নাথের স্বর্গারোহণের সময় কেশব বলিয়াছিলেন, তাঁহার সংজ্ঞামরা সকলেই পরলোকবাসী হইয়াছি। বস্ততঃ আমাদের বিদ বার স্থান এখন পরলোক। পরলোক চিদাকাশ। চিদাকাশে আরোহণ ভিরু যোগ হয় না। যে ব্যক্তি পৃথিবীর ভূমি প্রশক্রিয়া থাকে তাহার পক্ষে যোগ অসন্তব। * যোগী কেশবেঃ

"Whatever may be the charm of emotion, I do not know whether it equals the sweetness of those hours of silent meditation in which we have a glimpse and foretastic of the contemplative joys of Paradise. Desire and fear sadness and care are done away. Existence is reduced to the simplest form, the most ethereal mode of being that is to pure self-consciousness. It is a state of harmony, without tension and without disturbance, the dominical state of the soul, perhaps the state which awaits it beyond the grave."—AMIEL.

[&]quot;Gradually it (the soul) attains to the rank of a consciousness before which is unrolled the spectacle of a world of objects set over against it, and even of a world within it, itself as the object deposed to the rank of something to be surveyed. As such it seems to have left all immersion in corporiety completely behind, and to have completely divested itself of any limitation. It floats freely above the real psychical life out of which it emerged—a detached but somewhat shadowy self, not burdened by any restrictions of nature or circumstance."
—Prologomena to the Study of Hegel's Philosophy by W. Wallace M. A., L. L. D.

আসন পৃথিবীতে নহে চিদাকাশে। তাঁহার সহিত এক হইতে গেলে এখন চিদাকাশে আসন পাতিতে হইবে। চিদাকাশে বিনি যোগের আসন স্থাপন করিবেন না, তাঁহার কেশবের সহিত এক হইবার সন্তাবনা নাই। মন চিদাকাশে স্থিতি করিবে, হস্ত পদাদি ইন্দ্রিগণ বাহিরের কাজ করিবে। মুখ বক্তৃতা করিতেছে, কিন্তু যোগী আত্মা সেই আকাশে অবস্থিত। যে বাজির চিন্তা ভাবনা পৃথিবীর বিষয়ে আবদ্ধ, সে কর্পন যোগী হইতে পারে না। আমরা কে কত দূর এ যোগে সিদ্ধ হইরাছি তাহা বিশ্বার বিষয় নহে, কিন্তু একথা বলিতে কুন্তিত হইবার কোন কারণ নাই যে, কেশব-চন্দ্র এই যোগে সিদ্ধ হইরাছিলেন। কেশব চিদাকাশে অর্থাৎ ঈশ্বরে স্থিতি করিতেন, তাই তিনি ঈশ্বর হইতে কেবল নব নব স্থা, নব নব ভাব, নব নব আলোক পাইতেন ভাহা নহে, তিনি সকল বন্ধ সকল নরনারী সহ ঈশ্বরেতে এক হইরা একাত্মতার ধর্মা ঘোষণা করিতে সমর্থ হইরাছিলেন। তিনি যে ঈশা মুখা প্রভৃতি সহ এক হইরাছিলেন, তাহারও মূল এই যোগ।

কেশব বলিয়াছেন, বিধানের সকল জিনিষের আমদানি আগে উহার নিকটে হইরাছে,তাহার পর আর সকলে উহা পাইরাছেন। এ কথা বলা কত দূর সতা, এখন তাহাই দেখা কর্ত্তর। সঙ্গতের নীতি, মুক্লেরের ভক্তি, নববিধানের ধর্ম, এই তিনটি তাঁহার বন্ধু-গণের জীবনে মিলিক হয়, সর্বাদা তিনি এই আকাক্ষা প্রকাশ করিয়াছেন। কেশবের প্রথম জীবন নীতিপ্রধান; স্কৃতরাং সক্ষত্তর নীতিপ্রধান হইল। কঠোর নীতিতে আরুই হইয়া যুবকগণ কি প্রকারে একত মিলিত হইলেন, ইহা অতি আক্ষা । আমরা দেখিনাছি সঙ্গতের সময়ে পরস্পারের প্রতি এমনই একটি আকর্ষণ ছিল

বেঁ, বাত্তি কুপ্ৰহর হইড, অথচ কেহ সভা ভালিয়া উঠিতে চাহি **না। সভাভৱের পর পথে বাহির হইয়াও** এক এক স্থলে তিন চ জন বন্ধ মিলিভ হইয়া কথা বলিতে বলিতে রাত্রি প্রভাত হ বাইত। এরূপ মধুর আকর্ষণ কোথা হইতে উপস্থিত হইল १। কেশবচন্দ্রের আকর্ষণে সকলে আরুষ্ট ছিলেন; তাই প্রস্পুর স্পারের প্রতি আরুষ্ট হইতেন। কেশবচন্দ্রের এই আকর্ষক গুণ ভ বালা কাল হইতে তাঁহাতে ছিল। বালাস্থ্যিণ তংগ্ৰতি আ **হইয়া তাঁহাকে নেতৃত্বপদে বরণ করিয়া চলিত।** তাঁহার বাল্য ভাই প্রতাপচন্দ্র স্বয়ং ইহার সাক্ষ্য দিয়াছেন। আকর্ষণশক্তিতে যেমন বন্ধুগণ তাঁহার সহিত মিলিত না হ থাকিতে পারিতেন না, তেমনি তাঁহার ভাবে তাঁহারা পরিচারি **২ইতেন। কেশবের বিবেকপ্রধান জীবন হইতে সঙ্গ**তের স্থ এ সময়ে ব্রাহ্মসমাজে বিবেকের সাম্রাজ্য। ব্রাহ্মগণের সতাবাদির চরিত্রগুদ্ধি দে সময়ে সাধারণ লোকের মধ্যে প্রসিদ্ধ হইরা পড়ি ছিল। 'বোধ হয়' 'হইতে পারে' ইত্যাদি কথা ব্রাহ্মগণের স তথন স্কানা শুনা যাইত। বিষয় কর্মের স্থলেও—যেখা निक्षाश्चक कथा ना विलाल कांक हाल ना त्रथारन उ - छारा এই সকল কথা ব্যবহার করিয়া সকলকে বিশ্বিত করিতে? তাঁহাদের চরিত্রের উপরে এত দুর লোকের বিং প্রান্তিগ । ব্রাহ্মগণকে আফিদের কার্যো গ্রহণ করিবার জক্ত আফিসরং নিরতিশয় বাগ্র ছিলেন।

বিবেকের প্রাধাত যত বাড়িতে লাগিল, ততই সকলের আত্মা অবস্থার উপরে দৃষ্টি পড়িল। কেশবচক্রের পাপবোধ কি প্রক। তীক্ষ তাঁহার 'জীবনবেদ' াধনি পড়িগাছেন তিনিই তাহা অবগ মাছেন। তাঁহার পাণবোধের তীক্ষতার নকে সংক ভাঁহাছ রমুবর্গের মধ্যে পাপবোধ প্রবল হইরা উঠিল। অনুতাপ ভ কেন্দ্র-নেব রোলে ব্রাহ্মসমাজ পুর্ণ হইল। কলিকাভার বে ভাব প্রবৃদ হইয়া উঠিত, মফ:সলে সর্মাত্র ভাহাই ছড়াইয়া পড়িত। ঢাকা প্রভৃতি স্থল ব্রাহ্মণণ উপাসনা বা প্রার্থনা করিতে করিতে এমনই আর্থ্র-নাদ করিয়া ক্রন্সন করিতেন ও চিৎকার করিতেন যে, পার্শ্ববর্তী লোকসকল মদাপান করিয়া তাঁহারা এরূপ চিৎকার করিতেছেন, এরপ মনে করিত। এই অনুতাপ ও ক্রন্সনের সময়ে কাহারও কাহারও মনে নিরাশা আসিয়া উপস্থিত হইয়াছিল। অনুভাপ দারা যখন ব্রাহ্মগণের হাদয় শোধিত হইল, তথন ভক্তি আসিলেন। নীতি ও বিবেকের সান্রাজ্যসনয়ে যেমন অগ্রে কেশবচল্লে তৎপরে তাঁহা হইতে যুবকগণের মধ্যে নীতি ও বিবেক বিস্তৃত হইরাছিল, ভক্তিও তেমনি প্রথমতঃ তাঁহাতে প্রকাশ পাইয়া পরে ভাহা তাঁহার বন্ধুবর্গে প্রকাশ পাইল। গোসামিকুশজাত বিজয়ক্ষ তখন ছিলেন। আশ্চর্যা এই যে, ভক্তির প্রবর্ত্তন তাঁহা হইতে হয় নাই। যথন কেশবচন্দ্রে ভক্তি প্রকাশ পাইল, তথন তিনি খোল ·কিনিরা আনিলেন, লুকায়িতভাবে এক জন কীর্ত্তনীয়া **বৈষ্ণবক্তে** আনিয়া তাহার মুথে হুএকটি কীর্ত্তন শুনিলেন। কলুটোলার ত্রিতলগৃহে উপাদনার সময়ে থোল বাবহারের ধ্থন প্রস্তাব হইল, ত্থন অধিকাংশ উপাসক তাহার প্রতিবাদ করিলেন । উপাসনা শেষ হইরা গেলে বাঁহারা চলিয়া ঘাইবার চলিয়া গেলে তবে খোল বাজাইয়া ছএকটি কীর্ত্তন হইত। খোলের বাজনা কর্ণে প্রবেশ না করে এ জন্ম অনেক গণামান্ত বাক্তিও অপ্রে চলিয়া বাইতেন। অমদিন মধ্যে বাহারা থোলের বিরোধী ছিলেন, তাঁহারা উহার

পক্ষপাতী হইলেন, এমন কি খ্রীষ্টানসমাজে পর্যন্ত উহা প্রবেশ করিল। দিন দিন ব্রাক্ষসমাজে ভক্তি এমনই বাড়িরা উঠিল ধ্য, অতাধিক ভক্তির উচ্ছ াসে শেষে উন্নততা উপস্থিত হইল। মুক্তের এই বিষয়ে সর্ক্রপ্রধান হইলেন। কেশবের পদধারণ করিয়া ক্রন্দন ইত্যাদি দেখিয়া কেশবের হইটি বন্ধ নরপূজার আন্দোলন উপস্থিত করিলেন, কিন্তু তাঁহারা জানিতেন না যে, ক্রিবল কেশবচন্দ্রসম্বন্ধে নহে, তাঁহার অহান্ত বন্ধুগণসম্বন্ধেও কোন কোন ব্যক্তি এত দূর ভক্তির আতিশ্যা দেখাইয়াছিলেন যে, তাঁহাদিগের পদধ্যেত করিয়া দিয়া পদ্মীর কেশে তাহা পুঁছাইয়া দিতেন। যথন ভক্তির আতিশ্যো এই সকল ব্যাপার উপস্থিত, তথন আমি কেশবচন্দ্রকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলাম, এ কিন্ধুপ হইতেছে, তাহাতে তিনি বলিয়াছিলেন, যেরূপ ভাব উপস্থিত, ইহাতে শীঘ্র একটি সম্প্রদায় হইতে পারে।

আধাত্মিকতার আধিকোর সঙ্গে সঙ্গে বন্ধুগণের মধাে নীতির প্রেতি দৃষ্টি যে প্রকার হ্রাস পাইল, প্রতিবাদের আঘাতে তেমনি তাঁহাদিগের মধাে ভক্তিও সঙ্গুচিত হইল। বন্ধুগণের এই প্রকার পশ্চাদগমনের ফল এই হইল যে, কেশবচন্দ্রে ভক্তির পর যথন যােগ উপস্থিত হইল, তথন সে যােগ তাঁহাদিগের মধাে প্রবিষ্ট হইল না। যােগের ভূমিতে বন্ধুগণ তাহার সহিত মিলিত হইতে পারিলেন না, স্কতরাং তাঁহার সঙ্গে তাঁহারে বিজ্ঞেদ ঘটিল। প্রাক্রের সময়ের বন্ধুগণ তাহার সঙ্গা হইলেন না, ইহা বলিয়া তিনি আক্রেপ প্রকাশ করিয়াছেন। যােগে কেশবে সংযােগ উপস্থিত। কেশবের জীবনে প্রথমতঃ বিয়াগের প্রাধান্ত ছিল, প্রত্যেক বিষয় স্করণে বিজ্ঞির ভাবে বৃষ্ণিবারই চেষ্টা ছিল।' সাধনসম্বন্ধেও ভির ভির সময়ে তিনি ভিন্ন বিষয়ের সাধন করিতেন। ভক্তি ও যােগ যথন

তাঁহার জীবনে মিশিয়া একাকার ধারণ করিল, তথন পূর্বে যাহা থও থও ছিল তাহার সেই থওওলি একটির পর একটি আসিয়া 'নিষ্ণারিত নির্মাত্সারে' সংযুক্ত হইল। এই সংযোগের সময়ে নববিধান আসিলেন। এক জন এক জন করিয়া সকল মহাজন আসিয়া তাঁহার হলয়কে অধিকার করিলেন। এরূপে তাঁহাতে मः यात्र इहेन दकन १ এই জন্ম इहेन द्य, 'सर्त जिनि मनतन ছिলেন'। सर्त मनंता ছिलान देशात अर्थ कि १ अर्थ এই যে, তौरात প্রকৃতির মধ্যে সংযোগস্পুহা ছিল। এজগুই তিনি বলিয়াছেন 'প্রথমে ইচ্ছা জন্মে নাই নববিধানে সমস্ত একতা গাঁথিব, পরে দেখি প্রকৃতির মধ্যে কে তাহাই করিতেছেন।' যোগভূমিতে वक्रांग मन्नी बहेरलन ना वर्षे, किन्छ स्मर्थास्न चर्धात महाजनगरगत সঙ্গ তিনি পাইলেন। এক দিকের বিক্ষেদের ক্ষতি আর এক দিকের মিলনে পূরণ হইল। তিনি বাহিরের গ্রন্থ প্রায় পড়িতেন না, পড়িতেন মানব প্রকৃতি। তাঁহার বন্ধুগণের প্রকৃতি এইকপে তাঁহার করতলম্ভ ছিল। তিনি তাঁহাবের এক এক জনের প্রক্র-তির কত ভিরতা তাহা বিলক্ষণ জানিতেন। তাই এত বিভিন্ন প্রক্রতির লোক এক হইলে লোকে একান্মতার মর্ম বুরিবে, তিনি আশা ও বিধান করিতেন। যোগ ও স যোগের সময়ে যদিও তাঁহার বন্ধুগণ পশ্চাৎপদ হইলেন দেখিয়া তিনি একান্ত বাথিত क्ट्रेलन, ज्थां पि जिन क्लां पि निवान इन नाहै। वस्तुगरनत महिज তাঁহার আন্তরিক বিচ্ছেদ দর্শন করিয়া আমি তাঁহাকে জিজাসা করিয়াছিলাৰ, 'অন্তরে পার্থকা উপস্থিত হওয়াতে আপনি আদি শ্মাজের সহিত যোগ বিচ্ছিন করিলেন, আমাদের সহিত আপনার বে আন্তরিক পার্থকা উপস্থিত হইয়াছে, ইহাতে আগনি আমাদের

কাঁহাকেও পরিত্যাগ করিতে পারেন কি না ?' এ কথার উত্তরে िंति विश्रालन, 'I cannot afford to lose any one of you', আমি তোমাদের মধ্যে এক জনকেও হারাইতে পারি না। তাঁহার বন্ধগণের সঙ্গে তিনি যে নিতাযোগে যুক্ত তৎসম্বন্ধে আর একটা কথা বলিতেছি। তিনি যথন ইংলত্তে সর্বজনকর্ত্রক, এমন কি স্বয়ং মহারাজ্ঞী কর্ত্তক সন্মানিত হইলেন, তথন এক জন বন্ধু এক मिन आगात्र विलालन, 'जिनि कि आत এथन এই हाँ जातनजात লোকদিগকে আদর করিবেন ?' আমি ইহার উত্তরে বলিয়াছিলাম. 'যদি ইহাদিগকে আদর করিতে না পারেন তিনি সে কেশবচন্দ্রই थाकिरवन ना।' ফলত: वसूर्गण मरक आधाश्चिक विष्ठ्रममस्ब তিনি কোন দিন ভাঁহাদিগের এক জনকেও ত্যাগ করিতে পারেন নাই। কাহাকেও ভাগেকরাকে তিনি হত্যাকরা মনে করিতেন। ন্বসংহিতান্তে স্বামী ও পত্নী কেছ কাছাকেও পরিব্যাগ করিতে পারেন না, কেশবচন্দ্রের বন্ধুগণের পরম্পরসম্বন্ধে সেই ব্যবস্থা। ত্যাগ ও হত্যা যথন নবধর্মে এক, তথন কে কাহাকে পরিত্যাগ করিয়া হত্যাপরাধে অপরাধী হইবে ? অপরকে হত্যা করা আত্ম-হত্যা, হেগেলের এ মত অতি সত্য; কেন না অপরকে হনন করিতে গিয়া আপনাকেই হনন করা হয়; আপনি আপুনার বিনাশের কারণ হইতে হয়।

কেশবচন্দ্রে যে সংযোগের ন্যাপার উপস্থিত তাহার মূলে তাঁহার শিবাপ্রকৃতি রহিরাছে। তিনি এই শিষাপ্রকৃতির বলে কেবল ঈশা চৈতক্ত প্রভৃতিকে আত্মন্থ করিরাছিলেন তাহা নহে, পথের এক জন ছিল্লকন্থাপরিধারী সভাজনবিদ্বিত ভিধারী তাঁহার নিকটে আসিলেও তিনি তাহার দেবাংশ আত্মন্থ করিরা তাহাকে যাইতে দিতেন না। এই শিষাপ্রকৃতি তাঁহাতে না থাকিলে ভিনি জানী মূর্থ, ধনী নির্দ্ধন, ধার্ম্মিক অধার্ম্মিক, সকল লোকের সঙ্গে একাত্মা হইয়া বিস্তৃত মানবমগুলীকে আত্মস্থ করিতে পারিতেন না। এই শিষ্যপ্রকৃতির বিকাশ মিলিত উপাসনা ভিন্ন কথন হুইতে পারে না। মিলিত উপাসনায় যেমন ঈশবের সহিত যোগ হয়, তেমনি তাঁহার সন্তানগণের সঙ্গেও যোগ হইয়া থাকে। ঈশ্র ও তাঁহার সন্থান, এ উভয়ের সঙ্গে যোগ যত গাঢ় হইতে থাকে, তত ঈশ্বর ও তাঁহার সম্ভানগণের জ্ঞানপ্রেমাদি আত্মন্থ করিবার সামর্থ্য বাডিতে থাকে। অগ্নি না থাকিলে যেমন পরি-পাক হয় না.তেমনি পবিত্রাত্মার প্রভাব বিনা জ্ঞানপ্রেমানি আত্মন্ত হয় না, এমন কি সে দকল প্রতাক্ষ করিবারও সামর্থা জন্মায় না। নে কথা যাউক, কেশবচন্দ্রে যোগবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে যে সংযোগ উপস্থিত হইল, সে সংযোগ শিষাপ্রকৃতির সহায়তায় নিষ্পন্ন হইয়া-ছিল। শিষা প্রকৃতিবশতঃ তিনি ঈশা চৈত্র প্রভৃতিকে চিনিলেন, চিনিয়া তাঁহাদিগকে একত সংযক্ত করিলেন। এই সংযোগে ধর্মসমন্ব্রের ব্যাপার উপস্থিত হইল। তাঁহাতে কিরুপে সমুদার বৰ্ম এক হইল তৎসন্বন্ধে আমি যাহা জানি তাহা বলিতেছি।

কেশবচন্দ্রের নিজের কথাদ্ব আমি এই জানিয়াছি যে, হিন্দু ও এটি এই তুই ধর্ম হইতে সম্লায় ধর্ম তাঁহাতে এক হইরাছে। হিন্দু ধর্মের মধ্যে বৌদ্ধ ধর্ম এবং এটিধর্মমধ্যে ফিল্লী ও মুসলমান ধর্ম অন্প্রপ্রতি হইরা থাকা সহজ। হিন্দু ও এটি এ তুই ধর্ম এক হইবার পক্ষে কোন বাধা নাই, কেন না হিন্দুধর্মের এক, পরমান্ধা ও ভগবান, এবং এটি ধর্মের পিতা, পুল্র ও পবিরাম্বা এ ছইরের এ কিকা আছে। শহরাচার্যা হিন্দুধর্মের সংস্কারক; ভাঁহাকে গ্রহণ

कत्रित्न द्वीक्रभूषं ३ शहर कर्ता इत्र । भक्तावारी द्वीक्रभूत्क व দেশ হইতে অন্তরিত করিতে গিয়া বৌদ্ধর্মের সার আত্মন্ত করিলেন। 'মায়াবাদমসভাস্ত্র: প্রভারবৌদ্ধেবচ।' একথা হলিয়া देवस्ववर्गन महत्रदक श्राष्ट्र बरतोक्ष विनया निन्मा कतिरानन, किन्न हेरा তাঁহার পক্ষে নিন্দা নহে। তিনি অত বড় ধর্মকে হিন্দুপর্মে অন্তভুতি করিয়া লইলেন, ইহাতে তাঁহার মহত্তই প্রকাশ পাইন। তিনি বৌদ্ধর্মকে কি প্রকারে হিন্দুধর্মের অস্তর্ভূত করিলেন দেখা शांकिक। तोक्रथमां क्रेश्वत भारतन ना, भक्षत क्रेश्वत भानित्वन वर्डे, किन माग्निक विमान छै। होटक अन्न इहेटल अन्न करितन, মায়ার তিরোধানের সঙ্গে সঙ্গে তাঁহার তিরোধানও নির্দ্ধারণ कतित्वन । वृक्ष जीवत्क अधीकात कतित्वन, मकत्र भाषा उँभाधि চলিয়া গেলে জীব আর থাকে না, কেবল ব্রহ্মই থাকেন, এ কথা বলিয়া বন্ধের সহিত এক হইলেন। শহরের ব্রহ্ম অনস্ত জ্ঞান, ইনিই নিতা সতা। বৌধগণও অনম্ভ জ্ঞানকেই নিতা বশিগা মানেন। শহর এ দেশের সকল সম্প্রদায়কে এক করিতে যত্ন করিয়া তাহাতে কৃতকাধ্য হইলেন না, কিন্তু তিনি এক অদ্বিতীয় ব্রন্ধের অধিতীয়ত্বে সমূদায়কে এক করিয়া সকল সম্প্রদায়ের মধ্যে সেই ভাব প্রবিষ্ঠ করিয়া দিলেন। কেশবচন্দ্র শক্ষরের এই সম-ম্ব্রের ভাবের প্রতি বড়ই আদর প্রকাশ করিয়াছেল : শ্বরের মধ্য দিয়া হিন্দু ও বৌদ্ধ ধর্মের যে একতা উপস্থিত হইয়াছিল তংপ্রতি দৃষ্টিপার্ত না কবিয়া প্রাক্ষদমাক প্রথমে শঙ্করের নিকট হইতে ব্রক্ষজান-भाज गरेए शिया अकाउमारत दिन् अ त्योक धर्मातक अभिन्न जारन शहन कतिबाहित्यन। दक्यतिहत्त रथन निवृतिदरात्वव छेशानम निर्मिन, उथन डीहाट तोक्षमण अतिक है। कात धारण कतिशाहि।

নিস্তিযোগ হইতে প্রার্তিবোপে প্রবেশ যথন তিনি শিকা দিলেন, তথন হিন্দুধর্মের ব্রন্ধের সহিত প্রভিন্তা এবং আই-ধর্মের একতা সবে ভিন্নতা তাঁহাতে সিদ্ধ হইরাছে। হিন্দু ও প্রীষ্টধর্মের মিলনে ফিছনী ও মুসলমানধর্মেরও যে মিলন হইল, ইহা আর বলিবার অপেকা রাথে না; কেন না বিছনীধর্মের উন্তাবহাতে প্রীষ্টধর্মের উদর, মুসলমানধর্ম এরাহিমের ধর্মের নবীন সংস্করণ।

শকরাচার্যা যে ব্রহ্মজ্ঞান ও অভিন্নভাব প্রচার করিয়াছেন. বৌদ্ধার্মের সহিত তাহার একতাদর্শন সহজ। খ্রীষ্টধর্মের সহিত হিন্ধর্মের একতা, ব্রহ্ম, প্রমান্ত্রা ও ভগবান এই ত্রিছের উপরে নির্ভর করে। ব্রহ্ম ও পর্মাত্মা এ চুই সম্বন্ধে শঙ্করের স্থিত পৌরাণিক ভক্তগণের বিরোধ নাই বলিলে হয়, কিন্ত ভগবানের সম্বন্ধে তাঁহার সহিত তাঁহাদিগের বিরোধ সামাল নহে। প্রাচীন ভক্তগণ জীবকে ভগবানের দাস বলিয়া গ্রহণ করিয়াছেন, এ नामভाব भक्षत अश्वीकात कतिग्राह्म हेश वना याहेटल भारत मा. কিন্তু ভগবানের ঐথব্য মারিক, মায়া চলিয়া গেলে ভগবানের ভগবত্ত থাকে না. এ কথা কহিয়া শঙ্কর ভক্তগণের কঠোর আক্রমণের পাত্র হইয়াছেন। প্রাচীন ভক্তরণ জীবকে ভগবানের দাস বলিয়া নির্দ্ধারণ করিলেও পরবর্ত্তী ভক্তগণ তৎসহ বিবিধ সম্বন্ধ প্রদর্শন করিয়াছেন। খ্রীষ্টের পুত্রম্ব বেমন স্কুম্পষ্ট, আধুনিক ভক্তগণের পুত্রন্থম্ম তেমন সম্পন্ত নহে, তথাপি ভক্তগণের ভাবের দহিত গ্রীষ্টের পুত্রভাবকে মিলিত করিয়া লওয়া কঠিন নহে। এ অংশে বৈক্ষবধর্ম যে বিশেষ সহায়তা করিয়াছে ভাহাতে আর गत्सह नाहे। त्वरमत अस, त्वमारखत भत्रमाचा ও প्रताद्वत

ভগবান, এ তিনের বথাবথ সমাবেশে হিন্দু ও প্রীপ্রধর্মের সন্মিলন এবং এ ছইরের সন্মিলনে নিত্ততি ও প্রবৃত্তি বোগের অভাগরে হিন্দু ও প্রীপ্রধর্মে বৌদ্ধ বিহনী ও মুসলমানধর্মের অভ্পবেশ, এইটি ভাল করিরা হনরকম করিলে কেশবচক্র সমন্বরের ব্যাপার বে কি সহজভাবে নিশার করিরাহেন, তাহা হুদরকম হয় *।

সমুদার প্রবৃত্তি ও বাসনার নির্ত্তি না হইলে হিন্দু ঋষি
পরমাত্মার সহিত আপনার অভিন্নতা কি প্রকারে উপলব্ধ করিবেন ?
যে সকল বিষয় লইয়া প্রবৃত্তি ও বাসনার উদর হয়, সেই সকল
বিষয় হইতে নির্ত্ত হইবার জন্ত শক্ষর যে উপায় অবলম্বন
করিয়াছেন, তাহা বৌদ্ধর্মের উপায়। বিষয় সকল কিছুই নয়
মারিক ও মিথাা, এই জ্ঞানে মিথাার সহিত সকল সম্ভ্রম উদ্ভেদ
করিয়া দেওয়া বুদ্ধামুগানী শক্ষরের পথ। বিষয় সহ সম্ভ্রমণতঃ

^{*} In as much as Christ is incorporated with our creed, we find in it such elements of religion as faith, repentance, moral discipline, stern justice and truthfulness, prayer and craving for universal redemption. And because our natural Hindu traditions, teachings and examples have largely entered into the composition of our religious life, we are able to recognise among our spiritual possessions such treasures as ascerasim, meditation, meekuess, forgiveness, and communion. The former group of virtues we have borrowed, the latter we have inherited. The union of these two is the historical Brahmoism of to-day. The future of our church we see in a full and harmonious development of these united elements in life and character.—The Hindu side of our faith.—'Indian Mirror' Sept. 26, 1875.

চৰুৱাদির যে ক্রিয়া উপস্থিত হয়, সে সকল প্রাক্ষতিক, উহার স্তিত আত্মার কোন সমন্ধ নাই, এই জ্ঞানে ইন্দ্রিয়াদির জিয়া হইতে সাধকের নির্ণিপ্ত ভাবে স্থিতি প্রাচীন পথ। এ উভর পথের যে কোনটি অবলম্বন করিয়া সম্বন্ধজনিত প্রবৃত্তিবাসনার নিবৃত্তিপূর্বক প্রবৃত্তিযোগে প্রবেশ হইয়া থাকে। বিষয়বাসনা निवल ना श्रेटल क्रेचरत्र दश्रतनासूत्रत्न मछवलत् नरह। क्रेचरत्र প্রেরণামুসরণ প্রবৃতিযোগ। এই প্রবৃতিযোগে হিন্দু ও গ্রীষ্টধন্মের যে একত্ব হয়, ইহা বুঝা আর কিছু কঠিন নহে। ঈশ্বরের প্রেরণামুদরণ ও ইচ্ছামুবর্তন, এ চুইয়ের মধ্যে পার্থকা নাই বলিতে পারা যায়। মুষার ধর্মে বিবেকের প্রাধান্ত। বিবেক যে ঈশ্বরের প্রেরণা ও ইচ্ছার সহিত এক, ইহা আর কে না জানেন ? একমাত্র অভিতীয় পরমেশ্বরের নিদেশপালনে অদ্যা উৎসাহ মুসলমান ধশ্বের প্রাণ। ঈশ্বরের প্রেরণা ও ইচ্ছাত্বর্তনে তাদুশ উৎসাহ হিন্দু ও গ্রীষ্টধর্মের সহিত মুসলমানধর্মকে এক করিতেছে। মুধার সময়ে ভরের প্রাধান্ত ছিল, গ্রীষ্টের সময়ে প্রেমের প্রাধান্ত হইয়াছে। ধর্মাভর পরিশেষে ঈশ্বরের প্রতি প্রেমে পর্যাবসর হইয়া থাকে। গ্রীষ্টধর্মে যেমন এই প্রেমের প্রাধান্ত, হিন্দুগণের ভক্তিপথে সেইরূপ এই প্রেমেরই আধিকা, ফুতরাং এতি ও হিন্দুধর্ম এখানেও এক হইতেছে। এইরপে আমরা দেখিতে পাইতেছি, হিন্দু ও এীষ্ট্রধর্ম এক হটরা কেমন বৌদ্ধ, বিহুদী ও মুসলমান ধর্মকে অন্তর্ভু ত কবিয়া লইতেছে।

হিন্দু ও গ্রীষ্টধর্মের একটি বিষয়ে বে পার্থকা আছে, ভারা কি প্রকারে এক হইল, ইহা জানিবার বিষয়। হিন্দুগণের অধৈত ও শিক্ষদিশনের হৈও ভাব, এ হুই পরস্পার বিরোধী। মনে হয় এ

ছ্ইয়ের বিরোধ গ্রীষ্টধর্মে অস্বর্হিত হইরাছে। ঈশা যথন বলিলেন 'আমি এবং আমার পিতা এক' তখন কি আর যিত্দিগণের দৈত ভাব হিন্দুগণের অবৈত ভাবে পরিণত হয় নাই ? না হয় নাই। ক্লশা ক্লশ্রের সহিত একত্ব অনুভব করিয়াও দৈতভাববিলোপ করেন নাই। তিনি ঈশ্বকে যাহা করিতে দেখিতেন তাহাই করিতেন, ঈশ্বর তাঁহাকে যাহা শিগাইতেন, তিনি তাহাই অপরকে শিক্ষা দিতেন, তিনি ঈশবের নিকটে যাহা শুনিতেন তাহাই বলিতেন, ঈশ্বর তাঁহাকে যাহা করিতে বলিতেন, তিনি তাহাই করিতেন। এখানে একত্বতত্ত্ব হৈতভাব কেমন স্বস্পষ্ট। এই হৈতভাব স্পষ্ট আছে বলিয়াই তিনি বলিয়াছেন 'আমি পিতাতে, পিতা আমাতে।' হিন্দুগণের অবৈত এবং এটা হুবর্টিগণের ধৈতভাব কেশবচক্তে কিরুপে এক হইল ইহা দেখা প্রয়োজন। ঈশ্বকে পিতা বলিয়া পার্থকা ঘটিল না, পিতা চিরদিন পুত্র হইতে কিঞ্চিৎ শ্বতম্ব থাকেনই। কেশবচন্দ্র যে দিন হুইতে ঈশবকে মা বলিয়া প্রত্যক্ষ করিলেন, সেই দিন হইতে ধৈত ও অবৈত ভাবের বিরোধ ঘটিয়া গেল। কেশব**চন্দ্রের পূর্ব্বে কি আর কে**হ 'ঈশবকে মাবলিয়া ডাকেন নাই ? মাবলিয়া ডাকিলেই কি আর বৈতভাব বিলুপ্ত হয় ? মা স্বতন্ত্র, সন্তান স্বতন্ত্র, একো নিতা প্রাত্তক। এরপ স্থলে মাতে বৈতভাবের বিলোপ कি প্রাকারে সিদ্ধ হয় ৭ অবৈত বা বৈত এ গুইয়ের অতীত + মাতৃসমৃদ্ধ।

মাতার জরায়ুশ্যাার অজাত শিশু যেমন তাঁহার সহিত অভিন্ন ও এक श्हेबा थात्क, माठांत्र कीतान तम त्यमन कीतनपुक, कीतनधातान বেমন তাহার কোন স্বাতন্ত্রা নাই, দেইক্রপ সাধক যথন ঈশ্বরের সহিত মাতৃসম্বন্ধামূভৰ করিয়া তাঁহার সহিত এক হইয়া থাকেন, তথন তাঁহার হৈত ও অহৈত ভাবের অতীত হইবার সময় উপস্থিত। কেশবচন্দ্র মাতসম্বন্ধের কথা বলিতে গিয়া মাতার ক্রোড় ও माज्यम এই इटेंढि श्रधान ভাবে গ্রহণ করিলেন। আমরা সর্কাদা তাঁহার ক্রোড়ে স্থিতি করিতেছি, নিরম্ভর তাঁহার স্তম্ম পান করিতেছি, ইহা বথন প্রত্যক্ষবিষয় হইল, তথন আর বৈতাবৈতের কথা উঠিবে কি প্রকারে ? মাতার তক্ত শিশু পান করিয়া পুষ্টিলাভ করে, স্থতরাং দেখানে ভিন্নতা আছে। মাতার মাতা হইতে শক্তি জ্ঞান প্রেম পুরারূপ স্ততা স্বয়ং আমাদের অস্তর্য হইরা আত্মকে প্রষ্ট করিতেছে, এ অবস্থায় আর ভিন্নতা বোধ থাকে না। যেখানে প্রয়াস প্রয়ত্ব চাই, সেখানে ভিন্নতা বোধ অপরিহার্যা, কিন্তু যেখানে প্রয়াস ও প্রয়ত্ব নাই আপনা হইতে সমুদার আইসে, সেখানে আর ভিনতা বোধ থাকিবে কি প্রকারে ? কেশবচন্ত্র প্রার্থনায় এই জন্মই বলিলেন, 'যখন যোগেতে এই তত্ম বিনাশ ক্রি, তথন এই তন্তু তোমার হয়, তোমার হাদি আমার হাদিতে মিশাইরা যায়।' 'সোণা আর আবশুক নাই, কেন না সোণা হুইয়া গেলাম।' জীব এখানে ত্রন্মে বিলীন ভাবে অবস্থিত।

শঙ্কর যোর অবৈতবাদী। তিনি জীব ও জগংকে মিথাা বলিয়া

ভাৰও বলা বাদ না। প্রকৃতি ও জীবকে মিধা। বলিঘাও শক্তিমারে ব্রক্ষেতে উহাদের হিতি স্বীকার করাছে শক্ষর প্রকৃতগক্ষে লয়বাদীই হইতেছেন। লয়বাদ ডিনি স্পট্রাকো নির্ম্বত করিয়াছেন।

উড়াইয়া দিরাছেন, বালাসমাজে তিনি কেন গৃহীত হটলেন, এ প্রশ্ন বুখা। তিনি জীব ও জগংকে মিখ্যা বলিয়া বৌদ্ধধাকে আব্মন্ত করিয়াছেন বটেঞ্কিস্ত এ মিথাতে তাহাদের স্থলত্বসম্বন্ধে ভাছাদের স্কুত্ব বা শক্তিমাত্রত্বে নছে। যপন জ্ঞানযোগে জগং ও জीবের স্থলত্ব উড়িয়া যায়, তথন উহারা শক্তিমাত্রে পর্যাবসর হইয়া ব্রহ্মে বিলীনভাবে স্থিতি করে। এই প্রকার বিলীনভাবে স্থিতি কোন हिन्दुमच्चेनारवत लाकि इ अधीकात कतिरा भारतन ना, এবং যোগের স্থলে এই অভিনতা বা ত্রন্ধে বিলীন হইয়া স্থিতি আমা मिशरके श्रीकात कतिरु इहेरत *। त्कश्वहरम अस्मार्क विमीन ভাবে স্থিতি যথন আরম্ভ হইল, তথন ঈশবের মাতৃভাব তাঁগতে উজ্জ্ল **হইতে উজ্জ্ল বেশ ধারণ করিল। 'ব্রহ্মকল চালাই**তে লাগিলেন, প্রমাত্মা বন্ধু হইলেন। তুই বন্ধু প্রস্পার সংযুক্ত হইলেন, যোগ থেলার স্থান। প্রমাত্মা থেলা করেন জীবায়ার ভিতর দিয়া, জাবাত্মা থেলা করে প্রমাত্মার ভিতরে।' এখানে কেশ্বচন্দ্র স্থা ভাবের কথা বলিয়াছেন, কিন্তু এ স্থা ভাবের মধ্যেও মাতৃভাব বিদামান। 'এমন অবস্থা আসে ধ্থন গুরুল হওয়া অত্যন্ত কঠিন, পাপ করা অসম্ভব, ব্রহ্মকে ভূলিয়া যাওৱা অসম্ভব, সৌন্দ্র্যান্ত্রেষ্ঠ, নারীত্রেষ্ঠ ভূগনমোহিনী অনুনীকে না দেখা অসম্ভব।'

এই বৈতাবৈতের অতীত ভূমিতে বিজ্ঞানের সঙ্গে কেশবচন্দ্রের বোগ হইল। যত দিন বিজ্ঞান ছুল বিষয় সকল লইয়া বাস্ত, ভত দিন কেবলই নিয়োগের ব্যাপার, যোগ নাই। কিন্তু ধবনই বিজ্ঞান ছুল বিষয়সমূহকে স্কুল্ম করিতে করিতে তাহার অন্তরালে এক মহতী শক্তি দর্শন করিল, এবং সেই শক্তিরই ক্রাড়াভূমি বলিয়া সংলারকে গ্রহণ তরিল, অমনি ধর্ম্মের সহিত তাহার বিয়োগ বিলুপ্ত হইল এবং প্রত্যেক পদার্থে ঈশ্বর অতি নিকটস্থ ভাবে অনুভূত হইলেন *। এখানে মুমার বিবেক ও বিজ্ঞান এক হইয়া গেল †। কেশবচন্দ্রের জীবনে বিজ্ঞান ও বিবেকের যথন মিলন হইল, তথন নববিধান বলিয়া তিনি তাহার আথাা দিলেন। এইরপে কেশবচন্দ্রে যথন সম্দায় ধর্ম ও মহাজন এবং বিজ্ঞান সংযুক্ত হইলেন,

[•] A long ladder of many steps led to God's sanctuary in days gone by. Science has cut it short. Instead of many steps there is but one step from earth to heaven. One step from mind and matter to God; one step now from the muscles and the nerves, from the eye and the ear to God...........You see a thousand earthly forces; immediately beneath them and directly connected with them is the central causative nower or God-force—God-MSION IN THE NINETEENTH CENTURY.

t We are the fulfilment of Moses. He was simply the incarnation of Divine conscience. But there was no science in his teachings, that science which in modern times is so greatly honored. Let Moles grow into modern science, and you have the New Dispensation, which may be characterized as the union of conscience and science.—WE APOSTLES OF THE NEW DISPENSATION.

ভগন লৈশা হইলেন ভাঁহার ইচ্ছা, সক্রেটিস হইলেন ভাঁহার মন্তক, टेक्डना बरेलन डांहात श्रमा, हिन्तुश्वि हहेलन डांहात आजा, ছাওয়ার্ড হইলেন ভাঁহার দক্ষিণ হস্ত। * তিনি নবাকুতি এই নবান মানুষ হইয়া মানবজাতির সহিত এক হইয়া গেলেন। শত শত তাহার হস্ত, শত শত তাহার আত্মা, শত শত তাহার হনয়, শত শত তাঁহার মন্তক, শত শত তাঁহার ইচ্ছা হইল। কেন হইল, না যে সকল ব্যক্তির হস্ত প্রসেবায় ব্যাপ্ত, যে সকল অন্থা যোগে একা সহ অভিন্ন হইবার জক্ত মননশীল, যে সকল হানর একা মুরাগে প্রদীপ্ত, যে সকল ব্যক্তি ভগবদিক্ষাপালনের জন্ত নিতা कियानीन, डांशानत महिल जिनि त्यारा এक इहेबा शिवारहन। তাঁছাদের বন্ধুগণের মধ্যে এই সকলের একএকটি প্রধান বলিয়া ভিনি তাঁহাদিগকে তাঁহার আপনার এক একটি অস বলিয়া গ্রহণ ক্রিয়াছেন: অন্তদিকে তাঁহার বন্ধুগণের তাঁহার সহিত এক হই-বার জ্বন্ত এই নবাক্তি মানব হওয়া প্রয়োজন । কেবল বন্ধ-গণ কেন, সমুদায় বিধানবিখাসী এই নগাকৃতি মানব হইবেন, ইহাই কেশবচক্রের অনুরোধ।

এতক্ষণ যাহা বলিলাম, ভাষাতে কি কেশবচন্দ্ৰ যে অগ্ৰঞ্জন্মা

[•] In blessed eucharist let us eat and misimilate all the saints and prophets of the world. Thus shall we put on the new man, and each of us will say, the Lord Jesus is my will, Socrates my head, Chaitanya my heart, the Hindu Rishi my soul, and the philanthropic Howard my right hand. And thus transformed we shall bear witness unto the New Gospel.—WE APOSTLES OF THE NEW DISPENSATION.

ভাহা প্রমাণিত হইল না ? তাঁহাতে যাহা অগ্রে অবতরণ করিরাছে তাঁহাই তাঁহার বন্ধুগণে, বিশাসিবর্গে, এমন কি সম্পায় মানব-জ্ঞাতিতে প্রবিষ্ট হইরাছে। এক জনে সত্যাদি অবতরণ করিরা সর্বাহ বিকাণ হইরা পড়ে, এ ব্যাপার আমরা নিতা প্রতাক করিরাছি, কেশবচন্দ্র স্বয়ংও উহা প্রকাশ করিরা বিলিয় বিলয় বিলয় করিরাছি, ভাহাতে বর্তমান বিধানের সতা প্রথম অবতরণ করিয়াছে, ভাহা হইতে প্রকাশ পাইয়াছে এজন্ম তাঁহাকে অগ্রজ্মা বলিতেছি। তিনি প্রবন্ধা, তিনি মুখ, ইহা বলিতে কেন কুঠিত চইব ? যাহা সতা তাহা বলিতে লক্ষা কি ? সতা আচ্ছাদন

[•] শিক্ষক হই নাই বলিয়া কি চিরকাল স্বার্থপারের স্থায় থাকিব গ জ্ঞানলাভ করিয়াকি কাঁচাকেও দিব না গু কুপাণের স্থায় আমার ধন কি वाधाद हित्रक पाकित्व १ 'शह्रामस' माथन कविनाम 'अमानमस' व्यक्ति क्षम ଓ गई नाई। 'लान' यामात म्लमख नय। मछा यामिरलई वाहित हरेरा, अरे घडाराव नियम। आभारना एएराव लारका चडार अमनह (ध मंडा वागितारे धकानिक रत्र। गाँशांता बाभात्मत तम्म इहेटक बामिया-एकन, काहारनत घरतत इटें कि बात चारख। এक बात मित्रा चामनानि चात এक दाउ निया उछानि इस। चारम এक लथ निया; याम अक लट्या मञा यामिया कनट पाम ; कनट पिछन इट्रेश अप्टर अटर करत : চারি छन হইমা অবার বাহিরে যায়, শত গুল হটমা আবার আনে। **মরে** चामित्न दृक्ति आह दम, बंदछ दहेत्न चात्र दृक्ति आह दम। मन्त यसम नास दम, ख्दन मत्न यानन स्था : महा श्रकान हरेता (गरे यानम याद्रक यदिक रुप्त। मङ्गांड क्रिटिंग् यामात याना ७ याग्रह क्रिक्ट्र मछा विव अक्वात् छ जाविकाम मा। पूर युक्तिमा कि विवाद, क्थनहे किया कदिवाभ ना। यर्गेन विवाद इहेव, मेडा बालना बालनि मुट्डिक श्रका-निक इस। अङ्गतिबि जगात, छाहा कर्नल जनम्यन कृति नाहे, शूदांचन क्या विक्ष नारे ।-क्षीयनद्वम-नियः शकु कि ।

করিরা রাধার তুলা তীব্র অপরাধ আর কি হইতে পারে ? আমি যাহা বলিলাম, ভাষাতে রেখাপাত্মাত ছইল। पैशिश्ना चानित्वन, नम्क विधातनत होजहान पैशित्रा त्मवालात्क পাঠ করিবেন, ভাঁহারা আরও পরিষার করিয়া এই বিষয়টি সকলের হাদরক্ষম করাইয়া দিবেন। কেশবের সঙ্গে এক ছইবার জন্ম বে সাধনের প্ররোজন, সেই সাধনের পথ পরিষ্কৃত করিবার क्क मामान कि आमि विनिधा। याहा वना हहेन उनार्था (कान ভ্রম যদি কেই দেখিতে পান, তিনি সে ভ্রম শোধন করিলে স্থাধেরই বিষয় হইবে। সাধন সভ্যের উপরে স্থাপিত না হইলে উহা হইতে বিষমন্ন ফল উৎপন্ন হয়, অতএব যাহা বলা হইল তাহা পতা কি না, সকলেরই তাহা পরীক্ষা করিয়া পরে গ্রহণ করা উচিত। আমার अन विश्वाम এই, व्यामारमत मर्था मकल विरत्नार्थत मूल किनरवत সঙ্গে বিরোধ, সে বিরোধ কথন তাঁহার সহিত এক না হইলে ভিরোহিত হইতে পারে না। অতএব বক্তভার অন্তে ভগবানের নিকটে এই আশার্কাদ ভিকা করিতেছি যে, সকলে নবীন মানুষ ্ছইয়া কেশবের সহিত যেন এক হয়েন।

কলিকাতা।

তনং রমানাথ মছুম্দানের ষ্টাট। মঙ্গলগঞ্জ মিসন প্রেসে কে, পি, নাথ কর্ত্তক মুদ্রিত ও প্রকাশিত। শকাক ১৮২২। ত্রাহ্মসন্থং ৭২।

ঈশার নিকট কেশবের ঋণ।

কলিকাতা।

তনং রমানাথ মন্ত্রমদারের ব্রীট, মঙ্গলগঞ্জ মিসন বজ্ঞে কে, পি, নাথ কর্ত্বক মুক্তিত।



नेगांत निकंड (कमरवत श्रांग • ।

হে অনন্ত সভারে প্রান্তবণ, তোমার শরণাগর না হইলে প্রাণের অন্ধনার দূর হর না। আমাদের সংশর অন্ধনারতো ভূমি আন। জুমি বিদি আলোক হইরা আমাদিসকে পরিচালিত না কর, ভবে সে সংশর দূর হইবে কি প্রকারে? তোমারই কুপার আনক বার অসভা অন্ধনার হইতে উত্তীর্ণ হইরাছি, তাই বাহস আছে বে ভূমি এবারও সম্পার সংশর দূর করিবে। রসনাকে ভোমার ভাবে উনীও কর, ভ্রমরের বিক্র সংশার অবক্রম কর। বাহা সভা রসনা তাহাই বল্ক, মন তাহাই চিন্তা করক। হে ক্রমর, ভূমি ক্রমরে থাকিরা আলোক দান কর, সতা প্রকাশ কর, এই তব পারগল্পে বিনীত ভিক্ষা।

অন্য বদিও শরীর অসুস্থ তথাপি পূর্ব্বে বধন বলা হইবাছে বে
"ঈশার নিকটে কেশবের গণ" এই বিবরে কিছু বলিব, ওখন আর ভাহা উপেকা করা উচিত নহে। সর্ব্ধ প্রথমে দেখিতে হইতেছে, কেশব বাহাকে ধর্মপিতা বলিরা সম্ভ্রম করিতেন তাঁহার সহিত তাঁহার বিচ্ছেল হইল কেন? এবং সেই বিচ্ছেল আক্ষমমাজের গক্ষে ক্ষতিকর হটরাছিল কি না? কেশব বাহাকে এত প্রধা ভক্তি ক্রিতেন, বাহার সহিত তাঁহার এত প্রথায় জীতিবছন ইল, বাহাকে তিনি ধর্মপিতা বলিরা চির্লিন ক্রমরে ছান বিল্লা-ক্রিলেন, তাঁহার সহিত কেশবের বিচ্ছেদের মূল কারণ কি ? সক্ষমেই

मद्यविक्रम बारबा॰मरबानसरक कैनावगवसक्य क्ल्र्बाम्बद ।

श्रीरमम् श्रानिममास श्रीष्टेत अञ्चक्न नाहन । धमन कि क्नित रक्त विराह्मानंत्र शत ,श्रीरहेत विश्वात वक्तुं जो त्यम अवत्याधिनी उपन বলিয়াছিলেন, দ্বলা মূর্ব ছিলেন; শহরাচার্য প্রভৃতি পণ্ডিতদের কাছে তিনি দাঁড়াইতেই পারেন না ; এমন কি আমাদের সমাজের প্রচারক কেশবচন্দ্রও তাঁহা অপেকা শ্রেষ্ট। কলতঃ ঈশার প্রতি কেশবের এত শ্রনা ও ভক্তি ছিল যে 🗯 বে সমাজে ঈশার এত অনাদর সে সমাজে তিনি থাকিতে পারিলেন না। ঈশার প্রতি এই অনুরাগনিবন্ধন আদিসমাজের সহিত তাঁহার বিচ্ছেদ ঘটিল। কেশবের যদি খ্রীষ্টের প্রতি এতই আদর ভবে তিনি খ্রীষ্টসমাজে না গিয়া ব্রাহ্মসমাজে যোগ দিলেন কেন ? কেবল ঈশ্বরের সহিত যোগযুক্ত হইবেন যদি তাঁহার এই ইচ্ছা ছিল, তবেই বা কেন তিনি ব্ৰাহ্মসমাজে আসিলেন ? যদি আসিলেনই তবে কেন তিনি তাঁহার পরম ধর্মবন্ধ ধর্মপিতাকে ত্যাগ করিলেন ? অনেকে মনে করেন তিনি প্রচল্ল গ্রীষ্টধর্মাবলম্বী ছিলেন; খ্রীষ্টেতেই তাঁহার ্র চিত্ত নিমগ্ন ছিল। তিনি গ্রীষ্টের জনা অনেক করিয়াছেন সত্য, কিছু ব্রাহ্মসমাজকে রক্ষা করিবার জনা কি তাঁহার অত্যধিক যত্ন প্রকাশ পার নাই ? ধর্মপিতা বলেন, "রাজা রামমোহন রার প্রহা করিয়াছেন আমিও তাহাই করিতেছি:" ইহার অর্থ নাজার বর্ম বেদান্তমূলক ধর্ম ছিল। রাজার ধর্ম বেদান্তমূলক ভাতা আর टक मा कारन, किन्न छै। होत औरहेत श्राक्त अनुताशह वा अब किरम ? तामा औरहेत मधावर्डिव जेकातकर्जुक हेजानि मछ लायन कतिराजन, औद्धेत त्यानिएक छेकात रुख्या यात्र यपिछ हेरा विश्वान कृतिरुक्त ना, कथानि किनि गैकारमंत्र मधावकी बहेरमन, कांशास्त्र मबस्स किनि जेशयुक्त विन इंहेरनम, कीविक्रममस्य विका विद्या मृकू बाह्रा करस्वत

পাণক্ষমান্ত অন্ত প্রার্থনা করিবার অধিকারী হইনেন, অপান্তে তবস্থুসরণে অক্তাপ, প্রার্থনা এবং বাধাভার হারা উদ্ধান হইতে পারে, ইহা তিনি বিশ্বাস করিতেন-। ঐত্তের ধর্মমত সবছে রাজার বৈধমত ছিল না। তিনি ঐত্তের সহতে বে সকল মীমাংসা করিবাছিলেন, পাশ্চাতা পণ্ডিত Martineau প্রভৃতি ভাষা সাম্বরে প্রহণ করিবাছেন। অতএব রাজা ঐত্তের প্রতি অস্থুনাগীছিলেন তাহার প্রমাণ অনেক আছে। ফলতঃ রাজার ঐত্তিসম্পর্কীয় মতগুলির আলোচনা করিলে মনে হয় না বে, কেশব সর্কাণা তাহার মতের বিরুদ্ধে কাল করিবাছিলেন।

সে যাহা হউক, এখন প্রকৃত বিষয়ের অন্নসরণ করা হাউক।
কেশব প্রার্থনাতে জীবন আরম্ভ করিরাছিলেন; ক্রমে ক্রমে জন্ম
জাপ, পাপবাধ ইত্যাদি বধন তীক্ষ হইল, তখন তাঁহার প্রকৃতিতে
নিহিত বিশ্বাস, বিবেক ও বৈরাগ্য জীবনের মূল উপাদান হইল।
বিশ্বাস ও বিবেক জীইধর্ম্মের মূল উপাদান। হিন্দ্ধর্মের যে বিবেক
শব্দ আছে, উহা প্রীপ্রধর্মের বিবেক সহ এক নহে; অথচ আমরা
হিন্দ্ধর্মের বিবেকশক গ্রহণ করিয়া তাহাকে জীইধর্মের বিবেকের
সব্দে এক করিয়া লইয়াছি। একপ করিবার মূলে কেশবচন্দ্র
রহিয়াছেন। বিশ্বাস ও বিবেক জীইধর্মের হইলেও বৈরাগ্য প্রীপ্ত ও
হিন্দু উভয়ধর্ম্মনাধারণ। কেশবের জীবনে বৈরাগ্য বদিও হিন্দু
ধর্ম্মের সহিত বোগ দেখাইয়া দের, তথাপি প্রথম জীবনে বে প্রীপ্তধর্মের সহিত বোগ দেখাইয়া দের, তথাপি প্রথম জীবনে বে প্রীপ্তধর্মের সহিত তাহার প্রগাঢ় বোগ তাহাতে সন্মেহ নাই। 'Am I
an inspired prophet' বক্তুভার ভিনি জ্বন, গ্রীষ্ট এবং পলের
সহিত আপনার জীবনের থনিষ্ঠ সম্বন্ধ প্রবর্শন করিরাছেন।
ধর্ম্মনীবনের প্রথম অভ্যাদরে প্রথমবন্ধনে ভিন জনের সহিত ভাহার

সাকাৰ হইয়াছিল। এই তিন জন সম্বিক পরিমাণে তাঁহার बीबरनंद डेनरंद शकाय विश्वाद कतिवाहितन । मसीर्थ सरमन সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হর, তিনি বলেন 'অমুতাপ কর', সেই কথা ভানিয়া তিনি অমূতপ্ত চ্ইলেন, তাঁছার জীবনে পাপবোধ প্রবৃদ্ধ হটক। জনের কার্যা শেব হইলে ব্রিষ্টের সহিত তাঁহার সাকাৎ হুইল, তিনি বলিলেন 'ক্লাকার জনা চিন্তা করিও না,' সেই ক্থার স্কোস্তে বৈরাগা ভাঁহার স্বন্ধকে অধিকার করিল। এতির পর दिवाहिक कींतरमत आवरक शन वनितनम, "दाहाद गर्ने जाए रा বেন এইরপ ভাবে জীবন যাপন করে বে পদ্মী নাই।" তাই আবার বলিতেছি, ব্রীষ্টের সকে খোগে যদি আদিসমাজের সকে তাহার विक्किम हरेता थात्क, जत जिमि धर्याम त्कम जान्त्रमात्क चार्मि-শেন। তিনি মগুলীর নীর্বস্থানে এইকে স্থাপন করিলেন এই কৰা বাঁহার। মনে করেন ভাঁহাদের ভুল বিবাস। ভিনি মণ্ডলীর नीर्वज्ञात अहेत्क यंत्रान नारे, शर्विखाचारक वंत्रारेशास्त्र। মঙলার শীর্ষস্থানে পবিত্রাম্বাকে বসাইবা ডিনি কি ঐট্রের সহিত विक्रिय रहेराम १ कथनहे नरह । जेना जाशनि विश्वारहन, जामि मच कथा विश्रास भारतिकाम मा. भविजाका व्यक्तिका नव विश्रासकी और छोराय इंगालियिक बाद कारारक्ष करवन नारे, क्याची-(कहे कतिवाद्यन । शरिकाषारे डीशत मधनीय त्मला वरेतन, भवकार्यक इरेलम, महाब इरेलम, नीर्वकाम प्रेटेशम । ऋजनार (कन्दान्स शिकाशांक श्रापनांत बीचानत माठा । यथनीत नार्क শ্বান করিয়া পুষ্টেরই প্রকৃত ভাবের অমুসরণ করিলেন। । বর্তমান

but ye cannot bear them now. Who then was to several

ব্রীষ্টপথার তাহা করে নাই, স্থান্তরাং দে সমার উহার চিন্ধকে আফর্থন করিছে পারিক না। পবিত্রান্তার অন্ত্সন্থের অর্থ করিরের মতে করিবের আক্রার কাল করা, মতরাং তাহাই উাহার জীবনের মূলমন্ত্র হইরাছিল। ত্রাক্ষসমালে বখন তিনি তাহার আপনার জীবনের মূলমন্ত্র নিহিত দেখিলেন, গুখন তাহাতে যোগ দিবেন, ইহা আর বিচিত্র কি ? কেলব ত্রাক্ষসমালের সহিত যোগ দিবেন, বালরা তাহার ত্রীপ্রের সহিত বিজেদ হইল না। কেন না ব্রীষ্টের প্রকৃত মগুলীর মূল পবিত্রান্ত্রা, ত্রাক্ষসমালের মূলও পবিত্রান্ত্রা বা পরমান্ত্রা। সেই পবিত্রান্ত্রাই আমানের প্রস্তুত প্রীর্ত্রিশিবাগণের নেতা, পরিচালক এবং গুরু। কেলবের জীবনের ভিত্তিও বা, ত্রাক্ষসমালের ভিত্তিও তাই। ঈশরের বাণী প্রবণ করিয়া তলফু-

to an anxious and sinful world these ' many things?' The Holy Ghost, said Christ. Let us reverently bow, and say, Amen. The Living Spirit, coming down from the Father Himself, and speaking in His name, was to guide the disciples and the world ' into all truths.' no earthly teacher, to no written record, are we referred for a fuller message of salvation. No apostle, however pure, no disciple, however wise, was named by Christ as his successor. In clear and unmistakable language he named the Holy Spirit as the future minister of his Church....." "..... Let no Christian think it unchristian to believe that the Holy Spirit of God is the true and living head of Christ's Church, the source of all inspirations now and for ever, and thus from Him a fuller revelation of saving truth is yet to come than what has been vouchsafed to the world through Christ and recorded by the Evangelists."-'Our Faith and Experiences.'

সামে কাজ করাই কেলাবের জীবনের মূল মন্ত্র; ঈশারও জীবনের
মূল মন্ত্র 'তোমার ইচ্ছা পূর্ণ হউক'। বাজনমানের মূলমন্ত্র এ ছাড়া
আর কি হইতে পারে ? অভএব কেলব বে বাজনমানে নাম
লিখাইবেন, আবার বলি, ভাহা আর আশ্চর্যা কি ? যতই ভাষার
বাজনমানের গহিত খনিষ্ঠতা জামিতে লাগিল, ভতই ভিমি
জীশার নৈকটা অন্তত্ত্ব করিতে লাগিলেন; কাজেই আদিসমানের
সঙ্গে ভাষার বিদ্যোগ অনিবার্য হইয়া উঠিল।

আদিস্যাজ তাপ করিয়া কিছু দিন পরেই তিনি 'Jesus Christ : Europe and Asia' বজুতা দিলেন। আমি তবন ক্লিকাভার ছিলান না, বিদেশে ছিলাব। লোকে বলাবলি করিতে লাগিল ভাই ভো কেশব বাবু এত দিনে খ্রীষ্টান হইতে চলিলেন।" আনেকে জানিতে উৎক্ল হইয়াছিলেন, "কেশব বাবু কবে বাপ্তাইজ क्हेर्द्रन १ विस्पारत आणि राथात हिलाम, माधु आसाजनाथ रम्यात প্রচারার্থ গিয়াছিলেন। ভাঁহাকে জিজাসা করিলাম ব্যাপার কি ? জনসাধারণের মতামতও তাঁহাকে জানাইলাম। তিনি বলিলেন "लाक कर कि वान वनुक" जीत क्लाव बाद यनि खेडीनरे हन, ভাহাতে ব্ৰাহ্মসমাজের কি ?" কেশবচন্দ্ৰ ঈশাকে একা সেইছেন না, জাহার সঙ্গে দক্ত মহাজনকে গ্রাথিত দেখিতেন। তাই দিশার विवदः वक्षात नवरे 'Great Men' ध्वत्र नवरक वस्त्रा । ভিনি তথ্য ঈশার সঙ্গে আরও অনেক মহাক্রনকে আনিয়া ফেলি-त्मन अवः मेनाव मान जाहात्मत्र त्य पनिष्ठं त्यांग जाहात्व वुकाहेवा विराम ; महाबमगरनत मर्था छोडात हाम दर्गाचात छारा छ छिनि ল্ট্র মলিলেন। মহাজনগণের রুখা বলিতে খিরা ডিনি পবিঞ্জায়ার कवा बनिएक कुरमन नारे। यहांकनशत्नत्र मरक रा वाबारमन গৌণ সম্বন, আন পবিভাষার সংক আনাদের মুখ্য সংক, ইছা ভিনি সেখানে ভাল করিব। বুরাইরা নিরাছেন। পর সম্বন্ধে ভিনি বে পবিভাষাকে মঙলীর শীর্ষহান নিরাছিলেন ভাষার মূল এখানেই দেখিতে পাওরা যায়। মুশাকে ভিনি মধ্যবিশ্ বলিরাছেন বটে, কিন্তু কোধাও ভাষাকে শীর্ষহান প্রদান করেন নাই।

এখন বেখিতে হইভেছে, কোন্ বিবরে জীপার সহিত ভাছার বোগ ছিল। 'নববিধানের প্রেরিভগলের প্রতি নিবেদ্দে' ভিজি বলিরাছেন "মহার্ব ঈশা যেমন তাঁহার শিক্তদিগকে নানা দিকে তোরণ করিরাছিলেন, আমি ইভামাদিগকে তাঁহার ভার প্রেরণ করিভেছি ন। ভোষাদিগের দলে আমার সে সম্পর্ক নাই। আমি ভোষাদের দলের একজন। তোমরা কোরিত মহাপুরুবদিগের কোরিত। ভোমরা এবং আমি শাকাপ্রেরিভ, জ্বলাপ্রেরিভ, প্রীরৌল প্রেরিত, এবং পৃথিবীর অস্তান্ত মহাজনদিগের প্রেরিত। --- জাহারা আখাদের পিতা পিতামহ। তাঁহাদের কলে আমাদের কল। डीशनित्मत्र छात्व चामत्रा विकाशा । भाक्त, मूना, केमा, अलीताक অভতি সাবুদিগের বংশে তোষাদের জন্ম : ক্রুমানি ভোষাদিগকে প্রেরিত বলিরা স্বীকার করিবার আগে নেই স্বর্গন্থ মহাপুরুষেরা ভোষাদিগকে প্রেরণ করিরাছেন।" আমাদের নিয়োগপত্তের ভিতরে যধন এই সকল কথা দিখিত আছে, তখন আসরা সাবুমহাজনগণের অবমাননা করিতে গারি লা। প্রাচীন আছ-नवाद्यत्र तत्त्र मनविवादनत्र विष्ट्य क्रेवेस्ट्र नहेत्रा नटर, नाबु वराजनगर्म गरेवा। चात्र मात्र गरम गावुनराजन चानिका वर्षन क्यादित समग्रह व्यक्तिमात क्षितमा, क्यान मन्तिसारमञ्ज

উদয় ছইল। কিন্তু একথা মানিতে হইবে, কেশবের জীবন ঈশাতে আরম্ভ হইরাছে। উপার সঙ্গে সাকাৎ বোগের পুরে জন দি ৰাপ্তিষ্টের সঙ্গে তাঁহার বোগ হর,সেই যোগ তাঁহার পাপবোধ জীত করিয়া দের। এই পাপবোধের সঙ্গে সঙ্গে যথন কিলাকার জন্ত চিত্তা করিও না' ঈশার এই উপদেশ সংযুক্ত হইল, তথন তাঁহাতে বৈরাগ্য বিশেষ আকার ধারণ করিল। এ সকল হইল কিরুপে ? বাইবেলপাঠে। তিনি বেরূপ ভাবে বাইবেল পাঠ করি**তেন অন্ত** কেহ দেরপ ভাবে উহা পাঠ করেন না। বাইবে**দ ভাঁহা**র নিকটে মৃত গ্ৰন্থ ছিল না, তিনি উহাতে কেবল জীবস্ক বাকা সকল পাঠ করিতেন না, বাঁহাদের মুখের সেই একল বাকা পাঠকালে ছিনি তাঁছাদিগের সারিধা উপলব্ধি করিতেন। ঘিনি এরপ कार्य वाहरवन भाठ कतिराजन जीहात कीवरन कन, केमा ६ भन প্রভাব বিস্তার করিবেন, ইহা আর বিচিত্র কি ? ঈশার নিকট ভাঁচার ঋণ কি 'Asia's message to Europe' নামক বক্তু তার জাহা স্পষ্ট ব্যক্ত হইরাছে। সেই বক্তৃতার তিনি বলিরাছেন "ন্তন আত্মা, নৃতন দেহ, এটোপরি নির্শিত হইরাছে। আমার সক্ষ দেহে, আমার সকল অন্তরে আমি ঈশাকে দর্শন করিও স্থানীর निक्रि जिनि कार्र में नरहन, जागि शत्नत नरक विन, ज्यामात्र शहक क्रेमांच या जीवनधारणं छ। " এই वक्क छात्र अत्र चासि अ ক্রার অর্থ তাঁহাকে জিজানা করিরাছিলান, ভাহাতে তিনি আর किए मा रिनेश निम रख धानावन कहिया रिनेरनम, अ राज আমার নহে ঈশার হাও। ফলত: তিনি ঈশার সহিত একাছা बहेबाहिरमन । वथन छिनि बेनाव गरिछ धकामा हरेरमम छयन ভিনি ভাগনাকে বন্ধ মনে করিলেন।

ন্ধীন কৰাৰ কেশনের কন্ত দূত বিশ্বাস, একটা কথার সকলে বৃথিবেন। পিটরকে সবোধন করিরা তিনি লিবিরাছেন, "ভোষার হাতে অর্গের চাবি; আমরা এটানলামধারী নর বলিরা কি ভূমি আমাদের হুয়ার খুলিরা দিবে না ?" তিনি জানিজেল ইশার সকলে মথকা না হইলে বিখানে বাহা কিছু প্রবােজন ভাষা হইবে না। কেন না ঈশাকে না মানিলে সমুদার লোককে এক করা কঠিন হইবে। সকল সাধু মহাজন সকল নরনারীকে এক করিতে হইলে দিশা বে অবভারবাদ মানিজেন ভাষাই মানা আব্দ্রক, কেশব ইয়া বিলক্ষণ ব্বিরাছিলেন। তিনি হিন্দুগণের অবভারবাদের হলে উপার অবভারবাদ, ঈশর ও মানবে, মানব ও মানবে বোগসাধনের জন্ত, গ্রহণ করিলেন। হিন্দুক অবভারবাদে বঙ্গং উপার অবভারবাদের বাহন মান্তব আরু মানুষ

^{• &}quot;

- ইন্দ্রিক্তির মধ্যে তক্তপালন এবং হুইদমন করিবার জনা ঈবর স্বাং মন্থ্রের আকারে অবতার হন; ব্রীট বর্গানকরী ইউরোপবণ্ডের মতে, কবি ব্রীট বর্গা ঈবর পুত্ররূপে অবতীর্ণ।
নম্ব্যাই কেবল ঈবরের সন্তান; কেন না মন্থ্যের স্বভাবে ঈবরের সভাব প্রতিবিধিত। পৃথিবীতে সর্ব্বপ্রথমে ঈবরতনর মহর্বি ঈশা এই তনরক্ষত প্রকাশ করেন। প্রতাক মন্থ্য ঈবরের তমর এই স্বর্গার সত্য ঈশা আগনার রক্ত ও প্রাণ দিরা লগতে প্রভাব করিরা গিরাছেন।
প্রকাশ পিতা বলিও না, জীবকে ভগবানের অবতারও বলিও না, কিছ জীবাছাকে ভগবানের পূত্র বল। পিতা পূত্র মহেন, ভগবান ভজ্পান্তাকে ভগবানের পূত্র করান্ ভজ্জে ক্রিয়া এবং স্বভাব ও প্রেমের অব্বেছ আছে, ইহা মানিলেই ক্রেছত অবতারবাদ মানা হইল। এই পিতাপুত্রের ক্রিয়ান ক্রম্ভারবাদের ব্যার্থ আই।

ক্রিয়া এই পিতাপুত্রের ক্রম্ভান ক্রম্ভারবাদের ব্যার্থ আই।

ক্রিয়া এই পিতাপুত্রের ক্রম্ভান ক্রম্ভারবাদের ব্যার্থ আই।

ক্রিয়া এই পিতাপুত্রের ক্রম্ভান ক্রম্ভারবাদের ব্যার্থ আই।

ক্রম্ভান এই পিতাপুত্রের ক্রম্ভান ক্রম্ভারবাদের ব্যার্থ আই।

ক্রম্ভান বির্বাধির স্বিভান ক্রম্ভারাদ স্বভারবাদের ব্যার্থ আই।

ক্রম্ভান বির্বাধির স্বিভান ক্রম্ভারাদ স্বভারবাদের ব্যার্থ আই।

ক্রম্ভান বির্বাধির স্বিভান ক্রম্ভারাদ স্বভারবাদের ব্যার্থ আই।

ক্রম্ভান বির্বাধির স্বিভান ক্রম্ভান স্বাধির আই।

ক্রম্ভান বির্বাধির স্বিভান স্বাধির স্বাধির আই।

ক্রম্ভান বির্বাধির স্বিভান স্বাধির স্বাধির আই।

ক্রম্ভান বির্বাধির স্বিভান স্বাধির স্বাধির স্বর্গাধির স্বাধির স্বাধির

बारक मा । केवार अवकारवात केवर ७ बाह्यर धनत हर, हेवर केश्वर बारका, माहून माहून बाह्न वाह्न शहर शहर वाह्न वाह्न हर किवाल ! भूबान । क्रेनड शिक्षा, श्रीपूर क्रेनरतर शूज, হাসুৰ বৰন পৰিত্ৰাত্মার প্ৰভাবে সকৰ বিরোধী ভাব পরিত্যাগ করিরা সম্পূর্ণ ঈশ্বরের ইচ্ছাত্বর্তী হর, তথন সে পূত্র হইরা পিডা ক্ষমবের সহিত এক হয়। বাইবেলে পবিত্রাম্মা হইতে স্থান জন্ম কেন লিখিত হইল ? পবিত্রাত্মার প্রভাবে আজন্ম ঈশাতে ঈশবের বিরোধী ভাব ছিল না, তিনি জন্ম ছইতে ঈশ্বরের পুত্র ছিলেন ইহাই দেখাইবার জন্ত। জলাভিবেকের পর ঈশা পবিত্রাত্মা কর্তৃক অরণানীতে নীত হইবেন, সেধানে পবিত্রাত্মার প্রভাবে পাপা-স্থয়কে পরাভব করিলেন, ইহা আর কে না জানে? সেই পবিত্রাস্থার প্রভাবে তিনি জীবনে বিচিত্র অন্তৃত কার্য্য সকল সম্পাদন করিলেন, ইহা তিনি আপনার মুখে ব্যক্ত করিয়াছেন। বধন বিহুদিগণ তাঁহাকে বদিল, তিনি ভূত দিয়া ভূত ছাড়াইতেছেন, তথন তিনি কি বলিলেন ? পুত্রের বিরোধে অপরাধ করিলে ভাহার ক্ষমা আছে, পবিত্রাত্মার বিরোধে অপরাধ করিলে ভাহার ক্ষমা নাই। তিনি পবিভাষ্মার প্রভাবে যে সকল কার্যা করিছে-ছেন, ভাষাতে পৰিবাম্বার প্রভাব না বেণিয়া ভূতের জিলা বিদ্বাস कत्राट्ड विव्यविश्वाच श्रीकाचात्र विस्ताद्य अनुताय क्या स्टेबाट्य।

ক্রমা পৰিব্রাদ্ধা ও পিডাতে কোন ভেল ক্রিডেন না। আপ-নার ভিতরে পবিব্রাদ্ধার কার্যাকে পিডারেই কার্য্য বলিরা প্রহণ ক্রিডেন। ব্রাদ্ধনায়ন্ত্র, পবিব্রাদ্ধা বা পরমাদ্ধা ও বদ্ধ ভির মধ্যে, ইহা বিশ্বাস করিবা থাকেন। ব্রাদ্ধনমানে বাঁহারা অভবে পবিব্রাদ্ধার প্রভাব প্রভাক করিবেন, ভাঁহারা আপনাধিগকে পুত্র বলিয়া বৃধিতে পারিলেন। 'বে সকল লোক পৰিআছা কর্ত্ত পরিচালিত হয় ভাহারা ঈশবের পূল' ও কথার অর্থ কি, বান্ধসনাত তথন বৃথিতে সমর্থ হইলেন। কেবল বৃথিতে পারিলেন ভাহা নহে, পূল্রতে ঈশবের সহিত, সকল মানবজাভির সহিত বোগ ভ্রম্ভম করিলেন।

এবন দেখিতে হইভেছে, কেশব এই পুত্রদ্বের প্রকাশ কোখার দেখিতে পাইলেন ? ডিনি ঈশাতে উহার প্রকাশ দেখিলেন। ঈশার পূর্বে এবং পরে অনেক সাধু মহাজন আদিরাছেন, ভাঁহাদের কেছ আপনাকে ঈবরপুত্র বলিয়া জনসন্নিধানে উপস্থিত করেন নাই। टिम्गालवरण कथाई नाहे, विल्लिगानव सरवाछ 'आसि खेवर शिखा এক' ঈশা ভিন্ন অপর আর কেহ এ কথা বলেন নাই, বলি বলিভেন যিহদিগণ কথন তাঁহাকে বধ করিতে উদ্যত হইত না। 'আমি এবং পিতা এক' এ কপার অর্থ 'আমি ঈশবের পুত্র' বিহুদিগণকে ভিনি ব্ঞাইলেন, অথচ তাহাদের চৈতন্য হইল না। ভিনি ক্রুশে জীবন নিহত হইতে দিয়া ওাঁহার পুত্রম ও শিতার সহিত একম্ব সংগ্রমাণ कतिरमन्। कृत्म त्मानिजमारमत्र वर्ष निरमत रेक्सारक रनि मित्रा ঈশবের ইচ্ছার অধীন হওর। এই অধীনতাতেই পুত্রত্ব। ধ্রম त्कनंत क्रेनांक मधातिन् (Certral figure) विनासन, छथन তিনি স্তাডে সকলের মিলন, ইহাই খোষণা করিলেন। তিনি এই বিষয়টি নানাছানে নানাভাবে বলিয়াছেন। ইহা স্বীকার করিতে व्हेरव, जेना मकरनत मःरवात्रहम । आमि तव भाव वाहे मा तकन, व्यक्ति यथम कांचात्र निष्कत रेक्स किहूरे थाकिएन ना ममूलत केंबरसंस ইক্ষাতে মিলিত হইবে, তথন আমার ক্রীরের সলে তন্ত্রত मिनम क्रेंट्र । व त्वांत्र चांत्र हिन्द्वांत्र, वक सदः। नांत्री छोना

inglemental speeds and states call fire ्रेकेसा ८९३ विका १ कुम्बर स्थाप । बाल राजना हाहिना प्रमुक्त केर्यका केंद्राताचान अवस्त, बारोबरे त्वयम व त्याल व्यक्तिको । विकि बनिकाकित्यन, 'त्र न्यामाव माठा, एक वाशाव दाका, दर बाबाद क्षत्रिनी है बाबाता क्षेत्रदार हेव्हाम्टल काव करत ক্লাছাত্ৰাই আমাৰ মাজা হাজা ভণিনী।' কেবল ইশাকে প্ৰভৃ क्षाकू गरिवालक इटेटन सी ; क्षेत्रदात देखांगक कांच कांग्रत हरेरन। নাধুতে ও অসাধুতে ত্ৰহাৰ্থন হউতে পাবে, কিছ সাধুতে অসাধুতে মিলন হয় কি ? অধর্ম অনীভিতে মামুব মিলিতে পারে না। ইশা জানিতেক, মাছৰ এক হতে পারে না, ধনি পুণাভূনিতে মিলন না হয় ৷ সমস্ত নরনারীর একাস্থা হওয়া পুণাভূমি ছাড়া ইইতে পাৰে না। সম্বর মহকোর জনা জনা-প্রাথ দিলেন। তিনি हैक्को कतिरन अमारूप रनांक श्रेरा पातिराजन ; हन वन नरेग পৃথিবীর রাজ্য স্থাপন করিতে পারিতেন : কিন্তু ভাহা ভাঁহার উদ্দেশ্য ছিল না, তাছার উদ্দেশ্য ছিল পুত্র হইরা পিতার ইছা পালন করা। পুত্র হইবা পিতার সঙ্গে যোগ তাঁহার জীবনের এক ষাত্র উদ্বেশ্য ছিল। এই যোগ দকলের প্রাণ্য ; ক্রিক্রান্ত্র করিরা হর ? জনা আমার ভিতরে বাস করিতেছেন ইহা বিক্রি ক্রিত বারি, তবে কথমও উহা লাভ করিতে বাহি না, ওক্ষার সাধন कृत मा । क्रेना मधावर्थी देश बोकात क्तिएकर स्टेस्त ; स्कृत ना श्रीवर विमा केरतित कारह गांद्रश बाब मा । विखात हेकानामनार्थ बीतमहिनक्तिनक्षण केनात (नाविक विक स्वामात किक्टर बादर-बरत, महिजान गाइवरे मादेव, देश निकड । क्रेबांब त्म लाविण बिना भाग त्योक प्रदेश कि शाकात, गुरुवह नक शक बहेबा शिकार

म रहेर कि अमरादर हैं जारे रशि जुंबदन महाक्षी क्यांटर त्कांत क्वित रह ना । क्वांती, कक, तासक, त्यांता संकलाई स्ताई निवि श्राहर । श्राम विवा चात्र निवृत्त्वते केवतः तम् अगरमा नवा-क्या नारे । विति कानी किनि सकामका क्षिएक गतिकात कतिका नका यह बाहर करान, तारे जरकार सहग्रत संविधा कांगी करान, অবিব্যাহটিত বিষয় কৰিছে বৰিবাৰ কলো। এ সকল কৰিছা कि बहेत । वेचरवत केवाब बाहरतीन कवा हहेता। वाहे बानीव धरेकरम निम रेका किरमहिक हरेता वेचरतत रेकात वर्गेनका केंगडिक वरेन, अपनि छीरात गुजब निक करेन, ब्रुक्तार वेनाव नाम अब क्षेत्रा जिनि वेचरतत्र नाम अब क्षेरना । निक मारक, एक, त्वामी, मकरमहे अदेवरण अक्ष मांच करवा । रृत स्टेंट्ड तमनर्गन, अथरा तटकत तरक सर्गन कविता आसरिवृत्ति, हेशा विक्रू चित्र तांग नरर। चित्र उचरांत रक्षेत्र मूह्यात नाम धामाचा वहेरान वत, नृत वहेरान वत। सामाराज्य েবেশে ধর্মোণরেটা বভগুলি অবভার আছেন, ভারাদিগতে পুঞ ৰবিতে পারি, কেন না তীহারা আপন ইচ্ছা হারাইরা ভবে ক্ষমনত অভিন্ন চইরাছিলেন। তাঁহাদিগের সকলের একর পুরবের कृतित्व, ज्ञार जेना वर्षानिन् (Central figure) क्रेस्नव, এবং কেলৰ ভাৰতে বলিবাছেন। বাতবিক এই পুঞাৰ সৰক্ষেই बारक। जानक, देव्छक धावुष्ठि गकरमह स्वादत हेकात सबीत বিলেন, ক্ষানাং কবনের সহিত পরশারের সহিত ভারাবিলের क्रिक ब्रावक हिम, देश (क बाद बार्वकांत्र कंत्रिक है बावक वेटारकरे गवरमा विवास। केनारक काफिरम-गुकारक काफिरम रामात्रक गरिक दर्शन हर मां। क्रेनार मसन प्रशासनीतिका

প্রধান বিষ্যানের ভূবি। কেশব মহাধ্যনগণের মধ্যে ঈশাকে প্রধান স্থান এই ক্সট বিরাহেন।

वस्य क्रेमांक मत्त्र दिन्तदेव द्यांग रहेन, छव्य खार्य खार অক্লাক্ত মহাজনগণও আসিলেন। চৈতক্ত আমিলেন কোন नश्रत ? विश्वान ध्वर विदयक गहेश दक्नवरुख ध्वर्य जीवन चात्रक कतिरामन । कारम वर्शन खिलत छेनत हरेन, ज्यन स्थान আনিলেন, কীৰ্ত্তন আরম্ভ হইল, চৈতঞ্জের সমাগম হইল; ভঞ্জির স্লোতে দেশ ভাসিয়া গেল। তিনি বিশ্বাস এবং বিবেক শইরা बीवनात्रस कतिराम वर्षे. किन्द्र यांचे सिश्रामन क्राम क्रम কঠোর হইয়া বাইতৈছে, অমনি ভক্তির দিকে জাঁহার মনের টান পড়িন। যথন ভক্তি আদিল তখন আর তিনি কঠিনপ্রদর থাকিতে পারিলেন না,ক্রমে ক্রমে সমীর্তনের সঙ্গে সঙ্গে তাঁহার হুদর কোমল रहेरक गांत्रिया। धारे कना कानव विनयाहितन, "कामाद कीवन খুব আশাপ্রদ, কারণ ওছতার আরম্ভ হইরা ক্রনে উহা সরস হইরা - গেল।" এই ভক্তি আবার যোগ না হইলে ভারী হইতে পারে না; স্থতরাং বোগে তাঁহার প্রবৃত্তি হইল। যথন ব্যেকে ডিনি শিশ্বকাম হইলেন, তখন তাঁহার এই ছ:খ ক্রি ভজি বেদন চারিদিকে ছড়াইরা পড়িল, বোগ তেম্বল চারিদিকে इड़ारेबा गड़िन ना। तात्र ७ डिक डीहार करावा वरेर . আনিন, তৎসহতে তিনি আপনি বনিরাছেন, স্বব্রের প্রতি বে বিশ্বাস ছিল ভাহারই অন্তব হইকে বোগ হইল : বে আর প্রেমের ভাৰ জীবৰে ছিল, ভাছাই প্ৰাগ্তা ভক্তিৰ আকার বারণ ভারিল।" ভক্তি ও বোধ বধন জীহাতে উপত্তিত বুইল ক্রমন कीशात कि कारका रहेग करमबरक जानकि लिक बनिवादकर,

भावि क्रियाने पूर क्यी, जन्म त्यालव नावारक केंद्र वानात्व त्वकारेरछहि।' अनन चात्र तुक्टिंड नाति ना, चानाव बीनान र्तात्र व्यक्ति कि क्ये व्यक्ति, विराहकत लाखार व्यक्ति हा নুষৰ ৰাজাইবা ভভিতে আনৰ অধিক।" এই বোল ও ভঙ্জি কৰুটোলার গুহে অবস্থান কালে ভাঁহাতে উপস্থিত হয়। বখন তিনি বোগ ও ভক্তির উপদেশ বিতে আদেশ পান, তথন ভাঁচার व्यान क्लिंग हत, किन्द जेनत व निगरत छोहोत नहांत हहैरवन. এই আশাৰ্চন শুনিবা তিনি বোগতজিব উপদেশ নিতে প্ৰবৃদ্ধ হন। তখন কনুটোলার গুহে কুটারে খহতে রন্ধন করিবা ভোজন করি-তেন। রন্ধনের সময় ভাগবতের ১১শ করা বরং পাঠ করিতেন। নকে নকে বোগভক্তিবিবয়ক উপবেশ দিতেন। সেই সকলে বোগাচার্য্য জ্রীক্তকের সহিত তাঁহার যে খনিষ্ঠ সম্বন্ধ নিবন্ধ হইরাছে তাহা বুকিতে পারি নাই। এক দিন তাঁহাকে জিজানা করিলান, জিশা চৈতন্য প্রভৃতি স্বল্কেইড আনিলেন, কুক্তে আনিলেন ना रून ।" डिनि बनिराम "कुक्करू मकरम क्रिन ना ; डीहारक বেরণ চরিত্রের লোক গোকে মনে করে, তিনি সেরপ নছেন। একুনৰ কৃষ্ণকৈ আনিলে প্ৰাক্ষণনাৰ তুবিৰে।" • আমি আৰে त्वार्थ महाजनत्व किनिकाम ना । जामात महाजन तकता

ক্ষেত্ৰৰ সাহাই ক্ট্ৰাহিণ। আৰি প্ৰথনে ইণাত বিজেনি ক্ষিত্ৰত প্ৰথাকৈ ক্থনিত চরিজের লোক বলিবাই আনিবাৰনে ইয়াটেইজানৈ পাঠ কৰিবা আনার পৰিবৰ্তন কইল। বিজ্ঞানি নামন পঞ্চিত্ৰাই জীপাকে বুৰিলান, বাইবেল বুৰিছে পারিলান। প্রভাম আমার জীপাকে চেনা কেপাবের নথা দিরা। জীপা বুলের কথা, গৌলাক ইত্যাদি বাঁহারা বরের লোক তাঁহাদের প্রতিক আমার কত ভজি চিল না। বলিও আনি ইত্যপূর্কে তাগকত পারিলা ক্ষিত্রত ক্ষিত্রতা অধ্যয়নে বলিও আমার বিবালের পার্কি কর্তন হইছাহিল, ভথাপি ক্ষরাধার প্রতি আমার দ্ববা হিল, ক্ষেত্রত্বিভিন্ন চরিজ্ঞার উপরে আমি বিবাল করিতে পারি আই। ক্ষেত্রতা ক্ষরের কথা বুলার করে, তবে তাগকত বিজ্ঞান আধানেত ক্ষেত্রত কথা বুলার করিবাছে। জীবন-

প্রতি বরের প্রেরণে তিনি বিশুদ্ধ দরিলেন। *—নে, মি, এক পান্ধরে নরনারীপ্রকৃতি, ১৮ই আছিন, ১৮-২ শক।

Chaitanya upreared his system of reformed Vaishnavism upon the already existing basis had by Krishnamany centuries back. Yet there is some different hetween the two systems which is noteworthy. Additional figured as a lover in the sphere of religion and was often in the midst of female devotees who were fond of him. Chaitanya on the contrary, kept himself and his disciples clear of female company and influence. Existent preacted the religion of the world, of the politician and contrary white Chaitanya foculoated and practical manufactures white Chaitanya foculoated and practical manufactures. Samuel and a missionary Valuation Misson, famour all, 1877.

ব্যেন জিনি বৰিবাছেন, "ব্ৰীষ্টাল বিশুকে বাহপার লাগক ক্ষ त्कार, इसक नुष्टे निगम शहरकात्।" किमि त अविशासका, "व्यवस्य देखा बरव गाउँ, नगरियास्त्रय गराउ कावत गांधिय, शक्ष व्यक्तिक मध्या एक जाशहें कडिएकाइन। एक स्थानिक केनारक कामा उक्तिक न क्यम स्वतिकाम आस्त्रीहाकरक जानक का করিবে আনার চলিতেছে না, ভখনই নম্বীলে গেলাম ; নম্বীল हर्वेटक विरमीतामरक चालिया सम्राह समाहेगान। बुरकत चानकक रहेन, जरमहे दुक्छन हरेएक दुक्रस्य ब्यालात मध्या सामिनामः त्र जानिक किन जनत्र धरुष जानित हरेत ? त्य जानिक कर्मनान धरेक्टण धक धक कतित्रा सानित्रा कक्यथनी प्रकृत ক্সিবেন 📍 এইনেও জ্বার নহিত ভারার বিরোধ মাই, ভারারই ভাবে শরিচাণিত হইবা তিনি পূর্ণভার নিকে নমন করিবারেন, क्ल मा किमि कार्गान बनिवादकन, "बंदनर्ग मांक्क्सिक क्**ना**स्तक क्षक्र केचन ता मनविधान विधायन, देशक वर्ष त्यस्य गृह्णी। अरे गुर्वका मध्नत्र गरबा हिल। यहाँ केवा वनिवादस्य, केवातस वक गुर्न दक। वहनिन हरेएक चर्नाकरत धारे केमरतन महता दकती हिन 🖈 सम रहेड. बंध बंध जार गहेबा बाविय जा 🕆

CONTROL OF THE PROPERTY OF THE PERSON OF THE वर्षेत्र समित्राह करें। • ट्यांक्कार्य, ट्वांन गठा हाडिक क्षेत्रमें क्षांद्रियाद क्षमा नगा गृहित्तरहा संकन स्वयानीय छार প্ৰথমিক ইউৰে বিশেষ মিশেৰ বুজাৰৰ বালা। এক এক **পুৰিয় হয়তে এক একটি বয় অৰ্পণ কৰ**় এক এক পৰ্যবাদ্য ক্ষা থকা বেৰতুনাবের হার্ডে নাভ কর। এক এক জি ক্ষমৰ প্ৰতিনিধি এক এক জন বিশেষ ভাবে চিহ্নত হইগ। ৰাজ আৰু মান এক আৰু বৰ্ণোৱ সমন্ত ভাৰ গ্ৰহণ ও বিভয়ণের ভার-क्ष रेडेस । स्वथादेश्य इस्ति चार्यासन्न वड़ील ममस स्वतस्वीत আৰম্ভ সমন্ত মিলিয়া একটি বেহ। এক এক প্রেরিত হারা এক क्षकी बहुद्द भूर्गेण रहेन, नमछ व्यक्तकाहद्व विवास मयविशास भून बर्च क्षकानिक।" को उठकि मधन क्षथम क्षकातिक हम, उधनह স্বৰ্ণাত কালীশ্বর দাস "গোত্ম ও গোরাজ" নামক প্রবন্ধ প্রকাশ করিতে থাকেন। তাঁহার এরপ করিবার অভিপ্রায় এই বে, ভিনি আপনার জীবনের মূলে গোড়ম ও গৌরালকে দেখিতে পাইরা তাঁহাদের সহিত একতা সাধন করিরা অন্ত সামু শহামন গণের সত্তে ঈশবেতে এক হইবেন। ফলত: কেনুব বিশ্বন ঈশাকে আপনার জীবনের মূলে গ্রহণ করিরাছিলের, ক্রেমনি আমানের किछत्त नकरनरे निष्य निष्य जीवरनत मुख्य ग्रीरांच रव मरास्मानव সহিত ভাবের একতা আছে, তাহাকে গ্রহণ করিয়া পুরুষে ক্রীবর ও অভানা নামুজন সহ একড লাভ করিবেন, উলারতা এতের ইহাই উচ্ছেত্র। আবাদের ধর্ম অনত উন্নতির ধর্ম কোবাও সার্জ हरेंचा बीका जामारमय गरक मुखा। रकनत क्रकार क्रक केनारक

টি বাবিতে শারিদেন না, ইশার পুরবে সকল বাধু মহাত্রী जनरक राविस्मन। क्षप्रत्य वीरिया किनि कि त्यहै तरहे गांव प्रशेकक মণের বিশেষ বিশেষ ভাষকাশিকে বিলোপ করিরা কেনিলেন চু না। বে সকল ভাব পুজেচিত বনিরা পুরস্কারে সেগুনির সন্ধিকে দ্বিরা লইলেন। উদারভার বত প্রতিষ্ঠিত করিবা তিনি এই নতা-প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন :—সকলেই নিজ নিজ ভাবাহুসারে—চিত্তের গতি অমুগারে জীবন আরম্ভ করিবেন, কিন্তু ভাহাতে আৰম্ভ থাকিছে পারিবেন না; নেই সকল ভাবমধ্যে পুত্রত আছে मिथिता गुजरक केनरत्रत गरिक थक स्टेर्सन । गुजरक थक क्रेर्साई ষ্ট্ৰপার সহিতও এক হওয়া হইল। কেশৰ আপনার জীবনে ক্লিপাডে व्यवीद शूक्षा गरुन नामु महाकननगरक धनः काहात्तव व्यवनामि-नगरक अक कतिबाहित्मन, प्रश्नताः अक अविश्रीय श्रेशत्तत मात्र अक অবিতীয় বানৰ তাঁহাতে প্ৰতিষ্ঠিত হইবাছে। এক এক জন সাধুর ভাবে ভাবাৰিত তাঁহার বহুগণ বধন অপর সকল সাধুকে আত্মন্ত করিবেন, তথন কেশবের সহিত এক হইবেন, এই ভারে क्निव जाननारक बधाविम् विनाट कृष्टिक रन नारे, · क्नि ना এ ভাৰ ভাৰাত্ৰই বিশেৰ ভাব। "আমাদের বাড়ীতে সমস্ত দেব-रमवीबर भानत, नमक मिनिया अकृषि रार । अक अक दर्शनिक ৰাৰা এক একটি অন্তের পূৰ্ণতা হইল, সমস্ত অস প্ৰত্যাদের बिनात मर्विशास मूर्व धर्य क्षकानिक ।'-- व क्याव स्कन्द निवर-কার ও বাক্তিমের অভিযানের বিলোপই স্থাপন করিয়াছেন, কেন

NA THE REST OF SHEET WHEN THE AND PROPERTY BY OFFE WARRIES THE PROPERTY AND PARTY OF MINE कारान्त्रा स्थितकान्त्रे केंग्सरियाक विशा करिया शिका 13. Auffertries wann wie, Beiten Gieffinge fann व्यक्ति (एक्स क्षेत्र मा, गुनिनेटक केलाविता मावाना पान ৰৱা মুক্তৰ। কাইৰ, ধাণাৰে জো বোলবেৰ বিশেষ ভাৰই প্ৰতিষ্ঠত হুট্ৰ স্থাতে সকলের মিষন নিম হুটল কোথার ? কেলচন্ত্র क्रिय विनादक पुत्र कतिया विका रमभारत कामनादक वदावेरणन १ ना, ভিনি ঈশাকে বিধায় করিয়া দেন নাই, এক পিডা এক ভাই जिति बहुबार्ग शक्तिक कविवादका । है। श्रेट बकारा शक्तिक ছইবেন বটে, কিন্ত বিন্দুধর্ষের বিলোপ হটক, ছিলুযোগের বিনোগ হইর। না; তাহাও হয় নাই। সাধুতে কেন্দ্র অসাধুতে তেমনি क्षमार्गन हिन्तुरवान, श्रीहेश्यमं दक्षनम माधूरक क्षमार्गन । दक्षन दिन्द ७ शेरे द्यारात विरताय धक भूजरक्दे विरनाभ कवितारहरू। दक्ष विश्वन, गांधु अगांधु गकरवार अन्त आहम्मा देश समन ৰভা, তেমনি সাধু অসাধুতে পুত্ৰ আছেন, ইতাও এটা া নাধুতে পুত্র প্রকাশিত, স্বাধাত পূত্র প্রক্রা। সাধু স্লামিণু উভরেই ষ্টরারের তনর, স্থতরাং আমরা বলিতে গারি, প্রাক্তর ও প্রকাশিত প্রক্রে তিনি হিন্দু ও বুঁাই উচর বোগকে এক করিলেন । এখন সকলে দেখুন কেশৰ কেমন খ্রীষ্টের গুরু পরিলোগ করিয়াছেন। খ্রীটের निकटि धरन रक्षन रक्ष्यत्व नाहरू सङ्गाह आक्रमाराज्य वर्ग। भावता वनि क क्य बोकाव मा कवि छटा द्वनद्वत शक्ति व्यक्ताराव করা হর, গর্মের প্রতিও অভারচিম্ব করা হয়। আমরাও

नांत्र कारक बड़ी। जानि निरकत कहा ननि, जानि स्वक कैनारक वा गारेटन कर्कात्रसम्ब रहेवा वाक्किन । छप् तक तक विकास রুদি কেশৰ আৰার সহায় বা হইছেন। 'আমি শিভাতে শিভা बानाटक, ट्यानडा बाबाटक बाबि ट्यानानिटनटक' द्वीडिन करे रवानमध्यत्र नत्म क्यम ज्यापना नक्ष्मि क्रेयत्तरक, क्रेयत्र साश-ৰিগের সকলেতে' 'সকৰে আমাতে,আমি সকলেতে' এই মন্ত্ৰ সংবৃক্ত হইল, তখন খ্রীষ্ট ও হিন্দু বোলের একছে নববিধানের নববোগ পূৰ্ণাকার বারণ করিল। • এই ক্রাগনতে বে আমি শক আছে উহা পুরের অর্থে, ক্লভরাং জাবের পূর্বাদে হিন্দু ও ব্রীষ্ট বোগের একছ বাৰিত হইল। তিনি একটি বারংবার বলিয়াহেন পুরম্বের ভূষিতে ৰা বিলিলে আমরা বিলিতে পারিক না। তীহার দে অহরোক আমাদের রক্ষা করা উচ্চিত। ঘদি আমিরা স্থাবের কুণার এবার বিশিত হইবাছি, ক্লুবে শকলের ভিক্তুভিন্ন ভাল স্কুবেং এক করিবা थक अवर्ति दिन मुक्कु कित वर्षिक भाव । विक क কার্ব্যে আমরা উল্লাসীন বাঁকি,আলস্য প্রেক্তিকরি, আমানের বোর क्नक रहेरन, आसारक क्ष्मके स्वास्टरित। अठवन तकन नकरन বিলিয়াছি, তখন বাহাটে তেতাৰ আছে সেই ভাবের পরিপতি পুজবে সমন্ত সাধুগণের সহিত মিলিত হইরা, ঈশ্বরে ছিতি করিয়া चामन्ना रक्त कीवन गार्शक कति, कीवरमन्न भूर्गछा गायन किन्न ।

প্রতিধিনের উপাসনামধ্যে ও বছরের সাবন আছে,
 আবরা ইবা অন্যত্ত বেখাইরাছি। আরাখনা, গ্রাক ও সাবারক।
 প্রার্থনামধ্যে প্রধানতঃ হিন্দুরোগ; ভোতে, প্রবচনগাঠ ও বিলেক।
 প্রার্থনামধ্যে বীইবোগ বহ হিন্দুরোগের নিলন সাবিত করা।

TATESTA PATE TITAL

নবষুগের নবসংন্যাস।

'নববুণের নৰসংস্থাস' অলাকার নলিবার বিষয়। প্রথমেই বিজ্ঞাসা উপস্থিত, বজুতার বিষয়ের মধ্যে 'নববুগ' এ শব্দ কেন উল্লিখিত হইল ? 'নবযুগ' এ কি শান্তাসিদ্ধ কথা ? কখনও কি নবৰুগ হয়, না এট কালনিক ? শাজে সভা, ত্ৰেভা, দ্বাপর, ক্সি **এই চারিবৃগের উল্লেখ আছে, কোথাও** তো নব্যুগের উল্লেখ নাই। ধুগের উল্লেখ হইল কেন, তাহার কারণ নির্ণর করিতে গিরা সেখি দৰ, রজ, তম এই তিন গুণামুসাবে যুগনির্ণয় হইয়াছে। স্ছ গুণ হইতে সভাৰুগ, রজোগুণ হইতে বেভাযুণ, রজোবিমিল ত্ৰোগুণ হইতে ছাপ্রযুগ, * ত্যোগুণ হইতে ক্লিযুগ, সেই সেই গুণের লক্ষণাতুদারে নাম পাইরাছে। উপনিবদে সত্ত রজ ও তমো গুণের উল্লেখ নাই। খেতাখতরে সন্থাদি নাম নাই, 'জিল্ডণ' এই শব্দ আছে। যথন সাংখ্যদর্শনকর্ত্ত। কপিলের নাম এই डेशनियान मिथा यात्र. ज्यान व 'जिन्छन' भारत मच तक ६ छम বুঝার, ইহা বলা অযুক্ত নয়। মনুসংহিতার এই ভিন ভাৰের উল্লেখ ও উতার ক্রিয়া পরিষাররূপে উল্লিখিত আছে। বেধানেই श्वत डेलिन थाकूक, क्लिन बवि य धरे खन्यात्वत मार्नेनिक बाकाव निवादका डाहाटड अल्बब नाहे। डीहात मर्ड मन्, बन S ठम এर जिन श्रामत मामावका क्षक्र कि। यत क्रम धरे किन

^{*} ৰক্তার সময়ে বিনিঞ্জ গুণ না বলতে একটি মুগের উলেবে জুব টিমা গুণাস্মারে ভিন গুগমার উলিবিত চ্ট্যাছিল।

গুণের সামাবিদ্ধা থাকে ভত কণ সৃষ্টি হর না। ইহাদের সামাবিদ্ধা चृतिया शिवा देवसमा छैलाँदिक इटेटन स्ट्रेडि इव । अध्यात देवसमा কি । পরিমাণের অল্লাধিক্য। কোনটির পরিমাণ অধিক কোনটির পরিমাণ অল হইলে তাহাদের বোগে সৃষ্টি ঘটিরা থাকে। বর্তমান कारनद लारकदा विनादन, ध नक्न निভाश अयुक्त कद्रना। जिन अन बावात कि ? देवरानाट्य दियन वासू निख करू कहना-প্রসূত, ইহাও তেমনি। অযুক্ত কল্পনা বলিয়া কি হইবে, সকল खिन मृत थांजुरे এদেশের শাস্ত্র ও বিজ্ঞানে এই তিন खना स्नार ভিন্ন ভিন্ন নাম পাইয়াছে। এত বড় একটা অযুক্ত কল্পনা ক্ৰমান্ত্ৰে চলিয়া আদিল কেন, অবশ্য ইহার মধ্যে সত্য আছে, একটু গভীরতম প্রদেশে প্রবেশ করিলে বুরিতে পারা যায়। ভাল করিয়া আলোচনা করিয়া দেখিলে দেখিতে পাই, ইহার ভিতরে প্রগাঢ় বিজ্ঞান নিহিত আছে। সত্ব-প্রকাশ, রজ: - প্রকাশো-गुथला, लग-वाशकाण। यथन एष्टि द्य नारे, लथन मकनरे वास-ু কারে আবৃত ছিল। মনু স্টির পূর্ববিদ্বা এইরূপই বর্ণন করিয়াছেন। অধ্বকারে আবৃত ছিল ইহার অর্থ কি ? সমুদার প্রছন্ন ছিল তথন কিছুই প্রকাশ পাম নাই। এই প্রচন্ত্র থাকা প্রকাশ না পাওরা, ইহারই নাম তম। তম আর আছকার এই क्र इ भ्रशांत्र मञ्जा याका व्यक्षान हिन, जावा श्राकान भाहेतात्र ्छेन् । इहेन । कहे रव अकारनत छेना थङ। हेशहे तक । तरणा-গুণের দলে উদান সংযুক্ত। যাহা প্রছর ছিল তাহা প্রকাশ शाहेबाइ बढ यथम डेमाम टाकान कतिन, उथम तत्ना छर्गत किया क्रिश्वा এই छेगाय दवन शास्त्र शकान गारेन, जनन रमहे श्रकान मण्डन नारम अधिहित हहेगा शाहा आकान नारेबारक,

लेकार मर्था अवस ९ कल कि शास्त्र प्रविद्या निवादक, ध्वयर दनहें शक्क विवयक्षित शकाम गाँठेवात कछ क्रवाबरद रहें। कतिरक्रकः । नारकत मरशा यथन এडेब्रन क्रित्री क्रमान्दर চলিতেছে, अन्त মাগতিক শক্তির প্রক্রিরাট বধন এইরাপ, তথন সম্ব, রঞ্জ ও ভন মধ্যক কল্পনা ইহা ৰলিব কি প্ৰকাৰে ? এই দিন গুণ কৰন স্বভন্ত शास्त्र मा। मर्कतः अने जित्मत मःमिलन। दक्न मा मर्कताहै কছু প্রকাশ, কিছু অপ্রকাশ, কিছু প্রকাশোরাধ হইয়া আছে। अकारनेत्रों दक्तने रे मच अनेविनिष्टे, क्विद्वित्रों दक्तने तरका अन বিশিষ্ট, শুদ্ৰেরা কেবলই তথোগুণবিশিষ্ট একথা কিছুভেই বলিজে शिति ना । येशिता यपार्थ बाक्षण डीकात्रा मुक्छण श्रवाम स्टेटका. গাহাতে আর সন্দেহ কি ? কিছু ভারাদের ধ্যানধারণানিতে উদ্যন, इमिक धानिभावनाव छात्नित श्रकान अतः छथन । खाद्मत कछक গংশের প্রচ্ছর ভাবে স্থিতি, সত্তের সহিত রক্ত ও তমের সংশ্রব দেখা-ৰা দেৱ। ক্ষতিবগণেতে কেবলই বলবীৰ্যপ্ৰকাশ, তাঁহাদিপেতে ান্তিস্তনাথি বা ক্রমিক জানগাভ নাই,একথা কে বলিবে ? শুলের नि (करनके छामां छन बकेरन, डाहां हवेरन अकारिनिष्टे हरेबां रमना দ্রা এবং দিন দিন জানসম্পন্ন হওয়া কি কথন ভাচার পক্ষে সম্ভব ইত ৷ শাল্পে এমজুই কোখাও কোন খুণ অবিমিশ্র নাই, এইরূপ নৰ্দ্দেশ আছে। বোগাচাৰ্য। প্ৰীকৃষ্ণ গুণুসকল অবিমিল্ল ভাবে প্ৰকাশ ांत्र मां, हेश म्लंडे वाटका अनुगीलाय উল্লেখ कतियाहिन। धारे उनकरतत देवसानिक क्रिया প্রতিদিন মানবলীবনে এইরপে প্রকাশ । । जामि यथन कृषिष्ठे दरेशाहिलाम, क्ष्यन मार्गिक दिलाम, ामन बाबाट**ड मम्मात बरनावृद्धिक्ति शास्त्र क्रिन** । क्राट्य ताहे रनाउचित्रण क्रमान नारेरक गामिन। करे क्षमान नाक्सा

নির্ভিশ্ব প্রয়ন্ত্রণ। ববন অত্যন্ত শিশু ছিলাম, তবন আসার देव्हानकि द्यमन अवन हिन । आमात्र देव्हात्र निकटि वृद्धानत्त्व शांत्र मानिएक रहेक। रेक्शमिकि उपन वा रकन क्षत्र हिन, ध्यन या दक्त इस्ता हहेबाए ? श्रीयन हिन धारे क्र द्व सामात रक्षभाषि सामात्र तर्म हिन मा ; छाराषित्रक तर्म सामिर्छ গিরা আমার প্রভূত ভিতরের বল প্রকাশ করিতে হইরাছে। धारे चिल्दात वन धाकामरे रेक्टामिक । वृक्तान माल हिनवान আমার তথন সময় হয় নাই। সর্বাত্যে আমার হাত পা গুলিকে শাষার বলৈ আনিতে হইবে। সেই গুলির প্রতি আমার ভিত-রের বল প্ররোগ করিতে হইয়াছে, স্বতরাং হাত পা ছোড়া প্রভৃতি কেং নিবৃত্ত করিতে আসিলে সে দিকে আমার কর্ণপাত ক্রিলে চলিবে কেন ? শারীরতত্তবিদেরা বলিবেন বাহিরের আলোক বায়ু প্রভৃতি হইতে প্রতিঘাত ভিন্ন ভিন্ন ইক্রিনে পঁত্ছিয়া দায়ুসকলকে উত্তেজিত করিল। স্বায়ুর ভিতরকার পথ এখনও कान कतिया धुनिया यात्र नाहे, शुख्तार महे शाखिवारकारभव वन फांशांत्र मधा निवा याहेटल कानाशीन इटेशा शिक्टिल्ड । कान-গৌণ হইতেছে বলিয়া মাংসপেশীসকলের ক্রিয়া ভখন ভখনই क्षकान भारे एक मा। एक रण जबन छ बन है क्षकान भारे एक एक ना जांश नरह, बायुत मधा निता भथ थूनिए जिल्ला का किया के बाता त्य जरून भाष्मीय भनार्थक महादेवा नित्छ इटेक्ट्राइ, छाहानिरगट । व्यक्तिपाक्ति कडक वन कर (absorb) शाहेरहरू, त्व अविश्व वन रमनीटड निया भेंदहारेन छात्रा प्रसंग दनिया रखनमानि উত্তোলনে অতি অৱই সাহায়। করিল। এ অবস্থার প্রতিবারে चामात किछतकात रह चरिक शहिबादन खादान सा कहिबा चात কি উপারাপ্তর আছে ? কালে ববন সাবুসকলের পথ বুলিরা নেল, বাহির হইতে আগত বনসমূহ স্বজ্বলে গভারান্ত করিছে লাগিল, তবন আর চত্তপদানি তুলিতে আমার প্রবন্ধের প্ররোজন ইইল না। ইচ্ছাশক্তির প্রথম দে দিকে মর অর নিকে প্রজ্বশক্তির প্রকাশের করে নিবার অবসর হইল। বাউর, শরীর-ভত্তানি কঠিন বিষয় নাইরা আর সমরক্ষেপ প্রোজন নাই। বাহা বলা হইল ইহাভেই সত্ত, রুল ও তমোন্তণ বে একটা অবুজ্ব করনা নর ভাগা প্রমাণ্ড হইল; কেন না প্রচ্ছের,শক্তিপলি তমোপ্তপের,ইচ্ছাশক্তি রলোপ্তপের, সহরে শক্তিপলি স্বানার প্রানার আমানের নিজের শরীর, মনোবৃত্তি প্রবং সমূলার স্বগতে এই তিন প্রপের ক্রিরা ববন প্রকাশ পাইতেছে, ভবন নাম লইরা বিবাদ করিরা কি কল ? আমরা নর বলিলাম প্রকাশ, প্রকাশেল ব্যুক্তা, অপ্রকাশ, প্রকাশের ক্রিরা কি কল ? আমরা নর বলিলাম প্রকাশ, প্রকাশেল ব্যুক্তা, অপ্রকাশ, ওাঁহারা বলিনেন সন্ধ রুল ও তর্ব, বস্তুন্তঃ তো একট হটল।

'মবযুগ' শব্দের প্রয়োগ সিদ্ধ করিছে গিরা আমার এতঞ্জনি কথা বলিতে চটল, অথচ এখনও সূল বিষয়ে প্রছায় নাই। সভা, জ্বেভা, ধাপর কলি এই চারিযুগ সন্ধ রম্ভ ও ত্যোগুণের ক্রিয়া এই রাজ্য আনি উল্লেশ করিয়াছি। এ যে আমার নিজের মনঃক্রনা নর শাস্ত্রসিদ্ধ ভাগবডের বাদশক্ষর ভাহার প্রমাণ #।

প্রভাষতি বলা সত্তে মনোবুথী ক্রিয়ানি চ।
 ভলা কৃত্যুগং বিবাহে আবে ওপলি বক্তিঃ
 ছলা কর্ত্বপু কানোবু ভজ্জিতিতি গেহিনায়।
 ভলা বজোরভিত্রিতি জানীহি পুরিমবু।
 ভলা বজোরভিত্রিতি জানীহি পুরিমবু।

मछा द्वाडावि युन मचाविश्वर्थिव नक्तन बाबा निर्मेष्ठ इत। कान अक व्यवक्रकाहादक दर्भन किंद्रका नाहे। य नगरत दर खन नवनाबीटक शकान नाव. ट्रावे खरनव बाता द्रि प्रमायक द्रावे यहा बिनवा निर्वत्र कतिएक इटेरव। आमि शुर्खिटे विवाहि, खनममुक কোৰাও অবিমিল থাকিতে পারে না, স্তরাং সকল সময়েই সকল श्वाप्त मामन थाकित। ज्या त्य मगरत त्य श्वापत ज्यामान অধান বাজিগণের মধ্যে প্রকাশ পার, তত্ত্বারা যুগনির্ণয় করিতে ছইবে। প্রধান ব্যক্তিগণ বলিতেছি : এই জন্ত যে, তাঁহারাই যুগের व्यवहिक। मान इटेट्ड शाद्य, हेटा आमात निष्कत कहाना। এ যে কল্পনা নর তাহার প্রমাণ শাস্ত্র। বাপরবুর্গের অন্তভারে কলির প্রবেশ। দাপরমূগে রঞ্জ ও তম এ ছই গুণের ক্রিয়া ছিল। স্থাপরের শেষে তমোগুণ প্রাধান্ত লাভ করিল, এভক্ত তমোগুৰপ্ৰান কলি প্ৰবেশাধিকার লাভ করিল। যগ্ৰ सनगमात्मत मीर्यामाल विक तालात मामनाधीन काका काजवक একটা আখ্যারিকা দারা বিলক্ষণ প্রতিপদ্ধ করিয়াছেন। রাজা যদ গুণবিশিষ্ট প্রজাও যে ভদ গুণবিশিষ্ট হয়, ইহা আর বলিবার कारणका ब्राट्स मा। जामारत्व रत्नर्स असम कांत्राव वावशास्त्रत कि প্রাকার পরিবর্ত্তন হটয়৷ যাইতেছে ইচা আমরা সকলেই প্রভাক করিতেতি। ভাগবতের আশারিকাটী এই :--পাশ্রীরের সিংহা-

नमा (लाख्यमध्यादा सारामारकाश्य वरमदः । कर्यनार शांत्र कानानार वालदर कश्यक्षयः ॥ यहा सारामुक्त कला निष्ठा दिश्मा निवासनम् । (लाहका स्वाहत कर हैक्कर म क्लियाममः वृक्ष ॥ काः ३२ स्, ० व. २१--०- (ब्राकर्

সনে উপনিষ্ট ভথপোত্র পরিক্ষিৎ তাঁহার রাজে; কলির প্রাবেশ इहेबारक देश अवन कविया छवित्रवार्थ निविधाय वाहित इन। नानारम्य यह कतिहा कर्जार्य कतिराज्यान, हैजानगरह श्रियाधा दर्शिष्ठ शहितन, अकी शांछी द्यानन कत्रिक्टाइन, आब अक भारत विष्ठत्रभौग तुरुष छोहात्क मासूना मिट्टह्म। এक सम वृष्य (পভিতশুছ) এই গে। মিগুনকে নিষ্ঠুবরণে ভাড় । করিভেছে। পরিশেষ জানিতে পাইলেন, গাভী পৃথিবী, বৃষভ ধর্ম, বৃষল কলি। তপ, শৌচ, দয়া, সতা ধংশার চারি পাদ। তিন পাদ বিনষ্ট ছইয়াছে, এক পাদ সতা অবশিষ্ঠ আছে। এই এক পাদ বাহাতে বিনষ্ট হয় তাহারই ফল কলি তাঁহার তাড়নার প্রবৃত্ত। এতদর্শনে পরিকিৎ যথন পড়েগান্তোলন করিয়া কলির ববে উলাভ ভইলেন. ভগন সে ভাঁহার শরণাপয় হইল, কোন কোন স্থানে সে ভাঁহার রাজ্যে স্থিতি করিলে, ভজ্জন্ত স্থান যাজ্যা করিল। প্রথমতঃ ডিনি माण्डारेषा, मनाभाग, ध्यमताती, ध्यर शक्षतथञ्चाम, जरभन्न भूमताब প্রার্থনা করাছে অর্থ ভাষার বাদভান নির্ণয় করিয়া দিলেন। भारतिकट्छत नगरत दकन कलि धरे गकल छान अधिकात कतिता • চিধ্ৰ নিই বাদ করে। বৈদিক সময়ে দাত্রনীড়া দর অধ্পপ্রভাব ৰাখেদে প্ৰান্ত বৰ্তি আছে। যে সকল বাজি এই সকল অংশ অভিক্রম করিয়া ভগবংপরায়ণ চন, তাঁচারা কলির প্রভাষাধীন महत्रमः कांश्वाह क्रमम्माद्यत्र गौर्याप्तर दिल। छेत्राक्रकाच्यी विद्मावतः अवशायाक जानवर धहे मकल व्यनमा शहेतक विवक थाकिएक छेल्रान निवाहत्त। এक्ट ममर्य माखिकाणि क्रांबालक वाकिननरक चाल्य कविया युगनकन चरहान करत, हेराहे नाख्य State :

সম্বরণ কালাকে বনে এবং ভাষার অভ্যান কাল কোল সমরে হয়,
ইবা দেখা নিভান্ত প্রধানন। শালে কালকে বুগ ও করে বিভক্ত
করা হইবাছে। স্বালি গুণাস্থারে যেরূপ যুগ নিলীত হর,
করে সেই প্রকার নিশীত হইবা থাকে। স্তরাং এ হুই ভিন্ন
নামে উক্ত হইলেও বন্ধতঃ এক। ভিন্ন ভিন্ন ভারে ভিন্ন
দেবতাদিনির্গর করিতে গিয়া উলিখিত হইয়াচ্—

महोर्श जू मदस्याः शिकृताक विश्वमारक ।

এক কল গিয়া আর এক কল বধন প্রবুত্তবৈ ভাচার মধাৰতী কালে (যুগদ্ধি, কল্লদ্ধিতে) সরস্বতী ও পিতৃগণের প্ৰভাৰ উপস্থিত হয়। এই মধাবৰ্ত্তী কালে সন্ধিকালকে অভিক্ৰম कतियां कक्कांस्टरत वा गुंगास्टरत शायन कतिवात डेनरमाणी स्व नकन নৰভাৰের অভাদয় হয়, সেই নবভাৰ লক্ষ্য করিয়া বক্তার বিষয়-मध्य) 'नवय्ल' मक निविष्ठे ब्हेशाएक। এই नवयूर्वत अक्रुमित्र मत्रश्रको व्यर्थाद कानहर्का এवः পिতृशन व्यर्थाद भूर्सपूर्ववान व्हेटक বে অধ্যাত্মসম্পদ্ লাভ চইয়াছে তাহা অবশখন করিয়া চইয়া बारक। जामना (य नमात्र वान कतिएक्कि, अ नमात्र नम्बक्ती व्यर्थार विशाहकी जर शिकृशशित स लाकृती हैक व्याप्तता मकामह प्राथित गारेतिक । विष्म करेति सामिकिं। अपान खादन कवित्रा कि य मामाबिक विश्वत खेनश्विक कवित्राह अन्त দে বিপ্লবে প্রাচীন সমাজ যে যায় যার কর্টয়াছে তাহা আর আষল্পা क्य ना कानि ? भाषाका कारकवान (Agnosticism) এएएए चानिया लात्कत मनत्क जनवम्क्रमायमना इटेटल विव्रक्त कविवाद्य । दीहाटक सानिएक भारत दाव नां, कीहात सावात भूका वसना कि १ জিনি কোথার আছেন, কিরুপ তিনি, কে আনে ? আমরা ওাঁচার স্বৰম্ভতি করিলে তিনি কি আমানের থোঁল লন ? জীবরে বিশাস ট্ৰিরা গিরা আবার নৃতনভাবে ঈশবে বিশ্বাস স্থাপিত না হইলে **(मर्म्मत पूर्व** जिवादन स्ट्रेटन जाहात मञ्जावमा माहे। अपि मञ्जीर्ग কাল (Transitory Period), একাল অতি ভয়ানক। ধর্মের সকে সলে নীতির বন্ধন লিখিল হইয়া পড়িয়াছে। লিক্ষিত যুবক-ग्र शांशास्त म्याविद्वारी कानक श्रकांत्र कम्बाहत्त्र कतिराज्यह, व्यथित वाहित्त जाहाता ममास्क्रत स्वत् विता शतिहत निट्यह । फाराम्ब क्लोहादत नीकि मझहालत, ममश्र काकि मिलावामी **এই अन्तान घनीकृठ हरेग्रा आमिएउए । এक अन अधान हेश्यूअ** (Macaulay) अत्मक निम পूर्व्स अतम्भी वर्गपाद मिथा। बाही व्यथनात्म व्यथनामश्रक कतिहाद्विन, व्यात एक निन विश्वविमानद्व অধান পদাক্রচ ব্যক্তি (Tawney) এজাতিকে মিথ্যাবাদীর চুড়া-मन (Monumental liar) जाना जर्मन कतिहासन । सिन সংস্কৃতাভুৱাগী উদারচেতা হইয়াও সমগ্র জাতিকে এরণ অপবাদ-গ্রন্থ করিলেন কেন ? তাঁহার সংস্কৃতাধাপিক কোন কালে মিথা। বলেন না, এই জাঁহার বিশ্বাস ছিল। তিনি যখন একটা পারিবা-রিক চর্যটনাস্থকে মিথা৷ বলিয়া উচা গোপন করিলেন তখন সেই উतात्रहाला भाषाचा अधिक वित कतिरामन, वथन आयात अधिक মগালর মিখ্যা বলিতে পারেন, তখন এমেলে এমন ব্যক্তি কেছ थाकिएक भारत ना, त्व वाकि मिला कथा बर्ल ना । विमाहकांब তো এইরপ ধর্ম ও নীতির বিপ্লব উপছিত, অক্ত বিকে কাল-माश्रात्का वाननिकामत्वत त्माशहे त्मक्या निक्किनत्वत मत्बा वक्ष वाक्षित्रा छेडियाट्य । जामारमय स्मर्भन दमस्यास, अधानम

অভুল্য ভাষাতে সন্দেহ নাই। পাশ্চাভাপপ্তিভগৰ শভমুৰে উলাই প্রশংসা করিতেছেন। কিন্তু এদেশের কোন শিক্ষিত যুবক বেল-त्रवाश्व व्यवाहन करतन, अवाद्यानांकृतीयन करतन, भूकं भूक्यार्गंब স্থায় প্রবৃত্তিবাসনাজ্যপূর্মক প্রতিদিন ব্রন্মে চিত্তস্থাধান করিয়া বাকেন 📍 মূণের প্রাশংশায় পিতৃপুরুষগণ তুষ্ট হইবেন, না তাঁহারা यादा दिलन, छाहा हहेत्न छाहाता मद्धहे हहेरवन। आमेत्रा ভাঁছাদের কুপুত্র হইয়া কুলে কলঙ্ক আনিয়া তাঁহালের প্রিরপাত্র हहेत, हेहा कि मुख्य १ मूर्थ जीहारानत नाम नहेन्रा यनि जीहारानत मछ ना इहे, छाडा इहेल विष्मनीयश्ने वा त्कन आमानिशतक विकाशमान कतिरान ना १ विमानिकी कडेक, जायक विमानिकी হউক, পিতৃপুক্ষগণের গুণবাদ বাড়্ক আরও বাড়্ক, কিন্তু বিদ্যাচন্তি অবিদ্যার পরিণ্ড না কর, পিতৃপুরুষগণের গুণ্বাদ सोबिक मा इस, अमिरक मृष्टि जांचा एक। रमनीय मकन वास्क्रिय नरकहें कर्डेंबा। विमानिकी छ निज्नुक्वशत्नव खनवाम कि প্রকাবে ভারতের গৌরবের হেতু হইতে পারে, এখন ভালারই আলোচনা করা হাটক।

'নবযুগে' সমাজের অগ্রনীগণমধ্যে এমন কি নবভাব প্রবেশ করিয়াছে বস্থারা ভারতের গৌরবের পুনক্ষার হইতে পাঙ্গে, প্রথন ভাহাই আলোচনা করিছে প্রবৃত্ত হই। এ 'নবযুগের' নিব ভাষ 'নব সন্নাস।' শ্রীমজ্জের একজন যুগপ্রবর্ত্তক (epoch-makin) মহাস্থা। বিনুধ্য ক্রম্মজ্ঞানের পুনক্ষার ভাঁহা কর্তৃক সাধিত হইল। ভিনি পরিকার করিয়া সকলকে বুঝাইলেন সন্নাস বিনা ক্রম্মখ্যা অর্থাৎ ব্রহ্মে স্থিতি কথন হয় না। ভিনি বে সন্নাসের প্রকর্তন করিলেন, ভাহাতে গুহে থাকিয়া কেই সন্নানী ইইবেন

छाशात मछावना नाहे, तकन ना छाशात मछ अहे, शहर थाकि।लहे क्कांचुक्रीम क्रमविद्यादी, क्कांचुक्रीम क्रिए रंगरनरे बाउठा हाक्का অবক্সন্তারী। এরণ অবহার নিরত ব্রহ্মচিয়া ব্রহে হিভি কি क्षकाद्र मञ्जर ? डीहांत मटक क्षतक व वाक्षवका विवरमधानी क्रिलम मा विविधियागवाभी क्रिलम। वैश्वां विष्णामधी काहारमत त्राम चिकि हरेबाह, डीवाबा ग्रहणाशा खाळनमळ बर्चा. बाहाबा विविधित्रवामवागी छाहाबा वक्षणानाश्नीमनभवावन, शहर বা বনে স্পাচারে বাস করিরা অপরিতার্ভকর্মা। খ্রীমচ্ছেরের স্ত্ৰিক্ষাতালৈ ও সভালের মত ভাঁছাকে কোন কোন আহাংগাল কটাক্ষলে নিকেপ করিয়াছে। এমবলভাচার্যা তাঁহাকে 'স্মান পাষ্থের' প্রবর্তমিতা বলিয়া অতান্ত বিকার করিয়াছেন। এরপ কঠোর বাকো তাঁহাকে আক্রমণ করার আমি অনুমোদন করি না, এজন্ত গীতাভাষো আমার বলিতে হইরাছে জীমচনত্ত্ত এরূপে নিন্দা করিয়া শ্রীমন্ত্রত আপনাকে পঞ্জিমগুলীতে নিক্লভ করিয়াছেন। সে কথা যাউক, সমস্ত কর্মজ্যাগকধন হইতে পারে না। সন্নাসীর ভিক্ষাচর্য্যা, অঞ্গরব্রতাবলম্বীর অশন-চর্বাণ গলাধ:করণ, এমন কি মানসিক চিন্তা ও অভুগান এ সকলই कर्षप्रां शना যোগাচাৰ্যা এজন্তই অনুগীতার বলিয়াছেন বাহিরের কর্মত্যাগ করিয়া যিনি নিজিয়, তিনিও জিয়াবান। কেন ना मन दक्षि हक्तापि है खित्र नकरण निवं छैरिएक कर्य अद्व রাধিয়াছে: কর্মের অপরিহার্যাত্মর্শন করিয়াই তিনি বলিলেন 'বোগ: কর্মস্থ কৌনলম' কর্মেতে কৌনলই বোগ। এ কৌনল কি ? কর্ম করিয়াও কর্ম না করা। কর্ম ৰা করা কি ? কর্মেন্ন (कान क्लाकाका ना अथा। क्लाकाका ना अथित कर्ब

করিতে প্রবৃত্তি হইবে কেন ? প্রবৃত্তি হইবে ঈশ্বরাস্থ্রাগে।
ঈশ্বরাস্থ্রাগ নিরাকাজ্ঞ ব্যক্তিকে তাঁহার আদেশপাশনে নিছড
প্রবৃত্ত রাশিবে, স্থতরাং আদেশপালনভির কর্মে প্রবৃত্ত হইবার
ক্রার কোন কারণ বিদামান থাকিবে না। এইরূপে এই ভূমির
উপরে 'নব্যুগের নবসয়াস' নিরাপদে অবস্থিত। 'নব' এই
শক্ষরারা শ্রীমছেকর প্রবর্তিত সয়াস হইতে ইহা পূথক্ হইডেছে,
অবচ বোগাচার্য্যপ্রদিষ্ট পথে এই সয়াস হাপিত হওরাতে প্রাচীন
ভূমির সহিত ইহার সম্বন্ধ রক্ষা পাইতেছে। যোগাচার্ব্যের নিসৃত্ত্
দল্পের ভাব অমুবর্ত্তন করাতেও এ সয়াস 'নবসয়াস' নামে অভিহিত হইবার যোগা।

কিছতেই সম্ভব নহে। ভাগৰত ভগৰদত্বাগজনিত প্ৰবৃত্তি-বোগের প্রকাশক হইলেও তাঁহাকেও বলিতে হইরাছে, 'সন্তামাত্রং নির্বিশেষং নিরীহম।' এক সন্তামাত্র, সন্তা ভিন্ন অঞ্চ কোন বিশেষ ককণশৃত্ব ও নিজিয়। ত্রহ্মকে সভাষাত্রে ধারণ করা আমরা ত্রন্ধােগের প্রথম সোপান বলিয়া গ্রহণ করি। ত্রন্ধসভাতে मन महजार शिक्ति ना कजिएन द्यांग कथन निवां भर हम ना। ব্রন্ধের সহিত জীবের কি সম্বন্ধ, জগতের কি সম্বন্ধ, এ সকল চিন্তা করিলে সভামাত্তে ভাঁহাকে ধারণ করা হর না। স্রষ্টা পাতা পিতা মাতা ইত্যাদি সম্বন্ধ, দ্যামর প্রেম্মর ইত্যাদি গুণ মনে উপস্থিত হইয়া সন্তা হইতে মন বিচলিত হইয়া যায়,সেই সকল সম্বন্ধ ও ওণে উহা আকুষ্ট হইয়া পড়ে, ইহাতে বস্তুতে চিত্ত নিশ্চল হট্মা স্থিতি করে না। শ্রীমছকর ব্রহ্মবস্তুতে নিশ্চসভাবে স্থিতির ক্তমত্ত ক্লাড্জীবসম্বন্ধৰ্ণজ্ঞিত স্ত্ৰামাত্তে আমাদিগের নিকট উপস্থিত করিলেন: এইরপে উপস্থিত করিয়া নিবৃত্তিযোগের পরাকার্চা দেখাইলেন। আমরা যদি প্রারম্ভে তাঁহার এই পথে ना हिन, देवकाव स्थामात्मत स्थानत्याहत रखन समञ्चत रह । स्वरुधत वर्डमान यूर्णव नाधकनात्यवहे नाधनावर् भक्रतव अञ्चर्वा কর্ত্তবা। পতঞ্জলি সমুদার চিত্তবৃত্তিনিরোধ করিয়া আত্মার আত্মাতে স্থিতি শিক্ষা দিয়াছেন, এমড্কের সেই স্থাল একেতে স্থিতি শিক্ষা দিয়া মহাপরিবর্ত্তন আনর্থন করিয়াছেন। ব্রক্ষসত্তাতে ভূবিরা গিরা আর সমুদায় বিশ্বত হওয়া শ্বপ্রবৎ উড়িয়া যাওয়া শঙ্কপ্রপ্রতিষ্ঠিত। এ নিবৃত্তিযোগ কিছু সামার্ছ নহে।

সভার ভিতরে ডুবিলা গিয়া সম্পার ভূলিয়া যাওয়া, এই অবস্থার ফি সাধকের চিরদিন স্থিতি হয় ? বাাসপুত্র শুক তো নিবৃত্তি- বোগের পরাকাষ্টা লাভ করিয়াছিলেন, তিনি কি চিরদিন এইরূপে ছিলেন ? তিনি প্রব্রলাবলম্বন করিরা গৃহসংসারপরিত্যাগ করিলেন, হিমালর অতিক্রম করিয়া মেরুপ্রদেশে গেলেন, আর কখন পিতার নিকটে প্রভাবর্তন করিবেন ভাচার কোন थाना हिन ना. अथि एनहे निर्कान अपित विश्वन औहात रयान গভীর হইতে গভীর হইল, তখন দেই ব্রহ্মসন্তার ভিতর হইতে বে স্বর্নসোন্দর্যা প্রকাশ পাইল, তাহাতে ভাঁহার চিত্ত छगवनसूत्रात विकिश हहेन, अनस अधिमर्गन वाकून हहेन, ভক্তি আসিয়া তাঁহার চিত্তকে অধিকার করিল। যিনি সকল ক্রিয়া হইতে বিরম্ভ হইয়াছিলেন, এখন ভগংদগুণকীর্তনে ভাঁহার চিত্র চঞ্চল হইল। এ অবস্থায় আর তিনি নির্জনবাসী হইয়া থাকিতে পারিলেন না, পিতার নিকটে প্রত্যাবর্ত্তন করিলেন, ভগবল্লীলা প্রধান ভাগবতাধায়ন করিলেন, পরিকিং সলিধানে ঋষিগণের সভার ভগবানের লীলাবর্ণনে প্রমন্ত হইলেন। এখানেই নিবৃত্তিযোগের পরিপাকে প্রবৃত্তিযোগের আরম্ভ। নিবৃত্তিযোগকে মূলে রাখিয়া প্রবৃত্তিযোগে সম্পন্ন হওয়া 'নব্যুগের নবসন্নাস'। নিবৃতিযোগ ছারা যাহার চিত্তনির্বিকার হয় নাই, বাসনাশৃত্ত হয় নাই, ত্রন্ধ বিনা যাহার অন্ত বিষয়ে রতি আছে, সে ব্যক্তি **এই প্রবৃত্তিযোগে কথন অধিকারী হইতে পারে না। এই** নবসন্নাদের অর্থ প্রথমে সমস্ত ত্যাগ করিবা আপনি নির্বিকার इहेरव, अध्या 6िख द्वानन कतिरव ; विवस्त्रत मस्या वान कतिया চারিদিকে সংসার বারা আবৃত থাকিরাও তল্পধাে এমনই ভাবে श्विष्ठि कवित्व (यन मःमाव नाहे, विवय नाहे ममूनाम উड़िया निवाद. अक अक्ट बार्छन। यथन अहे जाव निक रहेन, बामात बनियात কিছুই থাকিব না, তথন ব্ৰফের আদেশ হইল, এখন যাও সংসারে ব্লী পুজ্ঞ কল্পা প্রভৃতিকে এই পথে জান, তাহাদের সঙ্গে মিলিত হয়। জামার সংসারনির্মাণ কর। সর্গাসশব্দের অর্থ কি । জামি নিযুক্ত হইরাছি, সংসারের অতীত ইইরাছি, আমার আবার সংসার কি । ইত্যাদি ভাবও জার একণে রক্ষা করিবার অবকাশ ভগবান্ তাহার রাখিলেন না, দশ জন সংসারীর নাায় সংসারের মধ্যে বাস করিতে তিনি তাহাকে আদেশ করিলেন। ভগবান্ যথন তাহাকে সংসারে বাইতে আদেশ করিলেন, তথন তাহার বিক্লছে চিরদিন নির্ত্তিপণে থাকিবার নির্দ্ধিপ্রকাশকরা তাহার পক্ষে আত্মাতিমান, স্কুতরাং সে অভিমান পরিত্যাগ করিয়া তিনি সংসারে ফারেলেন। একালে যে সকল সাধক বাহিরে একদিনের জনাও সংসারতাগে করেন নাই, চির দিন সংসারমধ্যেই আছেন, তাহারাও প্রথমাবস্থার সংসারকে বন করিয়া লইয়াছিলেন, তত্মধ্যে নির্ণিপ্র-ভাবে স্থিতি করিতেছিলেন।

বনন্বিধয়মধোহণি ন বসভোব বৃদ্ধিমান্। সংবসভোব হৃক্দিরসংস্বিধয়েহণি ॥

"বৃদ্ধিমান্ বাক্তি বিষয়মধ্যে বাস করিয়াও বিষয়েতে বাস করেন না। ছর্ক্দি বাক্তি বিষয়সকলমধ্যে কেবল অসং বিষয়-গম্বেতেই বাস করে।" এই নাারাছ্সারে তাঁহারা অনা দশজন দংসারীর ন্যার অস্থিবরে ছিতি না করিয়া বিষয়মধ্যে থাকিয়াও বিষয়েতে বাস করেন নাই, ব্রহ্মকে সইয়াই সংসারারণো বাস করিয়াছেন। এ বিষয় আমি এবারই অনা বক্তায় বিভৃত বর্ণন করিয়াছে, এথানে সে বিষয়ের আর পুনক্লেথ না করিয়া অদ্যক্ষি বিষয়াই ভাল করিয়া পরিক্ষ্ট করিতে বহু করিব। বির্তিবার হার। অন্য বাসনা নিবৃত্ত হইয়া ভগবন্ত ক্রপ আর্তিবালে হাঁহার প্রবেশ হইয়াছে তাঁহার আর বিপং-ক্রেশ-ত্রংখ-রাশির প্রতি কিছুমাত্র দুক্পাত থাকে না, তিনি এমনই ভাবে কিমারের হইয়া সিয়াছেন যে, ভগবান্ তাঁহাকে কট পরীক্ষার ভিতরেই ফেলুন, ছঃথযন্ত্রণাই দিন, কিছুতেই তাঁহার মন বিচলিত হয় না। বরং তিনি বলেন, "আমার প্রতি, প্রভেণ, তোমার কি দয়া! আমার সব গিয়াছে ভাহাতে আমার কি ৫ তৃমিই তো আমার সব হইয়াছ।" ভক্তের মুখের কথা এই—

দিশতু স্বারাজ্ঞাং বা বিভরতু ভাপত্রশ্নং বালি। স্থিতং হঃথিভমলি মাং ন বিমঞ্চু কেশবং স্বামী॥

"তিনি আমায় স্বারাজ্যই দিন, বা তাপত্রই দিন, সুখেই রাখুন, বা ছঃখেই রাখুন, কালভয়বারণ গুভুবেন আমায় পরিছিল না করেন।"

ক্ষেণীপভিত্মথলৈক মকিঞ্নতং নিভাং দলালি বছ্মানমথাপমানম্। বৈকুঠবানমথবা নরকে নিবালং হা বাহুদেব মুম নান্তি গভিত্যুদ্ভা।।

"আমায় পৃথিবীপতিই কর, বা একমাত্র অকিঞ্চন বর,প্রতিদিন বছ মানই দাও বা অপমানই দাও, বৈকুঠে রাথ সুন্তরকে রাথ, হা সর্কান্তরাত্মা, তোমা বিনা আমার অন্ত গতি নাই।" বাঁহার চিন্ত এইরূপ ভাষাপর হইয়াছে, তাঁহার আর কিছুতেই বিকার হইবার সম্ভাষনা নাই। তিনি সংসারে সাধারণ সংসারীর ক্লার বিচরণ করেন, তাঁহাকে কেহ চিনিতে পারে না। ভগবস্তকি-ধন অতি সাবধানে তিনি লুকাইয়া রাধেন। কি কানি বা পৃথিবীর চকু তাহার উপরে পড়ে এ ক্লান্ত তিনি অতি সাবধান।

गराचा कविरतत नवस्त जानात्रिका आह्न, यथन जिनि महानाधू বলিয়া সর্বত্র থাতিবাভ করিলেন, লোকে তাঁহাকে সন্মান দিতে লাগিল, তখন তিনি তাঁহার দেই খ্যাতি লুকাইবার ভক্ত একটা বেল্লার হাত ধরিয়া প্রকাল পথে বেডাইতে লাগিলেন। মাধবেক্ত পুরী যে সমরে বুলাবনে ঘাইতেছিলেন, তথম প্রিমধ্যে এক দেববিপ্রহের সলিধানে স্বীরভোগ দেখিয়া বাসনা করিয়াছিলেন, এই কীরের স্বাদ পাইলে এইরূপ কীর আমার সেবিত বিগ্রহকে দিতাম। পরক্ষণে তাঁহার মনে এই বলিয়া ধিকার আসিল ক্ষীরের স্বাদগ্রহণে তাঁহার লোভ হইয়াছে। তিনি এক বৃক্ষতলে গিয়া শয়ন করিয়া রহিলেন। রজনীতে পূজারী স্বপ্ন দেখিয়া উঠিয়া বিগ্রহের ধড়ার নিমে একথানি ক্ষীর পাইলেন। তখন চিৎকার করিয়া তিনি বলিতে লাগিলেন, "কোণায় রইলে মাধ্বেক্ত পুরী, তোমার জন্ম গোপীনাথ ক্ষীর করেছেন চুরী।" তিনি ক্ষার ভোজন করিলেন বটে, কিন্তু রজনী থাকিতে থাকিতেই তথা হইতে প্লায়ন করিলেন। চৈত্রচরিতামুতের রচয়িতা ইহার এই কারণ নির্দেশ করিয়াছেন, "অভিনানভয়ে পুরী যায় ललाहेशा।" वास्त्रिक क मकल व्याथाधिका कहे (मथाहेशा (मग्र. ভক্তগণ আপনাদের ভক্তিসম্পদ্ জনচকুর অগোচর করিয়া ब्राविष्ठ नर्कमा यक्तान्। এ मिर्ग बरनक माधक এই अन्न ब्रव्ध-दिन्धात्र करतन, कथार वाहिरत अमन द्वर्म थारकन, याहारक लाटक छै। शामिशक भागन मत्न कतिया थाक । कुकाम वमशक ভাগবতে বর্ণিত আছে যে, স্ত্রী ও বালকেরা পাগল মনে করিয়া उाहात गारा पुना निरक्षक, निष्ठीवननिरक्ष कतिर १ छ। धकारन व्यक्त कृत कतिवाद किছू धारमांकन मारे। সংসাतीत दवटम मश्मादत

বাস করিলেই যুখেই। অঞ্জ কণ্টাচরণ নিষিত্ব, কিন্তু এখানে কণ্টাচরণ নিষিত্ব নহে। পাশ্চাতা পণ্ডিতেরাও এ বিবরে স্মতি দেন। কন্ট বলেন, আপনার উদরপূর্ত্তি বাহাতে হর, তরাত্র আপনার অঞ্চ রাধিরা পরার্থ সম্পার দিতে হটবে। ভাগবতও দেই কথাবলেন,

> यांविश्व द्वाक अर्थेश कांवर यहर हि त्वहिनाम् । व्यविकः त्वाकिकरक्षक म त्वरमा मन्मर्गक ॥

"বে পরিমাণে জঠরভরণ হর, দেহিগণের তৎপরিমাণে অধিকার। এতদপেকা অধিক যে আপনার বলিরা অভিমান করে, দে বাক্তি চোর,দভের বোগা।" মিল কমটের এ মতের প্রতিবাদ করিরাছেন। তিনি বলেন, সর্কান্ত পরের জন্ত দিতে হইবে. আপনি কিছু ভোগ করিবে না, ইহা ভারদিদ্ধ নহে। প্রত্যেক ব্যক্তি সংসারে সৈনিক পুরুষের ভার বাস করিবে। হটতে অনসর্কালে যথেচ্ছ সম্পাদ ভোগ করিবে, কিন্তু যাই त्रगास्त्रती वास्त्रिया डिप्टिंग्त. त्काथाय धाकित्व स्त्री शृक्ष शतिवात. কোথার থাকিবে সম্পদ, তথনই সে সকল ছাড়িয়া বুদ্ধে নির্লিপ্ত পুরুষের স্থায় চলিয়া যাইবে। স্পেন্সার বলেন, পরার্থ সমুদ্ধয় विश्वा त्य वास्क्रि क मःमारव मर्जाकाशी इटेटक हात. साश्रीक तम मर्कजानिय किइए उरे तका भारेत ना। तकन ना मरमात मर्कजानी शिधिक शाहेत्व काशांक अमनहे कतिया नक्त शाशाहेत्व त्य. ভাহার সর্বভাগিত কিছতেই দাভাইবে না। কি জানি বা महामिलक वह, अबन्न महामित शक्त चित्र में मित्रम । इक्रम मरश्रामी अक्रब दान कत्रित कि क्यानि वा প্রতিযোগিত। উপস্থিত হয়, শিবাসংগ্ৰহে প্ৰবৃত্তি ক্ষেত্ৰ, এ কাৰণ চলন সংস্থাদীৰও

একত বাস নিধিক। নবসুগে নবসংস্থাসী নবীন অবচ্তবেশধারণ করিবা সংসারীর ভার সংসারে বাস করিবেন; অথচ
অন্তরে সর্কান একে স্থিতি করিবেন। ইহা কিরুপে সম্ভব হইতে
পারে, তাহা এক বার দেখা ঘাউক।

পূর্বকালে জনক প্রহলান প্রভৃতি ঈশরসাকাৎকারের পর তাঁহার আদেশে সংগারে থাকিয়া রাক্সাপালনাদি গুরুভারের কার্যা-নির্কাহ করিয়াছেন। রাজ্যাদিতে তাঁহাদের আপনাদের কোন প্রয়োজন ছিল না, ঈররের আদেশপালন কেবল উচার উদ্দেশ্ত हिल। दाबारन जालनात तिवात जन किहुरे नारे, दकवन প্রভুর আদেশপালনের জন্ত সকল, সেখানে বিষয় ছারা মনের विकात किছूতেই इव ना, निर्किकात हिटल माधक मःमारत विहत्रन করেন। এই আদেশপালনজন্ত সংসারে স্থিতি, সংসারের স্কুল প্রকারের কর্ত্তবানির্নাহ, ইহা প্রবৃত্তিযোগের অন্তর্গত। স্ক্লাসের পর প্রবৃতিযোগের আরম্ভ। সন্ন্যাস ছই প্রকার। এক কার্যা করিয়া তাহা ঈশবেতে সমর্পণ: আর এক দেহ মন প্রাণ চিন্তাদি সমুদার অত্যে ঈশ্বরের চরণে অর্পণ করিয়া তাঁছার আদেশে তাঁছার ইচ্ছামত সেই সকলের বাবহার। বিতীয় সন্নাসের অবস্থা ভক্তগণ এইরপ বর্ণন করিয়াছেন :--গোবিক্রর করিলে গোস্বামী যেমন তাহার তৃণজ্লাদির বিষয়ে নিশ্চিত হন, তেমনি ভক্ত আপনার দেহাদি ভগবচ্চরণে বিক্রম করিয়া তাহার অরপানাদি সকল विषय निक्तिक इन । नव महाामी क्षेत्रंद्र चारमण मःमाद्र वाम করিতেছেন, তাঁহার সকলই ঈশবের চরণে সমর্পিত, তিনি আর किरमत अञ्च हिन्छ। कतिरयम । अञ्च मन अस मश्मातीत निकर्छ শংসার যেরপ তাঁহার নিকটে সংসার সেরপ নহে। ভিনি স্ক্রি নিয়ত তাঁহার ইউদেবভার নীলা দেখিতেছেন। সংসার বে তাঁহারই নীলাক্ষেত্র। স্ত্রী পুত্র পরিবার বন্ধু বান্ধব সকলের মধ্যে তিনি শ্রীহরির দীলা দেখিতে পান। ইহারা তাঁহার চিত কোথার ঈশ্বর হইতে বিচ্ছিন্ন করিয়া দিবে, না ইহারা প্রতিমুহুর্ত তাঁহাতেই চিত্ত নিবিষ্ট করিয়া দিতে সহায় হয়। অন্তরে বাহিরে তাঁহার হরি, তিনি আর কিছু দেখেন না, তাঁহারই বিচিত্র লীলা (मर्थन । जिनि देवकूर्ध कारनन नां, वर्गधाम कारनन नां, জানেন কেবল ভক্তবংসলকে। যেখানে তিনি সেখানেই তাঁহার বৈকুঠধাম, সেধানেই তাঁহার অর্গনিকেতন, সেধানেই অর্গের যোগী সাধু ভক্তবৃন্ধ। অবধৃত নিত্যানন্দকে শ্রীটেতভ যে বাহিরের সল্লাসত্যাগ করিয়া গৃহী ছইতে অসুমতি দিয়াছিলেন, উহা কেবল এই দেখাইবার জন্ত যে, অন্তরে সন্ন্যাসরকা করিয়া তিনি वाहित्त शृह्धर्यभागन कतिरवन। 'नवगृरभत नवममारमत' विधि এই,--নরনারী সল্ল্যাসী সল্লাসিনী হইরা ঈশ্বরের আদেশে গৃহের সমুদার কর্ত্তব্য সম্পাদন করিবেন, আপনারা নির্মিকারচিত্ত থাকিয়া ঈখরের প্রভূষাধীনে সংসারে বাস করিবেন। সংসার তাঁহাদিগের যোগের বিদ্ধ কিছুতেই উৎপাদন করিতে পাছে না। শ্বং ভগবান্ তাঁছাদিগকে পরিবারবন্ধনে সংসারে শ্বে করিতে আজা করিলেন, তাঁহার আজাপ্রতিপানন করিতে গিরা তাঁহারা বিশ্বধারা উপক্রত হইবেন কেন ? °ন শ্রোব্যসি বিনক্ষ্যসি" আমার কথা বৃদ্ধিনা শোন বিনাশ পাইবে, প্রমান্ত্রার এ কথা ভাষারা কি কথন অগ্রাহ্ম করিতে পারেন ? তীহারা বলেন, আমরা বোগ ভঞ্জি কি কিছুই জানি না, আমলা জানি কেবল ভগবান্কে। আমি ভক্ত, এ অভিমান এজনাই জীহাদের হর না। তাঁহারা

জনরের কোমে বোমিক, তাঁহাকে দেখিরা মুখ, ক্তরাং তাঁহাকের এরপ ভাব হইবেঁনা তো কি হইবে ? জনা নানক চৈতন্য প্রভৃতি এই ভাবে ভাবুক হইরা জনবে তাঁহাদের সর্বস্থ অর্পন করিরাছিলেন। অতএব এইভাবে ভাবুক হইরা সকলে নবসরাাসী হউন, তাঁহাদের জীবনের মূল একমাত্র ভগবান্ হউন, তাঁহাদের ক্তার্থতার আর অবধি থাকিবে না।

তনং রমানাথ মজুম্দারের ষ্ট্রীট কলিকাতা, "মজ্পগঞ্জ মিদন প্রেদে"
কে, পি, নাথ কর্ত্ত মুক্তিত ও নববিধান প্রচারকার্যালয়

ইইতে প্রকাশিত ।

হিন্দুধর্মের পুনৰ থান।

मुना 👉 धाना

অশুদ্ধ শোধন।

৯ পৃষ্ঠা টিয়নীছ 'পুরাকলেম্' শ্লোক মূলে সনিবেটবা।

ছিলুধর্মের পুনকত্থান ।।

হিনুপাত্র মছন করিরা রাজবিঁ রামনোহন ব্রক্ষজান বর্ণন এ দেৰে পুন: প্ৰবৰ্ত্তিত করিলেন, তখন শান্তব্যবসায়ী পণ্ডিতপ্ৰ তাঁহার বিক্লছে দণ্ডারমান হইলেন। ইহারা তাঁহার সহিত কড বাঘিততা করিলেন, কিন্তু শান্তবিচারে সকলকেই তাঁহার নিকটে পরাজ্য স্বীকার করিতে হইল। তিনি আপনার তীক্ত মনীবাবলে বাদিমাত্রের বাদ ধণ্ডন করিলেন বটে, কিন্তু সেই বে তাঁহার সমরে বিবাদানল প্রজ্ঞলিত হইয়াছে, আজ পর্য্যস্তও ভাহার নির্কাণ হর নাই। কোন এক জন ত্রাক্ষধর্মের প্রচারক যদি হিন্দুধর্মসক্ষ প্ৰকাশ্তে ৰক্তৃতা দিতে উন্যত হন, তাহা হইলে দকণ লোকের মনে ধ্রুববিশ্বাস এই উপস্থিত হয় বে, ইনি অবশ্য হিন্দুধৰ্শ্মের বিরুদ্ধে বলিতে আসিয়াছেন। বর্তমানে আমরা হে ভূমিতে দণ্ডায়মান, সেখানে লোকের মনে এ প্রকার বিক্লব্ধ সংস্কার থাকা কথন উচিত নয়। সকলেরই জানা প্রয়োজন বে, বে দিন হইতে নববিধানে ব্ৰাহ্মধৰ্ম নবীন আকার ধারণ করিয়াছে, সেই দিন চুইতে বিবাদানণ নির্কাণ হইরাছে, শান্তির রাজ্য সমাগত হইরাছে। বে ধর্ম বৌদ্ধ, অটিল, মুসলমান, জৈন, পারসিক, সম্লার ধর্মকে আলবের সহিত আলিকন করে, বে বর্মের মূলে হিল্কাব গ্রোবিত, সে বর্ম হিল্ ধৰ্মের বিবোধে দণ্ডাছমান হইবে, ইহা কি কখন সম্ভব 📍 পৃথিবীর

क्षे रेक व चानवार्त शत अन्य वस्त्रवाद्यक ।

চারিদিকে দৃষ্টি করিলে দেখিতে পাওরা বার, এক বর্ষসম্প্রদার আন এক ধর্ষসম্প্রদারের সহিত বিরাহে প্রার্থক এক জন আর এক দলকে কি প্রকারে পরাত্ত করিবে, ভাহারই জন্ত ব্যস্ত ; কিব আমরা বে বিধানের রাজ্যে বাস করিতেছি, সেখালে এরল কলহ বিবাদের ক্লবকাল নাই। আমরা চিরশান্তির রাজ্যে বাস করি-তেছি,। পদেল বিদেশ কোখাও কাহারও সঙ্গে আমাদের বিবাদের বিষয় নাই। ইউরোপ আমেরিকা সর্বত্ত আমাদের ধর্মের পৌরব বিস্তৃত হইরা পড়িয়াছে, এবং ইহা বে সকল জাতির মধ্যে শান্তি সংখালন করিয়া দিবে, ভাহার আলা সকলেরই মনে উদ্দীপন করিয়াছে।

"হিন্দুধর্মের পুনরুঝান" বিষয়ে কিছু বলিব বলিরা আমি এখানে উপদ্বিত। হাতরাং সর্বাগ্রে উপদ্বিত অন্তপদ্বিত ব্যক্তিগণের মন হইতে বিক্লছ সংস্থার দূর করিবার জন্ম আরপ্তে আমার এতগুলি কথা বলিতে হইল। সকলের জানা উচিত, নিন্দার পক্ষ অবলম্বন করিয়া হিন্দুধর্মের প্রক্রুঝান বলিতে আমা হয় নাই, কোন দিকে হিন্দুধর্মের প্রক্রুঝানের গতি হইলে কল্যাণ হইবে, ইহাই প্রদর্শন করা এই বক্তৃতার উদ্দেশ্য। কালের প্রভাবে এখন হিন্দুমর্মাজের মধ্যে হ্যহং পরিবর্জন উপদ্বিত। এ পরিবর্জন পরিক্রিক করা কাহারও সাধ্যায়ন্ত নহে। এই ক্রেমিক পরিবর্জন ক্রিক্রেক করা কাহারও সাধ্যায়ন্ত নহে। এই ক্রেমিক পরিবর্জন হিন্দুধর্মের বিনাশ হইবে, ইহা অনেকের ধারণা। মধন ধর্ম থাকা আর না বাজা লাক্তের উপরে নির্ভ্রের হিন্দুগণ বিশ্বাস্থ্য করের, অবচ লাজের ভাই বিনিস্কল দেশের অগ্রথামী ব্যক্তিশন প্রকাশ্যে ও জ্বেরাক্তে ভ্রম্বরিশ্রের করা হিন্দুবর্ম্ব দুড়ামুখে নিপতিত, ইহা আর কেন বাহারা বিশ্বাস করিবেন মাণ্ড উন্থানের বিশ্বাস এই বে, শাল্পের

ৰাহা নিবৰ বহিৰাছে, ভাহা চিবদিন একইএকার আছে ও বাকিবে, উহা অধুমাত্র পরিবর্তিত হাইতে লারে মা, পরিবর্তন করিলেই বর্ষ বিশ্বরাভ, নাভিক্য অপরিহার। ইইানের এই বিশাস বনি সভ্য হয়, ভাষী হইলে হিন্দৰ্শ আৰু ৰ'ডিটিতে পাৰিতেছেন'না, কেন না 'শিক্ষাপ্রভাবে হিন্দুসমাজের সর্বতি বেরূপ আহার ব্যবহারাদির পরি-বৰ্তন হইয়া বাইতেতে, ভাহাতে প্ৰচলিত হিন্দুৰ্যন্ত বিপদবাৰ কেন্ नारे-रनितन अपुर्कि रंग्र ना। अ कथा रना किছू अपुरक्ति नहर বে, এমন হিল্পহ অভি বিরদ, বেধানে প্রকান্তে না হউক, অপ্র-কাচত পরিবারত কোন ব্যক্তি ছারা পরিবর্তনবিমূব ব্যক্তিগণের বিচারে উহার হিন্দুত্ব বিনষ্ট হর নাই। এক্লপ পরিবর্তন দেবিয়া যাহারা ভর পাইতেছেন, ভাঁহারা হিসুধর্মের বলাবল ভাল করিয়া পর্যালোচনা করেন নাই। তাঁহারা মনে করিতেছেন, হিন্দুর্গন্ত विवकाण अवरे धाकांत्र आहर, अवरे धाकांत्र हिल । अरे खम छारा-দিলের এরাপ ভারের কারণ। হিল্পার্য ক্রমিক উন্নতি প্রদর্শন করি-बाह्य, कुछबार मामा পविवर्खतमेव क्या निवा कानिबाह्य, देश विन প্রমাণিত হয়, তাজা হইলৈ ভারের নৈ কোন কারণ নাই সকলেরই कामग्रहण एकेटन ।

প্রথমতঃ দেবা উচিত বে, বরং শান্তকারের৷ উন্নতির পর উন্নতি শীকার করিরাছেন কি না ? ছক্ষ পুরাপের প্রভার্যতে নিবিত আছে,

> र्षत पृष्ठेः हि त्यरपष् क्षण् हेः चृक्तिप् विकाः । केवरवार्यत पृष्ठेक क्षरनुवारिकः समीतरक ।

त्रदम बारा मृष्टे रह ना, ज्वाजिए छारा मृष्टे रह, त्रम ७ ज्वाजिए बीरा मृष्टे रह ना, ज्वान छोरा वर्गन छोडा बादका। এ क्या बनाएक

এই প্রতিপর হইতেছে বে, পর শর মৃতন মৃতন বিষয় আবিচ্ছ ও প্রবর্ত্তিত হইরাছে। বে সমরে বিদেশীরগরের সংক্রবে আসিরা বিদেশীর শিক্ষাপ্রভাবে হিন্দুগবের আচার ব্যবহারাদির পরিবর্তন করিতে হয় नारे, मिर मबाद दिन क्विक शतिवर्तन दिन्ना थाएक, जारी इंदेरन এখন বখন আহাদের দেখে বিদেশীর শিক্ষা বিদেশীর সভ্যতা প্রবেদ করিয়াছে, তথন বে অতি সত্তর বহু পরিবর্তন ষ্টিবে, ইহাতে আর আ-চর্ব্য ছইবার বিষয় কি আছে ? ধ্ববিগণ ভাঁহাদের সময়ে জনসমাজের ধর্বন বে প্রকার পরিবর্তন দর্শন করিরাছেন সেই পরিবর্জনামুখায়ী ব্যবস্থা সকল নিবছ করিয়াছেন, ইহা আর কে না খীকার করিবেন ? ভাঁহারা জনসমাজের পরিবর্জনের মূলে বিধাতার হস্তদর্শন করিতেন, স্কুতরাং তাঁহারা তাঁহারই ইচ্ছামুবর্তন করিয়া সেই সমুদার পরিবর্ত্তনকে শাল্লে নিবন্ধ করিতে কিছুমাত্র সন্থুচিত হন নাই। এক এক জন অসাধারণ প্রজ্ঞানেত্র ধবি নৃতন জ্ঞানালোক বিস্তার করিয়া অনেকওলি নিশ্বনীয় রীতির উচ্ছেদ করিয়াছেন, ্বা উচ্ছেদের পদা প্রবর্তিত করিয়াছেন, মহাভারতাদি পাঠ করিয়া हेश जात क ना न्यंहे दाविष्ठ शाम १ वह मिरमत वस्त्रमा এক একটি রীতির উচ্ছেদ অতীব কঠিন বলিয়া মনে হরু কিন্ত कनम्बाद्धन मन वथन शूर्ल इहेर्ड श्रम् हहेन्। चाहेरम् अर्थन रम রীতির উচ্ছেদ এক জন প্রজ্ঞাবান পুরুষ অবচ্লোর সাধিত করেন। এইরপে বে সকল পরিবর্ত্তন ঘটে, সে সকল অবনতি নহে উন্নতি। বৃদ্ধি কর্মন অবনতি ঘটে, আবার উন্নতির সোপানে আরুড় করিবার জন্ত বহু হয়। হিম্পুধর্মের ইতিহাসে ইহাও হইয়াছে দেখিতে পাওয়া বার। and the second of the second of the second

পরিবর্তনের সৃষ্টান্ত না ছিলে, সাধারনের এ সম্বন্ধে সংগ্রহ

বিদ্রিত হইবার সম্ভাবনা নাই, এজন্ত করেকটি দুষ্টান্ত প্রবর্ণন করি-छिह। दिनिक ও उर्णन गमात + **এই दी**छि हिल दि, काम अक ল্পন বিশিষ্ট লোক গৃহে আসিলে তাঁহার উদ্দেশে একটি গো হনন করা হইছ। এই রীতি হইতে অতিধি 'গোছ' নামে প্রাসন্ধ হইল-ছেন। শুনিতে পাওয়া বায়, আমাদের দেশীয় ব্যক্তিগণের মধ্যে কেছ কেহ গোলক সামাক্ত পশুবাচকরপে গ্রহণ করিরা বলিতে আরম্ভ कदिशाह्म, संभारक वा शस्त्र कर्यन श्री हमन कदा हम नाहे. অপরজাতীর পশুচ্ছেদন করা হইত। এরপ প্রতিপন্ন করিতে বহু করা বিফল, কেননা মধুপর্কে নির্দিষ্ট "মহোক্ষ" শব্দ গোভিত্র আর কিছু বুঝার না। গোমেধ্যন্তে গোহনন করিয়া ভাছাকে ছত্রিশ ভাগ করা হইত এবং এক এক ভাগ যজ্ঞের সহায়ক ব্যক্তি-গণকে, যজমানপত্নী ও যজমানকে প্রদত্ত হইত। এই ভাগের মধ্যে দেখিতে পাওয়া যায়, "কঠ: সকাকুদ: প্রতিহর্ত্ত:" কাকুদ সহকারে কঠ প্রতিহর্ভার প্রাপ্যাংশ। গোমেধে নিহিত পত গো ভিন यनि अञ्च किছू १हेज, তাহা १हेल 'काकून' भव वायशाव করিবার কোন কারণ ছিল না। ককুৎ বা ঝুঁটি গোলাতীরের লক্ষণ, এজন্ত ককুছান বলিতে রুষ ভিন্ন অন্ত কোন পশু বুঝায়

মংবীর চরিতের এই লেবা দেবাইয়া দের দে, বৈষিক ও বৈদিক সময়ের পর এ রীতি প্রচলিত ছিল। বর্ণন লোকের মনে এ রীতির প্রতি বিষেধ উপাত্তিত হয় তবনট উহা পরিবর্তিত হইরা যায়। এই জল্লই নির্বালমুকার লিবিয়াছেন, "মহোক্ষং বা নহাক্রং বা প্রোতিরায় প্রকল্পের্ড" ইতি বিবানেহিণি লোকবিষ্টিভাননস্থানস্থ।

নংজাপাতে বংশভরী শর্পিবার্ক পচাতে।
 ভোত্রিয়: ভোত্রিপুহানাগতোহনি ভূবক নঃ ॥

"बर्शक शत्नार्कथः"—बर्शक शहरव शहरव निरवध रहेराक बाक्नक्ष रेविकाञ्चीरम अ तीजि स श्रामिक बारम, जारा जामानित्वत त्रत्वत विवाहनक्षि त्रवित्वरे महत्व वृक्षिए পারা বার। বর বিবাহার্থ আগমন করিলে সম্প্রদাতা বরণ করিয়াই একটি লোকে ভাঁহার সম্বুধে জানিয়া বন্ধন করেন। এ গোট ভোজনের আয়োজন। কিন্তু পূর্ব্বকালে এই রীতি ছিল বে. অভ্যাপত ব্যক্তি অনুমতি করিলে আবদ্ধ পোর বন্ধন মোচন করিয়া লওয়া হইত,আর অপর কোন মাংসে অভ্যাগত ব্যক্তির ভোজনকার্য্য সুম্পন্ন করাইতে হইত। বিবাহপদ্ধতিতে এই রীতি অনুবর্তন করা হইরাছে। কেন না সম্প্রদানানন্তর নাপিত আসিয়া বলিতেছেন, '(लोर्ल रेः'। मानिक अञ्चल मिकारलय कथार् छानीत मर्यानना । मि **(महे रक्ष शक्नरक (इनम क**तिरव कि मुक्त कतिशा निरव, बरत्रत निकटि অনুমতি চাহিতেছে। বর তাহাকে মুক্ত করিয়া দিতে * বলিলেন, স্থতরাং গোর জীবন রক্ষা পাইল। কবিগণ এই ব্যাপারটিকে একটি উপহাদের বিষয় করিয়া ভুলিয়াছেন। তাঁহারা উপহাস করিয়া বলিয়াছেন, 'গৌর্গে বিভি ব্যাহ্রতম্' নাপিত গো গো শব্দ উচ্চারণ করিল কেন জান ? তুমি আজ হইতে মনুষাত্ব ছাড়িয়া গোড় লাভ করিলে এই অভিপ্রায়ে।

^{*} বর বলিলেন "ওঁ মুক গাং বরণ পাশাল্ছিবতং মে তিবেহি তং প্রজ্ মুবা চোড্যোলংকল গামত ভূপানি পিবভোগকম্।" এই কথা কনিয়া বর্ষন নাপিত গলা বছন মুক্ত করিয়া দিল, ইহাকে বব না করা চল এই উক্তেন্ত বর এই মন্ত উজারণ করিকেন "ওঁ মাতা ন্তরাণাং চ্ছিতা বভূনাং অনা ২ছিভানিবমৃতত্ত নাতিঃ। প্রপূর্বাচং চিকিত্বে জনার মা গাননাগা মুবিতিং বহিঠ ।"

ু কেবল অন্যাগত ব্যক্তির আগমনে গোহনন করা হইত ভাষা नत्र, गृश्यत मृत्र शहेल छारात मत्म धक्की शाकी सब क्या হইত। এই গাভীটা অনুস্তরণী দবে অভিহিত। গো অভাবে छाती खब्रखानी कडा विराद का अहे खब्रखानी रहपन गुर्सक अक একটি বৈদিক মন্ত্ৰ উচ্চাৱণ করিয়া শবের মন্তক ও মূখ উহার বেদ ছারা আচ্চাদন এবং উহার এক এক অল শবের ততদকে স্থাপন করিবে : তদনত্তর সমগ্র শরীর চর্ম্মছারা আচ্ছাদন করিয়া দিবে 🕻 । এই ব্যবহারটি কাত্যায়ন ধবি এই বলিয়া অনিত্য করিলেন বে, "নবান্তি সন্দেহাং।" দাহান্তে বৰন বজমানের অন্তিওলি সঞ্চর করিতে হয়, তথন কোনুগুলি বজমানের অস্থি, কোনুগুলি অমুস্তর-ণীর অন্থি এ বিষয়ে সন্দেহ উপস্থিত হয়; স্নুতরাং অনুস্তরণী না দেওয়াই শ্রেয়ম্বর। সূত ব্যক্তির **অস্থি সঞ্চয়ন করিয়া সমাহিত করা** সেকালে রীতি ছিল। অন্থি সমাহিত না করিলে মৃত ব্যক্তির স্বর্গাসন প্রতিক্ষ হইত ৷ যদি ভূলক্রমে যজমানের অভি সঞ্জন না করিয়া অনুস্তরণীয় অভি দঞ্চন করিয়া সমাহিত হয়, তাহা হইলে যথ-মানের স্বর্গে গমন ঘটিল না। যখন এরপ খার সন্দেহের বিষয় আছে তথন সে ছলে অফুস্তরণী না দেওয়াই ভাল, কাত্যায়ন এই

অস্তরণীয় ।৪।২।৪ (আবলায়ন সুত্র); গায় ।৪।২।৫।;
 অফাং বৈক্বপায় ।৪।২।৬। কুলায়েকে ।৪।২।৭।; সাবো বাহে
 বির্ষ্টি স্থান ছি ।৪।২।৮।

[†] অস্তরণা বণাব্ৎবিদা শিরোবৃধং প্রজ্ঞাদদেও 'অপ্নের্জর্ধ পরিসোভিব্রস্ত ইতি ishois । কুলা উদ্ভা পাণোরাদণাও 'অভিরব সারবের্ছো বাবেনি' ইতি দক্ষিণে ক্ষিণান্ নবো সবান্। ২০। ছদরে জ্বরন্। ২১। ইত্যাদি।

যুক্তিতে অমুক্তরণীর ব্যবস্থাকে অনিত্য করিয়া দিলেন। ইহার ফল এই হইল বে, কালে মৃত ব্যক্তির সহিত গো দশ্ব করার প্রথা একে-বারে তিরোহিত হইয়া গেল।

এ সমুদায় অপেকা "পুরুষমেধ" অতি ভীষণ জুগুঞ্চিত - বৈদিক रक्कश्रनाली। এই यस्क नद्र ও नाही छेख्यरकरे स्थान कदिया विनिनाम कता रहेछ । खाञ्चल, ऋजित्र, देव छ, भूछ, उन्हर, बङ्जाधि-নিৰ্ম্বাপক, ক্লীব, বিধিভক্ষকারী, পুংশ্চলী প্রভৃতি কোন জাতি বা কোন পদের নর নারী ইহাতে পরিত্যক্ত হইত না। ব্রাহ্মণ হইতে আরম্ভ করিয়া কুমারী পর্যান্ত এক শত আশিটি এই যজে বলি-সংখ্যা *। এই ৰজ্ঞ কোন সময় এদেশ হইতে প্রথমতঃ তিরোহিত হইল বলা বড সুক্ঠিন। কেন না একিক বখন জ্বাসন্ধকে ভৎ সনা করেন, তথন মানুষ বধ করিয়া শক্তরের অর্চ্চনা কোথাও দৃষ্ট হয় না, এই কথা বলেন। তাঁহার বিশেষ আপত্তি এই যে, সবর্ণ ব্যক্তি সবর্ণ জনগণকে বজ্ঞার্থ পশু করিয়াছে। মহাভারতের অনুশাসন পর্কো ভনীরখের উক্তিতে দেখিতে পাওয়া বায়, তিনি আটট সর্কমেধ ও সাতটি নরমেধ যজ্ঞের অফুষ্ঠান করিয়াছিলেন । শক্ষরের উদ্দেশ্যে নরবলিদান দৃষ্ট হয় না প্রীকৃষ্ণ বলিয়াছেন, ইহাতে এই প্রভীত হয় (य. मक्टरत्व कार्फनाय नत्रवित किल मां, रकम मा रव मकल देशी के राव-তার উদ্দেশে নরবলি দেওয়া হইত, তাহাদের মধ্যে শকরের কোন নামোলেখ নাই। প্রীকৃষ্ণের সমরে খে নরমেখ উঠিয়া গিয়াছে

বছণে রাজ্বনালভেড, ক্রার, রায়নান্ নরভাো বৈশান্ ইডাানি। ভৈরিরীর রাজ্ব-ও বাজনবের সংহিতা।

[†] विश्वपत्रधीमहर तक्षत्रपत्तर पक्र मिछाना । चडोजिः मर्साम्बर्धक नदर्श्यक मधीकः । कमूनामन गर्स ३०७ क, ०७ (ब्राक् ।

ভাষা প্রতীত হয় না। কেন না জীকুকের সমসময়ে খ্যাস মুখিটিরকৈ
তপতা, লান ও বজাত্তান ছারা পাশ নোচন ছরিতে উপবেশ কো।
এই উপলেশ মধ্যে রাজস্ম ও অবমেধের সজে নজে সর্জনের ও
নরবেধ অস্তান করিবারও উপলেশ আছে :। ইবানীন্তন কাল
পর্যন্তও বে নরবলিবানের প্রথা ছিল, ভাষা বজ্জমধ্যে পশ্য
নহে: মহাভারতের সমস্রে পোনেধ ছিল কি না, ইহা জিজ্ঞাত
বটে। এ সমরে পোমেধ উঠিয়া গিরাছে, ইহাই অত্যান করিবার
বিশিষ্ট কারণ আছে। কারণ শান্তিপর্কের ২৬৪ অধ্যায়ে লিখিত
আছে বিচন্যানামা রাজা হইতে গোহিংসা নিম্বত হয়। এই
বিচন্য নুপতি কোন্ বংশে কোন্ সমস্রে উৎপন্ন, ইহা বলিতে পারা
বায় না। মধুপর্কে গোরধ বছকাল পর্যন্ত প্রচলিত ছিল, ঠিক
কোন্ সময়ে অপ্রচলিত হইল ইহা নির্পন্ন সম্বন্ধ নহে।

নারীগণের বেদাধ্যরনাদিবিষয়ে বৈদিক ও তৎপরবর্তী সময়ও অমুকৃল ছিল। মুসু নারীগণসম্বাক্ষ বিবাহকেই উপনয়নসংখ্যারের তুল্য করিয়া সেবাধর্মকেই তাঁহাদিগের সম্বাক্ষ বেদাব্যায়নাদিসমূল অমুঠের বিষয় করিয়াছেন, কিন্তু স্মার্ভসময়েও বে কোন কোন নারী ব্রহ্মচর্য্যাবলম্বনপূর্ক্ষ বেদাধ্যয়নে জীবনাতিপাত করিতেন না, ইহা মনে হর না। বত দিন বৈদিক বজ্ঞ প্রচলিত ছিল, তত দিন পদ্বীর বজ্ঞাধিকার ছিল, এবং তিনি বজ্ঞাপ্বীতিনী হইয়া বজ্ঞাস্কানে বোগ দিতেন ইহা বিধাস করিবার বিশিষ্ট কারণ আছে ৪।

ত রাজপুরারবার্থে চ সর্বাদেশক ভারত। সর্বাদ্ধক কৃপতে ব্যাহর বুলিক্সিত্র অবন্যেক্সক্ষর ক্ষা, ৮ জোক।

[ं] आहुकार सरकानगीकिनीय । स्थित जुळ । नृहांकरकपू महीनार स्थानीयकृतियस्य । चनागनम् स्थानार नास्त्रियसम्बद्धाः ।

শ্বতিবাজ্যেত নাই আবাদে নারীপ্রকার বেগাব্যরনে প্রথমিকার । পর্বাষ্ট্র হর্ম । ইবনিক সময়ে নারীপ্রকার পাতিতোধ পরিচর । আবাদ্ধা বিলেমকাপে নেথিতে পাই । পর্যাহার। ক্রমবাদিনী ছিলেন, ভৌতারা ভারতিতার ভর্তিভার ভারতিন । পরস্বাহরকার নারীপ্রপ বে বিবিধ বিদ্যার পারপদিনী ছিলেন, ভাতা ভাতীকার করিতে পারা বার না। বেদাব্যরনে ভাতারা অন্ধিক্রিকার করিতে পারা বার না। বেদাব্যরনে ভাতারা অন্ধিক্রিকারি ইইরাপ্র অভাত্ত সাত্রে ভাতাবের অধিকার ভবত অভ্যুক্ত হিল।

আমরা বাহা বলিদাম, তাহাতে সমরে সমরে বে বিশ্বর্থনি বার সরিকর্তন উপস্থিত ইবরাছে, তাহা কিছুতেই অধীকার করিতে পারা বার মা। তবে এই সকল পরিকর্তন সর্বসময়ে উমতির জ্ঞাপক বলিতে পারা বার মা। এক সমরে কবিগণের বার্বার ব্যক্তিচার উপস্থিত হয়। মধ্যপান জগন্যাসমনানিতে কবিছল একেবারে কবিছত হবর। উঠে। এই উপলম্ম করিয়া কুরারিকাভয়ে লিখিত হবরাছে,

পুরা দারবলে কেটিং ববরা কানমোহিতা। পরারিয়ং বর্ববল্লি রবাং দাদভি বিভাগা । ইকার্কিন

বনিগৰের স্থান অবস্থা দর্শন করিয়া বিজ্ নিজ্ঞ তাঁত হইলেন তিনি বিবের নিকট বিয়া আপুশুর্মিক সমুদার বিবর বর্গন করি দেন। নিব অতি তেজবী পুরুষ, তাঁহার কবা প্রবণ করি। ছারিরা রনিলেন, আনি কালীচায়ায়ত্ত উৎপাদম করিয়া এই মহ এই সকল ব্যক্তিকে দীক্ষিত করিব এক অনুদার ভোগের ক্ষিত্র বিরা ভাহাবিগকে পুনরাত্ত করিব এক অনুদার ভোগের ক্ষিত্র বোর পতনের অবস্থায় বেজ্ঞান্ত করিব। সহাজে ক্ষেত্ৰাই : কেন না স্বাৰ্থজনীয়াৰ্য ভটাহাৰ একে নামপুনালোক -নামকটি -বচৰত উপ্তৰ কৰিয়াকেন, ও তাবাতে : ইবাই - লাউ া কোল পাচন

(पराष्ट्रके पृष्टिकाकवाविकनगावृदः । करवन क्षांजिकार्यः वाकनप्रवसीकावः ।

বৈদ হইতে গরিপ্রট হইরাছে, স্মৃতিশাক্তাক প্রার্থিক অবাত্মন করিতেও একাজ বিমূপ, এরপ ত্বলে প্ররার বৈদিক
নাচরণে প্রত্যাবর্তন ক্ষক্ত প্রান্ধণ তর অপ্রিয় করিবে।" বোর

াডিচারী পতিত প্রট লোকদিগকে বৈদিকাচারে প্রত্যাবর্তন ক্ষরা

ব ধর্মে উপার উতাবন করিতে কৃষ্টিত হর নাই, বে বর্ম সমরোচিত্ত

বিবিধ পরিবর্তনের মধ্যদিয়া নিরতকাল অবস্থা হইতে অবস্থান্তরে
প্রবেশ করিরাছে, বে ধর্মে সকল প্রকানের অবস্থোধারী বিধি

নর্ম আচরণ বীতি দৃষ্ট হর, সে ধর্ম বর্তমান কালের পরিবর্তিত

করেখেগেবোগী অসুশাসন প্রদর্শন করিতে অক্ষম হইবে, ইহা

ক্রবল আলস্বচন নহে, প্রতাতীয় ধর্মের প্রতি একাছ অনাস্থা।

বর্তমান সময়ে কি কি পরিবর্তন হইয়াছে, মে সকল পরিবর্তন নায়বিরোধী কি না, সে সকল পরিবর্তনে হিশ্বংগ্রের উদ্দেশ হৈল কি না, এ সকল বিষয়ের আলোচনার প্রায়ুত্ত হওয়া হাউক । দকল পরিবর্তনের পূর্বে একটি পরিবর্তন প্রথম আলোচ্টা। এ পরিবর্তন প্রায়ুক্তমান্তাভাগন । প্রায়ুক্তমান্তাভাগন প্রায়ুক্তমান্তাভাগন করে আলোচ্টা। এ পরিবর্তন প্রায়ুক্তমান্তাভাগন প্রায়ুক্তমান্তাভাগন প্রায়ুক্তমান্তাভাগন করে করে করে আলোচ্টা। এই করে করে করে আলোচ্টা আলিক্সান্তাভাগন করের করিয়া প্রায়ুক্তমান্তাভাগন করের আলোচ্টা করের আলোচ্টা করের বিষয়। বেল উপনিব্ধ প্রায়ুক্তি শান্তকে বাহার। এক সমান্তাভাগন করের উল্লিয়া প্রক্রের আরাবিন।

विकास के प्रमान गाविनवान हवार के के त्रवित्व है। विभाव क्षेत्रक राजस्ताः । केंग्स्ता सत्र करता, वास्तिस्त ।।। कीरप्रत्य बर्ट्यन बरानिमन सम्पन्ति, छोराता रिमृशार्थन मरावत কিছ উহিলা নিশ্চর জানিবেন, উহিলে বাহানিবকে শুক্ত বন করিতেছেন, তাঁহাদিনের মাননীয় পূর্বপূরুৰ আতা ধবিনৰ তাঁহা-क्रिकाक नेक मान क्रिकाल्डन ना, वबर छाँदावा बान विवासका বে ব্ৰহ্মজ্ঞান বছৰতে ভাঁহারা সঞ্চয় করিয়াছিলেন, বংশাসূক্তমে নে জ্ঞান উচ্ছাব রাখিবার জন্ম বিবিধ উপায় উত্তাবন করিয়াছিলেন, সেই জ্ঞান এদেশে পুনক্ষীপন জম্ম ব্রাহ্মগণ প্রাণগত বহু করি তেছেন। বদি হিন্দু বলিয়া কাহারও অভিমান করিবার বিকা থাকে, তাহা হইলে আমাকে বলিতে হয় আমরা হিন্দুর হিন্দু, क्रिन ना कामापिरणत थाठातिष्ठ थर्ट्स अवन किছू नारे, वारा छेळ्डन হিন্দুধর্মের বিরোধী বলিয়া পরিগণিত হইতে পারে। স্মার্থাবর্ম হিল্পর্ম নামে পরিবর্ত্তিত হইয়াছে, সেই অসুরোধে হিল্র হিল্ বলিলাম। ফলতঃ হিন্দুখন অখান্ত্রীয়, কোন খাত্রে হিন্দু নাম नारे। रिन्त्राम मुमलमानगर्भत्र अन्छ। भूमलमान छारात हिन्त्रास्त्र वर्ष माम, मन्द्रा ও চোর। हिन्त्र्भारम कृक्वर्व अ বুৰামঃ হিন্দু নাম পরিত্যাগ করিয়া আর্থানার এইন করিলে জ্বর উনার হয়, পৃথিবীয় সকল আর্হোর সহিত নিকটসম্বন্ধ পায়-ভুত হয়, ভিতরকার শোণিত উচ্ছ নিত হইয়া উঠে। এত পরি-বর্তনের মধ্যে বলি হিন্দুনাম পরিবর্তিত হইয়া বার, তাহা হইলে क्ला। वित्र अक्लार्थित मधावना किंदूरे नारे।

হিশ্যনাজের ভিতর হইতে ব্রাহ্মসনাজের উবাদ, ইয়া বচই কেন অসারাজ বদিয়া মনে হউক না, এডদপেকা অসাবাজ

कर्जन दिस्मनात्व पविदारह । (दन, छनमिन्द, सुवि, पूहान, जनगरे उक्कारना पार्वन, गरानरे धरे कागर गर्साक ল অৰ্পণ করিয়াছেন, স্নতরাং লাচত্রর ভূবিতে গাঁড়াইরা কেব अमनात्मन थिविनान कवित्वन, छोडात अनुवात मकानमा नाहै, দ্বিত্ত বে সকল পরিবর্তনের পক্ষে ন্যুত্যাদি শান্ত স্পষ্ট বিরোধী তাহা अभिन्न हिन्नमहास्य अदन कदिन कि अकारन, स्कारे वा छारोब অভিরোধ করিবার অক্স সকলে বছপরিকর নন, ইহার গুঢ় হেতুই বা কি, এ সকল এ দেশের অন্ন লোকেই ভাবিয়া থাকেন। বদি তাঁহাঃ। এ বিষয় ভাল করিয়া ভাবিতেন ভাহা হইলে দেখিতে পাইতেন, পূর্মক:দে বাহার প্রভাবে বৈশিক সমত্ত হইতে আরম্ভ করিয়া বহ পরিবর্ত্তন ঘটিয়াছে, এখনও জাঁহারই প্রভাবে এ সমুদায় পরিবর্ত্তন किटिउट । अत्मद्भ विभिद्यम, वहकाल इहेल छात्रख्य सम्बद्ध वाक्रगत्वत व्यशेन हरेवारक, युख्यार बाक्रश्राचार क्रमृभ गरिवर्डन অপরিহার্য। যদি উল্হারা এরপ সিন্ধান্ত করেন, তাহা হইলে ভাহাদের ভাবিয়া দেখা উচিত, এ রাজপ্রভাবের মূল কোষায় ? রাজ্বনশের মধ্যে ঈশরের বিভূতি বা ঐশব্য অবস্থান করিখেছে, ঈশবের শক্তি তাঁহাদিগের ভিতর দিয়া জনসমাজের উপরে কার্যা করিতেছে, ঈশ্বর স্বয়ং সিংহাসনে না বসাইলে কাহারও সামগ্র নাই বে, আপনি রাজপ্রভাব লোকদিগের উপরে বিস্তৃত করেন এ চিন্তা প্রতি হিন্দুর মনে স্থান পাইলে উহা শাব্রাহ্বায়ী হইবে এবং দেশের প্রভৃত কল্যাণের হেতু হইবে। এই রামপ্রভাব প্রথমতঃ রাজভাষা শিক্ষার দিকে লোককে নিছোপ করে। মুস্ত্রান রাজত্বকালে হিন্দুগণ পামি ও আরব্য ভাষা অকাতরে শিক্ষ করিতেন, সময়ে সময়ে এই ভাষা শিকার ফল এই হইত বে, কেঃ কেই আর্মান্টে ব্যাহরে ধর্ম আহব করিছেন, কেই বা অভরে
মূল্যমান হব্র ন্যাহ্যের মহিত মিনিত হই রা আবিদ্ধেন, গোপনে
মূল্যমানগরের বীজিছে উপায়না করিতেন। তবে ইহাও দেখা
বিষ্ক্তে বে, পারত বা আরব্য ভাষাতে নিতাত নিপুল হইরাও,
সে ভাষা পাঠকালে বিজাতীয় ঈশ্রবাচক শব্দ পুন: পুন: উচ্চারণ
ও বিজাতীয় ধর্মশাস্ত্র পাঠ করিয়াও, অপরের মূবে কোরানের বাক্য
প্রবেশ তাঁহালিগের অপ্রবৃত্তি। এখন মূদ্দমান্দ্রাজ্যের তিরোধানের
সক্ষে সক্ষে আরব্য পারত ভাষার তিরোধান ইইয়াছে, কিন্ত ইংরাজী
ভাষা এখন ডাহার স্থান অধিকার করিয়াছে।

न क्रिक्र जोवाः निक्कि ।

় কুর্ম্ম পুরাণের এ অনুশাসন আজ ছর শত বংসরের অধিককাল হইতে এ দেশে অনাদৃত হইয়া আসিতেছে। দ্লেচ্ছ্যণ অনাধ্যজাতি নহেন, তাঁহারা পতিতে আগ্য এ কথা বলিয়াও রক্ষা পাইবার উপাদ্দ নাই, কেন না পতিতের সহিত অধ্যয়ন অধ্যাপনাদি কার্য্যের সম্বন্ধ রাধা সর্বাধা নিষিদ্ধ, উহাতে পতিত হইতে হয় *।

শাত্রে বাহা স্পষ্ট নিষিদ্ধ হইরাছে, সমুদায় ভারতব্র্বের উচ্চ বংশীর লোকেরা নিরন্তর তাহার অনুষ্ঠান করিতেছেল, ইহাজে শাত্রমর্থাদা রক্ষা পাইল কোথায় ? আর হিল্ডুই বা আব্দুদ্ধ রহিল কি প্রকারে ? মহাভারতের সময়ে যুধিটিরাদি স্ববন্তাবার অভিজ্ঞ ছিলেন, এ কথা বলিলে এ সময়ে তাহা চলিবে কেন ? উহা বে পরবর্তী শাত্রকর্তৃক নিষ্কি ইইয়াছে। এখন কেবল মেছেভাবা

म पांकवर रानिनवकर करेववाशाश्वनर विकार क्षा भवा भरकर र'नज महरकांकनरववर विकास विकास स्वाविद्यालयर विकास इ.वस्त्रद्व १ विक महाबादमारवर इ.क्षणुताव ।

নিকা দেওর। হইতেছে তাহা নহে, বেবানে মেছেরা অব্যাপক অব্যা দ্লেছ্রাপের সঙ্গে অধ্যয়ন করিয়া ভৱাষার বিদেব অভিক্রতা ক্রমে, সেই স্থানে অধ্যয়ন করিবার জন্ম দেশীর সুবকেরা নিতান্ত ব্যাকুল। এই অনাত্রীয় পাতিত্যসাধক ব্যবহার একেবারে দেশব্যাশী হইয়া পড়িরাছে, সহস্র বন্ধ করিয়াও আর এই পাতিত্যসাধক ব্যবহার হইতে কেহ দেশ রক্ষা করিবেন ভাহার উপায় নাই। এবন উচ্চত্র শাস্ত্রের আপ্রয় গ্রহণ করিয়া নিম্নতর শাস্ত্রের নিষ্ণে অক র্মণ্য করিয়া দেওয়া বায় তাহা হইদেই নিছতি।

মতু বাহা বলেন,ভাহার নিকটে সকল শাস্ত্রকারের মন্তক অবনভ করিতে হয়, তাঁহার সাহায্য বিনা বর্তমান ব্যবহার শাক্তসন্মত कि इ उरे निर्फाति ए रेटल शाद ना । এখনकात अधानामी अदनक লোক মুমুর প্রতি নিতাত বিরক্ত। উাহার Criminal Law (দওবিধি) অভ্যন্ত কঠোর, পক্ষপাতলোবে দুঘিত, এঞ্চন্ত তাঁহার প্রতি অনেকে কটাক্ষপাত করেন। ব্রাহ্মণের সহিত শুদ্র তর্ক করিলে ভাহরে মুখে উঞ্চ ভৈল ঢালিয়া দেওয়া হইবে, এ সকল ব্যবস্থা শুনিলে এখন শোণিত উষ্ণ হইয়া উঠে; কিন্তু মহাভারতের পূর্ব্ববর্তী সময়ের ব্যবহার এ সময়ের সঙ্গে তুলনা করা কিছুতেই উচিত নর। সে সময়ে এরপ রাজবিধি নিবন্ধ করিবার কি প্রয়োজন ছিল, এখন কি প্রকারে বুঝা ঘাইবে ৭ স্থতরাং এই সকল কঠোর ও ভারবিধির विरतारी मञ्जाङ्का प्रकल कार्लाहमा कविया ससू रह प्रकल फेक्ट बावका দিবা বিরাছেন, তংপ্রতি জনাদর কিছুতেই শোভা পার না। আমা-দর নিয়ম এই বে, আমরা সকল শান্তের উচ্চতমাংশ গ্রহণ করি, निम्न ज्यारत्मत त्माय क्वितिहास्त धावूत हरे ना, त्कन ना छाहार्छ ত্রৰ জবিবার সভাবনা। এই নিয়মাবলখনে মতুর সাহাব্যে বর্তমান ৰাবহার শান্ত্রসমূত কি প্রকারে সিদ্ধ হর তাহাই দেশা ৰাউক। মহ বনিয়াটেন,

स्रवसातः छछार विनामाननी वावतानशि । स्रक्षानशि श्रदः सर्वरः स्रोतकः कृष्णुनानशि ।

কল্যাণকটা বিদ্যা বদি ইতরজাতি হইতে প্রহণ করা যাইতে পারে, অস্তাঞ্চ জাতি হইতেও পরম ধর্ম গ্রহণ বদি ব্যবস্থাসিক হর, তাহা হইলে এখনকার ব্যবহার মুমুর অভিপ্রায়সমত, ইহা কে আর অস্তীকার করিবেন ? কল্লুক ভট এই ল্লোকের অর্থ স্থাপত্তী করিবার জন্ম মহাভারতীয় মোক্ষধর্মের এই শ্লোকটি উক্ত করিবাছেন,

खाना जानः बाक्तगार कविषाचा रेवजार मृतामि नीतानजीकम् । अक्षाक्तगर अवशासन निकार न अक्षितः अववृत्ता विरम्कान् ।

শ্রাহ্মণ, ক্ষত্রির, বৈল্য ও শুদ্র এবং শুদ্র হইতেও ক মাহারা নীচ উটাহাদিগের হইতে উত্বজ্ঞান লিক্ষা করা ঘাইতে পারে, ইহা বদি লাক্তসম্বত ব্যবস্থা হয়, ভাহা হইলে এখনকার পরিবর্তিত আচরণ -লাক্রথিরোধী কি প্রকারে নির্দীত হইতে পারে ? বরং এই কথা বলা বাইতে পারে, মাহারা বিদ্যোপরবল হইয়া উৎক্ষত্তম আন লেক্সের নিক্ট হইতে শিক্ষা করিতে স্থা বা পাতিত্যসাধ্য ক্ষে

প্রাক্ত 'নাচ' পর প্রপাদের বিশেবণ করিয়া অর্থ করিছার কিছু কভি হয় বাঃ কারণ পরবর্ত্তী সোকভানিতে চারিবর্ণনাতের উল্লেখ বাকিলেও পৃথিবীতে বভ বর্ণ আছে নকলই এই চারি বর্ণের অন্তর্কত, ইচা নরব নাত্রীর বাবলা, করব রেজ্ববণ রাভাক্ষরির হইরা প্রস্থান পরিবাদিক হইতেক্ষেরঃ উপরে 'নাচ' পর অক্স করিয়া বাবলা ক্ষিকার প্রস্থানাত এই লে, পাত্রমতে লেজ্ববণ প্রস্থ আরু করিছেও সংগ্রামিক পুর ব্রহিছে নাচ এবং কলুলেরের গরাঃ।

বেন, ঠাহারা শান্তের উচ্চ তর আবেলের প্রতি অববেদ্যা করেন।
স্থেতাবা কৈবল অর্থের অন্ত নিক্ষা করিলে শান্তরতে নিক্ষনীর
ইতে পারে, কিন্তু বেখানে উচ্চতর জ্ঞানলাতের জন্ম সেই তারা
ধ্রবদখন করিতে হর, দেখানে এ কালে বা কোন কালে শান্তরতে
স্রে ভাষা শিক্ষা অনৈধ বলিয়া পরিগণিত হইতে পারে না।

শ্রেচ্ছগবের নিকটেও প্রভার সহিত তত্ত্বাদ শিকা করিলে প্রভাবান ব্যক্তি ক্ষম মৃত্যু অতিক্রম করিবে, শাক্র ববন স্পাই বাবেয় এই কথা বলিতেছেন, তথন বাহাদের শাক্রবাক্যে প্রভা আছে, তাঁহারা বিদেশীর সাধু মহাজনগণের প্রতি কোন প্রকার বিদেশ জনবরে পোবণ করিতে পারেন না। মেচ্ছগণের ধর্মানাক্র বলিরা বাঁহারা বাইবেল কোরাণ প্রভৃতিকে মুণা করেন, তাঁহারা শাক্রমর্যাদা লক্ষ্যন করিতেছেন। মহাভারতের মোক্ষধর্মে স্পাই উল্লিখিত আছে,

मर्क्स वर्गी बाक्सभी बक्किकोच्च मर्क्स मिछाः वाश्विरख रु बक्क । खक्त बाक्स बक्किको बनीमि मर्काः विवा बक्के रिरुटः समस्यम् ॥

"সকল বর্ণ ব্রহ্ম হইতে উৎপন্ন, অতএব ব্রাহ্মণ; সকল বর্ণ ই
নিত্যকাল বেদ প্রচার করিয়া থাকে, ব্রহ্মবৃদ্ধিতে তত্ত্ব ও শাস্ত্র
বলিতেছি, সকল বিশ্ব ব্রহ্মনন্ন, সমস্তই ব্রহ্মে পরিব্যাপ্ত।" এ
অকুশাসন অনুসারে ঘিনি যেথানে ব্রহ্মণ্ড শিক্ষা দিয়াছেন, তিনি
বে কোন দেশ কাল বা জাতির লোক হউন না কেন, তৎপ্রতি প্রহ্মা
করিয়া তাঁহাের নিকটে সেই তত্ত্ব শিক্ষা করিতে হইবে। এ স্থালে
ক্লেক্স্মানে কাহাকেও ছণা করিলে মুক্তির পথ অবক্লছ হইবে
তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। বাহারা মনে কবেন, ক্লেছপণের নিকটে
ব্যবহারিক শাস্ত্র শিক্ষা করা ঘাইতে পারে, কিন্তু ধর্ম্মশাস্ত্র শিক্ষা
করা ঘাইতে পারে না, তাঁহােরা শাত্রের বর্ধার্থ মর্ম্মক্র নত্ত্বন, অধবা

উক্তম শাস্ত্রের প্রতি একান্তদৃষ্টিশৃষ্ম। এ সকল ব্যক্তির ঈশবে বিবাসও নিতান্ত তুর্বান, অন্ধর্থা বিনি হিশ্মমাজের বে সকল লোকের শাস্ত্রজান নাই তাঁহাদিগকেও ঠিক প্রাচীন শাস্ত্রের বিধি অনুসারে সর্ব্ববিষয়ে পরিবর্ত্তিত করিয়া তুলিয়াছেন, তৎকৃত পরিবর্ত্তন অবশ্য শাস্ত্রসমত ইহা তাঁহারা বিশাস করিয়া লইতেন। ত্রাহ্মগণ মেছাদি ভেদ না করিয়া সকল দেশের সাধু মহাজনগণের নিকট হইতে তত্ত্বজ্ঞান শিক্ষা করেন, ইহাতে বে তাঁহারা ঠিক শাস্ত্রের অনুবর্ত্তন করিতেছেন, তাহা কাহারও অন্ধীকার করিবার উপায় নাই। যাঁহার। হিশ্ বলিয়া পরিচয় দান করেন, তাঁহাদের এ সম্বন্ধে হিশ্পান্তের অনুশাসন অনুবর্ত্তন করা একান্ত কর্ত্ব্য।

শ্লেছের নিকটে জ্ঞানশিক্ষা অশাস্ত্রীয় নহে,ইহা অনেকে মানিতে পারেন, কিন্তু এ সময়ে জাতিভেদের প্রথার যে উদ্দেদ হইতেছে, ইহাতে হিন্দুর্থ একাড বিপদ্প্রস্ত সকলেই মনে করিতেছেন। হিন্দুর্থ থের আর কিছুই নহে কেবল জাতিভেদবিচার, ইহাই জনেকের ধারণা। এরপ ধারণা থাকিয়া কি লাভ ৭ সকল হিন্দুর গৃহেই জাতিভেদ উচ্ছেদের প্রতুর পরিমাণ আয়েজন বিদ্যামন। ফলতঃ এখন সকলেই জানিতেছেন, জাতিভেদপ্রধা কলিত, বাস্থবিক সভ্য নর। শাস্ত্রকারেরা যে মূলের উপরে বর্ণাগ্রমভেদ ছাল্ড কিন্তুর করিয়াভিনেন তাহা সম্পূর্ণ কালনিক, ইহা বলা ছামান্য। তবে ইহা বলা বাইতে পারে, রাদ্ধণের সন্তান হইলেই ব্যক্ষণ হইবে, শুদ্ধর সন্তান হইলেই শুদ্ধ হইবে, ইহা কলনা ও অত্যাচার। শ্রমরাগবত বলিতেছেন,

বস্ত, ব্যক্তনাং প্রোজং পুংগো বর্ণাভিবাঞ্জন । ব্যক্তরাপি দক্ষেত ততেনৈর বিনির্দ্ধিনং ঃ পুরুবের বর্ণাভিবাঞ্জক (শমদমাদি) বে সকল লক্ষণ বলা হইরাছে, বদি অক্সত্রও সেই লক্ষণ দেখিতে পাওরা বার, তাহা হইলে
সেই লক্ষণ বারাই বর্ণ নির্দ্দেশ করিতে হইবে। এ ব্যবস্থা অকুসারে,
বিনি বে কোন জাতীয় লোক হউন না কেন, লক্ষণাস্থসারে তিনি
ত্রাহ্মণ বা ক্ষত্রিয়, বৈশু বা শুদ্র বলিরা গণ্য হইবেন। ফলতঃ
লক্ষণ বা চরিত্রান্থসারে বর্ণভেদ, ইহার প্রমাণ খাল্লে ভূরি ভূরি
আছে। একই ব্যক্তির প্তগণ ত্রাহ্মণ শত্রিয় বৈশু বা শুদ্র
হইলেন, তাঁহাদিগের চরিত্র অনুসারে বর্ণ বিভাগ হইল, ইহা
আর কে না অবগত আছেন * ? বংগদের সময়ে বর্ণভেদপ্রধা
প্রবর্ত্তিত হয় নাই। আগ্য ও দহ্য এই মাত্র প্রভেদ উহার সর্করে
উরিধিত আছে। তবে ঝগেদের অন্থিমভাগে দশম মণ্ডলে পুরুষ
ক্ষত্রে পুরুবের রূপকলনামধ্যে এই ঝক্টি দেখিতে পাওয়া যায়,

ভাল্মণোষ্ঠ মুখ্যানীৎ বাছু রাজজকতে। উর ভদক্ত বৈজ্ঞ পদ্ধাং প্রো অভারত a

প্রাহ্মণ ইহার মুখ, ক্ষতিয় ইহার বাছ, বৈশ্য ইহার উরু, ইহা ত্বশাস্ত পুরুষের রূপ কলনা। 'পা হইতে শুদ্র জ্ঞান্তল' এরূপ অর্থ করিলে এই ঋক্টি বর্ণভেদের ব্যবস্থাপক বলিয়া মনে হয়, কিছ পুর্বের বর্ণনাগুলির সহিত একতা রক্ষা করিবার নিমিত্ত 'পদের

প্রেরা গৃংলনদক্তাপি গুনকো বস্তু লোনকাঃ। ব্রাক্তপাঃ ক্ষত্রিবাদেব
 বৈক্রাঃ পূরা গুলৈকাঃ। হরিবংশ ২৯ জ।

এ সকল প্রভেদের কারণ বে কর্ম্বের বিচিত্রতা বায়ুপুরাণ তাহা স্পষ্ট বাকো উল্লেখ করিয়াছেন। "এডফ্র বংশে সমৃদ্ধুতা বিচিত্রৈ: কর্মজি-বিচ্চা: " বিজ্পুরাণ গৃৎক্রমদের পুত্র গুনককে চাত্তর্বাণের প্রবর্ত্তিকা বিচ্ছা নির্দেশ করিয়াছেন।

কর্ম হইবা এরপ অর্থ করাই শোভাপার। কিছ বর্ধন এই বৃহটি অবস্থান করিয়া প্রস্করে বর্ণজেগপ্রথা প্রবর্তিত হইরাছে এবং এক রক্ষ হইতেই সকল বর্ণের উৎপত্তি সমূদার পাত্র করিয়াক করিয়াকেন, তবন "সর্কে বর্ণা রাক্ষণা রক্ষণাত" মহাভারতের এই কথা আপ্রের করিয়া সকল বর্ণকেই উচ্চ অধ্যাস্থাইতে রাক্ষণ বিলয়া গণ্য করা প্রেয়ন্থর। ইহারা পতিত, ইহারা ভ্রন্তীচার, এই সকল কথা মূবে তুলিয়া সম্প্রাতির প্রেইত রক্ষণ করিবার বন্ধ একালে বৃধা, কেন না পাত্রতাদােষ ঘটে নাই, হিন্দুসমাজে এরুপ এক জন লোকও পাওয়া বিরল। যদি কেহ বলেন, আমি নিতান্ধ জন্মান, তবে তিনি সংপ্রবদােষে পতিত হইরাছেন ইহা উহাকে অবন্যই দীকার করিতে হইবে *। ফলতঃ আপ্রাক্ষেত্র জ্ঞান করিয়া অপর সকলকে ব্রাহ্মণজ্ঞানে সম্মান দান, ইহা শান্তসম্বত সমীচীন প্রা।

এ সমরে সকল বর্ণের বিমিপ্রভাব উপস্থিত। গোপনে বা প্রকাশ্যে সকলেই সকলের অন্নপান ভোজনে প্রবৃত্ত। মেছে র এখন অনেকের নিত্য নৈমিতিক ব্যাপার হইন্না উঠিয়াছে। বাহিরে বৈক্ষব বেশ, গোপনে মেছেপাচিত মাংসাদিতে উদরের তৃথিসাধন, ইহা আর এখন বিরল ব্যবহার নহে। আন্দ্রণ, ফড্রিয়, বৈশ্ব এবং ভারবাপরান্ত্রণ শুদ্রের অন্নভাজনে ব্যবহা দিয়া শাস্ত্রকারের বর্তমান

क विकास गरवर सार मारे ब क्या ग्या ह्या । स्वयम यित्रास्त्रन,
 शिक्षांक्रव महाविद्या सामन् मर्यक्तार नहा । विविक्तास्त्र स्वारकारक प्रकार शिक्षांक्रांक्राय ।

[†] সভানাত্রাজনো নিভামুখিজেত বিংাধিব। অভ্তল্পের চাকাজেত ব্যবাসভ মর্কাব। বসুঃ

সময়ের ব্যবহার লাক্ষসমত করিয়া লিয়াছেন, স্কুডরাং এ ব্যবহার নাম্বের একাম বিরোধী, ইছাই বা বর্তমান হিন্দুগণ কি প্রকারে সিছাত্ত করিবেন 🕶 নেজ্বণ ব্রাত্য ক্ষত্রিয়, এখন ভাঁহারা বৃষ্ট্যছার পরিত্যাগ করিয়া উচ্চতম জ্ঞানের সোপানে আরোছণ করিয়াছেন; ভাঁছাদের সহিত আহারব্যবহারে হিন্দুধর্ম্মের বিলোপ নির্ণন্ন কর। অসম্ভত বলপ্রকাশ ভিন্ন আর কি বলা যাইতে পারে ৮ এ বল প্রকাশ আর কার্যাকর হইতেছে না, কেন না ইংলও হইতে সমাগত ব্যক্তি-গণের সঙ্গে পান ভোজন সামাজিক ভোজেও চলিভেছে। ফল্ড: বাহা শাস্ত্রসন্মত নয়, কেবল বলপ্রকাশমাত্র ভাহা কথন জনসম জে वर भिन में डिएड भारत ना। এव है विश्वता हिम्मून आशक्त উথাপন করিতে পারেন, সে আপত্তিতে আমার সহামুভূতি নাই তাহা নহে, কেন না আমি নিজে নিরামিষ ভোজনের প্রাণাতী। এ আপত্তি অভোক্তাভোক্তন। বাঁহার। এক বার ইংলণ্ডের গোমাংস ভোজন করিয়াছেন, ভনিতে পাই উাহারা উহার আম্বাদে এমনই মুগ্ধ বে, সকল মাংস ছাড়িয়া সেই মাংসভোজনে নিভাস্ত লোলুপ হন। এটি হিন্দুর পক্ষে নিতান্ত ত্বাকর সন্দেহ নাই। কিন্তু বৈদিক আচরণ শারণ করিয়া ইহা বে ক্ষমার যোগ্য ভাছা সকলকেই মানিতে त्रवृतस्मनश्च भाष्यश्वतात्मेत्र वहत्म एवम दिक्ति स्नाहतत्न প্রতাবৃত্তি উচ্চতম উদ্দেশ্য নির্দিষ্ট হইয়াছে, তথ্ন বাছারা সে মংসের আমাদ পরিত্যাপ করিতে পারিতেছেন না, জাঁহারা বৈদিক আচরণ বলিয়া আত্মপক্ষ সমর্থন করিবেন বিচিত্র কি 🕆 এ বোর পরিবর্ত্তনের সময়ে কিছু দিন এ সম্বাদ্ধে কমার দৃটিতে ব্বক ও

[°] জিছু বৰ্ণেছু কুৰ্বন্য পাকভোজনেবেৰ চঞ্চ প্ৰকাৰভিপঞ্জাৰা, পৃতা-নাক বয়ানৰে এ আদিভাপুচাৰ্থ

ধনিসম্ভানগণের প্রতি দৃষ্টি করা হিন্দুসমাজের পক্ষে অকন্যাণকঃ
নহে। প্রাচীন আর্থ্যগণ বে কারণে ঈদুশ আহার পরিতাপ
ক্ষিমাছিলেন, সে কারণ প্রত্যোবর্তন করিবে এবং এ দৃষিত ব্যবহার
আপনা হইতে তিরোহিত হইয়া ষাইবে।

বুজের আগমনে জাতিতেদ যথন এদেশে শিথিলবজন হইল, অনুপ্রকুল পাত্রে উক্চজাতিত্বের অভিমান কেবল অবিচার ও অন্ত্যাচার ইহা যথন সাধারণের ক্লরক্ষম হইল, তথন পৌরাণিকেরা স্তাও ন্যায়ের ভূমিতে মানবীয় উচ্চতা ও নীচ্চার ব্যবস্থা করিলেন। ঈরবের প্রতি একান্ত ভক্তিতে মানবের উচ্চতা লাভ হয়, সংসারের প্রতি আসন্তিতে উচ্চ বংশীয়েরাও হীন হইয়া যান, ইহা কে না আর প্রতিদিন প্রত্যক্ষ করিতেছেন ৭ এই প্রত্যক্ষ ব্যাপার দর্শন করিয়া পৌরাণিকেরা বলিলেন,

চলালোৎপি বিজ্ঞপ্রেটো চরিভজিপরারণ:।
 হরিভজিবিনীনে ডু বিজ্ঞোৎপি বাগচাধয়:।

"হরিভজি পরায়ণ চণ্ডালও ছিল হইতে শ্রেষ্ঠ। হরিভজিনিহীন হইলে হিল্প চণ্ডালাপেকা অধম।" এই নিয়ম অবলম্বন
করিয়াই ভাগবত বলিলেন

"বালেছপি সভঃ সমনাৰ কলতে" "বিপ্ৰাদি ৰড় ওণ্যুতাং ৰপচোৰৱিঞা"।

হরিতে ভক্তিমান হইলে 'চণ্ডালও তৎক্ষবাং বজ্ঞ কবিবার উপস্থক হয়' 'ছাদশ গুণযুক্ত বিপ্র হইতেও চণ্ডাল গেষ্ট'। ব্যনাদি সকল নীচবোনি ঈশবের কেন, ভক্তপ্রশের অনুসরণ করিলে পবিত্র হইয়া বার, ভক্তদেব একথা শাস্ত বাক্যে বলিয়াছেন,

কিলাভ্যনাত পুলিকপুত্ৰতা আভীরখোণা ব্যনাং বুলালয়। বেহতে চ পাপা বহুপাঞ্জরভাবি পুনতি ভেতাং অভিবিহণে নবং ।

কেবল জন্ধিদান্ত্রই এরপ বনিয়াছেন, তাহা নহে, জানপক্ষেপ্ত ছাই সূর্কোক ব্যবস্থা। বান্যকালে বর্থন জন্ত কোন দান্ত্র পার্ত্ত রো হয় নাই, তথন এক নীতা পাঠ করিয়াই জাতিজেলপ্রবাদ দুসারত্ব আমার হুদুবুজুম হয়। নীতা স্পর্টবাক্তে বনিয়াছেন,

> বিদ্যাবিনমস্পনে ব্ৰাহ্মণে গৰি হস্তিনি। শুনি চৈৰ ৰপাকে চ পৰিডাঃ নমৰৰ্শিনঃ । ইট্ছৰ ভৈন্ধি ভঃ নৰ্গো বেখাং সামো ছিডং মনঃ। নিৰ্দোষং হি সমং ব্ৰহ্ম ভ্ৰমান্ত্ৰহ্মণি ডে ছিডাঃ ।

ব্রহ্ম বরং নির্দ্ধেব, তিনি সকলকে সমৃদৃষ্টিতে দর্শন করেন, তাঁহার অনুসরণ করিয়া ব্রাহ্মণ চপ্তালাদিকে বাঁহারা সমৃদৃষ্টিতে দেশেন, তাঁহারা সংসারকে জয় করেন, ইহা বলিয়া গীতা জ্ঞান-পল্পেও বর্ণভেদের অসারতা বিলক্ষণ প্রদর্শন করিয়াছেন। ফলতঃ এ দকল ভেদবৃদ্ধি অভিমানবিভৃত্তিত, ইহাতে ঈশ্বর কর্থন পরিভৃত্তি হন না, ইহাতে কেবল আধ্যাত্মিক হীনতা প্রকাশ পায়, শাস্ত ভূয়োভ্য়ঃ একথা বলিয়া জাতিভেদের অন্তঃসারশৃক্ততা বিলক্ষণ প্রতিপাদন করিয়াছেন ক। দেশে এ সময়ে শাস্তপ্রচার বহল পরিমাণে হই-তেছে, দেই সকল শাস্ত্র পাঠ করিয়া বদি বিনষ্টপ্রার জাতিভেদ্ধ লারও বিনষ্ট হয়, তাহাতে আক্রেপ করিয়া বদি বিনষ্টপ্রার জাতিভেদ্ধ লারও বিনষ্ট হয়, তাহাতে আক্রেপ করিয়া বদার বিনষ্ট প্রকার দিকে দিকে করিয়া বর্ত্তিন করিয়া বর্ত্তিনা স্মরের পরিবর্ত্তনসমূহের উপরাদ্ধী বিভাবন্থা ধারণ করিতে পারে, প্রত্যেক দেশহিত্তী হিশ্বর

[ি]ন ৰক্ষ ক্ষমকৰ্ম্মাত্যাং ন বৰ্ধাশ্ৰমকাতিন্তি: । সক্ষমেত্ৰ সিহন্তাবো বেকে বৈ সংহতে: বিষয় । ভারবক ১১ ক

তংগক্ষে বন্ধ করা একান্ত কর্ত্ব। ক্ষুটের শিব্যবাণের ভার অন্তরে ব্রহ্নিত ধর্মানির উপরে আফাশৃত হইরা বাহিরে লৌকিক ধর্মানি কলা করিবার বন্ধ, এ সময়ে দেশের যোর অনিষ্ট সাধন করিবেছে। কগটাচরশে দেখা বে অন্তঃসারশৃত হইরা পড়িবে, অধর্ম আমিরা সর্কীণা উহাকে প্রাস করিরা কেলিবে। বাহার অবান্তবিকতা হলরক্ষম হইরাছে, গোশনে তাহার উচ্ছেদসাধন করিরা স্বার্থাসূরোধে বা লোকভরে বাহিরে কপটাচরশ, এতদপেকা নিশ্বনীয় অকল্যাকর ব্যবহার আর কি হইতে পারে ? ব্রাহ্মগণ এই কপটাচরণে প্রার্থ্ নন, এজত ভাঁহারা দেখীয়গণ কর্তৃক পরিত্যক্ষ হইরা বাকেন, ইহা কর্মন ধর্মসক্ষত নহে।

হিশ্সমাজে গৃঢ় ও প্রকাশ ভাবে বে সকল পরিবর্তন উপন্থিত তাহার আলোচনা হইল, এবং এ সকল পরিবর্তনের মূলে বে বিধাতার হস্ত আছে, ও এ সকল বে উচ্চতম শাস্ত্রসঙ্গত, তাহাও প্রদর্শিত হইল, এখন দেখা উচিত বে, হিশ্সমাজের মধ্যে সেই উচ্চ ধর্ম সর্ব্যর প্রবেশ করিতেছে কি না, বাহাতে এই সকল পরিবর্তিত আচার ব্যবহার হিশ্সমাজের উচ্চেদের কারণ না হইরা, উহার উন্নতির কারণ হইবে। কিছু দিন পূর্বে শিক্ষিত যুবকণণ এ দেশের শাস্ত্রাদি কিছুই নয়, এই বলিয়া বংপরোনান্তি শাস্ত্রসমূহকে হুণা করিতেন, এখন আবার ভাহার বিপরীত ভাব উপন্থিত অল দিন হবল শিক্ষিত্রপ বলিতে আরম্ভ করিয়াছেন, পৃথিত আল পর্যান্ত এমন উন্নতির ব্যাপার হয় নাই, বাহা আমাদের দেশের শাস্ত্রেনাই। বর্ত্তমানকালের আবিষ্কৃত সমূলার বিষয়প্তলিই উাহারা শাস্ত্র-প্রমানকালের আবিষ্কৃত সমূলার বিষয়প্তলিই উাহারা শাস্ত্র-প্রমান বলিয়া প্রতিপান করিতে বন্ধ করিতেছেন। সংস্কৃত ভাবার বৃদ্ধান্তনেন অর্থান্তর করা বাইতে পারের,বৈন্ধিক ভাষা এমনই

অবোধ্য বে, বে কোন ক্মর্থ নিম্পন্ন করিয়া লইতে পারা বায়। ভাষার অর্থান্তরতার সামর্থ্য অবলম্বন করিয়া আপনাদের দেশের গৌরবর্বর্জন করিবার জন্ম বত্রে মিধ্যা দেশামুরাগ ভিন্ন আর কিছুই প্রকাশ পায়না। ছ একটি শব্দের অর্থান্তর সাধন ব্যতীত যে ম্বলে আর কোন উপায় নাই, সে ম্বলে তালৃশ উপায় পরিহার করাই উচিত। শাস্ত্রে বে সকল বিষয়ের ম্পাষ্ট নির্দেশ আছে. এবং যে সকল নির্দেশ ইতিহাসসক্ষত তাহা অবলম্বন করিলেই যথেপ্ট হইল। ইহা অতি মুখের বিষয় যে, এখন প্রায় প্রত্যেক শিক্ষিতের হাতেই এক এক থানি গীতা দেখিতে পাওয়া যায়। হিন্দুগণ যাহাই বলুন, ইহা যে ব্রাহ্মসমান্তের যথের ফল তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। দেশের সর্ব্বে প্রকার উমতি ধর্মোন্নতির উপরে নির্ভির করে। সে দিকে দেশীয় ব্যক্তিগনের চিন্তার গতি হইয়াছে, ইহা নিতান্ত যাহাণের বিষয়।

দেশের ভিতরে যে সকল পরিবর্তন উপস্থিত ইইরাছে, তাহা হিল্পথ্যের নিয়ভাগের উপথোগী নহে, উচ্চতম ভাগের উপথোগী। অতএব হিল্পথ্যের উচ্চতম বিভাগের সংক্রেপে আলোচনা না করিয়া বলা শেষ করা কিছুতেই উচিত নহে। হিল্পগ্রের ধর্ম্ম কি ? জিজ্ঞাসা করিলে সকলেই উত্তর দেন, পৌশ্রলিকতা। এরপ উত্তর শাস্ত্রান্ত্রারে হিল্পথ্যের অবমাননা। হিল্পথ্য আধ্যাত্মিকতার যে ভূমিতে আসিয়া দাঁ ড়াইয়াছিল, সেধান হইতে ভাহাকে অবভারণ করিয়া নিয়ভূমিতে আনিয়া নিজেপ করা ইহা নিতান্ত অভ্যাতার। সর্মভূতে ও হল্বে অব্যিত ঈশ্বরের অর্জনা করিতে অসমর্থ মৃত্ ব্যক্তি ভদক্তমে প্রতিমাদি অবলম্বন করিয়াছে, এখন ইহাকেই হিল্পথ্যের চরম বলা, উহার নিলা ভিন্ন আরে কি হইতে

পাবে * ? হিল্পার্থে জাচার ব্যবহারের পর পর পরিবর্তন যে প্রকার হইয়াছে, ধর্মসংক্ষান্ত সেই প্রকার পর পর পরিবর্তন ঘটগাছে। ভাগবত এই পর পর পরিবর্তন একটি শ্রোকে নিবন্ধ করিয়াছেন,

> বদস্তি ভত্ত্বিদত্তত্ব বজ্জানমন্থ্য । বক্ষেতি শ্রমাজেতি ভগবানিতি শন্ধাতে ।

"ভরবিদেরা এক অন্বয় জ্ঞানবস্তকেই ভত্ত বলেন। এই তত্ত ব্রহ্ম, পরমাত্মা ও ভগবান নামে আখ্যাত হইয়া থাকেন।" ব্রহ্ম রহত্তে সমুদায় বিশ্বব্যাপী, স্থতরাং বিশ্বের সমুদায় বস্তুতে ত্রন্ধ দর্শন ইহা সর্ম্মপ্রথম সোপান। বেদ এই সোপান প্রদর্শন করে। প্রাকৃতিক পদার্থনিচয়ে ব্রহ্মদর্শন বেদের ইহাই মূলতত্ত্ব। বৈদিক সমরে কর্ম সর্ববিধান। জগতে নিয়ত ব্রক্ষের ক্রিয়াশালিও আর্যাগণ অবলোকন করিয়া একান্ত ক্রিয়াশালী হইবেন, ইহা আর অস্বাভা-বিক কি ? বেদান্ত বাহিরের বিষয় সমুদায় পরিত্যার করিয়া ক্রমে অন্তরের দিকে অগ্রসর হইলেন। হঠাৎ বাহির ছাড়িয়া অন্তরে প্রবেশ হইতে পারে না, এজন্ত অন্তর্ব হি ইন্সিয়গণ হইতে প্রাণে, প্রাণ হইতে পরমাত্মাতে বেদান্তের প্রবেশ হইল। বৈদিক ক্রিয়ামুগ্রান একেবারে পরিত্যক্ত হইতে পারে না, এজন্য আহার পান ভোজ-नामि मकल व्यकाद्वत रेमहिक क्रियारक र्यमाञ्चरामिशन यक्त्मरधा পরিগণিত করিয়া লইলেন। যজ ধাতুর অর্থ দেবপূজা; 💥 রাং স্বাভাবিক ক্রিয়মাত্রই দেবতার ইচ্ছাপালন, তাঁহার অর্চনা, বিশেষ বিশেষ যক্ত, ইহা ছির করিয়া বেদান্তবাদিশণ উন্নতিব ভূমিতে আরোহণ করিলেন।

অর্চাণাবর্চয়েতাগদীপরং মাং সকর্ত্বর বাবর বেদ স্কর্দি দর্জভূতেববছিতম্ । বো মাং দর্কের্ ভূতের্ সন্তমান্তানমীপরম্ । হিতার্কাং
ভ ক্তে মোঁচাণে ভসক্তেব জুহোতি সা ॥ ভাগবত, ৩ছ ।

वक्षपृरहेस्वरक्षाः ।

এই নিম্ন অবলম্বন করিয়া ইল্রিয়, প্রাণ, মন, বৃদ্ধি ইত্যান্তি
কলেতে তাঁহারা ব্রহ্মদর্শনপ্রধালী ছাপন করিলেন। আত্মাতে
রমাত্মাকে দর্শন করাই বেদান্তবাদিদপের চরমোন্ততি। এই

তাঁর সোপান হইতে আবার তৃতীর সোপানে আরোহণ হইল।

তি আত্মাতে পরমাত্মার প্রকাশ আছে সভ্য, কিন্ত সকলেতেই

চাহার প্রকাশ সমান নর। বিশেষ বিশেষ ব্যক্তিতে তাঁহার বিশেষ
বিশেষ প্রকাশ দর্শন করিয়া ঐপর্যবিভাবনতঃ সেই সেই ব্যক্তি

গেবান্ নামে অভিহিত হইলেন, এবং তাঁহাদিলেতে প্রকাশিত

শৈর বিশেষ ভাবে অর্চিত হইতে লাগিলেন। আশক্ষা হইতে

াবে, এই সোপানে আরু ব্যক্তিগণ মন্ত্র্যপ্রার ব্যাপ্ত হইলেন,

কন্ত শাব্রের অভ্যন্তবে গুঢ় চৃষ্টিনিক্রেপ করিলে এ আশক্ষা আর

াকে না। বাঁহাতে ঈশ্বের বিশেষ প্রকাশ অন্ত্র্ভত হইল, সেই

্যক্তিতে ঈশ্বর আবদ্ধ নন, সর্ব্ব্র তিনি প্রকাশিত, এইরপে সাধক
শে ভগবদারাধনায় প্রবৃত্ত হইলেন। হইতে পারে, ঈদৃশ লোক

গ্রহ্ম ছিল, অক্সধা যোগাচার্য্য কেন বলিবেন,

याञ्चरपदः नर्समिष्ठि न महाचा चुन्न छः।

ছুল ভ হউন, কিন্ত শান্ত এইরপে ব্যক্তির জক্তই ভগবদারাধনা প্রবর্ত্তিত করিয়াছেন। এই ভগবদারাধনায় সর্কাভৃতে ও প্রদক্তে শ্বর দর্শন বিহিত, স্বতরাং বেদ ও বেদান্ত এখানে আসিয়া নিমিলিত হইয়াছে। আচণ্ডাল সকলেতে ঈশ্বরকে দর্শন করিয়া কলের প্রতি যথোচিত সন্ত্রম প্রদর্শন ভগবছকণণের প্রধান কল্প *। বৈদিক সময়োচিত কর্মবোগ, বৈদান্তিক সময়োচিত

বিহকা অয়য়ানান্ খানু দৃশং বীডাঞ্ দৈহিকীয় ।
 প্রথমেদগুরজুমাবাখচাভালগোরয় । ভাগবভ ১১য়, ১৯ য় ।

আনবাদ, এবং শৌরানিক মুম্নোচিত ভিলবোপ, এ তিনের মধ্যে বিদ্যানান। কর্তনান সময়ে গীতার প্রতি
আদর বাড়িরাছে বটে, কিন্তু গীতা এই তিন যোগকে কি প্রকার
একীভূত করিরাছেন, তাহা বুরিতে না পারিরা অনেকে অজ্ঞাত্যার
গীতা ও ভয়ন্তার অবমাননা করিতেছেন। এই তিন মোগে
একত্বে যে মহাযোগ উপন্থিত হয়, বর্তমান সময় তাহারই ছয় প্রস্তুত্ত । এই যোগের যে সকল অস্তরায় ছিল, তাহা আচার বাক্ষারাদির পরিবর্ত্তনের মঙ্গে সকলে তিরোহিত হইতেছে। এখন সকলে
যথার্থ দৃষ্টিতে শাস্ত্র চিস্তা করিয়া বদি এই মহাযোগের পদ্মা অবন্যম
করেন *, তাহা হইলে হিলুসমাজ কত দ্র উচ্চভূমিতে আরুয়, তাহা পৃথিবীর সম্পায় জাতিকে দেখাইতে সমর্থ হইবেন।

উপসংহার কালে গুটি কয়েক কথা বলা নিতান্ত প্রয়োজন। এত
ক্ষণ যাহা বলা হইল, শান্ত অবলম্বন করিয়াই তাহা বলা হইয়াছে।
শান্তের প্রাধান্ত স্থাপন করিতে গিয়া একটি বিষয়ে বিপদ্ উপছিত
হইবার সন্তর্যবনা আছে, কেন না শান্ত এক প্রকার নহে, বহু প্রকার।
দেশ কাল পাত্র অবস্থাদি ভেদে শান্তের বহুত্ব ঘটিয়াছে, ইহা
মানিয়া লইলেও মানুষ স্ব বৃদ্ধি অনুসারে কোন না কোন শান্তেরপক্ষপাতী হইয়া পড়ে। বহু শান্ত অধ্যয়ন করিলে বৃদ্ধি বিভিন্ন
হইয়া পড়ে, কোন্টি গ্রহণীয় কোন্টি অগ্রহণীয়া বৃদ্ধি। গওয়া
মক্তিন হয়, এজন্ত শান্তপ্রশেহগণ সম্বারোধনাকে স্কর্মান্ত্র প্রশান্তন।
করিয়া শান্তকে তদন্তর্থী করিয়া লইতে উপদেশ দিয়াছেন।

^{*} এ মেনে বৰ্ণাক্ৰমাদির কোন বিচার নাই—"অপি বৰ্ণাবকুটক নারী বা ধর্মকাক্ষিণী। ভাবপোডেন মার্গেন গচ্ছেডাং প্রমাং গভিম্॥

শান্তিপর্বা ২৩৯ অ, ৩৪ স্লোক।

* BOSHSONIGE

বাহাব্যে পান্তালোচনা করিলে পান্তের বধার্থ মর্প্র নির্মণ বাহাব্যে পান্তালোচনা করিলে পান্তের বধার্থ মর্প্র সাধকের ব হইরা থাকে। বে ব্যক্তি ইহার বিপরীত পথ অবলম্বন তাঁহাকে ভাত্তিতে জড়িরা পড়িতে হয়। ধর্মার্থিরণ এবং বা পদেশের হিতের জন্ত জীবন সমর্পণ করিরাছেন তাঁহারা রোধনা অবলম্বন করুন, এবং কোন এক পান্তের পক্ষপাতী না সকল পান্ত আলোচনা করুন, দেখিতে পাইবেন, ধর্ম কেমনানপরস্পরায় উন্নত ভূমিতে আরোহণ করিরাছে, এবং সেই ভূমিতে এথনকার সমুদার পরিবর্তন হিস্পুমাজের কল্যাশের কেমন সামঞ্জন্ত লাভ করিরাছে। হিস্পুধর্ম নিতান্ত উদার, বিহার মুলস্ত্র এই,

ৰৰ্জ্বং যো বাৰতে বৰ্জ্য ন ন বৰ্জ্য কুৰৰ্জ ডং। অনিহোৰাৎ তু যো বৰ্জ্য নৰক্ষা নতাবিক্তম ।

বে বর্দ্ম অক্ত ধর্ম্মের বিরোধী সে ধর্ম নর কুধর্ম ; অবিরোধী ব ধর্ম সেই ধর্ম্মই ধর্ম। হিন্দ্ধর্ম সাজ্যদারিকতার বিরোধী ; কালে হার ভিতরে সাজ্যদারিকতা উপদ্বিত হইয়া আয়ুনিক বৈক্ষর-জ্যাদারে 'বহুলাত্র ও কলাত্যাস' নিবেধের বিষয় হইয়াছে। সম্পার দান্তের সামঞ্জন্ত না করিয়া কোন সজ্যদার স্থাপন করিতে গেলেই ক্ষেপ নিবেধ অনিবার্ঘ্য, কিন্তু বর্তমান সময়ে একণ নিবেধের কেছ ক্ষেক্তিন করিবেন ভাছার সজ্ঞাবনা নাই। শাল্র পূর্ব্বে বোগের হার ছিল, এখন ব্যবসারের উপার হইয়াছে, ইহাডেই বার গেদ উপদ্বিত। আশা করা যাইতে পারে বে, বোগবর্দ্মের নরজ্যদরের সঙ্গে শাল্তমর্ঘ্যাদা পুনরায় স্থাপিত হইরে, এবং হারা শাল্তজ্ঞ ক্রাহারা স্থাধারা প্রবানা প্রহার ছাহার আধ্যাদ্ধি-

কতা বিনষ্ট করিয়া লোকসকলকে চির বিনের আছ আর বিরছ্রিছে আবদ্ধ রাখিতে বর করিবেন না। ইবা আবার বাজে নিভার আজাদের সংবাদ বে,বেধানেই হিশ্বপ্রের ব্যাব্যাকৃষ্ণ ব্যাব্যা করেন, সেধানে বছলোক সমবেত হন। তাঁহারা যদি উচ্চতম হিশ্বপ্রের ব্যাব্যা করেন, আমরা জানি, তাঁহারা আমাদেরই কার্য করিভেছেন। লোকে সংভারদেরে বে খলে আমাদের কথা ভনিরা আজাবান্ হইবেন না, সে ছলে বন্ধি তাঁহাদের কথার প্রতার খাসন করিয়া উচ্চভুরিতে আরু হইতে বর করেন, আমাদেরই উদ্দেশ্য তদ্যারা সাধিত হইল। তবে এ খলে এই একটা কথা বলা প্রয়োজন বে, বাহারা হিশ্বপ্রপ্রচারে রতী হইয়াছেন তাঁহারা বেন আভিবদতঃ আপনারা বিকৃত বোগ অবলখন না করেন এবং অপরকে উহা দিলা দিতে সিরা আভিজালে তাহাদিসকে জড়িত না করেন। বোগণান্ত্রে এই বিকৃত পথের প্রতিকৃলে যে সকল অভুখাসন আছে তাহা দেখিয়া বেন তাঁহারা সর্বাথা সাবধান হন *।

वृत्वादम निष्कृष्ट ममार्था विष्ठाः । शब्क्षान ।

[্]ৰজন্তালাৰ বৰজ্ঞোভাৰ বৃহততা বোৰস্ভ্ৰন । বছা সন্পানাৰত ভালজনপুৰ্বেভ্ৰম । ভাগৰত, ১১ জ, ১০ জ ।

ন চ প্ৰাণনাগুৰোগো ব নানাগ্ৰমিরীক্ষণাং। ব ক্রানাক্তি-বিক্ষের পোঠেন চ ক্ষেৎ কৃতিং । ব নোন্যস্ত্ত্তৈরবেক্ত প্রতিক্ষরাঃ

[,]बानेपारमा वि नक्षरना निक्र निः बाहरवयनः । वष्ट्यपुराणि वृक्षयु देव बानानु देवनिवनक्षयः । वाकाविकारः कराकाय क्यांक्षयं नवास्टबरः ।

मास्मिम् का मा

উপাসনাপ্রণাদীর ক্যামান

উপাদনাপ্রণালীর ব্যাখ্যা।

छात्राधन ।

ख्रातानामनात व्यवम क्रज छेरबावम । छेरबावन अवर रवावम हेरवर मरबा टाएम कि मकरनत चार्ल कहें हैं त्वांका टारबा-(क्न मा अल्लाम भूषात्र भूत्व (वाधन विनेत्रा अक्षेत्र भूषात्र আছে, সেইটি বংসর বংসর হিন্দুর গৃহে অনুষ্ঠিত হয়। ধন শক্ষের অর্থ জাগাইয়া ভোলা। দেবতা নিজিত ছিলেন, ाटक खालाहेबात खळ (बाधन इहेता शादक। खुमान केसद्वर क छत्रमाम निकर्पत निटक दश्लिया पृथ्यात छन्यान इसे। रतत निटक ट्रिनिया यथन म्ट्रांत जैनवास स्व ज्यन जाहादक ारायन अवर मिकरनत मिटक ट्रिनिया यथन छेम्यांच द्य छथन गटक मक्तिनायम यटन । (सर्वात्मत शटक दिखतायदनर प्रतमान ।, मिक्नवाहरनत इत्रमाम ताति । वमञ्चनान छेखताहरनत अञ्चर्णाः, हिर एक्कारमञ्जलम । अ ममरा दे कर्गायम व व जाहारण ধনের প্রয়েজন নাই, কেন না দেবত। জাপিরা আছেন। কিছ ९ कान मक्नियास्त्रत् चन्नर्गात. अगमास त्राजि. तन्नण निक्ति. ারাং এ সময়ে বোধনের প্রয়োজন হইয়া থাকে। এক চির গ্রং, কুডরাং তাঁহার সম্বন্ধে বোধন নিস্তারোজন।

মহিলাবিত্যালয়ায়ুর্গত "শান্ত্র ও ধর্মের ইতিহাসের পরীক্ষা"
 ইলে উপাধ্যার কর্তৃক প্রথক্ত উপদেশ। ১৮২৫ শক।

वक्त कित जाबर, कांशत मश्रक वाध्यत वाहा जन नारे, ब कथा मछा श्रेटलक त्योदानिकता नतम त्वराटक स्थानतम छ নিদার আরোপ করিয়াছেন। এ কাররণ ও নিদা অক্ত প্রকার। यथन সমূদায় অগতের প্রশন্ত হয় অর্থাং ঈশবেতে যেমন স্টির शुर्ख छन् र विनीन इरेड़ाछिन एक्सिन छाँगाए विनीन इरेडा दास, তৰন সকল শক্তি নিদ্ৰিত হইয়া ঈশবেতে স্থিতি করে, ঈশবের লীলার বিরাম হয়। বখন লীলার বিরাম হইল, পরম দেবত। আপনাতে আপনি স্থিতি করিতে লাগিলেন, তথন মহাস্যুগ্রি উপস্থিত, সুতরাং তিমি নিদ্রিত হইয়া অবস্থিত। আবার ধর্মন তিনি সৃষ্টিপ্রকাশ করিতে উন্মুখ হটলেন, তখন নিদ্রিত শক্তিগুলি জাণিয়া উঠিন, পরম দেবতার লীলা প্রবৃত হইল, তিনিও জাএৎ इटेश बीबाय श्राप्त इटेटबन, युख्यार এটি टाहार सानर्व-काल । ेमधावित्कतः सम्या कर्गाउत धालम् रह मार्गिन ना. थे धालत भानिया थारकन । आभारत्व मछ नियायिक गर्भव असूत्र ; किन्न স্পেলার প্রভৃতি পণ্ডিত প্রলয় মানিয়া থাকেন। সে যাহা হউ ১, স্বাধ বন্ধ নিদ্রা ও জাগরণের অধীন না হটলেও পৌরাণিকেরা ত্রপ্লেতে সৃষ্টির লয়, এবং জাঁহা হটতে পুনরায় সৃষ্টির প্রকাশ, এই তুইটা অবস্থা লইয়া ভাঁহার নিদ্রা ও জাগ্রণ নির্দারণ করিয়াছেন। धर्मन डाँशात महिल डाँशारक खरतुष शांकिन द्वाम कार्या कदिल ना, उथन निमा এই भरकत अरङ এই ব্যাপারের क्षिक्त आहेग चित, (कन ना आमता यथन निष्टिक इहे, उद्देन आमास्त्र मिक अकन वामानिताउ व्यवस्य रहेशा थाक । वामता वावाद रशम জাগিয়া উঠি, তথ্য জামানের সেই সকল নিভিত শক্তি জাগিয়া উঠিয়া কাৰ্য্য করিতে থাকে : এই ব্যাপারের তুলনার স্ক্রীপ্রকাশের

সময়ে প্রক্ষেতে অপরণ আরোপিত হয়। বেলা ও ব্রহ্মসমূহে হাত্ বলিয়াছেন, প্রাণ ভাগাই কবিতে ত্রন্ধের প্রস্থাপ্ত জাপরণ विशा व न। कतिशास्त्र । उक्त मर्ताजीज (transcendental) সর্বপত (immanent) উভয়ুই। তিনি যদি সকলের অতীত ন। হন, তাহা হটলে স্কলকে আপনার মধ্যে রাখিয়া ভাহাদিপেতে विविध পরিবর্তন ছটাইতে পারেন না, উহাদের পরিবর্তনের সঞ্জে সঙ্গে আপনিও পরিবর্ত্তি চুট্যা যান, আর ঠাঁচার পরিবর্ত্তিত্ত ধাকে না, এ সকল পরিব বনের আর একজন পরিবর্তীয়তার কলনা করিতে হয়। তিনিও যদি সকলের অতীত না হইয়া পরিবর্তিত इन. छाडा इंडेटन लगाब्द्य পরিবভরিতার পরিবর্ণনিতা, পরিবর্ত্ত-হিতার পরিবর্ত্তিতা, এইরূপ কলনা করিতে করিতে আর কোথাও माँछाइराद सान भावम गाम ना। देशाद साम्माटक सनदश् লোষ বলে। পুভরাং ব্রহ্ম সর্ববদাই সর্ব্বাতীত। যিনি সর্ব্বাতীত ঠাঁহার কোন পরিষর্ত্তন নাই। পরিষ্ঠ্তনছারাই জাগরণ বুঝায়, कुछतार होने अपन्य । उन्न यनि (कर्म मर्छाजीक हहेश शास्त्रन, জগতের সহিত ঠাহার কোন সমন্ধ না থাকে, ভাহা হইলে আপনি অপ্রিবর্ত্তিত থাকিয়া যে অপ্রেতে প্রিবর্ত্তন ঘটনে ইহা সিদ্ধ হয় ना गृष्टि । इर ना । अडबर डिनि मर्साडीड इरेग्ना मर्स्त्रड এইটি মানিতে হয়। যিনি অনন্ত তিনি সকলের অন্তরে বাহিরে ना बाकिएन अन्य इंडेरबन कि क्षकारत ? यनि जिनि किनन वाहिद्व थाएकन, सञ्चद ना थाएकन, जारा रहेत्व हाराज गाजि সৰ্বচ্চ না থাকাতে ভিনি অংবিশিষ্ট চইয়া পড়িংলন। অভএব ব্ৰেক্স স্কাতীত ও স্থাত ভাব অবল্পন কবিয়া নিছিত ও साग्रः উक्का ভाव डाहाटड बारतः निफ इहेना थाटक। विनि

সর্মাতীত, বিনি মাপনাতে আপনি নিয়ত অবস্থিত, জীব ব। জগতের দিকে তাঁহার গৃষ্টিকেপ নাই; বিনি সর্মগত হটর৷ জীব के छन्न एक विविध निविद्ध हैं। त्या अधीन कविराज्य करें, जिनिहें जान-मिलात भागनामि मम्मय काद्या निर्माट कतिएएएन. পूछा अर्छना हैंशबर रहेए भारत, मर्साजीय उत्कात भूका वर्फना रह ना, শক্ষরাচার্যোর এই প্রকার মত এবং এই প্রকার মতের জক্স ডিনি ব্ৰহ্ম ও ঈশ্বর এ চুইরের প্রভেদ করির।ছেন। আমর। এ মতের পক্ষপাতী নই। মুতরাং একই ব্রহ্মকে আমরা সর্ব্বাতীত ও সর্ব্বগত বলি। আমাদের উপাসনা সেই একই অবণ্ড ব্রন্মের, আর কাহারও নতে। সেই সঁর্মাতীত ব্রক্ষের জাগরণ ভক্ত স্কবভতির প্রয়োজন. ইছা মনে করিরা ছিলুগুর উচ্চার সম্বন্ধে বোধন স্বীকার করেন। অসুরগণের অভ্যাচারে উৎপ্রীড়িত হইয়া এক্ষা দেনগণকে লইয়া क्षप्रक्ष भक्रमान्यजात निकारे शमन कतितन, अवः अजित्यात्त ভাঁচাকে জালাইলেন। ভাঁহার প্রেরণা বিনা ঠাহার শক্তির কোন ব্যক্তিতে অবভরণ হয় না এইজন্য হাঁহাকে জাগরিত করা প্রয়োজন হয়, এ কথার যাচার। বিশ্বাস করেন, তাঁহারা ক্রক্রসমঙ্গে নিত্য বোধন মানিয়া লন।

ব্ৰহ্ম চির জাগ্রহ। তিনি নিপ্রিত হইলে আরু কর্পাই চলে না, কোধার বা থাকেন ব্রহ্মা, কোথার বা থাকেন দেবগণ, কোগার বা থাকে অন্তরগণ। কুতরাং আমাদের উপাসনার বোধনের কোন প্রয়োজন নাই, কিন্তু উদ্বোধনের প্রয়োজন আছে। উদোধন প্রস্কোর অর্থ স্মৃতিপথে আনরন। বাহা বিস্মৃত হইরা আছি, তাহা স্মৃতিপথে না আনিলে তংসস্থকে আনরা কিছুই করিতে পারি না। আমহা সংসারে নান। কার্যো ব্যাপৃত হইরা ইবরকে বিস্মৃত ছইর। থাকি, স্তরাং উপাসনার পূর্ব্ধে আমাদিগের উলোধনে প্রয়োজন হয়। বে সকল সাধক সর্বলা উল্ক আছেন, ঈবরকে কার্যা-কর্মের ভিতরে ভূলিয়া বান নাই, উহোদের সম্বক্ধে উলোধনর প্রয়োজন নাই। উলোধন এইজ্ঞ উপাসনার নিত্য অঞ্চনহে। তবে পারিবারিক ও সামাজিক উপাসনার এ অঞ্চনিত্য, কেন না সেধানে বহু অবস্থার ব্যক্তি সমবেত, কে উল্ক কে উল্ক নন, তাহার কোন স্থিরতা নাই। এস্থলে উলোধন হইয়া উপাসনার আরস্ত করাই সমুচিত।

জীবন্ত জাগ্রং নিত্য বিগ্রমান পরমেগরকে দুর হইতে ভাকিরা निकटि चानिए इस ना, शुखदार छे खायरन एकम मकन कथा विनात छेटा विज्ञान-७-वर्गन विक्रम हम । यात्रास्त अहेक्स दुनाय त्य, श्रेश्वत (यन निकाछ नारे, जिनि काथाय ठनिया शियाद्वन, व्यथना তিনি দ্বস্থ কোন অলক্ষিত স্থানে আছেন, সেখান হইতে তাঁহাকে "इंश्लिक्ड" विनिधा निक्रिवेको क्रिया महेट्ड स्ट्रेटन, रमक्रम कथ। फेरबायरन পরিচার্য। রাজ্বি রাজা রাম্মোহন রায় এইজ্ঞুই ভাঁচার সঙ্গীতে "ইহাগচ্চ বল ডাকে" বলিয়া ঈশ্বরের নিত্য সালিধ্য উপাসকর্ণের মনে মুদ্রিত করিয়া দিয়াছেন। আর এক मिटक (मुचिट्ड क्टेरव, यड পরিবর্ত্তন আমাদিপেটে ক্ট্রাছে, क्रेश्रात्राफ काम शतिवर्तन दश नादे। आगतः छादारक कृतिशक्ति, ভিনি আমাদিগকে ভোলেন নাই; আমরা পাপে আমাদিগের **हक् अक कतिया छाँशांक शिवाउकि ना, जिनि आमानिशत्क** ছাড়িয়া কোথাও গিয়াছেন তাহা নহে; আমরা নিজের অপরাবে কেব ভোগ করিতেছি, তিনি কখন আমাাদগের প্রতি বাম হন नाहे, निष्ठे व इन नाहे। अस्नदक छेरबायदन अक्रम कथा गकत

द्यारमान करतम, यागारा मिर्फाय जेयरताल क्रेंग करन स्नाह चारतानिक इत्र। चाठाया-मिरक करे "मश्किश कैशामना श्रमानीएड" त्य जित्वायम निश्चित्र व्याद्य, जयात्या अक्रम खादवत दकाम कथा দাই। সাংসারিক চিত্তা ও কামনায় আমরা ভাঁচাকৈ বিশান্ত হইরাছি, আমাদের মন নিডাভ চকল হইরা পড়িরাছে, সেই চিন্তা ও কামনা পরিত্যাগ করিয়া মনকৈ প্রশাস্ত করিবার অক্স যতু এই উবোধনে নিবদ বহিবাছে। সংসারের কামনা ও বাসনার লত শত লোক ঘ্রিতেছে, ধাসুনা কামনা প্রিতগ্রের ইচ্ছাও ভাগদের क्षम इत्र मा। वानमा काममा ग्रीम खामानित्तरिक प्रश्राद्याद्यापन ক্রিরা খাকে, আমালিগকে পাপে ফেলিয়া মরকবন্ধণার কারণ इहेबा थाटक, करव (महे कु: थ्यक्तना इहेटल मुक्त इहेबात अन्न जाम-(मद मन बाक्न वर्गाएक, श्रवर (महे बाक्न छात्र जेवादत्त्र সিংহাসনস্মীপে ঘাইতে আমালিগকে উংশ্বক করিয়াছে। তাই এই উপাসনা প্রশালী মধ্যে "পরিত্রাধের জন্ম ব্যাকুল ছইয়া উচ্চার - সিংহাসনের নিকটবতী হট" এ কথাওলি নিবন্ধ রুহিয়াছে। ঈশ্বর নিতা সন্নিহিত, কোৰা হইতেও ভারাকৈ ডাকিয়া আনিতে হয় माः अञ्च हेरात मर्या अटे क्या छनि चार्ड, "अ जुन नामात পস্তীর আবি ঠাবে পরিপূর্ব।" অন্ত কামনায় অন্ত বাসন্ধর আনা-দের চিত্ত অভাত্র বিয়াছে, অভাচকু মলিন হটয়াছে, সে চিত্ত উপরের ছিতে না ফিরাইলে, ঈপরকামনার ঈপরবাসনার অন্তশুর विमिष्ठा मा पुष्ठाहरेल, अ व्यक्ति जीतक रीन में छहत मा, अवन छैद्धा-धरम निविष प्रदेशास, "विश्वाम ও ভক্তি महत्न छाहा (बाविर्जाव) প্রতাক করি।" বিশাস অদৃশ্য বিষয়ের প্রমাণ ; ইচাকে প্রদা বলাও বাইতে পারে, কেন না প্রদ্ধা ভাহাকেই বলে বভারা সভ্য ধারণ করা বার। কোন বন্ধর প্রতি অনুরাগ না জারিলে, তালার
করপ প্রকাশ পায় না। ভক্তি সেই অনুরাগ : ফ্তরাং উপাসনা
প্রণালীতে বিবাস ও ভক্তিকৈ ঈর্বাবিত্যিব প্রভাক্ষ করিবার পক্ষে
নর্ম বলিরা গ্রহণ করা হইরাছে। সর্মসাধারণের অন্ত এই প্রণালী
ধ্র্যন লিপিবন্ধ হইরাছে, তখন উহার উলোধনাক্ষে যে সকল
কথা নিবন্ধ রহিয়াছে, সে সকল কথা সংক্ষিপ্ত হইলেও উলোধনা
ধন লর্শন বিজ্ঞান-সম্পত হইলে কিরুপ হয়, তাহাই দেখাইয়া
লিভেছে।

গীড়ায় চারি শ্রেণীর উপাসক নির্নিষ্ঠ রহিয়াছে—আর্র, জিজাত, অর্থার্থী এবং যোগী। পরিত্রালের জ্ঞা ব্যাকুল হর্তরা স্বারের নিক্ট গমন, ইহা আরু উপাসকের লক্ষণ। আমরা পাপাছির নিপীডনে ঘখন ক্লিষ্ট, তথন আন্ত উপাদকের কথায় উদ্বোধনট শোভা পায়। আমরা অর্থার্থী উপাসক নই, কেন না ঈর্বরের নিকটে সামার পার্থির বিষয়ের আকাজনী হট্যা গম্ন করা আমরা অসকত মনে করি: জিজামু এবং যোগী এই চুই প্রেণীর উপাসক চইবার क्य कामता काका हती, प्रख्तार उद्दर्शराजी कवा केरबावरन बाका আমরা আবশ্যক মদে করি। "সেই অনত দেব, সেই সভ্য শিব কুম্মর পিছার ছারিমিকে বসিয়া আমরা সকলে বিন্যুভাবে হাঁচার व्यक्तमा कति :" এই कथा खनित मर्दा जिलाय स सात्री छैन्द्र (अनीत छेगामक-मग्राहेण वाका मिवस त्रशिवाद । किंत्राण मिवस বহিরাছে ভাগা বলিতে গেলে অনেক কথা বলিতে হয়। আজ সে সব কৰাৰ প্ৰয়োজন নাই, আশা করি উপাসনার তত্ত বলিতে গিরা भारत (म मक्न क्या चामिर्द। धर्मायम (कान छारवर क्या পরিজ্ঞার করিতে হইবে, কোন ভাবের কথা কি জন্ম বলিডে ছইবে, তৎসপ্তর্নে ধে কথা গুলি বলা হইল, মনে হয় উদ্বোধন-সম্বর্কে তাহাই এখনকার মত বংগ্রন্থ।

ত্রকাপরাপ।

উছোধনের পর আরাধনা। আরাধনার পূর্কে "সভাং জ্ঞান-মনতং একা ইত্যাদি যে আক্তিঞ্লি উচ্চারিত হয়, উহা নানা উপনিষং হইতে সংগৃহীত। প্রথমে রাজ্যি রাম্মোলন রায় যখন ব্ৰজোপাসনার ব্যবস্থা করেন, তথন এই সকল জ্ঞতি অবলম্বিত হয় নাই। তাঁহার সময়ে 'একমেবাছিতীয়ম' এই লাভ এবং "ও তংসং" এই বাকা মন্ত্রের জায় গুলীত চইয়াছিল। উপনিষদে সর্ব্যত 'তং'শব্দ ব্রহ্মবাচকরণে ব্যবজ্ত হইয়া থাকে, 'সং'শব্দ "স্দেব দৌষ্যেদমগ্র আসীৎ, একমেবাদ্বিতীয়ম্' স্মষ্টর পূর্বের একমাত্র অবিতীয় সংস্করণ ছিলেন এই ক্রতি হইতে নংগৃহীত। ও শক ব্ৰহ্মবাচক। ও এবং ডং এবং দং এ তিনটি ভগব স্বীভায় একত্ৰ সংগৃহীত দেখিতে পাওয়া বার। সম্ভবতঃ 'ও তং সং' এ মন্ত গীতা হুইতে সংগৃহীত গুইয়াছিল। 'ওঁ তং সং' একমেবাদিতীয়ুম দুইটি একত্র বা সভস্তরূপে গ্রহণ করিয়া সাধনের তথ্ন ধবিছা हिन। এখন यে 'मजार छानमन ४१ उक्क' 'आनम्बर्गगम्जर यविकाणि' 'माजः मितमदेवज्य' जाताधमात भूटर्स फेकातिज हहेत्रा थारक, हेरा मर्शि (परवल्ताय कर्ज़क ध्वविकि। कान अक क्षम मासूब किछ धावर्डिंख कतियाद्यम, डेटा छनित्वर मत्म हर् ইছার সজে ঈশবের কোন সম্বন্ধ নাই। এরপ মনে কর। নিভাত ভুল। প্রকৃতির ভিতরে বে প্রকার ঈবরের হস্ত বিগ্রমান,

শেইরণ মানবদমা**জের ইতিহাদের মধ্যেও** হাহার হাত **আছে।** এক জন থেলা করিতে করিতে যাহা করে, ভবিষয়ত ভাহা হউত্তে কি না আপ্রা ব্যাপারই উপস্থিত হয় ৷ বে মুদ্দেনব্যাপারে এক मिल्नेत छानविकान महस्य वाज (मान गाहेता व्यासाकविसात করিতেছে, উহা কি এক ব্যক্তির শ্বেলা হুইতে উংপন্ন হয় নাই প যাহা প্রথমতঃ দেবিতে অতি সামান্ত, লোকে কিছুই নয় বলিয়া ভূক্ত করে. দেই ভূজ বিষয় হইতে পরে এমন একটা অভুভ ব্যাপার উপস্থিত হউতে পারে, যাহা দেবিয়া অবাক হউতে হয়। अव्यि (मरवस्त्रनाथ উপনিষদের পর্য্যালোচনার প্রবৃত্ত इक्ट्राना। প্রথমতঃ তিনি "স্তাং জ্ঞানমূলয়ং রক্ষ্ম" "আনন্দর্পম্মতং বল্পি-ভাতি' এই চুইটা শ্রুতি চিন্তুন ও অন্ধানের জন্মত্র করেন। তংপর তিন বংসর পরে "শাস্তং শিবমহৈতম্" এই আচতিটী ঐ চুইটী ক্রাভির সহিত তিনি সংযুক্ত করেন ৷ মানবজ্সায়ে ঈর্মর যে ভাবে প্রকাশ পান "সভাং কানসন্তং" এই ডিনটি স্বরূপ ভাষা প্রদর্শন করে ৷ বাহিরের জগতে ব্রুক্তের প্রকাশ কিরুপ "আনন্দরশম্মতং यिष्ठाणि এ अने जिल्हा है (मनारेष्ठा (मग्र) अपूर्व के वाहित्य ঐববের প্রকাশ গুটটী প্রতিতে ভাষ্যুত্ম হটল, কিন্তু রক্ত আপনি কি, এখনও ডংস্থাকের জ্রুতি ঐ চুইটার স্থে মিলিত হয় নাই। "শান্তং শিবমলৈতম্" এই শ্রুতিতী সে অভাবপুরণ করিল। প্রাপ্-क्षत मठीछ अनमात मनन, अ क्यार्ड सनः स सीरतर सिविड ঈখন ব্যায় না, কিন্তু আপনাতে বিনি আপনি বিগ্ৰমান ভাঁচাকেই বুঝাইর। থাকে। "ভদ্মশাপবিদ্ধন্" এ প্রতিটী মহর্ষি দেবেলুনার প্রবর্ত্তিত করেন নাই, আচার্য্য কেশবচন্দ্র ঠাহার স্বারা প্রবৃত্তিত কর।ইয়া লইয়াছেন। এই ক্লতিগুলি ভিন্ন চিন্ন উপনিষ্থ হইতে

গৃহীত অথচ স্বর্গসনূহ এমনই পরস্পারে পর পর সংযুক্ত যে, উহাদিগকে বিচিত্র করিয়া স্থানান্তরিত করিতে পরে। যায় না।

मण्डार छ्लानमनग्रः उन्न ।

ইহার পূর্ণ শ্রুতিটী এই:--

ওঁ ব্ৰহ্মনিদাগোতি প্রম্। ওদেবাভূকো। সতাং জ্ঞানমনতং ব্ৰহ্ম।বোবেদ নিহিতং গুগালাং প্রমে ব্যোমন্। সোহমুতে সর্কান্ কামান সহ ব্ৰহ্মণা বিপশ্চিতেতি। তৈতিরীয় উপনিষ্ণ । ২।২

ব্রমাজ বাকি পরবর্মাকে লাভ করিয়া থাকেন। এ সম্বন্ধে এই ঋক্ উক্ত হইয়াছে। সূত্য জ্ঞান অনম্ভ ব্রহ্মকে ঘিনি প্রমাকাশ পরব্রেমা সদয়গুহায় নিহিত জানেন, তিনি সর্ম্বত্য ব্রহ্মের স্কে সম্দায় অভিলবিত বিষয় ভোগ করিয়া থাকেন।

এধানে আমরা দেখিতে পাইতেছি, ত্রদ্ধ সাধ্রের ক্লরে উপলব্ধ হইরা থাকেন। তিনি আমাদের ক্লরে সত্য, জ্ঞান ও অনুস্তরণে প্রকাশ পান। যদি তিনি আপনি এরপে আমাদের ক্লরে প্রকাশ না পাইতেন, আমরা কথন ঠালাকে জানিতে পাইতাম না। ত্রদ্ধ আমাদের ক্লরে নিহিত, উপনিষ্থ এ কথা ব্লিয়া উপরের জ্ঞান বে সহক্ষে আমাদের ক্লরে প্রতিভাত হয় ইবং য়াঞ্জিবরের জ্ঞান বে সহক্ষে আমাদের ক্লরে প্রতিভাত হয় ইবং য়াঞ্জিবরের জ্ঞান বে সহক্ষে আমাদের ক্লরে প্রতিভাত হয় ইবং য়াঞ্জিবরের জ্ঞান বে সহক্ষে আমাদের ক্লরে প্রতিভাত হয় ইবং য়াঞ্জিবরের জ্ঞান বে সহক্ষে আমাদের ক্লিয়েলেন।

আনন্দরপমমূতং ব্যক্তিত।

ইহার পূর্ব জ্ঞতিনী এই:--

বঃ সর্ব্বজঃ সর্ক্ষবিপ্ত হৈ মহিমা ভূবি দিন্যে ক্রন্ধন্ত ক্ষেয় বোরাশস্থা প্রতি ইতঃ। মনোময়ঃ প্রাণশ্বীরনেতা প্রতিষ্ঠিতেছেরে হুদয়ং সমিধায়

ত্তিজ্ঞানেন প্রিপশ্যন্তি ধীরা আনশ্রপ্রযুচ্চ ব্যিভাতি॥

मुख्दकार्थानवर शर १।

খিনি সর্ব্দক্ত. সর্কাবিং, এই ভূলোকে বাহার মহিমা, খিনি
মনোময়, প্রাণ এবং শরীরের নেতা, অন্নে প্রতিষ্টিত, তিনিই এই
পরাত্রা হইছা দিবা ব্রহ্মপুরে অর্থাৎ মানসাকাশে বিগ্রমান আছেন।
খীরগণ জ্লয়তে সন্নিহিত করিরা বিজ্ঞান্যে গে ঠাহাকেই দর্শন
করিয়া থাকেন খিনি ধরং অমৃত হইছা আনক্ষরণে প্রকাশ পান।

আমর: পূর্ব শ্রুতিতে হৃদ্ধে প্রকাশিত ব্রহ্মসকলে জ্ঞানলান্ত করিয়াছি, এ শ্রুতিতে যিনি সম্পায় লগতে ও জীবে প্রকাশিত তংসক্ষে আমর: জ্ঞানগান্ত করিছেছি। সকল জগতে ও জীবে তাঁগাকে কি প্রকাশে প্রকাশিত দেখিতে পাওয়: বায় পূ আনন্দরশে বা সৌন্দর্যাকপে। যে কোন বছতে বে কোন ব্যক্তিতে তাঁহার আবির্ভাব অক্তৃত হয় সেই বস্ত ও ব্যক্তি হইতে আনন্দর্গান্ত হয়, সৌন্দর্ব্য প্রাণ ময় হয়।

माञ्चर मिरमदेषसम्।

ইহার পূর্ণক্রতি এই :--

নাডঃপ্রজং ন বহিঃপ্রজং নোভগুড়া প্রজং ন প্রজানখনং স প্রক্রানং নাপ্রজন্ম অদৃষ্টনবাবহাণ্যমগ্রালনক্ষণম্ভিত্যমবাপ-দেশ্যেকালপ্রভাল্নারং প্রপদ্যেপশমং শাস্তং শিবম্বৈতং চতুর্থং মন্ত্রিক স আভা স বিজ্ঞের: ।

मा कृदकार्शनिवद । १।

তিনি অন্তঃপ্রক্ষ নন, তিনি বহিঃপ্রক্ষ নন, তিনি উভর্থক নন, তিনি প্রক্ষান্থন নন, তিনি প্রক্ষ নন, তিনি অঞ্চলন, ভিনি অনুষ্ঠ, অব্যবহার্য্য, অগ্রাফ, লকণরহিত, অচিন্তা, অব্যপদেশ, একাল্মপ্রত্যরসার, প্রপঞ্চোপন্ম, লান্ত, লিব, অবৈত ইংকেই পশুডেরে। চতুর্থ বলিরা মনে করেন। তিনি আল্লা অর্থাং চৈতন্ত্রশুরুপ, ভিনি বিশেষরপে ক্লাডবা ।

যিনি অপাবস্থার অন্তরে প্রকাশ পান তিনি অন্তঃপ্রস্ক, বিনি আগ্রদবন্ধায় বাহিরে প্রকাশ পান তিনি বহিঃপ্রজ্ঞ, স্বর্ম ও জাগরণ এ উভয়ের অম্বালাবভায় যিনি প্রকাশ পান তিনি উভয়প্রক্ত. ষিনি সুযুগুাবস্থায় প্রকাশ পান তিনি প্রজানখন, যুগপং যিনি সর্কবিষয় জানেন তিনি প্রজ, বিনি কিছু জানেন ন। তিনি অপ্রক্র। ডিনি শাস্ত শিব অধৈত। তাঁহাতে ঐ সকলের কিছুই লাই বলিলে ভিনি হে দর্গনপথের অতীত, ভিনি বে আমাদের बावजाद्वर विषय मन, रुखानि बादा (व ठांशादक वृद्धित शादा याद मा, (कान প্रकारतंत्र नक्काल जिनि नक्कमाका र नन, जिनि निष्ठात चाजीज, (कार्ने क्षकांत्र नयावनयन कविष्। (य जेक्शिक निर्द्धन করিতে পারা যায় না, এ সকলই উহার সঙ্গে সঙ্গে আসিয়া পড়ি-'একা মুপ্রতায়-সার' এই একটি বাকো তিনি যে বস্তু জিলি যে পদার্থ বেদান্ত ভাষাই প্রতিপাদিত করিতেছেন। আগ্রেই স্বান্ত সকল অবস্থার অভুকৃতি উড়াইর। দিলেও এক আত্মার অর্থাং द्विष्ठत्वत मस् किहूट्डरे विजुक्ष रह ना, खेरा उपनक विश्वमान थाटक । प्रजनार अहे रव इत्रभरनम् हेडज्डमच। हेडाहे अर्था-ভীভ আৰা। প্ৰপঞ্চ অৰ্থাৎ রূপরদানি সমুদায় বিষয় মন হইতে উড়াইয়া দিলে বে চৈতপ্ৰদত্তা তথনও বিভাষান, তিনি শান্ত-नर्कविषविकातमुख्न, निव - मक्ष्मणक्षण खर्र बर्द्धण-व्यव ।

সন্ধার বিবর বিলোশ করিরা বাঁহাকে বিলোপ করিতে পরে। কেন না, তিনি সাক্ষাং পরতক্ষ, এখানে আর তাঁহাকে ব্যবহিত ক্রিরা রাখিবার কিছুই স্থাহিল না।

ভদ্মপাপৰিদ্ধন্ ।

ইহার পূর্ব জ্বান্তিরী এই :--

সপর্যাগান্ধ্রমকারমত্রশ-মন্মাবিরং গুদ্ধমপাপবিদ্ধম্ । কবিম নীবী পরিভূঃ প্রভূ-র্যাধাত্রগতোহর্থান্ ব্যাধাত্যগতীভাঃ সমাজ্যঃ ॥

क्रेप्नाननिष्र ।

সেই প্রমান্ত্রা সর্পত্তোবিদারি, দীপ্তিমান্, দেহহীন, অকড, স্থায়ুরহিত, শুরু অপাপবিদ্ধ, সর্মাদনী, সর্মজ্ঞ, সর্মনিয়ন্তা, সর্মান্ত্রপেক্ষ । তিনি নিত্যকাল জীবের প্রয়োজনামূরপ অর্থ সকল বিধান করিতেছেন ।

এখানে ত্রহ্মসথকে যতগুলি বিশেষণ আছে সে সকলগুলিই ভদ্ধতার পোষক। ধাহার শরীর আছে, শরীরের স্বভাবসিদ্ধ অপূর্বতা আছে; যে কালদেশে বদ্ধ, অসর্বক্তি, পরাধীন, ভাহাতে নিয়ত ভদ্ধতা থাকিবে, ভাহাকে পাপ স্পর্শ করিভেও পারিবে না, ইচা কথ্নই সম্ভব নহে। বে ব্যক্তিতে ভদ্ধতা নাই দে কথন ঠিক বাহার বাহা প্রাপ্য ভাহাকে ভাহা দিতে পারে না; ভাহার ব্যবহারে বৈষম্যকাল পাইবেই পাইবে। ত্রন্দ ভদ্ধ অপাপবিদ্ধ, পাপ তাঁহাকে স্পর্শ করিভে পারে না, স্ভরাং ভিনি সকল প্রভারের বৈষম্যকালিক হিছা নিভাকাল থাহার যাহা প্রয়োজন ভাহা যোগাইভ্রেক্তর

"म्हार छ। नगम हु९ अक्ष"—এই विषालवादित শর্ই "আনন্দরপ্রমৃতং যদিভাতি" এই বাকাটি আছে: সূত্রং প্রথম প্রথম আরাধনায় সত্য জ্লান ও অনন্ত এই তিন স্করণের ব্যাখ্যার পরেই "আনন্দরপমমৃতং" এইটি ধরিয়া আনন্দের ব্যাখ্যা অনভের আরাধনার সময়ে অনস্তকে ধরিতে না পারিয়া সাধকের ঐশ্বরবিচ্চেদ খটিল, স্বয়ং ব্রহ্ম আনন্দ হইয়া व्यानिया विष्कृत युकारेश नितनन, अरे ভाবে मि नमर्य व्याताधन সময়ে আনন্দখরপ আরাধনার স্ক্রেশ্যে আসিল, কিং চটভ। শুলানন্দরপমমূতং যদিভাতি" এ বাকাটি আরাধনাবাকোর উচ্চা त्रविहास (यथानकात (मथानिक थाकिया (तल। क्रिक्स (यथानकार **रमधारन** युक्तिश्वर्रक (कह जारधन नाहे। वतर काहात्र काहात्र মনে হইয়াছিল, এ বাক্যটি উঠাইয়া শেষে আনাই উচিত, কিঃ তাহা কংযোঁ পরিণত হয় নাই। এখন দেখা ষ্টতেছে: যেখানকার সেখানে এই বাকাটি থাকাই ঠিক হইয়াছে: কেন না অনুষ্ঠের পর যে বিভেদাতুভব হয়, উহার প্রতিবিধান বাকাটি ব্থাস্থানে ন থাকিলে কিছুভেই স্বটিতে পারিত না। আচার্য্য কেশবচন্দ্র যথন আরোধনাসথদে উপদেশ দেন, সে সময়ে অনভেব পর বিজেদ कें भरतत मौलामर्गत्न घाँठहा याह, कहे कथात छिल्लाईमाज कतिहा (छन, क्रेश्रुकीलांत अटक क वाकांत्रित मश्रक (मधारेता (मन नारे। সে সম্বন্ধ কি, তাহা বুঝিতে গেলে "সত্যং জ্ঞানমনত্তং ব্ৰহ্ম" এই হাক্যটিতে যে ব্ৰহ্মশব্দ আছে তংপ্ৰতি আমাদের দৃষ্টি পড়ে। সমুদ্য নামরূপ অধাৎ সমগ্র বিশ যাহার মধ্যে আছে (তে ব্ৰস্তরা তর স্ক তিনি ব্রহ্ম, যাই এই ভাবটি ব্রহ্মশব্দে আমাদের অন্তরে প্রতিভাগ হয়, অমলি ব্ৰহ্ম আপনার ভিতরে সকলকে রাশিয়া বহর ভিত

ত্বন ভূমা * মহান্ হটয়। 'ভূমাই সুখ' (ভূমের সুখম্) এই বোধ
অন্তরে উংপাদন করিলেন। তিনি আনন্দরণে সর্পত্র প্রকাশ
পাইতেছেন "আনন্দরপমমূতং যদিভাতি"—এই বাকা ঈখারের
লীলা সাধকের সন্নিধানে ব্যক্ত করিল। লীলাদর্শন করিয়া যখন
বিক্রেণ ঘৃচিয়া পোল, তথন "শাস্তং শিবমহৈতম্" এ বাকোর মঙ্গলময়েতে অবতরণ করা সহজ্ঞ হইল।

এখন জিজাসা উপস্থিত হইতেছে, "আনন্দরণমমূতং যদি-ভাতি" এ শুক্তি যদি সাক্ষাংসগদে আনন্দের সদ্ধে যোগ না বটার, জীবে জগতে ব্রুদ্ধের আবি চাব দর্শনে যে আনন্দ হয় এ বাকা যদি সেই আনন্দের বা সৌন্দর্যার প্রকাশক, তাহা হইলে সাক্ষাং-সস্থদ্ধে আনন্দের প্রকাশক বেদান্ত প্রবচন কি গুসে প্রবচন :—

त्रटमादेव मः।

এ প্রবচনের প্রিংশ এই :--

ষ্টেরতং হাকতম্। রসোটের সং। রসং হোরং লকানন্দী ভবতি। কোহেবাজাং কং প্রাণাং। যদেব আকাশ আনন্দো ন জাং। এব ফেবানন্দ্রাতি। তৈতিরীয়। ৭। ২

ধিনি এই স্কৃত, তিনিই রসস্করণ। এই জীব রসস্করণকে লাভ ক্রিয়া আনিন্দিত হয়। এই আকাশ বদি আনন্দ না হইত, কে চেষ্টা করিও, কে প্রাণধারণ করিও। ইনিই আনন্দিত করেন।

कारमाक मान कार्यम, व्यानामम जुनामामात्र व्यर्थ मिराधि

वह चल हहेटड 'कुमन्' नच नेमन् धडाय कतिना छेदगत हरेबाटक।

दरेश (क) दरेश याका, द्वाप्यानियन बिट्न्डेकादकह र्यानमा पार्यन ; उन्न पार निक्षित्र, त्मरे श्रेकात निक्कित र स्वारे वानत्वत वरहा। नाकार वानवनशत्वत करे अवहनति गांशता ভাগ করিয়া অমুধানন করিবেন, তাঁহাদের মনে কখন এরপ ভ্রান্তি ভিষ্ঠিতে পারে ন। ঈবরের নিত্যক্রিয়াশীলত। তাঁহার নিত্য আনন। তিনি স্বক্রিয়ার সম্পায় জন্বং ও জীব আপনার ভিতর हहेट वाहित्र कतिरामन, अहेक्का त्वाहा डीहारक 'ध्क्र परे আখ্যা দান করিল। তিনি স্বর্থ স্কৃত, এইজস্ম তিনি আনন্দ । এই সুকৃতই পূণ্য। বখন তিনি জীবেতে আপনার আনন্দ স্ঞা-রিত করেন, তথন তাহারা নিরতিশর উত্তমপূর্ণ হয়, ভাহাদের নিদ্রিতবৃত্তিসমূদায় জাপিয়া উঠে। 'এই আকাশ ধলি আনন্দ না হুইড, কে চেষ্টা করিত কে প্রাণধারণ করিত,' বেদান্ত এ কথা विवश विहे (प्रशहिताहरून, कीरवर यु डिक्रम ६ डिश्मार, मम्पात জগৎ তাঁহার আনন্দে ভরা তাহারই জন্ত। এই কারণেই বেদা-স্তের অন্তর্ত্ত লিখিত আছে, "হখন জীব মুখ পার তথন করে। অর্থ পাইয়া কেছ কিছু করে না, সুখ পাইয়াই করে।"

এই সম্দার হুরপের পর পর সরিবেশে সাধকের মার কি কণে ব্রহ্মহরপ ক্তি পার, এবং তাহাকে সোপান চইতে নাগানান্তরে আরুত্ব করে সে কথা পরে বলিব। "আনন্দরপমমূতং বহিতাতি" এই বাক্যাটর মধ্যে 'অমৃত' এই শক্টি কেন ব্যাখ্যার ভিতরে হ্বরপ মধ্যে আসে না, ইহাই জিল্লাঞ। বলিও আনেকে 'তুমি আনন্দ তুমি অমৃত' এইরপ ব্যাখ্যার বলিও বাকেন, কিছু ভাহাতে ঠিক অমৃত্বরূপ বলির ব্যাখ্যা হইন না। অমৃত শকে বিকারা-ভীততা বা মিইত', এই ভাব ভাহাদের মনে ওখন জাগ্রৎ হয়।

'मुठा हरेएक आमानिशक समुख्यक सहेदा वा ब" अहे वार्यनाप्र ভিতরে মৃত্যুর বিশ্বীত অমৃত অর্থাৎ মৃত্যুর অভীতাবছা অমৃতশংক একাশ করিতেছে। কবিগণ মৃত্যু ও অমৃত এই চুই ভাগে সমৃগায় পদার্থ বিভক্ত করিয়াছেন। সমুদার জনং মৃত্যু অর্থাৎ পরিবর্ত্ত-নের অধীন, সুতরাং উহা মত্ত্রলকে অভিহিত হইয়া থাকে। কেব্রু এক ব্ৰক্ষেতে কোন পরিবর্তন নাই. ডিনি বেমন চির্নাদন ডেমনই আছেন, তেম্নি থাকিবেন, মৃতরাং ডিনি অমৃতনামে বেদাডে প্রসিদ্ধ। 'সমুদার ভূতগণ তাঁহার এক পাদ, দিবাধামে তাঁহার তিন পাল অমৃত" (পালোহ জ বিশ্বা ভূতানি ত্রিপাল ডামৃতং দিবি) এট বৈদিক্বচন্টি সমূদায় মন্ত্রাজগতের বিনি অতীত তিনি অমুত এই অর্থ প্রকাশ করিতেছে। 'অমুত' শব্দে হুতরাং সর্বাতীত (trancendental) उक्क दुक्षावेदा शादक। दिनि मर्काछीछ ভিনি আমাদের মানদে বিভ্রমান থাকিলেও ভিনি বাকোর বচনীয় নহেন। তাঁলকে যতদ্র আনিতেছি, ততদ্র তিনি, তদপেকা অ'র ভাঁহার সম্বন্ধে জানিবার কিছু নাই, এ কথা মনে করিলে সাধকের অনস্ত উন্নতির দার ক্র হইল, তাঁহার মৃত্য উপস্থিত। এরণ মৃত্যু উপস্থিত না হর, নিত্যকাল ঐশব্রের শ্বরণ আমানের আস্থাতে প্ৰবিষ্ট হট্যা উন্নত হটতে উন্নত করিয়া তলিতে পারে. এজন্ত 'অমৃত' অর্থাং ঈপরের সর্মাতীত ভার আমাদের মনে জাগাইরা রাধা প্রয়েঞ্জন। ধেখানে জগতে ও জীবে প্রয়ের आनम दा भोमपी अनुस्र करा गारेएएइ, छाहारहे मूक मूक 'অমৃত' এই শব্দের বোপ এই দেখাইরা দের বে, স্থপতে ও জীবে यजनत जेनातत सामन या त्रीनिया महलान रहेन, छाशाउहे (यन माध्यक अधित পविभवाशि मा इह, बातक छाँशत पिथियात छ

ভোগ করিবার অনেক আছে, ইহা মনে করিয়া বেন সর্মদা তথ্যর ব্যাকুলতা ও ঈশবের জন্ত তৃষ্ণা দিন দিন বর্জিত হইতে থাকে। 'অমৃত' এই শক্ষি আরাধনায় ব্যাখ্যার বিষয় না হইয়াও আমাদের মনের উপরে কি প্রকার প্রভাব বিস্তার করে এবং অনস্থ জীবনের আশা উদীপন করে, উহা সকল সাধকেরই বিদিত ধাক। প্রয়োজন।

জন্মসরূপ।

ভিন্ন ভিন্ন উপনিষ্
ইংগত ব্রেক্সর দর্মপন্ত লি গৃহীত হইয়াছে, এইরপ স্থাপন বিজ্ঞানসিদ্দ অথবার্যারা পর পর স্থাপিত হইয়াছে, এইরপ স্থাপন বিজ্ঞানসিদ্দ অথবার্যারা পর পর স্থাপন করিয়াছেন, তাঁহারা ধেমন মনে করিয়াছেন, ত্যেনির তিতরে এমন একটি যোগ 'আছে, যে বোগ এরপে স্থাপন না করিলে কিছুতেই হইত না । যাহারা প্রবচনগুলি পর পর স্থাপন করিয়াছিলেন, তাঁহালের মনে এরপে স্থাপন করিয়াছিলেন, তাঁহালের মনে এরপে স্থাপন করিয়ার কোন একটি হেতু উপস্থিত ইইয়াছিল। সে হেতু পূর্ণ কি অপূর্ণ তাহার রিছার করা নিস্তারাজন, কেন না উাহারা হয়ভো সে দেপুর্ব কোন হেতু অবেষণ করেন নাই, প্রথমে উাহালের বাহা প্রতিভাত হইয়াছিল, অবিচারে ইয়তো তাহারই উাহারা অনুসরণ করিয়াছিলেন। এখন বছকাল সাধনের পর, আমালের মনের উপর উংলের এনটি প্রভাব কুচ্মূল হইয়াছে। সেই প্রভাব ক্রেমে আমালের মনের উপরে কি ক্রিয়াপ্রকাশ করিয়াছে, প্রবং ভাহাতে যে স্বরূপের পরে হে স্বরূপের প্রভাব আমাদের আমালের প্রবং ভাহাতে যে স্বরূপের পরে

ছইয়াছে কি না, ইহা দেখিলেই উহাদের সনিবেশ বে ঠিক বিজ্ঞানসিদ্ধ ভাহা প্রমাণিত হইবে।

সত্য, জ্ঞান, অনন্ত, এ তিন সরপের প্রথমে সন্মিনেশ কেন হইল ৫ এ তিন স্বরণ বিনা অক্ত কোন স্বরপ প্রথমে স্থাপিত হইতে পারে কি না গ সাধারণ ভাবে কোন বস্তর জ্ঞানলাভের भूदर्स उरमध्या वित्नवज्ञानगां कथन मञ्चवशत नतः। मर्स প্রথমে সামায়তঃ বস্তুর সভা আমাদের নিকটে প্রতিভাত হয়। সতঃ প্রতিভাত হইতে গেলেই অন্ত বস্তর সভা হইতে ভাহার পার্থকা অনুভূত হওয়া প্রয়োজন : অক্সথা সে বস্তর আপনার সতন্ত্ৰতারকা করিতে না পারিয়া অক্ত বসর সক্ষে মিশিয়া যায়, निर्मिष्ठात नकाष्ट्रम शए मा। विनि प्रिष्टे कल कानिए-' ছেন প্রথমতঃ তাঁহা হইতে দে বস্তর পার্থকা কি. ইহা সর্বাদ্রে স্থির হওয়া প্রয়োজন। বিনি স্বরূপের আরোধনা করিতেছেন, পরপদমূহের মহিত যদি তাঁহার ঐক্য না থাকে, তবে তাঁহার মনে সেঞ্জল প্রতিভাতই হইতে পারে না । অন্ত দিকে গাহার মরপানুত্তব করিতেছি, তিনি যদি সর্মত্যেতাবে আমারই মত হন, তাহা হইলে আর তিনি আমার লকাছলে পড়িতে পারেন না, মুত্রাং একতার সঙ্গে সংস্থ পার্থক্য কোথায়, ভাহাও সেই সময়ে निर्फिष्ठ १७३। প্রয়োজন । श्रेश्वर আছেন, আমিও আছি, श्रेश्वर জ্ঞান আমিও জ্ঞান, সুভরাং স্বরূপের একভাবশতঃ ডংসম্বন্ধে আমার জ্ঞানলাভ সহজ হইব। কিছু ঠাহার সভা ও আমার সতা, তাঁহার জ্ঞান ও আমার জ্ঞানের মধ্যে যদি কোন পার্থকা না थाक, छाहा इटेरन छ अरवद विदनवड कानगुक्रम ना इश्रवाट छिनि আরাধ্য আমি আরাধক এ সম্বন্ধ রক্ষা পার না। পুতরাং সভা ও

জ্ঞানের সক্ষৈ অন ও স্বর্কণ থাকা চাই, না বাকিলে এই পার্ণক।
জ্ঞান্তম হয় না এবং আমার সত্য ও জ্ঞান যে তাঁহার অনন্ত সতা
ও অনন্ত জ্ঞানে দিন দিন পূর্ব ইইবে, তাহা বিশাস করিবার কারণ
উপস্থিত হয় না। তাঁহার অনন্ত সত্তা ও অনন্ত জ্ঞানে আমার
সত্তা ও জ্ঞান শ্রেমে দিন দিন পূর্ব ইউত্তেছে, ইহা বিশাস করিবার
কারণ আছে বলিয়া ঈশার আমার চির আরাধা।

অন ম আরাধকের সহিত আগাধ্যের ভেদদাধন করিল, এবং নিত্যকাশ তিনি যে আরাধ্য থাকিবেন ভাছারও কারণ পাওয়া গেল। কিন্তু অনন্ত যদি একেবারে জ্ঞান বৃদ্ধির অতীত হট্যা यान. छाटा दहेत्न बात बाताबा ও बाताबरकत मनस्य नाष्ट्रात ना, সমন ना मां जारेल खैर्यात्मरे आताधना वस रहेशा यात्र ! "आमन्न-রূপম্মতং" এই বেলাস্তবচনটি আরাধ্য-মার্থক-স্থর নিত্য-कारमत मा श्रिव चार्य । किक्राल तार्य जाहा लर्स्स वना निवाह. এখানে আর উহা বলিবার প্রয়োজন করে ন। সভা জান অনত্ত এবং অনতের বহুর ভিতরে আসুপ্রকাশ, ইহার পর "লান্তং লিবমবৈতম" কি প্রকারে শভাবতঃ আইসে ভাল করিয়া তাহা আলোচনা করা প্রয়োজন। মনন্ত আপনার ভিজরে সমুখার জনং ও জীবকে রাবিষা তথ্যে আসনারে আঁকাল करिएउएएम (कन १ जिनि कि क मकन निर्देशक बहेरा बालनि আপনাতে থাকিতে পারিতেন না ? তিনি নিরপেঞ্চ হইর। থাকিতে পারিতেন ভাষাতে আর সন্দেহ কি. কিন্তু ভাষাতে হাঁহার মন্ত্রন ভাব আপনার স্বরূপানুরূপ কার্যা করিতে পারিত না। বাহাতে মক্লভাব আছে, তিনি মহাত্র সে মক্লবিস্তার করিবেনট कतिरवन, रकन ना मञ्चलत प्रकाय है अहै। अवश् क औरव छाहात

সেই মঞ্চলভাব বিস্তৃত হয়। অনত্তের ভিতরে জগং ও জীবকে বিবিধ প্রকারে সম্পন্ন দেখির। তাঁহার মঞ্চলভাবের ক্রিয়া যতঃ আমাদের চগ্নর সন্নিধানে প্রতিভাত হয়। মঞ্চল চিরনির্বিকার পক্ষপতেপৃক্ত, অক্তথা মঞ্চলনামে অভিহিত হউতে পারে মা, প্রভরাং মঞ্চলস্বরূপের সঙ্গে শাস্ত অর্থাৎ নির্বিকার ভাব চির-সংযুক্ত।

নির্কি কার মঞ্চলট প্রেম। এট প্রেমে অনুরক্ত হওয়া নিতান্ত স্থাভাবিক। অনুরাগের স্থান্ত এই যে, অনুরাগের পাত্রেতে উহা স্থান্যন প্রাণকে আবদ্ধ করিয়া ফেলে, আর অক্সত্র উহাদিগকে যাইতে দেয় না। একেতে চিন্তের একান্ত অভিনিবেশ প্রেমের ফল। স্তরাং মঞ্জল বা প্রেম্বরূপের সঙ্গে সঙ্গে একত্ব অধ্তত্ত অক্তত্তাব চিরসংযুক্ত।

একের প্রেমে অন্তর্যক্ত হইরা জাঁহাতে মধ হইলে আর তাঁহার ইচ্ছার বিরোধে কোন কার্ব্য করিতে প্রার্থিত হয় না, ত্তরং ঈগরের একত্ব মধ হওরাতে প্রায় অতঃ হুদ রে উদিও হয় । ঈশ্বরের ইচ্ছার বিরোধি করাশক্তি প্রায়ামি অভিহিত । ঈশ্বরের ইচ্ছার অধীনতা একমাত্র তংপ্রতি অন্তরাগবশতঃ উপন্থিত হয়, ইহা আর কাহাকেও বলিয়া দিতে হয় না । ঈশ্বরের ইচ্ছা বা ক্রিয়াশক্তির আন্তর্গত্যে সাধকে বে উত্তর্য, উংলাহ ও সম্পাদ্য বৃত্তির বিকাশনাত হয়, তর্মধ্যে রসভ্যরপ আনন্দসরূপ হাহার নিকটে প্রকাশ পান । একথা রসভ্রপের ব্যাখ্যায় প্রেমি বলা হইয়াছে, আয় এখানে তংস্থাকে অধিক বলা নিস্তরেজ্বন।

একটা কথা বলিয়া আজকার বস্তুবা শেষ করিতে চইতেছে। সত্য জ্ঞান অনস্ত ইত্যাদি কেবল স্বরূপ এবং সে স্বরূপও বেদান্তে

প্রথম পুরুষেই উনিধিত হইয়াছে। আরাধনাকালে মধ্যম পুরুষে ঐ সকলের সঙ্গে তুমি সংযুক্ত করা হয় কিরূপে ৭ একপে তুমি সংযোগ করা মনে হয় খ্রীষ্টধর্ম হইতে আসিয়াছে। হইতে পারে, প্রথমে বাঁহারা তুমি পদ সংযুক্ত করিয়াছিলেন তাঁহারা খুষ্টধর্ম্মের প্রভাবেই উহ। করিয়াছিলেন। কিন্তু বেদায়ের উপাসনা-প্রণালী যাহার। জানেন, তাঁহার। দেখিতে পাইবেন, এরপে তমি সংযুক্ত করা বেদান্তবিরোধী হয় নাই। উপাসনার উদ্দেশ্য এই, উপাসক উপাল্ডের অফুরুপ হইবেন। উপাল্ডের অফুরুপ হইতে গেলেই উপাসকের স্বরূপ উপাত্তের স্বরূপের অত্রূপ হওয়া চাই। বাতিহার অর্থাং বদলাবদলির প্রণালীতে বেদাজে উপাসনা হইরা থাকে। "তিনি আমি আমি তিনি" অথবা "তুমি আমি আমি ত্মি" এইরূপ ব্যতিহার বেদান্তসিদ্ধ উপাসনা। ঈশবের স্বরূপ সাধকেতে প্রবিষ্ট হইয়া সাধক ঈশ্বরের অনুরূপ হইবেন, আরাধনা যধন দেইজন্ত, তথন "তুমি আমি আমি তুমি" এই ব্যতিহারগ্রহণ ু করিয়া স্বরূপগুলি মধামপুরুষের সঙ্গে সংযুক্ত করিয়া লওয়া হই-ষ্বাছে। এই একত ব্রাহ্মধর্মের বিরোধী নহে। ঈশা বলিরাছিলেন "আমি এবং আমার পিতা এক" অর্থাং পুত্রতে পিতার সঙ্গে এক, বেদান্ত-দিল্পপ্ৰালী মধ্যে ভাহার বিরোধী ভাব কিছু ना 🐧 कथा वसाहित भारत देशांश्विक वर्षेत्रश्वक व्यानक कथा वनित्व हत्र. .মৃতরাং সে বিচারে আবাদের প্রবৃত হইবার কোন প্রয়োজন নাট।

্বেদান্তের ধর্ম কি । সংক্ষেপে ইহার উত্তর এই, এন্ধবিজ্ঞান।
স্কলাক্ত বিজ্ঞান 'কার্যা' বা প্রকৃতি লইয়া; ত্রন্ধবিজ্ঞান 'কারণ'
বা ত্রন্ধ লইয়া। বেদানের প্রকৃতিসম্বন্ধে কোন করা নাই তাহ।

मर्ट, किन्न लक्षां किन्द्रारमञ्जातिक विवय कतिए इहेरन क्षेत्र किन টুকু প্রয়োজন, তাহাই উহাতে আছে। বেদারমতে প্রকৃতি ঈ বর হইতে খডর নহে, উহা তাঁহারই শক্তি। গীভার প্রকৃতিকে ছট ভাগে বিভক্ত করা হইয়াছে, পরা প্রকৃতি ও অপরা প্রকৃতি। পর। প্রকৃতি জীব, অপরা প্রকৃতি দৃশ্মান অবং। অবং ও জীবের উপাদান প্রকৃতি, এই প্রকৃতি ঈশ্বরেরই শক্তি, জাঁছা হইতে ভিন্ন নহে। জগতে যেমন শক্তি, জীবে তেমনি চিক্তজি নিভাপ্রকাশমান। জগৎ ও জীব হইতে শক্তিকে বিচ্ছিন্ন করিলে যেমন জগং ও জীব থাকে না, তেমনি ঈবরকে বিচ্চিন্ন করিলেও উহারা থাকে না, কেন না শক্তি ও ঈশর খতন্ত নতে। काরণকে পশ্চাতে রাবিয়া কার্য্যক সমূবে আনয়নপূর্ব্যক সমূদায় প্রাকৃতিক বিজ্ঞানের তত্ত্ব নির্দ্ধারিত হট্যা থাকে ৷ এই প্রাকৃতিক বিজ্ঞানে रंग मकल कारालंत जिल्लाच रहा, मिल्लिल कार्यण नह कार्या, धक কাৰ্য্য অন্ত কাৰ্য্যের উপরে যে ক্রিয়া প্রকাশ করে, ভাহা দেখিয়া কাৰ্যাকেও কারণনামে অভিহিতকরা হয়। এসকল যথার্থ কারণ নয়, অবাস্থর কারণ। বিজ্ঞান কি তবে ঈশ্বরকে **অস্বীকার-করেন 🕈** অধীকার-করেন না, কিন্ত শীকার-করিয়া সাম্মর্থ হটতে ভাঁছাকে সর্টের্ রাথেন, অব্যন্তর কার্ণরূপী কার্য্যকেই কার্ণরূপে উপস্থিত करतन। (तमारश्चत जन्मविश्वान कार्यारक छेडाहेबा (मन ना. কার্যাকে পশ্চাতে রাখিয়া কারণকে সম্মধে আনমুন-করেন। ঈশর হইতে জনতের অন্ম, ঠাহাতে জনতের লয় বা অপুথক ভাবে হিতি, তাহারই ক্রিয়া জগতে প্রকাশিত (তক্ষণানিতি), এই धाना व्यवस्थनपूर्वक, कार्याद्वभी अभूमात्र व्यवस्थली ত্রদ্ধে লয় বা অপৃথকু ভাবে স্থাপিত করিয়া কারণ-ত্রন্ধ উত্তক্ত

লইয়া নিয়ত কি করিতেছেন, ভাহাই সাক্ষাংপ্রভাককরিবার জন্ম বেলামের ব্রহ্মবিজ্ঞান সাহাষ্য করিয়া থাকে। এই সাক্ষাং দৰ্শন চুট প্ৰধানীতে সাধিত হইয়া থাকে, এক চকু মৃদ্ভিত করিয়া আর এক চলু জগতের উপর স্থাপন করিরা। চলু মুদ্রিত করিলে সমলায় জগং বিলীন হইরা পেল, এক অৰ্থ সভামাত্র সন্মধ खकान गहिला अहे मेखा कार्यमाखा, उक्तमखा। अवारन छगः खक्तमञ्चारक ममाक क्षकारत विनीन। ठक्क स्मिनता ठक्कत ठक्क, कर्तन कर्न, खारनत खान, सर्वात स्वी, करखन कर्छ । क्रांपर क्रांपर প্রতিরূপ:) ইত্যাদি প্রণাশীতে বিনি 'সর্বভূতাম্বরাম্বা', সকলের স্থিতি-আদির বিনি কারণ, যাহার জন্ম চক্র চক্রপে, কর্ণ কর্ণ-काल, आन जानकाल, एवं। एवं।काल, ठल ठलकाल अकानिड. हीशांदक माथक माकार প्राचाककतिया थादकन। अर्थात कार्या একেবারে বিলীন হইল না, কিন্তু কারণের সঙ্গে অপথক ভাবে ष्टिं कित्रण । এই दिविध पर्नात्त्रहे প্রাঞ্জন আছে, কেন ना চল্ম মুদ্রিত করিয়া জগতের নিকট বিদার গ্রহণ এবং সমগ্র छन् एक विनीनकता जिल्ला मार्था किछ्कालत खन् मन्नत, व्यक्षिकाः म ममस्त्रत क्या हे लिस्स्मिष्ट विषयात महिए मुश्कि सीथिया भः माद्र कीवनवाजानिकीष्ट कविएक एवं। दिकार वृत्र वे क्षविकारन এই হুই প্রশালী সমানভাবে উল্লিখিত থাভিলেও পুর্বাচার্যাগণ আপনালের ভাবানুসারে একটি বা আর একটিকে প্রধান করিরা শইরাছেন, কিন্তু একেবারে অস্বীকার করিতে পারেন নাই, তবে বিনি যেটির পক্ষপাতী যুক্তিবলে সেইটিকে প্রধান আর অপরটিকে অপ্রধান করিয়াছেন। এইরূপে ছই প্রশালীর সামগ্রন্থ কোধার छारा यकान गाह नारे। स्थानक भारतन, दिनारसद अर्फ महनाइ

জগং ও জাঁব ব্রহ্ম, জগং ও জাঁব মিখ্যা এক ব্রহ্মই কেবল সত্যু,
ব্রহ্মেতেই জগং ও জাঁব ভ্রান্ত দৃষ্টিতে আরোপিত হয়। ব্রহ্মেতে
উহাদের আরোপ হইলে, কেহ এক জন আরোপ করিবে, কোন
কিছু আরোপিত হইবে, তাহা না হইলে আরোপট হইতে পারে
না। স্তরাং জগং, জাঁব ও ঈশ্বর তিনেরই স্থিতি বিনা আরোপ বা
ভ্রান্ত্রিও সিদ্ধ পার না। বাহার নামে এই মত এলেশে প্রচলিত
হটরাছে, তিনি স্বরং এ মতের যে দোষ জানিতেন না তাহা নহে।
বেলান্তসিদ্ধ যোগের দিবিধ প্রধাণীর মধ্যে সম্লায় উড়াইয়া কেবল
ব্রহ্মসভাধারণের তিনি পক্ষপাতী ছিলেন বলিয়া তিনি কারণরূপী
ব্রেদ্ধেত একেবারে জগং ও জাঁবকে বিশীন করিয়া ফেলিয়া কেবল
ব্রহ্মকেই অনশেব রাধিয়াছেন এই মাত্র। বদি তাহা না হইবে
তবে জগং ও জাঁব আছে তাহাকে কেহই চেষ্টা করিয়া উড়াইয়া
দিতে পারে না, ইহা তিনি আপনি স্পষ্ট কথার বলিলেন কেন ? }

ব্যতিহার।

উপাদনাকালে "তুমি আবি, আমি তুমি" বেলান্ডের এই রীতি অবলম্বন-করিয়া সকল সরপের সঙ্গে তুমি যোগ-করার কথা পূর্কেবিলয়ছি। যাঁহাকে তুমি বলি তিনি আমার সমুখন্ত; আর যাঁহাকে তিনি বলি তিনি দ্রস্থ। ব্রহ্ম যখন মানুষের ধারণার অভীত, তথন তাঁহাকে তুমি না বলিয়া তিনি বলাই উচিত, অনেকের এইরূপ মত: উপনিবদ ব্রহ্মের স্বর্গনির্গন্ধকালে তাঁহাকে তিনি বলিয়াই নির্দেশ করিয়াছেন। ব্রহ্মের স্বর্গনির্গন্ধকাল তাঁহাকেবিল বলিয়াই নির্দেশ করিয়াছেন। ব্রহ্মের স্বর্গনির্গন্ধকাল ভার আক্রন্ধকাল করিবাছেন। ব্রহ্মের মহিত জীব আপোনার একতামুক্তর করিবে, উপনিবদের এই উদ্দেশ্য। শ্বেধানে

এক বাস্তবের আবালী লিখিত আছে, সেধানে ভাবকে তৃমিও বাসকে তিনি বলিয়া "তিনি তুমি" এইরূপ অভেদভাব উপনিষ্ট হইরাছে। ব্রহ্মমূর্থে "আমি আছি" এ কথা উপনিবদে দেখিও পাওয়া বার, কিন্তু প্রসিদ্ধ উপনিবদ্পুলিতে ব্রহ্মসমূদ্ধে 'তৃমি' পরের প্রবাধ কোবাও দেখিতে পাওয়া বার না।

'ভগবতি দেবতে, তৃমিই আমি, আমিই তৃমি' জাবালগণের এই উক্তি তুলিয়া ভাষাকার শঙ্কর উপাসনায় ব্রহ্মসম্বরে 'তুমি' শব্দের ব্যবহার দেখাইরাছেন। 'তুমি আমি, আমি তুমি' উপা-সনায় এরপ ব্যতিহার (বদলাবদলি) আমরাও এই উল্ভি-অবলমনে প্রদর্শন করিয়াছি। এইরূপ ব্যতিহারে আরাধনা কি আকার-शात्र करत. मर्खाट्य (मटे हि (मथा श्रायाक्त । जेना छ ७ जेनामक এ তুইরের একত্র স্থিতি বিনা কখন উপাসনা সিদ্ধ হয় না। যাহাকে উপাসনা করিভেছি তিনি 'তমি', আর উপাসনা করিভেছি 'আমি', এ চুইয়ের একত্র সন্নিবেশ চুইলেট যে ব্যতিহার হুটল তাহা নহে। আরাধনা করিতে গিরা যদি ঈ্ররের ভাব আমাতে প্রবিষ্ট না হয়, আমার ভাব তাঁহাতে প্রবিষ্ট না হয়, ভাষা চটনে भवन्भारत्वत खावविनिमन्त्रतभ वाखिशांत श्रेम ना कि स्टेक्टवत खाव चामाएं शनिष्ठे हम अवर चामाएं तमहे जात्वत खरवरन चामि উন্নত হই, এ কথা সত্য, কিন্তু আমি অভি হীন, আমি ঈশবের निकटि कि हु रे नरे, बामात छ।व छाहाट अटवन कतिरत, छेरा (छ। पूरतत कवा, आयात छाव ठाँशाक न्यू विद्राउर भारत मा। এরপ ছলে বেদায়ের ব্যতিহারের ব্যবস্থা-গ্রহণ করিরা উপাসনা कदा कि कथन छैठिछ । वाष्ट्रा मर्छात्र बिर्द्वाबी, म्मान छेनास्य-अथनः क्षन *(अग्र*क्षत्र नरह ।

रकाञ्चनानिशन अप्रतम अरे निकाय करतन रव, अरे बाजिश्ह हिता हरूरम कीय ও उरक्षत्र वर्षम अकड मासिछ इत्र, जानमारक ত্রস্বেত এবং ব্রহ্মকে আপনাতে না দেখিলে বর্থন একত্সাধন চটতে পারে না, তথন ক্রম মহং আমি ছোট, এ জ্ঞানে ঈর্ণ উপাসনা হটতে বিরও হওরা কবন উচিত নর। আমি বত (कन कम रहे ना वामि उत्पाद वाहि उन्न वामार वाहिन, অ মাতে বে সন্তা ও জ্ঞান প্রকাশ পাইতেছে, ভারা ত্রন্ধের সন্তা-ও জান নিরপেক্ষ নয়। ভাঁছারই সভাতে আমার সভা, ভাঁছারই জ্ঞানে আমার জ্ঞান। আমার জ্ঞান ও সভা সামার হইতে পারে. কিন্তু সামান্ত হইলেও আমি ব্ৰহ্ম হইতে আমার সন্তাও জ্ঞানকে यथन পृथक् कतिया नरेएं भाति मा, পृथक् कतिया नरेएं श्राम যবন আমি থাকি না, তখন ঠাহাতে আমি, আমাতে তিনি, এ না ভাবিয়া আমার সম্বন্ধে আর উপারান্তর কি আছে। এরপ না ভাবিয়া বদি আমি থাকিতে না পারিলাম, তাহা হইলে সুতরাং উপাসনার ব্যক্তিহার আসিয়া পড়িতেছে। তবে এখানে এই আপত্তি উপস্থিত হইতে পারে, আমার দিকু দিয়া যথন আমি চিম্বা করি তখন তাঁহাতে আমি, আমাতে তিনি ইহা আমি ক্ৰমক্ষ করিছা থাকি, কিন্তু ব্ৰহ্ম কি আমাতে আপনাকে এবং व्यापनाटक व्यामाटक त्मर्थन १ त्वमाच वर्णन, है। त्वम्राटक्षत्र এরপ বলা কভ ভুর সভ্য আমাদের বিচার করিরা দেখা श्रीराक्षन ।

"এই প্রমায়া এফ সকল অস্ভব-ক্রেন" (অয়মায়া এজ স্কাস্ড:) টছার অর্থ এট বে, বতগুলি আয়া আছে, ভালারা বাহা ক্ষ্যুত্ব-ক্রে, এজও সে সকল আপনি অস্তব-ক্রেন। ব্রহ্ম ধার্যা অনুভব না করেন, জীব ভাহা অনুভব করিতে পারে না, ব্রহ্মের অনুভবই জীবের অনুভব, বেদায়ের এ মতে অম্বান কত দূর সায় দিতে পারি, ইহা ভাবিয়া দেখা প্রয়োজন। আমানের মনে কত প্রকারের কুটিন্তা উদিত হয়, আমাদের কৃচিন্তা কি আর ঈশরের চিন্তা ও সকল স্ব্রুচিন্তা, কুটিন্তা আমাদের এরপ বিভাগ করিলে জীবের সকল অনুভব তাঁহার অনুভব একথা আর দাঁড়ায়ে না। এই দাঁড়ায় যে, জীবের ভাল ভাল চিন্তা ব্রহ্মের, মন্দ চিন্তা গুলি তার আপনার। মানুষ সর্বাদা সংসার ভাবে, কৃত্রে বিষয় সম্পায় তাহার চিন্তার বিষয়, ঈশরেরও বিদি তাহাই হয়, তাহা হইলে ঈশরে কি মানুষের মত তুচ্ছ হইলেন না ও কথাটী বড়ই গুরুতর। বেদান্তের কোন একটি মত ভ্রায় বিদ্যা প্রমাণ হওয়া ভাল, তবু বেদান্তের অনুরোধে ঈশরকে হীন করিয়া ফোলা কিছুতেই উচিত নয়। ত্রহ্মের দিকু দিয়া চিন্তা করিলে বেদান্তের মতটি সত্য বলিয়া প্রতিপত্র হয় কি না, দেশা যাউক।

জগতে যত কিছু পদার্থ আছে. — কি জীবে, কি অছীবে, — সমুদারেতে ঈখরের জ্ঞান প্রকাশ পায়, একথা আয়বঃ অদীকার-করিতে পারি না। জগতে এমন কিছুই নাই ঘাহা ঈখরের জ্ঞানের অফ্পারুক। আমরা যদি অফ্পারুক মনে করি, তাহা আমাদের জ্ঞানের অভাবের জন্ত, সে ব্যক্তি বা পদার্থ কথন তাঁহার জ্ঞানের অল্পারুক নয়। প্রত্যেক বস্তর গৃঢ়তর যদি সমগ্র ভাবে আয়ত করিতে পারি, তাহা হইলে দেখিতে পাইব, ঈখরের পূর্ণ জ্ঞান বিনা সেই বস্তুকে সমুদার জগতের সহিত সম্বন্ধে সম্বন্ধ করিয়া আর কেহ জ্মাইতে পারিত না। জাতি ক্ষু

কা কণা হইতে আরম্ভ করিয়া প্রকাশু প্রকাশু ব্রহ্মাণ্ডের বে রুর বোগ আছে সে বোগ আমরা অনুভবগোচর করিতে পারি বিলয়া আমাদের নিকটে বালুকাকণা অভি ভুচ্ছ, সুল ব্রহ্মাণ্ড তি অন্তত। ঈগরের সৃষ্টির সামাল্ড কোন এক বণ্ড লইয়া বিচার বিলে ভাহার ভিতরে বিবিধ অপুণ্ডা প্রভীত হইবে, ইহা আর বিচিত্র কি १ একটা প্রকাশু অট্টালিকার কোন এক সামাল্ড অংশ দি আমাদের নয়নগোচর হয়, আর ভার অবশিত্ত সম্পায় অংশ ক্রের থাকে, ভাহা হইলে সম্পায় অট্টালিকার সহিত সে অংশের ক সম্বন্ধ ভাহা হলয়সম না হওয়াতে সে অংশটি নিভান্ত অপুণ্ লিয়া প্রভীত হইতে পারে; অসীম জনতের ক্রুমাংশ লইয়া বিচার পদ্বিত করিলে যে সেইরপেই হইবে, ভাহা আর বিচিত্র কি १ শবের সৃষ্টিসম্বন্ধ বিচার বে আমাদের নিকটে ঐরপ্রই হইয়া াকে, ভাহা আর বলিবার অপেকা রাবে না। এই ক্রুড চ্টি ডিয়া দিয়া প্রশন্ত দৃষ্টিতে সম্পায় না দেখিলে সর্ব্যর স্থিবের

সর্পত্তির ঈশরের জ্ঞানের প্রকাশকে বেদান্ত ব্রেক্সর অফ্ ভব লিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। ব্রেক্সর জ্ঞান, ব্রেক্সর চিন্তা, ব্রেক্সর তৃত্তব, এগুলিকে মামরা এক করিয়া দেখিলে বুর্বিতে পারি, লাস্ত্রের মতাট হঠাং বেরূপ দূবিত বলিয়া মনে হর, সেরূপ দূবিত । মানুবের স্থৃতিত্ব। গুক্তিত্বা, মানুবের স্ক্র্ডান গুক্ত্রান, দুবের উত্তম অমৃত্যব এবং মন্দ অমৃত্যব, এগুলির তত্ত্ব বিচার রিয়া দেখিলে এই দেখিতে পাওয়া বায়, চিন্তা, জ্ঞান গুক্তম্বর, রো ক্ষমং দূবিত নর, মানুষ বেরূপে ঐগুলির নিরোগ করে, দুসারে উহায়া ভাল বা মন্দ বলিয়া অভিহিত হয়। আমানের

প্রতিদিনের বাবংগবের বক্ত আপনি মন্দ্রনর উহা ঈশবের হস্ত ছইতে উৎপন্ন বলিয়া তিনি কিছু নিন্দ্নীয় নন, কিছু আমরা উহার ভাল মাল উভয় বাবহারই করিতে পারি ৷ সেইরপ আমাদের **डिया, खान वा अनुखर्व किछू गम्म नय, छाटामिन्नरक स्पन्तर्भ** निर्याश करा लेखरात है छा।विस्न एनहें तर्श खेशामिन कि निर्याश করিলে উহারা মনদ হয়। কোন একটি বস্তু বা বিষয় লইয়া চিত্র উপস্থিত হয়, সে চিন্তা যদি ঈশ্বরের তংসম্বন্ধে যে চিন্তা অর্থাং জ্ঞানের প্রকাশ তাহার অনুরূপ হয় তাহা হইলে উহা সুচিতঃ इहेन, किन्नु डाँहात छान छेहारक यात्र कतिग्राह, रा छैरक्र করিয়াছে, ভাহার বিপরীতে যদি আমাদের চিন্তা ধাবিত হয়, তাহা ছইলে আমাদের চিন্তা ফুচিন্তা না হইয়া কুচিন্তা হইল। ঈশবের সঙ্গে উপাসনা ভারা সাক্ষাংসম্বন্ধসাপনকরার উদ্দেশ্য এই যে আমাদের চিছা যে ঈশ্বরের চিন্তা বা জ্ঞানের বিপরীত দিকে ধাবিত হয় সেইটিকে অবক্তম কর।। উপনিষদে ধেখানে "এই প্রমান্তা ত্রন্ধ সকল অনুভব করেন" ইহা লিখিত হইয়াছে. সেধানে প্রকৃতি, জীব ও পরমান্তা, এ তিনের মধ্যে যোগেতে একতা অত্রে উল্লেখ করিয়া তাহার পরে ঐ কথাপুলি নিবিষ্ট হইয়াছে। যেখানে বিরোধ নাই কেবলই একত। সেখানে তিনে এক, একে তিন হইবে না কেন ? প্রকৃতি গ্রাহার নিয়ন্তার অভি-প্রায় নিয়ত অনুসরণ করিতেছেন। মুতরাং প্রকৃতির সঙ্গে প্রকৃতির নিয়ন্তার কোন বিরোধ নাই। জীব যদি আপনার নিরস্থার নিরমাধীন হয় তাহা হইলে প্রকৃতির সঙ্গেও তাহার কোন विरताथ थारक मा। (कन ना बाहात সहिত खीव विकल সমূर्त সমন্ধ সেই সম্বন্ধাযুদারে ডিনি ডাহাকে নিয়মিড করিয়া থাকেন ।

এ প্রস্থানে বিস্তান জনসমাজ ও প্রকৃতি এ উভয়ের সহিত জীবের সগজ এমনই একতালাভ করে যে, কোথাও কোন বিরোধের কারণ থাকে না। যথন এইরূপ একতা হইল, তথন সকলকে যিনি আপনাতে অন্তভূতি করিয়া রাখিয়াছেন, ঠাহার ভাব, চিস্তাও জ্ঞানের সপ্রে জীবের ভাব, চিস্তাও জ্ঞানের ঐক্য মটিল। হভরাং ব্রহ্মের চিস্তা জীবের চিস্তাও জ্ঞানের অমুভব জীবের অনুভব, ইহা নির্দ্ধারণ করা কিছু অনুচিত হইল না, এবং বেদান্তের ঐ মত্টি উপাত্ত ও উপাসকের মধ্যে বাভিহার বা ভাববিনিম্যের উপ্যোগী বলিয়া গ্রহণ করাতে কোন দোব পড়িল না। ইহার পর আরোধনায় এক একটি স্বরূপের নিয়েরের বিষয় বথন বলা হুহবে, তথন এই ব্যভিহারের নিয়ম স্থোনে কিরুপে নিয়েরে করা হুইয়া থাকে ভাহার উল্লেখ করা যাইবে।

अञ्जलादाधना ।

ঈশর ও জীবের মধ্যে উপাত্ত-ও-উপাসক-সমন্ধ সম্ভবপর না হইলে কথন উপাসন। সপ্তবে না। ব্রহ্ম সকল সম্পন্ধের অভীত, হুতরাং তাঁহার উপাসন। হয় না, শস্তর প্রভৃতি নিঞ্জ-ব্রহ্মবাদি-গণের এই মত । ব্রহ্ম যদি দর্শবাতীত না হন, তাহা হইলে তিনি জগতে ও জীবে আবদ্ধ হইলে, তিনি জগং ও জীবের সম্পূর্ণরূপে প্রভু হইতে পারেন না, কতকটা উণাদিগের মুখাপেকী হইয়৷ তাঁহাকে চলিতে হয়। আমরা শরীরে বন্ধ। যদিও আমরা শরীরে চালাই, ততুও শরীরও বে আমাদিগতে কতকটা চালায়, ইহা কি আমার। অধীকার করিতে

भाति + अन्य ७ जीव मण्युर्व श्रेषदात व्यवीम, छाँशात मखानिदालक ছটরা ভাহাদের অভিত্ই খাকে না। এরপ অবস্থায় ঈশব खाशिक्षात्व बद्ध, हेश कि अकारत चामता श्रोकात कतिव **१ जिनि सन् ७ मोरित कठो**छ. देश मानित्तरे रा सन् ७ सोरित সহিত তাঁহার কোন সমন্ধ থাকে না, ইহাই বা কি প্রকারে বলা যাইবে? যিনি দকলের অতীত, তিনি কি সকলকে আপনার অন্তর্কু করিয়া রাধিতে পারেন নাণ্ অতীত না হটলে কে কাছাকে আপনার অস্তভুক্ত করিয়া রাখিতে সমর্থ হয় ৭ ঈশ্বর সমুদার জীব ও জগংকে আপনার অনন্তগতার অন্তভুক্তি করিয়া রাবিয়াছেন, তুত্রাং আমরা অন্তর্জ থাকিয়া তাঁহার সহিত সম্বন্ধায়তব করি। সমুদ্রের ভিতরে যে মংস্থ বিচরণ করিতেছে, উহার যদি মানুধের মত জ্ঞান থাকিত, তাহা হইলে উহা সমুদ্রের পারগমনে সমর্থ না হইলেও সে যে সমুদের মধ্যে বিচরণ করি-তেছে, এবং উহার সহিত বিবিধ সম্বন্ধে সমন্ধ আছে, ইহা কি আর উহাব্যাত নাণ অতএব ঈশার সর্ব্যাতীত হইয়া স্কল্কে ষধন আপনার অন্তভ্ ক করিয়। রাখিয়াছেন, তথন ভাঁচাতে क्षिति. এवर बामास्मव महत्र ठाँगाँव विविध किया बामवा महत्रक উপলব্ধি-করিতে পারি, এবং উপলব্ধি-করিতে পারি বলিয়াই সংস্থার সহিত অমাদের উপার ও উপাসক সমন :

ঈশবের সহিত আমর। সাধারবজ্ঞিত নই, ইহা মানিয়াও আর একটি অস্থরায় বারা নিপীড়িত হুইডেছি। সর্বাতীত বস্তকে আমাদের সম্বন্ধের মধ্যে আনিতে গেলেই জাহার সর্বাতীতত্ব বিদার করিয়া দিতে হয়, বত টুফ্ আমরা ধারণ করিতে পারি, দেই টুকু লইয়া আমাদিগকে তাঁহার উপাসনার প্রযুক্ত হইডে হয়। উপাসনাপ্রণালীতে সভাস্থরপের মারাধনা এইরপ লিপিবন্ধ বিচ্ছাছে: –

ুষি সভা, সর্বস্থানে ভোষার জীবত সভা। সন্পার বিশেষ আগ্রয় স্থান তুমি, চেতন ও অচেতন তাবং পদার্থের তুমি ম্লা-ধার। তোমাতেই আমর: জীবিত রহিয়াছি এবং বাস করিভেছি। তোম ছঃড় সকলই অসঃর ও মিথা।। হে সর্বত্র বিভ্রমান ঈশ্বর, তুমি আমাদের জীবনের জীবন।"

প্রথমেট দেখিতে পাওয়া যাইতেছে, যিনি দেশ কালের অভীত উলোকে 'সর্বস্থানে ভোমার জীবত্ব সন্তা' বলিয়া দেশের সহিত সম্বন্ধ করা হইয়াছে। এরপে ছেলের সহিত সহকে জাঁহাকে না षानित्त, षामता किकार्ण कें। हार् अखाक कतित. किकार्ण हे वा তাঁহার উপাসনা করিব ৭ সর্বস্থানে তিনি আছেন, অতএব তিনি আমার সম্বেও আছেন, ইহা মানিখা লইয় উাহার পুজায় আমরা প্রবৃত হই। এখন জিজাসা চইতেছে দেশকালের যিনি অহীত ভাহাকে এইরপে দেশকালের অন্তর্গত করিয়া লওয়াতে কি তাঁহাকে ধর্ম করা হটতেছে না ? 'সর্বভানে ভোমাব সভা' যদি এই মাত্র বলা হইত, আর 'সমুদায় বিশের আগ্রয় স্থান তৃমি' ইহা না বলা হইত, তাহা হইলে তিনি যে সকল বিশের অতীত, এ জ্ঞান উপাসকে নাই, আমরা মনে করিতে পারিতাম। আমাদের कारन यनि जेनरतत मर्माजीज्ञात थारक, जाना इन्टेल जानारक शारनं मर्नन कतिरमञ्ज (कान (माद भएए ना, (कन ना मकन शान যখন গ্রাহার ভিতরে, তখন তাঁহার সর্ব্বাতীত ভাবের সঙ্গে সর্ব্বপত ভাৰতে। আসিবেই। বখন বলা চইতেছে, 'চেতন ও আচেতন তাবং পদার্থের তুমি মূলাধার', তথন ঠাছারই সন্তাতে যে সকলের

সন্তা, গাঁহার সন্তা-নিরপেক হইরা কিছুই যে বাকিতে পারে না এ कान छेगामरक न्याहे धाकांन भाहेरणहा । जिनि मधुनाम विरुद्ध আদ্রায় চেতনাচেতন যাহা কিছু তাহার মূল তিনি, এতদুর পর্যায় ৰণিয়া নিবুত হইলে উপাদকের সঙ্গে উপাঞ্জের বিশেষ সমন্ধ किছु छ है क्षा क्षेत्र के के का । कि ख यथन छे भामक विल छ हन, 'ডোমাতেই আমর। জীবিত রহিয়াছি এবং বাস করিতেছি', তথন উপাত্র ও উপাসকের খনিষ্ঠ ব্যক্তিগত সম্বন্ধ প্রকাশ পাইল। মাণং ও জীব ব্ৰহ্মসভাতে স্থিতি করিতেছে, এ জ্ঞান জনিলেও उक्रमखा एर मर्स्सनिवर**्षक, अ महरक প**तिकात खान खिन ना। বৰন উপাসক হালবক্তম করিলেন, 'তোমা ছাড়া সকলই অসার ও মিধ্যা.' তখন স্থুদার জ্পং-ও-জীব-নির্পেক সন্তা তাঁহার জ্ঞান-গোচর হইল। ব্রহ্মসন্তা হইতে পৃথকু করিলে সকলই অসং ও मिथा। ग्रेंस यात, (करन এक मुखारे मुर्खनितरभक्क श्रेता दिख করে, ইহা যথন উপাস্তের প্রত্যক্ষ হইল, তথন সাক্ষাং ব্রহ্মসত্তা ু উপাসকের উপলব্ধির বিষয় হইয়াছে, ইহা বুঝা পেল। এই সাক্ষাং উপলব্ধির পর তিনি বলিতে পারিলেন, 'ত্রি আমাদের खीरत्वर खोरन'।

এখানে সত্য স্বরূপের আরাখনার বে স্কল কর্বাস্থ উল্লেখ আছে, তর্মধ্য সভাস্থরপদ্দকে বে স্কল কর্বা উচ্চারল করিলে, তৎসহ উপাদকের যথার্থ সম্বন্ধ কি, ভাহা প্রতীত হর সেই স্কল কর্বান্তলি সংক্রেপে উল্লিখিত হইরাছে। আরাখনাকালে ইহার অপেক্ষা অনেক কথার উল্লেখ হইরা বাকে, কিন্তু স্নে স্কল বদি এ সম্বারের নিরোধী হয়, ভাহা হইলে বিজ্ঞানসন্ধত আরাখনা হইল ইহা কর্বন বলা বাইতে পারে না। 'ভোমাতেই আম্বা बीविछ बहिशांकि अवः राम कबिछिकि' अहे क्यांश्रीन विश्वष করিতে পিয়া বৰ্থন বলা হয়—'তুৰি আমায় বল, ডুমি আমায় শক্তি, ভোমা বিনা আৰি কিছুই করিতে পারি না, ভূকি আমার চকু कर्त्व मक्ति इरेश मकन स्वराख ७ छनाच, स्वी सामान रख वन হইরা আছু, তাই আমি তোমার বলে বলী হইরা কার্ব্য করি',---তথ্য ব্যতিহার উপস্থিত। একজন শক্তি সিতেছেন, আর একজন শক্তি এহণ করিতেছে, গ্রহণ করিছা ভাষার বাবহার করিভেছে এখনে দাতা ও এহীতার সভন্ন হইল বটে, কিছু উপাত্ত ও উপাসকের মধ্যে বিনিময় ব্যাপার ভো চইল না। এক ঘৰন শক্তি দিতেছেন, তখন তিনি জানেন বে আমি অশক্ত, তাঁচার শক্তি বিনা আমি কিছুই করিতে পারি না। আমরা অশক্ত জানিয়া শক্তিদান, অশক্ত বোধে আমার তাঁহা হইতে শক্তিগ্রহণ, এ তুই ব্যাপারের মধ্যে ভাববিনিময় ছটিল। তিনি বে শক্তিমান ভাগ ভিনিত্ত জানিভেছেন আমিও জানিভেছি। আমি বে আমক ভাষা ভিনিও স্থানিভেছেন আমিও জানিভেছি, এই জ্ঞাননিবন্ধন ব্ৰহ্ম ও আমার মধ্যে ভাবের একতা ঘটিতেছে, এবং এই ভাবের একতাবশতঃ তাঁহার ও আমার মধ্যে ভাববিনিমর সহজ হটতেছে। আমাকে অপক্ত জানিয়া শক্তিদান, ভাহাকে শক্ত জানিয়া তাঁহা হটতে শক্তিগ্ৰহণ, ইহা ভাৰবিনিময় ভিন্ন আৰু কি বলা বাইডে পারে। বদি এরপ বিনিময় চলিতে না পারিত, ভাষা হইলে উপাइ-ও-উপাসক-সমন কিছতেই দাঁডাইতে পারিও না. এবং ভীবনের জীবন বলিয়া তাঁহার সহিত নিগঢ-সম্বন্ধ-স্থাপনে উপা-मरकत अनाह रह छेनिहेड इटेड मा। मछा मतानत मरम अधि वित्र मन्त्र रहेरन किंत्रण बातायना रम् छारात बायर्ग अरे :--

"কে তুমি চারিদিকে বসিরা আছ । কে তুমি, যাঁহার গন্তীর সন্তা আলে আলে শরীরকে রোমাঞ্চিত করিতেছে। কে তুমি আমার প্রাণের প্রাণ হ'রে আছ । কে তুমি এই ব্রহ্মাঞ্জে আগ্রহ হ'রে আছ । এই বৃশ্ধি তুমি সেই, ঘাঁহাকে ব্রাহ্মেরা পূজা করেন । কি আশ্রুমী তোমার সন্তা। । কি আশ্রমী গুলাকরের বসন পরিয়া পুলাগিত থাক কেন । এ অককার সাধকের পক্ষেআলোক। পরমেধর, এত পাতলা চাদর পরে এলে । একটা নামমাত্র আছে দন ধাকিবে. এ কি ক'রে এসেছ । তোমার প্রকাশের কি কম হ'ল । জগদীবর । আর কে আছে । এমনি প্রকাশ আপনাকে কর্লে বে একেবারে সব চেকে ফেলের। আর কিছু দেখা যায় না, সন্বিল্প্তা। তোমার এই জ্লছ ভীবস্ত সন্তা প্রকাশিত হ'ল, আর এই সন্তার মধ্যে ড্বিয়া সদসং কে বিবেচনা করিবে । সং রহিল, অসং মরিল, এখন কেবল তুমিই আছে। প্রাণ সরুপ, জীবনের জীবন তুমি।"

<u>ख्व</u>'न ।

আমি তাঁহাকে জানিতেছি, তিনি আমাকে জানিজে এন একপ না হটলে তিনি কি আমার উপাত হটতেন । তিনি যদি কেবল দক্তি হইতেন, তাঁহাতে জ্ঞান না থাকিত, তাহা হইলে তিনি হইতেন আজ, আমি হইতাম চল্ল্লান। কি বিপরীত সম্বন। জ্ঞান নাই অথচ তাঁহার সৃষ্টি জ্ঞানে পূর্ণ, এ বিপরীত কথায় কে বিশ্বাস করিবে ৷ যথন চারিদিকে তাঁহার জ্ঞান প্রকাশ পাইতেছে, তথ্ন তাঁহার সে জ্ঞান আমার ভিত্তেও আছে। তিনি যেমন জ্ঞানে সকল জানিতেছেন, তেমনি আমার ভিতরের সমুদায় বিষর আনিতেছেন। ঈশরের জ্ঞানখলপসকলে ঈদুশ জ্ঞানবশতঃ তাঁহার আরাধনা এইরূপে করিতে পার। বায়ঃ—

"ভূমি জ্ঞান, ডোমার অপার জ্ঞান জলে ছলে আকাশে প্রতি-বিহিত রহিরাছে। চারিদিকে কেমন ফুলর কৌশল, কেমন আশ্চর্য নিরম। ডোমার অসংখ্য জ্ঞানচকু আমাদের উপরে স্থির রহিরাছে এবং আমাদের বাহ্নিক ও আন্তরিক সম্লার পাপ দেখিতেছে। ডোমার দৃষ্টির আলোকে আমরা কিছুই ঢাকিডে পারিনা। ভূমি দর্বজ্ঞ, ভূমি অন্তর্গামী ও সর্বসাক্ষী।"

জনতের চারিদিকে ব্রহ্মের জ্ঞান প্রকাশ পাইতেছে, উপাসক সর্ব্যপ্রথমে ইহাই দেখিয়া থাকেন। জলে স্থলে অন্তর্মীকে সর্ব্বত্র তাহার জ্ঞানকেনশন করিয়া তিনি অবাক্ হইয়া তাহার আর্থেনায় প্রবৃত্ত হন। পরিশেষে তিনি বথন আপনরে শরীরের দিকে দৃষ্টিপাত করেন, তথন তাঁহার দেহের প্রত্যেক ষল্পের ভিতরে কি সকল আণ্ডয়া কৌশল বিল্লমান তদর্শনে তিনি তাঁহাকে মহাবাদ দেন। তিনি যে জাবনের জাবন, তাঁহাকে নইলে যে দেহে জাবনের ক্রিয়া নিয়ত চলিত না, পত্যেক য়য় উপযুক্তরূপে গঠিত হইয়া স্ব স্থা করিতে পারিত না, ইহা বুরিয়া তিনি তাঁহার জ্ঞানস্বরূপের প্রতি আরুষ্ট হইয়া পড়েন। এখনও জ্ঞানস্বরূপের সহিত সাক্ষাং সম্বন্ধ হয় নাই। মানা বল্পতে নানা পদার্থে তাঁহার জ্ঞানের প্রকাশমার ইহাতে দেখা হইল। কিন্তু যাই উপাসক বুরিলেন,—'ভোমার জ্ঞানগর প্র জ্ঞান্ত্র ক্রিমা ক্রিয় জ্ঞানের এবং আমাদের বাহ্নিক প্র জ্ঞান্তরিক সমুদায় পাপ দেখি-তেছে। তেমার দৃষ্টির জ্ঞানোকে আম্বা কিছুই ঢাকিতে পারি

ন। '—অমনি বাহিরের দিক্ হইতে অন্তরের দিকে দৃষ্টি আসিদ,
অন্তরে ঈশরের জ্ঞানের সহিত সাক্ষাংকার হইল। এই সাক্ষাংকারের সঙ্গে সঙ্গে তিনি বলিনেন, 'তুমি সর্বজ্ঞ, ভূমি অন্তর্গামী ও সর্বসাক্ষী।' ঈশরের জ্ঞানচন্দ্র দিক্টে কিছুই প্রস্কের থাকে না, কেন না তিনি সর্বজ্ঞ; তিনি আমাদের অন্তরে থাকিয়া আমাদিশকে নিয়মিত করিতেছেন, এবং আমাদের সকল কার্য্যের সাক্ষী হইয়া আছেন।

আধুনিক অনেক পণ্ডিত ঈশ্বরকে শক্তি বলেন, কিন্তু তাঁহাকে জ্ঞান বলিতে কঞ্চিত। জ্ঞানের বিষয় বিনা জ্ঞান থাকিতে পারে मा. क्लारनत विषय क्लारनत चिकितक रखत्रा ठारे। जेनरतत অভিরিক্ত কিছু থাকিলে ঈখরের ঈখরত্ব থাকে না, কেন না যাহা কিছ তাঁহার অভিবিক্ত, তাহার তিনি ঈশ্বর নন, ভাহার তিনি শ্ৰষ্টা নন। অধিকল্প তাহা ছাড়। কিছু থাকিলে ডিনি সেই পরিম'ণে পরিমিত হইলেন ৷ এ সকল কথার উত্তর এই, তাঁহার জানের পক্ষে ভাঁচাকে ছাডিয়া ভাঁহার বাহিরে বাইবার কোন প্রয়োজন হয় না। তাঁহার আপনার ভিতরে সমগ্র জবং ও জীব বিশ্বমান, সেই সকল ঠাহার জ্ঞানের বিষয়। আমানের ভিতরে शाश चाह्य छाश जानः कि छान नटर १ जामात्वत विवेद ममञ कारनव विवरत्वत मनारान दत्र ना. अक्क चामारवत वाहिरत चरनक জ্ঞানের বিষয় আছে, ঈগরেতে বখন সকলই অন্তর্ভু তথ্য व्याच्यक्ताम ও विवयक्ताम এ इरे डीशांख शुवक नार अकरे। व्यामा বলিলেই তাহার সম্বে সঙ্গে মা কানা আসে। বাহা জানিতাম না छोहा जानिमात्र, उत्तरेष जाना रहेन। शास्त्रत्र मध्यक जाना धरेक्षणरे बर्टे, किन्न जेचत्रश्राष्ट्र चाना धक्रण मरह। इयनरे আমর। কিছু জানি না বলিরা জানিতে চাই, তথনই জানিবার করু
চিন্তা উপস্থিত হয়। চিন্তার অর্থ এই, জ্ঞান সহজে প্রবাহিত
হইতেছিল, হঠাং অবঃক্ষ হইল আর সহজে প্রবাহিত হইতে
পারিল না। বেধানে জ্ঞান অবরুদ্ধ হইল, সেধানে চিন্তা উপস্থিত।
চিন্তা বারা কোন বিশরের জ্ঞানলাভ অপূর্ণতার লক্ষণ। ঈবরেতে
ইহা কোনকালে সল্পবদর নয়। তাঁহার ক্ষান নিরভ অপ্রতিহতভাবে প্রবাহিত হইতেছে, এরূপ স্থলে চিন্তা আসিবে কেন
 কোন
একটি বিষয় অভ্যাস বারা আমাদের আর্ব্ড হইয়া গেলে তবে
তংসম্পর্কীর জ্ঞানের ক্রিয়া অপ্রতিহত ভাবে চলে। ঈবরের জ্ঞান
সর্কল। অপ্রতিহত, কেন না সকলই গ্রাহার চিন্ন আ্রন্ত। সকলই
তাঁহার চিন্ন আন্তব্ধ বলিরা তিনি সর্ক্তর।

স্বার সর্বজ। তিনি বলি গর্বজ হন, তাহা হইলে তিনিছো আজ আমরা কি করিব, তাহা পূর্ব্ধ হইতেই জানেন। আমরা বাহা করিব তাহা বলি তিনি জানেন, তাহা হইলে তাহা পূর্ব্ধ হইতে নির্দিষ্ট আছে। বাহা পূর্ব্ধ হইতে নির্দিষ্ট আছে, তাহা আমালের তো করিতেই হইবে। বাহা করিতেই হইবে, না করিরা বাকিতে পারিব না, তংসক্ষকে আমালের লারিছ কি প্রকারে বাকিতে পারিব না, তংসক্ষকে আমালের লারিছ কি প্রকারে বাকিবে গর্বলি লারিছই না ঘটিল তাহা হইলে পাপ পূল্য কিছুই নয়, উহা মানবীর কলনা। 'ঈবর সর্ব্ধজ্ঞ' এহলে সর্ব্ধক্ষণক্ষে তিনি মকলই জানেন, এ অর্থের কোন প্রতিবাদ হইতে পারে না, কিছ তাহার জানা আমালের জানার মত নর। তিনি ভাবেন চিন্তা করেন তবে জানেন, এ কথা তাহার সম্বন্ধে বলিতে পারা বার না। অধিকছ তিনি জানেন বলিয়াই বে, সকলই পূর্ব্ধ হইতে নির্দিষ্ট আছে, এ কথাই বা সতা হইবে কি প্রকারেণ সকলই পূর্ব্ধ

হইতে আছে, কিছুই নৃতন হইতেছে না, ইহা বলিলে এই ব্যাষ (य. अच्छ এकनात मकन कतिया निया निन्छ इटेया विश्व আছেন, আর তাঁহার কিছুই করিবার নাই। বরং এই কথার ঠিক, তিনি ক্রেমাবরে করিয়া যাইতেছেন, তাহার ক্রিয়ার নিবৃত্তি নাই, যাহা কিছু হইতেছে তাহার ক্রিয়া হইতে নিতা নতন হইতেছে। আমরা যেমন চিন্তা করিয়া ভাবিয়া তার পর কিছ कति, छिनि (म প্রকারে সমূলায় করেন, তাহা নহে। তিনি कि ना गर्काञ्ज, जिनि कि ना भूर्व खान, शुज्रांश टीशांक कांत्रांज গিয়া ভাবিতে হয় না, চিত্তা করিতে হয় না। আমরা যেগন আমাদের কলনার ছবি দাগিয়া তার পর সেইটি চিত্র করি, তদতুসারে বস্তু গড়ি, সেরপ ভাহাকে কেন করিতে হইবে ৭ তিনি যাহা করেন তাহাতে জ্ঞান প্রকাশ পায়, সুতরাং তিনি সর্বাহন, সর্ব্বজ্ঞ না হইলে সকলেতে জ্ঞানপ্রকাশ পাইবে কিরপে ? তিনি সর্বত্র 'এখানে', সর্বাদা 'এক্ষণে' অর্থাং তিনি কোথাও কথন " অবিভ্রমান নাই। আমার নিকটে ভুত আছে ভবিষাং আছে, ए। हारा निकार कुछ । नाहे किरियार अ नाहे, प्रकार विश्वमान । কেন না যিনি নিতা ক্রিগাশীল, যাহার ক্রিয়ার ভিতরে এঞান বিচ্ছেদ নাই, ক্রিয়ার বিচ্ছেদজাপক ভত ভবিষাং ভাঁছাতে थाकिरव कि क्षकारत ? बामास्मत कियात किरुक्त बाह्य, बातुल - আছে শেষ আছে, মুতরাং আমাদের সম্বন্ধে ভুত ভবিষাং আছে । ভাঁহার নিও্য ক্রিয়া হইতে আমাদের জীবনের ব্যাপার সমুদায় প্রতিমূহর্তে উৎপন্ন হইতেছে, আমরা উহার সঙ্গে ভত ভবিষ্যং मरपुक कतिराज्छ। **का**शि यागात मश्राक गागारक खितशार तनि ভাষা ঠাহার ক্রিয়াসমূংপর, ঠাহার নিরবচ্ছেদ ক্রিয়ার অন্তর্গত।

যাহা হইতেছে, ভাহা বদন তাঁহার বর্তমান ক্রিলা হইতে উংপর হইতেছে, তথ্ন ডিনি আমাদের অনেক দিন পুর্নেষ্ঠ ভাবিদ্বা চিত্রা করিয়া যাহা স্থির করিয়া রাবিয়াছিলেন ভাহাই অঞ্চার कौवत्न चार्तेन, कुक्था वनिव कि अकारत ? हेशांख शेशांत मर्खक्र व शांकिन ना, এ कथा वना शाहरा भारत ना, रकन ना छांशांत किया বেমন নিরবচ্ছেদে বর্তমান, জ্ঞানও তেমনি নিরবচে ছাদে ক্রিয়ার সঙ্গে वर्डमान, राशांत्र किया ও ज्ञान कथन जिल्ल नरह । कता ও जाना ত্রীহাতে কখন সতম্ভ নহে। আগে ভাবা তার পরে কাল করা, हेहां कि कथन छाँहाएं मन्द्रव ? हेहाएं कि अनवरफ्त कारन दानर्छम् कल्लनाकता इस मा १ व्यामारमत व्यपूर्व क्यानमंख्नित সঙ্গে তুলনাপুর্বাক তাঁহার জ্ঞানশক্তিকে আমাদের মত করিতে পিয়াই যত প্রকার ভুল ঘটিয়াছে। যাহা আমাদের ভুল সেইটিকে ঈশবের সত্রপপরিভাগে বিশ্ব করিয়া ভোলা কখন জানোচিত কার্যা नत् । अभारत्व मरङ् केषरवत निवत् ६म किया रामन हिन्दिह, আমরাও তেমনি তাঁহার সঙ্গে সঙ্গে ভাবিতেছি চিন্তা করিতেছি, কথন াহার অভিপ্রায়ের অকু চলে কথন প্রতিচলে কার্যা করি-তেছি। আমাদের বাহা কিছু মন্দ, বাহা কিছু অপুর্ণতা, তাহা তিনি আত্রক্ষিয়ার ক্ষেমার্যার শোধিত করিতেছেন । এ শোধনের মধ্যে যেমন ভাঁচার ক্রিয়া আছে তেমনি জ্ঞানও আছে, সুভ্রাং **ভিনি স্ক্রিভ বলিয়া আ্যাদের পাপ**্রা পাপপুরা নয়, উহা भूर्क-निर्मित्रे, देश निक् श्रेटिज्य ना. (कन ना छाशात्र প্রত্যেক ক্রিয়া অন্যাদের সম্বন্ধে পশু বা প্রশাররূপে প্রকাশ পাইতেছে।

वान पु

উপাসনাপ্রণালীতে অনত্তের আরাধনাতে এই কথাগুলি নিপিবন্ধ রহিরাছে:—

"তুমি অনন্ত, ডোমার আরস্ত নাই, ডোমার শেব নাই। কালে তুমি নিডা, দেশে তুমি সর্কব্যাপী; ডোমার উচ্চতা ও গভীরভা কে পরিমাণ করিবে ? এই প্রকাশু বিশ্ব ভোমার পদতনে সর্বপ্রণার ভাষে। তুমি ইন্দ্রিরের অতীত। তুমি ভূমা মহান, ভূমি পূর্ব ব্রহ্ম।"

স্বীর অনস্ত, কেন না ভাঁহার আরস্ত ও শেষ নাই: জগতের আদি ও অন্ত আমরা চিন্তাপথে আমিতে পারি না, ফুডরাং জগং অমস্ক, ইহা আমরা বলিতে পারি না। আরস্ত ও শেষ নাই, আর আরক্ত ও শেষ চিন্তা করিতে পারি না, এ চুট কিছ এক কথা নহে। জগতের আদি অন্ত ভাব। আমাদের জ্ঞানের অতীত হইলেও ঈশ্বরের জ্ঞানের অতীত নহে, কেন না যদি তিনিও উহার আদি অন্ত না দেখেন, তাহা হটলে জগং তাঁহার অন্তর্ভু ক্র হইয়া রহিয়াছে, তিনি তাহার অতীত, এ কথা কিছ-তেই বলা ঘাইতে পারে না। ঈশ্বরও অন্ত, জনঃ ও অন্ত, তুই व्यन्त म्यात्न व्याद्ध, दक्द काशांतक थर्स कवित्रहा ना. डेटा জানের বিকল্প সিদ্ধান্ত। জগতের আদি ও অন্ত আমাদের धातमात्र विषय ना स्टेरन ७ छैरात चालि चार्ट चार चार्ट, टेरा चार्यामिनरक मामित्रा नरेट इरेडिहा এक जेचतुन्त्रस्य अज्ञल कतियात कान कात्रम नारे. (कम मा ठीशात आत्रक नारे (नव मारे दनिवारे जिन प्रवृत्ताव अत्र ६ सीत्रक सामनात सर्व हरू क कविशा दाचितादश्चन ।

গাঁহার আরম্ভ নাই শেষ নাই, তিনি কালদেশের অতীত। ধণি ডিমি কালদেশের অতীত হইলেন তাহা হইলে 'কালে তৃমি विতा, (माल जुमि म हिंवााशी' এ कथा ८कन वना हहेन वृ 'कारन ত্মি নিতা' এ বাক্যের আ-িনিতা বিভাষান। আমানের চিডা कारम वक्का वर्षनहे जामता डाहारक छाविए गाहे, उर्चनहे দেখিতে পাই, তিনি নিতা বিজ্ঞমান; পূর্দেও ছিলেন, এখনও আছেন, পরেও থাকিবেন। অন্ত বিনা এরপে নিতাবিগ্রমানত। আর কাহারও হইতে পারে না ৷ আমাদের চিতা খত দূর গেল, ভাগার ও দিকেও তিনি নিতা বিভামান, এ দিকেও তিনি নিতা বিভাগাৰ ৷ ডিনি যদি কালাভীত না চইতেন, তাহা হইলে এরপ নিতাবি এম নতা তাঁহাতে কখন সম্ভবপর হইত না। কালসম্বন্ধে যাহ। কলা হইল, দেশসমূদ্ধেও তাহাই বলা বাইতে পারে। আমরা यात्र किछू (मधि (मरमर७ स्मिश) संमाग्र यथन क्रांश सिंह, তথন তিনি জগতে ব্যাপ্ত হইয়া আছেন, জগতে এমন একট স্থান নাই ধাহাতে তিনি বিজ্ঞান নাই, সুভরাং ভাঁহাকে সর্বব্যাপী বলিতে হয়।' কিন্ত এইরপে সর্বাত বিভাষান দেখিলেও তিনি খে मकरनत चडीछ. এ छान चामारमत পরিকার থাকা চাই; चक्रथा তিনি যে সকলই আপনার অহতু ক্ত করিয়া রাধিয়াছেন ইহা সিদ্ধ হইবে কি প্রকারে 🕈 তিনি যে সকলই আপনার অস্তর্ভ করিয়া রাখিয়াছেন, 'এট প্রকাশ বিশ্ব ভোমার পদতলে সর্থপক্ষার ভার' এই বাক্যেতে ভাহ। প্রকাশ পাইভেছে।

অন্যস্থান সকল প্রকারের সগক্ষিরাইত। স্থক্ষিরাইত না হইলে তাহার অভিরিক আর কিছু থাকা চাই যাহার সহিত ভাহার সম্বক্ত ষ্টিতে পারে। অক্স কিছু অভিরিক্ত বাকিকেই

অমস্তের ন্যুনতা উপস্থিত হটবে, অমৃত্র আরু অমৃত্র থাকিবে ন तिउक विकल, (कम ना जनरश्त मधाना जनः । कोत लहेग्रा ভাহাদিলের সহিত অনত্তের সম্বন্ধালোচনা করিলে আর সে দেয়ে भए मा। अमु उद्यासित अजीड, अमर एत मिक्टे आमित्यहे कीर किछ नम्न हरेमा थाय । (म ब्यात डाँशाटक स्तिरंड ६ भारत नः ছু ইতেও পারে না, ফুডরাং এখানে উপাত্ত ও উপাস্ক সম্বন্ধ আর थारक ना। चनरस्त्र निक्रेष्ठ इटेरन वार्शन कुछ इटेर७ ३ कुछ, এ জ্ঞান উদিত হইলে সমন্ধ বিভিন্ন হইবে কেন ৭ জীব যে অভি ক্ষুদ্র ইহা ধ্বন সঙা, তথন সভাের ভূমিতে নাড়াইলে সম্বন্ধ আরও খনীতৃত হইবে। আপনাকে কৃত্র জানিরা মহতো মহীয়ানের আপ্রিত হওয়া ইহাইতো পাজাবিক। 'তুমি ভূমা, মহান পূর্ণ ব্রহ্ম' একথাগুলি ঈদুশ শবশাগভভাই প্রকাশ করে। যাহার শক্তি জ্ঞান প্রেম প্রামপিকণাসদৃশ, সে কি আর ভাহার পরিপৃষ্টি আকাজ্জা करत ना १ अने छ में कि, अने छ छान, अने छ (अम, अने छ लग ছাড কে আর ভাহার ক্ষমত্র মহত্তে পরিণত করে ৭ জীব যথন व्यालनात्र कुम्छ। त्यात्से, उथन उद्धात मत्त्र मत्त्र यसक अनेत्रत्य ভাগার নিতা কালের আশ্রয়, ইহা আর তাহার ক্রিনার षारक न ।

मित्।

জীব অন্তব্দলের নিকটবর্ত্তী হইরা ক্ষুত্রতা বুনিল, সে যে একান্ত অসহায়, তবন আর তাতার তাত জলরসম করিবার অবশিষ্ট বাকিল না। এবন তাহার মজলবর্তার আগ্রয় গ্রহণ করিবার সম্য উপস্থিত : অনস্ত বিনি তিনি রক্ষা । বিনি রক্ষা । জগং এই জীনের সহিত উংহার সম্বন্ধ নিতা । 'ভূমা, মহান, পূর্বিক্ষা সম্পায় জগং পূর্ব করিরা বিক্রমান তিনি স্বাং 'ইন্দিরের অতীত,' কিন্তু ইন্দিনগোচর সম্পায় বিষয় উাহারই ঐগ্রা । এই ঐগ্রা ছারা অংমরা নিগত পরিশেষ্টিত বহিয়াছি । এই ঐগ্রা বিবিধ প্রকারে আমাদের উপকার সাধন কবিভেছে । সূত্রাং অনস্ত সহা, অন্য জ্ঞান হইতে ঐগ্রেয়া ভিতর দিয়া দীলার ভিতর দিয়া মস্লস্ক্রপে আসিরা অবতরণ করিলে মন্দ্রস্ক্রপের কি প্রকারে আরাধন। উপস্থিত হয়, উপাসনাপ্রণালীর এই কথা গুলিতে তাহা প্রশাল পায়:—

*তুমি শিব তুমি মছল। এই জগং সহস্র মুখে তেখার লগার পরিচয় দিতেছে। পিতার ভায় তুমি আমাদিগকে স্লেচ ও যত্ন সহকারে প্রতিপালন কবিতেছ এবং অন্ন বস্ত প্রভান ধর্ম দিয়া আমাদিগকে স্থবী কবিতেছ, যাহারা তোমাকে মানে না তৃমি তাহাদিগকেও স্লেচ কর। দঃখী পানীদের তৃমিই সহায়, তৃমি দয়াময়, য়ন্তব্যবহদল ও প্রেমসিজু।"

সভা, জ্ঞান, অনস্থ চিন্তাপথে উদিত চর, ফুতরাং জ্ঞানের সহিত এ সকল সক্রপের খনিষ্ঠ সমন্ধ । মললপরপ জ্ঞান ও সূল্য উভয়কে অধিকার করিয়া পকাশিত হয়। জ্ঞান সর্মান্ত তাঁহার কিয়া দর্শন করে, সেই ক্রিয়া চইতে ক্রেমান্ত্রে মন্ত্রল প্রস্তুত হইতিছে, ইহা দেখিয়া সূল্য তাহাতে অংর জ হয়। 'এই জ্ঞাং সংস্ত্র মুখে তোমার ল্যার পরিচয় দিতেছে' এক্রান্তরিত জ্ঞাতের ভিতরে বাহার দয়। যে নিয়ত প্রকাশ পাইতেছে তাহার্মাইতেছে। দ্যার শত্ত শৃত নিদ্দান চারিদিকে দেখিলেও সাক্ষান্ত্র এখন ও শত্ত নিদ্দান চারিদিকে দেখিলেও সাক্ষান্ত্র এখন ও

ষ্টিন না। তথ্নই সাক্ষাংসম্বন্ধ ষ্টিল ক্থন সাধক প্রত্যক্ষ করিলেন, 'পিতার ভায় তুমি আমাদিগকে ক্ষেত্র ও ষত্র সহকারে প্রতিপালন করিতেছ এবং অর বন্ধ ও জান ধর্ম দিয়া আমাদিগকে সুখী করিতেছ।' এ ক্ষেহের ভিতরে কে কোন প্রকার বৈষ্মান নাই, ভাহা ধাহারা ভোমাকে মানে না তুমি ভাহাদিগকেও ক্ষেত্র কর' এই কথাঞ্জি দেখাইতেছে। 'তুংখা পাপীদের তুমিই সহায়' এ কথাগুলি কেহু যে ভাহার দয়ার বহিত্তি নূল ভাহাই দেখাইতেছে।

মকলক্ষরপ জীবের সহিত ঈর্বের ব্যবহার প্রকাশ করিয়া থাকে। তিনি আমাদের সগলে বাহা কিছু করেন, তাহা আমাদের মঙ্গনের জন্তু, ইহা জাঁহার ক্রেমিক ব্যবহার দেখিয়া আমাদের জ্বলার ক্রমিক ব্যবহার দেখিয়া আমাদের জ্বলার ক্রমিক ব্যবহার দেখিয়া আমাদের জ্বলার ক্রেশ বিপলের মধ্যে আমারা তথনই তাঁহাকে মালনমর পিতা বলিয়া গ্রহণ করিতে পারি, যথন দেখি যে সেগুলি আমাদের কল্যানের জন্তুই নিয়োজিত ছইয়াছিল। যথন আমারা পাপাচরণ করি, তথন আমাদের মনে হয়, তাঁহার কর্মণা হইতে আমারা বঞ্চিত হইয়াছি; কিছ বখন জাবনে দেখিতে পাই তিনি ভ্রমী পাপীদের সহার তথন সে তাম ঘ্রিয়া বাজি প্রকর্মণ তাহার করি। এইরপে তাহার করি প্রক্রমণ তাহার করি ও এইরপে তাহার করি প্রক্রমণ তাহার করি । এইরপে তাহার করি প্রক্রমণ তাহার করি । এইরপে তাহার করি প্রক্রমণ তাহার করি । এইরপের বিহার পাতি । তথন আরু তাহার জিয় অঞ্জ কিছু আগ্রয় বা অবেষপের বিহার পাকে না।

बरेवल।

আহৈতপকের আর্থ আর্থত। বাহাতে একই ভাব বিপ্লমান চুই ভাব থাকিতে পারে না, ডিনি অবৈত। আহৈতপক আহিতীর আর্থে গ্রহণ করিয়া আয়োগনায় এই প্রকারে ব্যবহৃতে হইয়াছে:—

"তুমি অবৈত ভোষার বিতীয় নাই। একাকী তুমি সম্পায় রক্ষা ও শাসন করিভেছ। অসংখ্য জীবের, অগণ্য আত্মার তুমি একমাত্র আগ্রয়দাতা। চারিদিকে কেবল ভোষারই নামের অয়ধ্বমি উথিত হইভেছে। তুমি সকলের রাজা, সকলের প্রভু, তুমি অংমাদের একসাত্র সহায়, সমল ও আশা ভরসা।"

"পাডং পিনমট্রতম্" এছলে যে মলনগরপের উল্লেখ হইরাছে, তালার অত্যে 'পাড়া' বিকারাতীত, পরে 'অবৈত' গুট-ভাষবিরহিত, এট গুটটি শন্দ আছে । মলন ভিন্ন অক্স কোন ভাব ভাঁছাতে বিক্রমান নাই, জনতে মলনবিস্তারে টালাভে বিকার বা বৈষ্ম্য উপন্থিত হয় না, মলনস্থাপের সলে এ গুইটি শন্দ প্রথিত থাকিরা ইলাট প্রকাশ করিতেছে। মলন ভিন্ন ভিন্ন আর কিছু নহেন, এইটিতে ভাঁহাকে জনং ও জীব হইতে একেবারে পৃথক্ করিয়া স্পেনাল পার, ভালা ভাঁলার, জনভেরও নহে, জীবেরও নহে। জনং ও জীব বিদ্যাল করে। অন্যাল পার ভালা ভাঁলার, জনভেরও নহে, জীবেরও নহে। জনং ও জীব বিদ্যাল করে। ভালা ভাঁলার, জনভেরও নহে, জীবেরও নহে। জনং ও জীব বিদ্যাল বিদ্যাল করে। ক্রমান করিয়া উল্লেভ ক্রম্পতি। কলাপি দৃষ্ট হটত না; অপ্রভাগনয়ন করিয়া উল্লেভ ক্রম্পতি। কলাপি দৃষ্ট হটত না; অপ্রভাগনয়ন করিয়া উল্লেভ ক্রম্পতি। কলাপি লুট হটত না; অপ্রভাগনয়ন করিয়া উল্লেভ হটত না। পূর্ণ মলন সমুহ স্পার। এছলে আর কেহু যে টালার স্থানাবিকার করিবে ভালার সন্তাননা নাই। স্ভরাং তিনি মললে এক অথ্ত

আছিতীয় হইলেন। উপরের আরাধনাবাক্যে যে কথাগুলি নিবদ্ধ হইয়াছে বলিতে হইবে ভাষা ঐ ভাবেই নিবদ্ধ হইয়াছে। ঈখরে নিববছিয় মঞ্জ দেখিয়। যখন তাঁহারই রাজ্য সর্বার প্রত্যক্ষ হইল, তথন ভিনিই যে সমুদায় শাসন করিতেছেন, রক্ষা করিতেছেন, সকলের আশ্রয় হইয়া আছেন, সর্বার তাঁহারই নামগান হইতেছে, ও সক্ষকে সাধকে আর কোন সংশয় রহিল না। ঈদৃশ নিঃসংশয় চিতে কি প্রকার আরাধনা হয়, এই কথা গুলিকে ভাষার আন্প্রিলয়া উপস্থিত করিতে পারা যায়:—

"অভিতীয় তুমি। তেই জনে কাগড়া হ'ল না, ব্রাক্ষ ভাই হ'ল।
কাখায় প্রবৃদ্ধ কোঝায় লিপড়ে। একটা সাপু, একটা পাডকী ..

তুই তোমায় ডাক্ছে। কে আগে ডোমার গান ধরে, কে আগে
ডোমার স্তব করে ? নদী আগে ধ্যান কংবে ? না কুল আগে
ধ্যান কংবে ? কে আগে নমন্তার করেব ? লড়োভড়ি লেগেছে।
আমি জান্ভাম, আমরাই ব্রক্ষ জানী ...এখন দেখি ব্রক্ষা ওটা কেমন
জ্যেড়গতে ডোমার প্রাচী করে। ব্রক্ষা ওটি কেমন সুন্দর, বড়
ভক্ত, এর কাছে চের শেখা ধায়। স্তি হ'রেছে অবধি আজ্
পর্যান্ত ডোমার একটী কথা লজন কংলে না। ছে ক্লিক্স, থব
বেবছে ডোমার শাসনে। এমন রাজ্য শাসনপ্রণালী আর কোথাও
নাই। তুমি রাজা বট, প্রভু বট। পাণী ডাণী দীন হংখীদিপের
আছি তীয় সহার ভূমি।"

श्री ।

তদ্ধ অপাপবিদ্ধ বিনি তিনি প্ণা ভিন্ন আর কিছুই নংকন।
মঙ্গলময়ে চিত্তের অভিনিবেশবশতঃ তিনিই বর্ধন জীবনের একমাত্র
নিরস্থা ছইলেন তর্ধন জীবনে পূপোর আবিভাব ছইল; পাপ
কলক তিরোহিত ছইল, জ্লয়ের অন্ধকার ঘ্টিয়া গেগ, পূণ্যালোকে
সে জীবন পূর্ণ ছইল। পূপোর আবাধনাবাক্যে দেখিতে পাওয়া
যায়:—

তুমি শুদ্ধ অধাপবিদ্ধ, তুমি নির্মাণ পভাব। তোমার ইচ্ছাই পুণাের আদর্ম। এমনি প্রেম পুণাের ভেজ যে ইহার একটি কিরণ পাইলে পাশ হৃদদের অন্ধকার দূর হয়; তোমাকে একবার ভাবিলে জীবন পবিত্র হয়। হে ধর্মারাজ, ভোমার ভরে পাপ পলায়ন করে, ভোমার বিচারে পাশী কথন প্রপ্রা পায় না, ভোমার শাস্ত্রে দ্র দ্র দ্র দ্র করে। তুমি পুণাের স্গ্র, তুমি ধর্মের আবহ ও পাণীর পরিত্রাভা।

এখানে ঈর্বরের ইচ্ছাকে পুণ্যের আদর্শ বলিয়া গ্রহণ করা হইয়ছে। পূণ্য কি ৪ পূণ্য ঈররের ইচ্ছা। ঈররের ইচ্ছা। পবিত্রভার বিধি —পুণাের বিধির আকারে বিবেক ও বিজ্ঞানের ভিতর দিয়া আমাদের নিকটে প্রকাশ পার। এই বিধি অসুসারে আমরা আমাদের জীবন গঠন করি। ত্তরাং উহাই আমাদের জীবনের আদর্শ। ঈর্বরের ইচ্ছা মঙ্গণ ইচ্ছা, স্থতরাং ইচ্ছাই পুণ্যের আদর্শ এ কথা বলিয়া ভাহার সঙ্গে সঙ্গে 'গ্রেমণুণাের ডেজ' এ কথা সংযুক্ত করা ইইয়ছে। ঈররের মঙ্গণ ইচ্ছাই পাণীকে শাসন করে, পাণীকে প্রার বের না, পাণীর পার্শ হ্রক

করিয়া পুণ্য- ভূষণে তাহাকে ভূষিত করে। এই ইচ্ছার অনুবর্ত্তনই ধর্মা, তদ্বাতীত আর ধর্ম নাই। স্বয়ং ঈশ্বরই ধর্মানহ গাণীয় পরিক্রাতা। উদ্দীর হৃদরের পুণ্যের আরাধনা এইরপ:—

ু**ঁহে পুৰামর! হে পুৰামর! আমার** বাড়ীতে এলে তুমি। भूगाचात्र वाड़ी यां अना १ काँता अन्धर्ग करतन नाहे (GIAICA **१मर्य दिन पटना... এই পाপीটाटक जुमि हाँ हेल ना।** आगर ৰাড়ীতে তুমি আদৰে কেন ৷ কেন আদৰে ৷ তুমি তে ১খ ভন্বে না! আস্বেই আস্বে, ধুপ ক'রে আমার গায়ে পড়্লে! কি ক্রলে কল দেখি ? অমন ফুন্দুর কাপড় তোমার, অমন নিগ্র সহবাদ তোমার...মলার সক্ষে একাকার হ'ল ৭ না প্রদেশ্র, भवाखिन कान निक निशा भागात्मा। भुगामिक । क्तरात मना धन भु'रत (काथांग रु'रल गाम। आमि मरन कतिलाम तुर्वि এकाकात्र हरा ग्राप्त, व्याखरनत कारह कि भाभ थारक १ मानुमधनाम बर्फे, **्र**णां ि वट्टे बारना वट्टे, ममस्य नहीरतत हातिनिरक भूनाथवार हमिटएटह, अहे भाउकी ছिलांग जागि, किन्न अधन भाउको क ্ৰলে ৷ আমি বে দেবভাবে বলে আছি, আমার বে ফুন্দর কাপড় ৷ হে জগদীখন, ভোমান জ্যোতির ভিতরে বসিলে কি আর পাপ মলা থাকে ? দর্শাকুনিঃস্ত অগ্নির ক্রায় তোমার অলভ শিখা ষাহির হইয়া পাণ দর করিতেছে। হে পুণোর বাড়ী আলোকের খর... হে ধর্ম, হে গুণা, তুমিই আমার বাড়ী, তুমিই আমাদের সংসার, এই পূলা বাড়ীতেই চাই থাকতে ৷ আসরা ভোমাই **শ্রধাপত হই।** ইন্ত্যাদি।

वानमा

প্রেমপ্ণ্য মিলিত চটয় আনন্দ । প্ণা যথন ঈশরের ইচ্ছা,
বাম যথন ঈশরের মঙ্গলভাব, তথন আনন্দের ভিতরে উত্তম্ব ভাব
মরাজিত থাকিবে, তাহা আরে বিচিত্র কি গুবলিতে গেলে, জ্ঞানাদি
কলল সকল একাকার হইয়া আনন্দ। ঈশরের সকলগত ভিন্নতা
নাই, তিনি একই স্বক্ষপ, আনন্দে তাহা বিলক্ষণ প্রকাশ পায়।
আনন্দ সকলকে অন্ত ভ করিয়া লয়, কাহাকেও বাহিরে খাকিতে
দের না। আনন্দ সকপে মন ময় হইলে সাধকেতে সকলকে অন্ত
ভ ত করিয়া লইবার ভাব উপস্থিত হয়। প্রের্ম বলিয়াছি, সিমরের
মিতাক্রিয়াশীলতাই তাহার নিজ্য আনন্দ। এই নিত্যক্রিয়াশীলহের মবাে ঘধন তাহার জ্ঞানাদি সকলই প্রকাশ পায়, তথন
এক আনন্দের ভিতরে সমুদায় স্বক্রপের নিবেশ সহজে হল্দয়ভ্সম
হয় উপাননা প্রাণীস্থ আনন্দের আবাদ্যা এই ঃ—

"তুমি আনন্দ, তুমি অমৃত, তুমি হৃঃখাঁকে সুখাঁ কর, তৃমি ভাপিত প্রাণকে শীতল কর, তুমি অমৃত চইয়া মৃত্যু ধস্ত্রণ পরিহার কর। তোমাকে দেখিলে তোমার স্থাস্থি কথা জনিলে ভোমার নিকটে বসিলে হালয় জুড়ায়। তুমি সুখাসজু হালয়রঞ্জন।"

এখানে 'অমৃত' শক্ষের ব্যবহার দেখাইয়া দিতেছে "আনক্ষিণমূড্ম" এই হইতে আনক্ষ গৃহীতু হইরাছে, "রসোবৈ সং" এই ইতি তখন উপস্থিত হয় নাই। কেবল এই প্রায় নহে, প্রথমে প্রথমে 'আনক্ষ, অমৃত, শান্তি তুমি' এই বলিয়া আরাধনা হইত। এ শান্তি শক্ষ 'আনন্দক্ষমূভ্যের' প্রেই উপস্থিত 'শান্তং শিবম্বিত্মের' শান্ত শক্ষ শান্তি শক্ষে রুপাত্রর ক্রিয়া গৃহীত। আইতির

বিশেষ পর্যালোচনার অভাবে যে তংকালে এরপ ব্যাব্যা হইত এখন তাহা বুনিতে পারা ঘাইতেছে। শ্রুতির সঙ্গে সমন্ধ বিছিন্ন করিয়া দিলে কিন্ত ব্যাব্যায় কোন দোষ পড়ে না। আনন্দই বখন আবন, আনন্দেই বখন মৃত্যুভরাতিক্রম হর, তখন 'তুমি আনন্দ, তুমি অমৃত' একথা বলাতে কোন ক্ষতি হয় নাই। 'তুরি তু:বীকে মুখী কর, তুমি তাপিত প্রাণকে শীতল কর, তুমি অমৃত হইয়া মৃত্যুবন্ধণা পরিহার কর' এ সকল কথাই আনন্দ মর্মান্ত লিব মধ্যে আনন্দের সর্মান্ত ভাবকতা উপরিউদিত আবাধনাবাকাঞ্জনির মধ্যে নাই, কিন্তু প্রথম প্রথম নিরতিশয় উনীপ্ত-ভূদয়ে যে আবাধনাই হইয়াছিল, তর্মধ্যে উহা অভিনিবিষ্ট আছে। "এই ম্বরেতে, এই উপাসনার ম্বেইত সব দেশের ভক্তেরা ব'দে আছেন। সকলেরই প্রাণের ভিতর হইতে আরাম-সন্দের চেউ উঠিতেছে।" এ কথাগুলি আনন্দেতে সকল ভক্তের সহিত একত্ব স্পষ্ট প্রকাশ করিতেছে।

শ্রোতাচারের পুনরাবৃত্তি।

J----

নববিধানমগুলীর উপাধ্যায় কর্তৃক উদ্রাসিত।

কলিকাতা।

ত নং রমানাথ মজুমদারের ষ্ট্রীট্ট "মঙ্গলগঞ্জ মিশন প্রেদে" . পি. নাথ কর্তৃক মুক্তিত ও প্রকাশিত।

>500 WE

मुना / जाना बाख

শ্রোতাচারের প্রনরাবৃত্তি।

বেৰাই এটা শ্বতিপোক্তমায়ন্তিব্ৰপনাৰূপঃ। ক্ৰমেণ জৌচনিদ্ধাৰ্থী আন্দৰ্গুৰুমাঞ্জের । শাৰ্ণুয়াণ।

মাতৃভাবে তন্ত্রের পরিস্মান্তি *, পরাস্কাগ্নিতে শব্দাদির হবনে শ্রোতাচারের পুনরার্ত্তি †।

মহানির্মাণত লুকারিক বাভিচারনি মৃতির জায়য়য় করেন —
ধাতুশতি এইং নিকামনু হং কাড়নং রিয়া।
রেকরাগনপ্রাক্ষ সয়ানী পরিবক্ষয়েং।
মহানিকাণ তল্প ২৭৯ লো, ৮ উরাস।

তংপুর্কে, নির্মাণতন্ত্র বিধি দিয়াছেন,

শুস্তভাবেন দেবেশি শৃণু মংগ্রাণবন্ধতে।
স্থানিনাং সন্ধানেবাং পশুক্তবং বরাননে। নির্কাণকন্ম ১৪পট ল
আজ কয়েক বংসর হইল এক জন লোকাতীত সাধ্কের
অভাদরে মহানির্বাণের যত্ন সফল হইরাছে এবং তংকুত ব্যবস্থা জনস্মাজের ব্যবহার হইতেছে।

> ৰভাষ(কলিছবান: কামবিত্রান্তচেতসঃ। ভক্রপেন ন আনজি শক্তিং সামাক্তবৃদ্ধতঃ । শুভজ্বোং প্রতিনিধৌ শেষতম্বভ পাকাত। ধাানং দেবাঃ পদাঝোনে মেইনমূলপারণ। ।

শক্তিকে জননীরূপে দর্শন করিয়া তংপদান্তোজ চিত্তা এবং ইষ্টমন্ত্রজ্ঞপ এই সাধকপুরুষের অন্ত্যায়িবর্গের ধর্ম। এই ধর্মের অন্ত্যদয়ে তন্ত্রের পরিসমাপ্তি এবং শ্রোতাচারের পুনরার্তি সম্ভবপর ইয়াছে।

া আজ সপ্তবিংশ বর্ষ পুর্বেন নববিধনোচার্য্য -"হে অপ্রির

গৃহস্থ 🔹। আপনি সর্যাসী, আমাদের নমস্ত। আমাদের অধম জীবন অবশ্য আপনার কুপাপাত্র।

সন্ত্রাদী ≢। অমন কৰা মূথে আনিও না। এরণ শান্তবিহৃদ্ধ কথা শোনাডেও পাপ হয়। শান্ত্রনতে

দেবতা, ভোমার আজ্ঞায় ইক্রিরাসজ্জিদকলকে বিনাশকরিবার জন্ত অথিংহাত্রী হইয়া প্রকৃত হোম করিতে আমি নিযুক্ত হই" এই প্রার্থনায় হোমান্তর্ভানপূর্বক বিশাসিমাত্রকে অথিহোত্রী করেন। তাহাদের অথিহোত্রির গুড়ভাবে কার্য্য করিতে করিতে প্রোতা-চারের প্রবৃত্তি হইয়াছে।

গৃহত্ত নিয়ানী।
 ঈবরঃ সর্কভ্তানাং ক্ষেলেংক্র্ন ভিইভি।
 ভামহন্ সর্কভ্তানি বয়ায়ঢ়ানি মায়য়।।
 ভ্নেয়্র লয়ণং গছে সর্কভাবেন ভারত।
 তৎপ্রালাৎ প্রাং লাভিং ভানং প্রাপ্রানি বার্তম্
য়

ু এতদ থুসারে গাঁহারা ঈশ্বরে সমর্পিত হৃদ্দ তাঁহারা সন্ন্যাসী ও সন্ন্যাসিনী। বর্ত্তমানবিধানে ঈদৃশ নরনারীর পরি।মবদ্ধনে বদ হইবার বাবছা। স্কুতরাং ইহাতে যিনি গৃহস্থ তিনি সন্ন্যাসী, যিনি সন্ন্যাসী ভিনি গৃহস্থ, কেন না ইহারা আপনার নাজে শ্রীশব্বের। ইশব্ব তাঁহাদিগকে যথন যেরপ ভাবে প্রবর্ত্তিত করিবেন তথন ভাহাদের স্ক্রীবন ও বাবহার তদ্ধপ হইবে। এই স্কুল্যই পরিণম্ককালে নরনারী এই মন্ত্র উচ্চারণ করিয়া থাকেন;—

যবেত ইক্সমং মন তলক ক্ষুক্ত কৰ। ব্যৱত ইক্ষমং কৰ কাল্প ক্ষুদ্ধং মন। মঞ্জে ক্ষমে দৌ ভামুক্তমানীব্যক জুঃ গৃহস্থাপ্রম সকল আশ্রমের আশ্রয়,
উহাতে সকল আশ্রমের ধর্ম নিহিত হইরা আছে। গৃহস্থাশ্রমোচিত কর্মা পরিত্যাগ করিলে পাষও হইতে হয়
ক্রমা বাহিরে সম্যানী অন্তরে গৃহী।

গৃহস্থ। আপনি কি বলিতেছেন, বুকিতে পারি-লাম না। গৃহস্থাশ্রমীকৈ সন্যাসিমাতে দ্বুণার চক্ষে দেবিয়া থাকেন, তাঁহাদের চক্ষে নে যে পশু; আর তাঁহারা দেবতা।

শার্রনতে গৃহত্বাশ্রম সকল আশ্রমের আশ্রয়, উহাতে
সকল আশ্রমের ধর্ম নিহিত আছে।

ঐকাশ্রমং পৃহস্থত চতুর্পাং শ্রুতিদশ্লাং।
তক্ষালগাইস্থানেবৈকং বিজ্ঞেয়ং ধর্মসাধনন্। কুর্মপুরাণ।
একে। বাপ্যাশ্রমানেতান্ বোদস্ভিত্তেস্থাবিধি।
অকানবেবসংমৃতঃ সুপর্ত বিধীরতে । শান্তিপর্কা।

† গৃহস্থাশ্রমোচিত কর্ম পরিত্যাগ করিলে পাবও হইতে হয়।
বঃ অকর্মারিত্যাগী পাবভীজ্ঞাতে বুবৈঃ।
তৎসক্ত্ব তৎসমক্ত ভাবুজাবতিপাপিনোঁ।
বুহুলায়নীয় পুরাব!

ষকর্ম কি ? আত্মার কর্ম। আত্মার কর্ম কি ? পরাম্মার প্রেরণান্থবর্তন। পরাম্মার প্রেরণান্থবর্তনে বে ব্যক্তি অবহেল। করে, সে পাযঞ্জী, কেন না সে আপনার রক্ষার উপার আপনি নিজল করে। মন্থ একস্তই বলিয়াছেন;—

> যাং কর্ম কুর্বাতে।হক্ত শ্রংখ পরিতে।যোগ্রন্তর আনঃ । তথ প্রবায়ন কুর্বাতি বিশরীখন আন্ধের ।

সন্মানী। এরপ শ্রুতিষ্ঠাদিলাতে লোভী সন্মানীর
মুখদর্শন নিষিদ্ধ । আচণ্ডাল সকলের চর্ণতলে প
যাহার দৃষ্টি স্থাপিত নয়, দে ব্যক্তি সন্মানী কিরপে ?
দে যে অহস্কারের দান, তাহার জীবনতো ভগবানে
অপিত নয়; সে তো বর্ষত্র তাঁহাকে দেখে না।

গৃহী। আপনি বাহিরে সন্ন্যাসী অন্তরে গৃহী একি কথা বলিলেন, বুঝিতে পারিলাম না।

সন্ন্যাসী। গৃহীর ধর্ম বজ্ঞানুষ্ঠান। আমি যজ্ঞানুষ্ঠানী, সুতরাং লোকে যাহাকে সন্ন্যাসী বলে আমি ভাহানহি।

গৃহী। সর্ববিধ বজের পরিত্যাগ সন্ন্যানীর ধর্ম আপনি বজ্ঞানুষ্ঠায়ী, এ যে অত্যস্ত বিপরীত কথা।

সন্ন্যানী। 'যে ব্যক্তি মনে করে বে আমি যজ্জারু প্রায়ী নহি, সে মিথ্যাচারী, যজ্জারপ্রানে অপহেল। তাহাকে

এরপ প্রতিষ্ঠাদিলাভলাভী সয়্যাসীর মুখদর্শন নিষিক ।
 বিলা ঘদি ঘতিলোভাও প্রস্তুম্বকে। ভবেৎ ।
 স চন্তালসন্মাজেয়ে। বর্ণাশ্রমবিগতিতঃ । বুলয়ারকার পুরুবণ ।

[†] আচগুল সকলের চরণতলে যাহার দৃষ্টি স্থাপিত নয়, সে বাজি সম্যালী কিরপে ?

মনদৈতানি ভ্তানি প্ৰণদেশ্যমানগুল্।

ইপৰে। জীবকলয়া প্ৰবিটো ভগবাদিতি ট বিজ্ঞা স্বামানাল্ থান্দুশা প্ৰীড়াক কৈছিকীক্।

প্ৰশ্যেষ্ডবন্ত মাবাম্চাঞালগোধনক্য ভ্ৰাপ্ৰত ।

৬ করিয়াছে, লে যে মনুষ্যনামের উপযুক্ত নয়, সেতো লবচিক্ত। বিজ্ঞানভিক্ত এজনাই নিতাযজানুষ্ঠান গোলীর ধর্ম বলিয়াছেন *, ইহা কি তুমি জান না ? রাজা বৈধানরামিণ। ভাঁহার উপাদক নূপতি অশ্ব-

বিজ্ঞানভিক্ এজন্তই নিতাযক্ষাত্রীন সয়াসীর ধর্মী
 গয়াছেন।

নবেবমপি (৩) ৪। ২৫। ২৬) স্তৰ্মোজ হোররালয় পেকানপেক্ষোরাধ এবেতি চেৎ, ন, সম্লাসিনাং বাঞ্গ্রাল্ডাবেহপি অসমারে পিতানাং
হারাধীনামন্তর গ্রিহোতা কালেহপেকণী রক্ষোনিরেরাধাৎ। তথা বিক্পুরাধে
াম প্রকাশে "কৃষাগ্রিহোতা অপবীরসংস্কং পারীরমধিং সমুধে জুহোতি।
বিপ্রস্তু ভিক্ষোপ্রস্টিহ বিভিশ্চিভাগ্নিন স্ত্রস্কৃতি থা লোকান্।

একটি হতে বাহা অগ্নাদির অপেক্ষা আর একটি হতে বাহা গ্রাদির অপেক্ষা নাই বলাতে বিরোধ উপস্থিত হইতেছে তাহা হে, কেন না সন্নাসিগণের বাহাগ্নি না থাকিলেও যথন তাঁহারা স্থেরে অগ্নিহোত্রান্তর্ভান করেন তথন আপনাতে আরোপিত গ্রাণাদিতে উহা সম্পন্ন করেন। তাই সন্ন্যাসপ্রকরণে বিষ্ণুরণ বলিয়াছেন—"অগ্নিহোত্রকে আপনার স্বশরীরস্থ করিবে। বিশাদির অগ্নিকে আপনার মুথে হবন করিবে। তিক্ষালার হবি শোক্তিত্রাধিতে হবন করিয়া তিনি লোকলোকান্তরে গ্রমন গ্রেন।" মহাভারতীয় মোক্ষধর্মেও এই শ্লোকটির উল্লেখ আছে।

+ পরাত্মা বৈশ্বানরাগি।

কক্ত হ'বা এত ভাকেলো বৈশ্বনৰক্ত মুর্দ্ধের স্থাতে আক্তিবক্রণঃ প্রাথঃ অথকা আলো সংক্ষাহে বিভাগে বিভাগের বাহিঃ পৃথিবোৰ পাৰে। উব এব বেলি-বামানি বহিগুলিয়া বাহি পভাগে সানোহ্লাহাই।পচন আক্তে আহিবনীয়া । পতি কি গৃহস্থ ছিলেন না ট ইন্সিয়ান্নিতে নিত্য হবন-শীল ধেষ-ও-আকাক্ষাবিরহিত ব্যক্তি কি সন্মানী নহেন ^কট

পরমাত্রা বৈধানরের ছালোক মন্তক, স্থা চকু, পৃথক্পণগামী বায়ু খভাৰ, আকাশ দেহের মধ্যভাগ, বারি বস্তি (মৃত্তকোষ), পৃথিবী পাদ, বেদি বক্ষ, কুশ লোম, গাহ্যপত্যামি হাদম, ক্ষিণামি মন, আহ্বনীয়ামি মৃথ।

ইক্রিয়ায়িতে নিত্য হবনশীল হেব ও আকাজ্জাবিরহিত
ব্যক্তি কি সন্ন্যাসী নহেন ?

मचानीन विवदानम हेलियात्रियु मुख्रिति।

त्क्इ त्कृष्ट भजानि विवयनिष्ठप्रतक टेक्कियाधिए द्वन करवन।
टेक्कियरगाल পदाञ्चाधिए भजानिविषरप्रव द्वन टेक्कियाधिए द्वन।

জ্ঞোঃ স নিত সর্যাসী যোন ছেটি ন কাজ্ঞাতি। নিত্তি কি সংগ্ৰাহো তথা বন্ধাৎ প্ৰমূচতে ৪

হে মহাবাহ, তাহাকেই সন্নাসী জানিবে যে ছেব করে না ও জাকাজ্ঞা করে না। উদৃশ ব্যক্তি স্থহঃথাদির অভীতে ৰলির' সহজে বন্ধনস্কুত হয়।

দেষ করে না ও আকাজ্ঞা করে না এই কথা বলাতে দে বাক্তির গুণাতীত্ব লাভ হইয়াছে, ইহাই ব্রীইতৈছে। চহুদিশা-ধারে যে গুণাতীত্ত্বের উল্লেখ স্ট্রাছে, উহাই গীতার ধর্মের চরম ফল। গুণাতীত্ত্বের অবস্থায় শরীর থাকিতেও শরীর থাকে না, একাল উহার এত উচ্চতা।

अन्दीतः नान सकः म विद्यागितः न्नृत्यः। अकिः।

ু গৃহী। আপনি এ কি বলিভেছেন, আপনাকে হলোকে পাগল বলিবে !

সন্ন্যাসী। সন্ন্যাসী কি অন্য দশকৰ ব্যক্তির মত ধরাহার করেন না ? বজ্ঞ না করিয়া অরভোজন কি ভিথক্ম নহে ? অন্নভোজন কেন ? দৈহিক মানসিক গতেয়ক ক্রিয়াতে বাহার বজ্ঞান্টি নাই, সেভো পশু।

গৃহী। আপনি কি বলিতেছেন, আমি কিছুই
াকিতে পারিতেছি না।

স্মাসী। এখনকার যে সকল আচরণ দেশিতেছ, ইহা বেদভ্রত্তীগণের আচরণ। ভ্রপ্তাচারপরিত্যক হইয়। পুনরায় শ্রৌত আচার প্রবর্ত্তিত হইবে ইহারই জন্য যে ভগবানের বর্ত্তমান লীলা, তাহা কি ভূমি অবগত নও ?

গৃহী। শ্রৌতাচার কি ? সন্ন্যাসী! ভুমি কি উপনিষৎ পড় নাই ? * যোগা-

স বঢ়শিশিৰতি বং শিপাসতি যন্ন ন্নতে তা আন্ত নীকা।
আৰু বন্ধাতি বং শিবতি বস্তবতে তদুপদদৈবেতি।
আৰু বন্ধাতি ব্যাক্তি বিয়াপুনং চনতি স্তত্তলৈকৈ তালতি।
আৰু বন্ধাণান্মাৰ্জ্জনহিংসা সভাসচন্দিতি তা অঞ্চল্পিণ।
তত্ত্বাদান্ধাতিয়ে পুনন্ধ্পাদনন্দ্ৰত তত্ত্বপ্ৰেষ্ডোবস্কৃপঃ।

ভূমি কি উপনিষং পড় নাই ? যোগাচার্য্য শ্রীকৃষ্ণের প্রতি
 বৈদিক বোর ঋষির বৈদিক ধর্মোপদেশ এই ;—

চার্য্য জ্রীক্লফের প্রতি বৈদিক ঘোর ঋষির বৈদিক-ধর্মোপদেশ এই :--

শৈহ পুরুষ যাহা ভোজন করিতে ইচ্ছা করে, যাহা পান করিতে ইচ্ছা করে, যাহা ভাল না লাগে, নেইগুলি ইহার দীকা। * ।

অনস্তর সে থাহা ভোজন করে, সে যাহা পান করে সে যাহাতে সুখ পায় সেইটি উপসদের [অভোজ-নান্তে অল্লভোজনের] সমান হয়।

"অনন্তর নে যে হাসে, সে যে ভোজন করে, সে যে মিগুনপ্র্চিরণ করে, উহা স্তত শস্ত্রেরই (ভোত্রেরই) সুমান হয়।"

"অনন্ত্র তপ, দান, ঋজুতা, অহিংদা ও দত্যবচন এগুলি ইহার দক্ষিণা।"

ংস জন্যই এই পুরুষের জন্মকে—জন্ম ও বজ্ঞ-বাচক একই ধাতুনিষ্পন্ন শব্দে [জ্ঞানিগণ] আখ্যাত ক্রিয়া থাকেন। মরণই এই পুরুষের অবভূষ্ণ টি

এ পুরুষযুক্তের ফল কি ? উত্তমক্রোভি পরব্রহ্ম

অছারাদির সংখ্যে পাপক্ষরস্চক ক্লন্ত্রণাত দীক্ষা—দলাংমবরাদ্ধাং দীক্ষিতো ভবতি মাসং সংবংসরং বা ঘদা ক্লন্ধ স্থাব ।

"এতদৈর পরমং তপো বরণাহিতত্তপ্যতে" এই নিয়মান্ত্রসারে স্বাভাবিক বোগাদিই তপশুলেধা গ্রা। তাই কুধা তৃষ্ণা রোগাদি
উপতাপ পুক্ষযতে দীক্ষা।

 অবত্থ—ঘত্রান্তে মান।

প্রান্তি। যোগাচার্বা এই বিদ্যাপ্তান্তিতে বিদ্যাপ্তরের প্রতি স্পৃচাস্থার চইমাছিলেন, এবং অনুগাতার এই বৈদিক ধর্মেরই শিক্ষা দিয়াছেন।

গুটী। নে কিবাপ ?

নয়াগী। অনুগীতায় যোগাচার্য্য বলিয়াছেন ।

— বৈশ্বানরাগ্রি নাতপ্রকারে দীপ্তি পায়। আন, জিহ্বা,
চক্ষু, ত্ক্ শ্রোজ, মন ও বুদ্ধি এই সাতটী বৈশ্বানরাগ্রির
রসনা। জেয়, পেয়, দশ্রু, স্পৃষ্ঠা, প্রার্য্য, মন্তব্য ও
বোদ্ধব্য, এই সাতটি বজ্জের ইন্ধন। আতা, ভক্ষয়িতা,
দেষ্টা, প্রস্তী, প্রোতা, মন্ত্রা ও বোদ্ধা, এই সাতটি পরম
ক্ষিক্। জেয়, পেয়, দশ্রু, স্পৃশ্র, প্রব্য, মন্তব্য ও বোদ্ধব্য,
এই মপ্ত প্রকার হব্য সামগ্রী। হে মৃভগে, সপ্তজ্জন হোতা
সপ্ত অগ্নিতে সপ্ত প্রকারে হবন ক্রিতেছেন। এই

অনুগীতার যোগাচার্য্য বলিরাছেন ;—

আনিবৈশ্বনেরে মধ্যে সপ্তথা দীপাতেহস্তরা।

মণেং ভিজাচ চকুল্ড ছক্ চ প্রোত্তম্প পশমম।

মনো বৃদ্ধিল সংগ্রতা জিলা বৈশ্বনারাচিনঃ।

মেরং দৃশুক্ত পেরুক স্পৃত্তা প্রবাং তথৈব চ।

মস্তবা মথবাছবাং তাং সপ্ত সমিধাে মম।

আতা ভক্ষািতা জন্তী প্রাতা চ পশমঃ।

মস্তা বোদ্ধা চ সংগ্রতে ভবন্তি পরমন্ধি জঃ।

মেরং পেরে চ দৃশ্রে চ ব্ল্যু প্রবাে তথৈব চ।

মস্তবাে ছব বােদ্ধবাে স্তব্যে প্রবা কবিবা।

হবাংযারির্ হোতারং সপ্তরা দ্বা সপ্তরাঃ

কথায় কি তুমি বুঝিতেছ না, স্বরং ঈশ্বর নিভাষ্ট্রের ব্যবস্থা করিয়াছেন। এই ঈশ্বর প্রতিষ্ঠিত মজের প্রতি উদাদীন থাকিয়া যে ব্যক্তি আহারাদি স্বাভাবিক কর্মে প্রবৃত্ত হয়, দে ব্যক্তিকে পশু বিনা আর কি বলা যাইতে পারে ?

গৃথী। এরপ নিত্য যজানুষ্ঠানের ব্যবস্থা ইইল কেন্

সল্লানী। বৈদান্তিক যোগে নিদ্ধমনোরথ হইবার নিমিত।

ুগুহী। নৈ কিরুণ ? এরূপ যোগের বৈদান্তিক মূলইবা কি ?

সয়াসী। জীব কর্তা, ঈশ্বর ইন্দ্রিরবোগে কাররিতা, * বেদান্তের এই বিশেষ মতটি নিয়োগ করিলেই
ঈদৃশ যক্ত যে এই বৈদান্তিক যোগের মূল তাহা ত্মি
অনায়ানে বুঝিতে পারিবে। মনে কর আমি দেখিতে
ইচ্ছা করিলাম। দেখিতে ইইলে চকুর নিয়োগ প্রায়োভলন। চকু কিছু আমার অধীন নয়, ঈশবের অধীন।
আমি দেখিতে ইচ্ছা করিলাম, আর ঈশ্বর তাহাকে
দর্শনে নিয়োগ করিশেন, তবে আমি দেখিলাম।

জীব কর্তা, ঈশ্বর ইব্রিয়বোগে কার্রিতা।
 য: কর্তা নোহরং বৈ ভূতারা করণৈ: কার্রিতান্তঃ পুরুষ:।
 মৈত্রায়ণুগনিবর।

বাহার। ঈশ্বরের এই নিয়োগ পুঁছিয়া কেলিরা আন্থাই দৈখিলাম এইরপ অভিমান করে, ভাহারা অসভাদশী, সুতরাং অযোগী পশু। আমি দেখিতে চাহিলাম, আর ঈশ্বর চকুর যোগে আমাকে দেখাইলেন এইটি প্রভাক্ষ করা বল্লায়ে। চকুর সম্বন্ধে যাহা বলিলাম সকল ইন্দ্রিরগণের কিয়ার সম্বন্ধেই এই কথা বলা যাইছে পারে। দর্শনাদি সকলই তথ্নই যক্ত বা ঈশ্বরারাধনা হয়, যথন দর্শনের সঙ্গে স্বর্গর প্রভাক্ষ হন। যোগাচার্য্য এই যোগে যোগী ভিলেন, এবং এই যোগই বৈদান্তিক যোগ। যোগী আহারাদি আনন্দের সহিত্ত নির্দাহ-করেন কেন হ ও সকলেতে সনিছেদে ঈশ্বরদর্শন হয়, ভাহারই নিমিত্ত। পশু ও যোগীতে এখানেই পার্থকা জানিও।

গৃহী। আহারাদিকে পশুসমূচিত জানিয়া যাহার। ঐ সকলকে ঘূণার চকে দেখে, তাহার। কি তবে অধীচারী ?

সন্যাসী। শাস্তৃদ্টিতে জ্ঞাচারী পশু বিনা আর কিছুই নহে।

গৃহী। একথা বলিলে হইবে কেন ? পঞ্চপ ইত্যাদি কভ কঠোর উপায় অবলখন করিয়া ইহারা যে ধর্ম সাধন করেন। শার্যাদী। ভূমি কি গীতা পড় নাই ? * ইহারা দে এইরপে অশান্তবিহিত অসুরধর্মের আশ্রয় দেইরাছে। গুচী। অসুর ধর্ম কেন ?

সন্ধানী। অহস্কার মনুষোর ভিতরে অসুর। দেই অহস্কারের আশ্রয় করিয়া যে ধর্ম অনুষ্ঠিত হয় তাহ। আসুরিক ধর্ম বিনা বল আর কি হইতে পারে।

গৃহী। শাস্ত্রবিহিত ধর্ম তবে কি ?
সন্ন্যাসী। আহারাদি স্বাভাধিক ক্রিয়ায় নিত্য
যক্ত, নিত্য হোম এবং দেই যক্ত ও হোমে ব্রহ্মদর্শন।

অশাসুবিভিতং খোলং তপান্তে বে তপোলনা:।
দন্তাহকরেসংযুক্তাঃ কামনাগবলাগিতাঃ।
কর্ণরন্তঃ শনীমুখং ভূতপ্রামনচেত্রসঃ।
মাধ্যৈবাঞ্পনীরন্তঃ তান্ বিদ্যান্তর্মান্ঃ

দন্ত, অহলার, কাম, আসক্তি ও সাহসিকতাবশতঃ যে সকল লোক অশাস্ত্রবিহিত ঘোর তপল্লাচরণ করে এবং অবিবেকী হইয়া শরীরত্ব ভূতনিচয়কে এবং তংসহ অস্তঃশরীরত্ব আমাকেও কুশ করে, তাহাদিগকে আমুরনিশ্চর বিশ্বিয়া লানিও।

ভূমি কি গীতা পড় নাই

 ইহারা যে এইরপে অশার
 বিহিত অন্তরধর্মের আশ্রর লইয়াছে।

ত্তিবিধ **জন্ম।**

ত্রিবিধ জন্ম।

অস্ত্রিশ্নের সন্মিল্ন, এই ভাবে দীক্ষিত হইরা আমরা অগ্রসর হুইতেছি। যতকৰ সদিবিলন সন্মিলনে পরিণত না হয়, ভতকৰ এ নিমিত্ত মনে শাস্তি অমুভব-করি না। প্রথম প্রথম যথন বাক্ষধর্মের অমুবর্তনে প্রবৃত্ত হই, তথন এ ভাব প্রবল ছিল না. বরং সম্মিলনাপেক্ষা অসম্মিলনের দিকে চিত্তের গতি প্রবল ছিল. কেন না ইহাতে নিজধর্মের মহন্ত প্রকাশ পাইতেছে, অক্স ধর্মের হানতা সেই মহন্তকে আরও উজ্জল করিয়া দেখাইতেছে, এইটি মনে হইরা একটি গর্কবিষিত্র আনন্দ জন্মিত। আজ মনে করিতে বড়ই লজ্জা হয়, অপর ধর্মের দোষগুর্মলতা যেখানে দেখিতাম, শেখানে আজ তাহার গৃঢ় মহত্ব দেখিয়া অবাক্ হইতেছি। নিজ-खान कीवान क्रिन्म महर भित्रवर्त्तन श्रेशांद्र, अ कथा विनाउहि ना, विधारनत खरन-नवविधारनत खरन এ পরিবর্ত্তন হইরাছে, মুক্তকর্ষ্ঠে ইহা স্বীকার-করিতেছি। বেদান্ত এ দেশের ধর্মবিজ্ঞান। এ বিজ্ঞা-নের বিরোধে ব্রাহ্মসমাজে আজ পর্যান্ত অপরাধ চলিতেছে. সেই व्यवहारभत्र कथिक निक्तत्र इत, छाहात्रहे अग्र व्यास व्यापनारमत् নিকটে উপস্থিত। ত্রাক্ষ্মশালের ইতিহাসে "অর্মাত্মা ত্রক্ষ" "গোহহমত্মি" "ভর্মসি" "সর্বাং থবিদ: ত্রন্ন" জীবের পুনরাগমন ইতাদি বিষয়ে পরিষার ভাষার প্রতিবাদ রহিরাছে। প্রতিবাদ মূলশৃক্ত এ কণা বলিতেছি না। সাম্প্রদায়িক ভাবাপর

चहीनखिळ्य मत्यादनत्याननत्य छनायाद्रमण्य वस्र्याम्नमः।

লোকদিগের অবিচারে বেদান্তের বিক্লে যে সকল নিন্দা দৃচ্ছুল হইরা রহিরাছে তাহারই প্রতিবাদের জন্ম এ সকল কথা ইতিহাদে লিপিবদ্ধ থাকিবে, ইহাতো ভগবানেরই অভিপ্রার, কিন্তু এ সকল প্রতিবাদের উপযোগী কথাগুলিব মধ্যে এমন কি সতা নিহিত আছে, যাহার জন্ম ইহারা কোন কালে বিলুপ্ত হইবার নহে; তাহার উদ্ধারের জন্ম এত দিন যত্ম হর নাই, এক্ষণে সে যত্ম উপস্থিত যাম্বরের নিজ ইচ্ছার এ যত্ম উপস্থিত হর নাই, যথাসমর বিধান সে যত্ম উপস্থিত করিয়াছেন, তাই আমাদের মনের অবস্থা পরিবর্তিত হইরাছে ভক্তিভালন প্রধানাচার্য্য মহাশ্রের শেষ জ্বোৎসবে যথন তাহাকে দুশন করিতে যাই এবং শেষ উপহার অর্পণ করি, তথন প্রতিজ্ঞা িল

যদেবেছ তদমুত্র যদমুত্র তদধিহ। মুতোঃ স মৃত্যুষাপ্রোতি য ইছ নানেব পশুতি ।

পরলোকসম্বন্ধে বেদাদের এই কথার তৎপ্রচারিত মতের সঙ্গে বেদাস্তের মিলন প্রদর্শিত হইবে। বেদাস্তের পারলৌকিক তত্ত্ব সম্পার আরও হইরাছে, এ কথা বলিতেছি না, যত দ্র হইরাছে ভাহাই বলিবার জন্ত অন্য অগ্রসর। জীবজন্ম বিষয়ে এক দিন বে বিরোধ চলিয়া আসিয়াছে, সে বিরোধ যদি কথ্ঞিং ক্রিয়া থাকে, ডজ্জনিত আনক্ষ নিজে ভোগ করিয়া অপরকে তাহার ভাগী করিতে কেনইবা ইছে। হুট্বে না।

গীভার সমন্বরভাষ্য যথন শৈষি, তথন যে সকল তত্ত চিত্তে প্রতিভাত হইরাছিল, উপযুক্ত প্রমাণ বিনা দে সকল সিদ্ধান্তরূপে সাধারণের নিকটে উপস্থিত করি নাই, কেবল আভাসমাত্র নিবদ্ধ করিরাছি। গীভার পর ভাগবত, ভাগবতের পর মূল বেদাঙ্কে ।

আলোচনায় প্রাবৃত্ত হই। অসমিলন নয় সন্মিলন— বিধানের এই মূল एक त्वनारल निरवाग-कतिया कि कननाछ स्टेनार्छ, नाना आकारत ভাহা ইতঃপূর্ব সকলকে অবগত করিয়াছি। পুনর্জন্মের মত লইরা সাধারণের সঙ্গে যে বিরোধ চলিয়াছে, ভাহার নিঃসংশয় মীমাংসা ক্রিতে পারি নাই, স্থতরাং এ সম্বন্ধে কেই কিছু জিজ্ঞাসা করিলে -আমি যে উত্তৰ দিতাম তাহাতে না আমি আপনি তই হইয়াছি না অপরকে তৃষ্ট করিতে সমর্থ হইরাছি। ইনি গীতার সমন্বছভাষাকার द्ध उतार व मधरक होने व्यवश्च विरूप्त क, हेरा मरन कतिया याँ हाता নিকটত হইরাছেন, তাঁহারা পরিষ্ঠার কথার বলিয়া গিরাছেন, ইংাকে আমরা যাহা মনে করিয়।ছিলাম, ইনি তাহা নন। उँ।হা-দের এ কথায় আমার মন কুরু হয় নাই, কেন না ভাষারচনা করিয়া আমি নিখিলশান্ত্রের পার্গমন করিয়াছি, ইহা আমি মনে করি না। এখনও শিথিবার অনেক অবশিষ্ট আছে, ইছা তথনও জানিতাম এখনও জানি। গীতাভাষা যখন লিখি সে সময়ে বেদাজের বিশেষ সমালোচনা করি নাই। সংস্কৃত বেদাস্তসমন্বয়ের সমাপনাত্তে আশা করা যাইতে পারে, বেদান্তের বিশেষ আলোচনা হইয়াছে, মতরাং আর কি নতন তত্ত্ব প্রকাশ পাইতে পারে, কিন্তু ভাহাও নয়। এই আর এক দিন বেদাস্থের অবতরণিকা লিখিতে গিয়া যে মালোচনার প্রবুত্ত হই, ভাহাতে জানিতে পাইলাম বেদার कीरवत किविध खन्म शिक्ष कतियाद्वन, एउर्थ जन्म दिनादेश नाहै। এত দিন মনের মধ্যে বেদ ও বেদাস্তে যে বিরোধ ভিল সে বিরোধ সহসা ঘুচিথা গেল। বেদান্ত ৰলিতেছেন, পিতৃদেহে জীবের বীজনপ প্রথম জন্ম, মাতৃজ্বায়ুছে বিতীয় জন্ম, মৃত্যুতে ভৃতীয় জন। মৃত্যুর পর কি পিড়দেহে বীজরণে কি মাতৃজ্বায়ুতে জ্রণ-

রূপে আর জন্ম নাই, বৃত্তিরহিত বা বৃত্তি লইরা আত্মার স্থিতি হয় এবং ভদমুগারে তাহার বিবিধ গতি ঘটে। এখন জিজ্ঞাস্ত এই, যদি বেদাস্ত পরিকার ভাষার একথা বলিয়া থাকেন, ভবে এত দিন এ দেশে পণ্ডিতদের মধ্যে এ সম্বন্ধে বিপরীত মত কেন চলিয়া আসিয়াছে ? বৌদ্ধর্ম্ম প্রভাবে, এ উত্তর দিয়া পার পাইবার উপান্ধ নাই। এক শ্রীমছকর বৌদ্ধর্মের প্রভাবাধীন ১ইয়াছিলেন তাঁহার বিরোধী সম্প্রদারগণ ইহা বলিয়াছেন প্রমাণ্ড দিয়াছেন. কিন্তু সকল আচার্যাই কি জীবজন্মবিষয়ে দে ধর্মের কুহকে পড়িয়া-ছिल्म ? उम-जिम यज्य जीव नाहे, এ कथात अजिवाम अरनरक করিয়াছেন, এবং এই প্রতিবাদের সঙ্গে সঙ্গে বৌদ্ধনত নিরস্ত হইরাছে, জীবের জন্ম নাই উপাধির দঙ্গে যোগই তাহার জন্ম, এ কথার সকল আচার্যাই এক মত, শঙ্করও এ কথা বলেন কিন্তু কোনও আচাৰ্যাওতো স্পষ্ট এ কথা বলেন নাই মৃত্যুর পর আত্মা हेहरणारक आर्म ना, रमरहत छेलामान मकरणत आशमन इहेता থাকে। জ্রণ পূর্ণাবরব প্রাপ্ত হইলে উহাতে আক্সার প্রবেশ হয় তৎপূর্বে নহে। যে আত্মার প্রবেশ হয়, উহা কোথা হইতেও আইদে না, কেন না আত্মার স্থিতি নিত্যকাল প্রাক্তেতে (পরাত্মাতে)। দেহ অগ্নিতে দগ্ধ হইলা বিশ্লিষ্ট হয়। আধুনিক মতে শ্রশানে প্রতিদিনের পিওদানে দেহবিশিষ্ট হইয়া জীল পিতলোকে প্রবেশ করে, প্রাচীন মতে অগ্নিই তাহার সমস্ত দেহের একত্র যোজনা করেন; দেবী অস্থনীতি সর্গে তাহার প্রকৃষ্ট তমুনিশাণ করেন। বহদারণাক বলিতেছেন:-"(প্রাঞ্জ আত্মা কর্তৃক আলি-ক্ষিত) । আত্মা উৎক্রাস্ত হুইলে প্রাণ ভাষার পশ্চাতে উৎক্রমণ করে।

आख (गताचा) हरेटल विजित्रे हरेता आचा केंद्रक्मण क्रव ना, कात्रण

নাল্য। বিজ্ঞানমর, শুভরাং সে বিজ্ঞানকে শইরাই নিজমণ করে।
বিদ্যা কর্ম এবং পূর্ব প্রক্ষা তাহাকে সমাক্ আপনার অন্তরণ করিছে
প্রাপ্ত হয়। ভাই তৃণজলোকা ঘেমন তৃণের অন্তভাগে গমন করিয়া
লক্ত আপ্রর আপ্রন্তরে এবং দেখানেই আপনাকে উপসংহত করে,
তেমনি এই আত্মা এই শরীরকে ছাড়িয়া এবং অচেতনাবস্থা অভিক্রম করিয়া অন্ত আপ্রাক্তে আপ্রয়-করত সেধানে আপনাকে উপসংহত করে। { "ভাই ঘেমন স্বর্ণকার স্বর্ণথণ্ড শইরা অন্তনবতর
কল্যাণতর রূপ (প্রস্তুত) করে, তেমনি এই আত্মা এই শরীরকে
ছাড়িয়া এবং অচেতনাবস্থা অভিক্রম করিয়া পৈত্রা বা গান্ধর্ম, বা
দৈব বা প্রাভাপত্য বা রাজ্ম বা অন্তান্ত ভৃতগণের অন্ত নবতর
কল্যাণতর রূপ (গ্রহণ) করে।

শিসেই এই আত্মা ব্রহ্ম অর্থাৎ সর্ক্ষয় — বিজ্ঞানমর মনোমর, প্রাণমর, চকুমরি, প্রোত্তমর, পৃথিবীমর জগমর, বায়ুমর, আকাশমর, তেজোমর, অতেজমর, কামমর, অকাশমর, কোশমর, অকাশমর, ধর্মমর, অংগ্রমর, সর্ক্মর, তং-ষং-এতৎ-এবং-ইহামর এবং উহামর। মতেরাং যে বেমন করিগাছে বেমন আচরণ করিরাছে সে তেমনি হর, সাধুকরকারী সাধু হর, পাপকারী পাপ হয়, পূণাকর্মে পুণা হয়, পাপকর্মে পাপ হয়। পুরুষকে কামমর বলা হইয়া থাকে। তাহার কামনা বেমন সে তেমনি ক্রিয়াশীল হয়। সে বেমন ক্রিয়াশীল হয়। তেমনি ক্রিয়াশীল হয়। তেমনি ক্রিয়াশীল হয়। তেমনি ক্রিয়াশীল

ইংবারট পূর্ববন্তী প্রাক্ষণে উক্ত হই যাছে সেই সময় "ভারাক্রান্ত শক্ট বেরুগ শব্দ করিতে করিতে চলে ভেমনি পরীরত্ব আজা প্রাক্ত আজার আলিকনে আকাল ইইরা শব্দবিশেব প্রবৃত্ত হয়। বে কালে এইটি হয় লে কালে পূক্রের উত্বাস উপস্থিত হয়।"

"উক্ত অর্থে এই লোক:—[আত্মা] বে কর্ম্মহকারে প্রকাশে আগমন করে ভাষার শক্ষণ মন, কেন না যাহাতে ইবার মন নির-তিশর আসক্ত ভাষাতেই সে আসক্ত হয় ইহলোকে যে কোন কর্ম করে সেই কর্ম্মের অন্ত পাইয়া সে লোক হইতে পুনরার এই লোকে কর্ম করিবার নিমিন্ত আইসে •। যে ব্যক্তির কামনা আছে ভোষার সম্বন্ধে এই নিরম। অনস্তর যে ব্যক্তির কামনা নাই সে ব্যক্তি অকাম, নিকাম, আপ্রকাম আত্মকাম। তাঁহার প্রাণ সকল উৎক্র-মণ করে না। ব্যাসক অভির হইয়া ভিনি ব্রহ্মকেই প্রাপ্ত হন।

"উক্ত মর্ম্মে এই শ্লোক - ইছার হানরে যে সকল কামনা আগ্রিত হইরা আছে সে সকল বর্থন প্রিয়া পড়ে, তথন মর্ত্তা অমৃত হর, এখানেই ব্রহ্মকে প্রাপ্ত হয়। তাই মৃত সর্পের নির্ম্মেক বন্মীকে নির্ম্মিক ইছারা বেমন শরান থাকে তেমনি এই [মৃত] শরীর শরান থাকে আর ব্রহ্মই এই অশরীর অমরণশীল প্রাণের প্রাণ হন তেজর তেজ হল †।" বুহদারণ্যকের ‡ এই কথা গুলির বিশেষ আলোচনা করিলে ইহাই প্রতিপন্ন হয় যে,জীব দেহস্থ নম্ন চিরদিনই প্রমাত্মিক স্থাকি দিনে প্রমদেবতা বলিয়াছিলেন "এই জীবাস্থার সঙ্গে প্রবেশ করিয়া আমি নামরণ অভিবাক্ত করিব" সেই দিন ইইছে জীবর

^{* &}quot;কর্মণ ইতি। পুন: কর্মকরণায়। পুন: কৃত্যা অর্থলক্ষরশাৎ পুনরন্লোকং ঘাঠীত্যেবং"। ভাষাকার এরণ বলাতে লোকলোকান্তর ভ্রমণ সুলা বৃষ্ণাইতেছে।

[🕇] आन इन उड़ इन-थान्छ आनः त्वाडियाः त्वाडिः এই विविद्ध

[‡] বঞ্তাকালে ভাবমাত্তে এই সকল কথা সংক্রেপে উক্ত হুইরাছিল এখন উহার পুনদুখার কালে বৃহদারণাকের দে আংশের অনুধান করিছ দেওয়া গেল। প্রদাণ্যক্তে স্কৃতি এইলেপ সংবোপ বৃত্তিয়া লইতে হুইবে।

লক্ষা সর্কতা তাঁহার নিতা একতা বাস। মাণুকা উপনিষৎথানি সমুদার উপনিধদের তত্ত্ব অল্ল কথার বিবৃত করিবাছেন। এই উপনিষদে দেখিতে পাওয়া যাখ, প্রাক্ত (পরাত্মা) কর্ত্তক আলি-ক্ষিত হইরা জীবের বাস, জাগৎ ও স্বপ্নাবস্থার জীবের সহিত ইন্দ্রিদাদির যে সম্বন্ধ অমুভূত হয় উহা অভিনিবেশবশতঃ ভাই সুযু প্রাবস্থার প্রজ্ঞানঘনরূপে প্রাক্তে উহার স্থিতি হয়। বিজ্ঞানময়, সুভরাং দে বিজ্ঞানকে লইরাই নিজ্ঞাণ করে" এখানে যে এ কথার উল্লেখ হইরাছে মাওকা উপনিষ্ণে ভাহারই প্রতি-ধানি ৷ আতাকে লকা করিয়াই ঋগেদে অভ্যোভাগ উলিধিত হইয়াছে! দেহেন্দ্রির প্রতি অভিনিবেশবশতঃ ঘদিও জীবাত্মা আপনাকে পরাত্মা হউত্তে বিক্তির মনে করিয়া শোকে মোহে অবসর হর, তবুও কিন্তু এ অবস্থা তাহার স্বাভাবিক অবস্থা নয় বলিয়া সে আপুনি কে ক্রিয়ায় জ্ঞানোদ্হমার ভাহার শোকোপন্রন হর। বিজ্ঞান্ময় আ্লা যুখন প্রলোকে গমন করে তথন তাগার সঙ্গে কি যার ? বিদ্যা কর্ম এবং পূর্ব প্রজ্ঞা। বিদ্যা কর্ম এবং পর্মাপ্রজ্ঞা সঙ্গে গিয়া কি চয় গ তদক্ত-যায়ী জীবনলাভ হয়। ঋথেদ বলিতেতেন, অচিবে এ জীবন লাভ হয়, বেদাস্ত কি ভাহার বিপরীত কিছু বলিয়াছেন ? কৈ বিপরীত কোথার বলিরাছেন, উৎক্রাস্ত আত্মা "এই শরীরকে ছাডিয়া এবং অচেতনাবস্থা অতিক্রম করিয়া অক্ত আশ্রুকে আশ্রুক বরে, এ কথা বলাতে বেশের সহিত উচার বিরোধ ঘটতেছে না। এ আশ্র কি ? পৈতাদিরপ। পৈতাদিরপ গ্রহণের সম্ভাবনা হইল কিরূপে ? আত্মা বাহিরের শরীর ত্যাগ করিরাছে, কিন্তু এখন বে त्म विकानभव, मानाभव, खानमव । ७७९ मानर्था थाकारण म्यूनानिव

সম্ভাবনা এখনও স্কলই যে ভাগতে আছে। দেহ ভাগত-করিনাই কি সে সম্পন্ন হয় ? কথনই নহে। যদি হইত ভাহ। হইলে কামষন, অকামমন, কোধমন, অকোধমন, ধর্মমন, অধর্মমন ইভাাদি বিশেষণ ভাহার থাকিত না, সাধু অসাধুইভাাদি প্রভেদ ভথনও ভাহাতে উল্লিখিত হইত না। সে এখনও নিজিয় নায় ক্রিয়াশীল, ভাই সে বেমন করে তেমনই হয়।

পরলোকগত আত্মার অবস্থা নিরভিলাব ও সাভিলাব-ডেনে ছুই প্রকার। একটি শ্লোকে সাভিলায় মার একটি শ্লোকে নিরভি লায় আত্মার গতি উল্লিখিত হইয়াছে। নির্ভিলায় আত্মার গভি সম্বন্ধে ভ্রম হয় নাই, বরং অনেকে উহার এতদুর নিয়োগ করিয়া-চেন যে পরবোক ও ইংলোকের একত্বসত্তেও দেহভদ্ধ না হইলে ওটির প্রয়োগ হয় না একথা বলিতে কৃষ্ঠিত হন নাই : যেমন নীলকণ্ঠ ৰলিয়াছেন "তত্তভান জন্মিলেও দেহপাত পৰ্যান্ত প্ৰায়ক্ত কৰ্ম্মের প্রতিবন্ধবশতং বিদেহ কৈবলা প্রাপ্ত হওরা যায় না। যদি তাহাই না হইত তাহা হইলে ফান জন্মিবামাত্রই দেহপাত ঘটিত।" জীবিভাবস্থাতেও শরীর থাকিয়াও শরীর নাই এরপ ভাব অনেক সাত্তের উপস্থিত হয়, ইহা দেখিয়া কোন কোন আচার্যা দেহবান বাক্তিতেও ইচার প্রয়োগ করিয়াছেন। সাভিশার আন্তঃর গতি-श्यक्त त्य द्वाकि । जेक इरेशांक केंग्रित नित्यांत व्यक्त समार १रे ट्रवम ७ (वनार श विद्राध घष्टिवाटक । "क्राम्बरमाक" :—केळ विषदा (माक a) -(वनात्स (प्यात्नहें a कथात्र के स्नयं हहेताह (प्रयात्नहें त्य विषय्ति वना बहेबाटक त्मरे विषय्ति मात्र ह्यांटक निवस बहेबाटक. লোকের মধ্যে উক্ত বিষয়টিকে অতিক্রম করিয়া অঞ্চ কোন বিষয় निवह इव नारे। अवादन 8 अ निवदमंत्र दर्शन वालिक्य इव नारे.

এইটি বুঝিতে ना পারিয়া এই স্লোকটি হইতে বেদ ও বেলাবের বিরোধী কুমতের সৃষ্টি হইরাছে। লোকস্থ 'মন' শক্ষাট বিদ্যা कर्षा এवः भूत्रश्रक्षात्र भतिवार्त्त वावक्ष्ण। विमा कर्षा व भूकंत्रका থাকে কোথার ? মনে। এই বিদা কর্ম ও পূর্বপ্রজ্ঞানুস।রে আত্মার রূপপরিগ্রহ হয়। পরলোকে এ রূপপরিগ্রহ মানস, তাই ষাহার মন যেরপ ভাহার সেইরপ রূপপরিগ্রহ হয়। পুরাণে মানস-পুত্র মানসী কলার উল্লেখ দেখিতে পাওয়া যায়। এখানে বীজ হুইতে যেমন দেহের উৎপত্তি হয়, দেখানে তাহা নাই। আছে কি ? মন। সেই মন হইতে পুত্রকতা প্রাপ্তি ঘটে। পুত্রকতাপ্রাপ্তির অর্থ এই যে, এক জন যথন অপর আব এক জনের ভাবাপর হয়, তপন সে তাহার পুত্র বা কলা হইয়া থাকে। স্লোকে সাধারণ ভাবে মন এই শব্দের প্রারোগ হইরাছে, ভাহার কারণ এই যে, যাহার মন যেমন সে সেইরূপ পৈত্রাদিরূপ ধারণ করে অর্থাৎ ভদ্তাবাপল হয়। শ্লোকে মনকেই লক্ষণ বলা **চইয়াছে এই জন্ম (য. পরলোকে** কে কি হইবে এক মনের ছারা তাহা অবগত হওরা যার। "ইহলোকে যে কোন কর্ম করে ভাষার অস্ত পাইরা" এ অংশের সহিত তৃশ क्टलोकात मुद्रास्त्रिक व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति मः युक्त । देहटलाटक या ट्यान ব্যক্তি যাদৃশ দেতে জ্রিরমনোবৃক্ত ছিল ভাহার সেরপ হইবার কারণ কর্মা বা প্রাণশক্তি। দেহ ও বাহা ইন্তিরগণ পরিতাক হটল, এপন রহিল মন। মন রহিল কেন ? এখনও ক্রিয়াশক্তির বিচ্ছেদ হর নাই, তাই উহার বিলোপ হইল না। এ ক্রিয়াপজি বেদাতে মুখা প্রাণ, छाडे दिमास्य मूचा शालित উৎक्रमानत कथा आहि। दक्षण धरे পর্যান্ত নহে, অকাম ব্যক্তিরও অন্তিবের বিলোপ হয় না তাই বিতীয় भारक खेल इहेबारक "व्यनतीत व्यवतानीन खारनत खान अमारे सम

তেজাই (জ্ঞানালোকই) হন। " আছে। মনই বদি বিদ্যা কর্ম ও পূর্ম.
প্রজ্ঞার আধার এবং তাহ। হইতেই বিবিধরূপ পরিপ্রাহ হয় ভাল
ফইলে ইহলোকে "বে কোন কর্ম করে সেই কর্মের অন্ত পাইলা
এ কথা বলা হইল কেন ? দেহেন্দ্রির মনোর্কু জীবের তৎকালে
ব্যরূপ ছিল তাহা যে কর্মের উপযোগী, সে কর্মের অন্ত না হলে
আর পৈত্রাদিরূপ হইতে পারে না। তৃণজ্লোকা তৃণের অন্তভাগে
গমন না করিলে বেমন আশ্রেরান্তরে আপনাকে উপসংস্কৃত করে
না, এন্থলেও ভাহাই ব্রিতে হংবে। দেহবিম্কু আত্মা ব্যন
বিজ্ঞান্যর, মনোমর, প্রাণ্যর, তথ্ন ভাহার সম্বাহ্ম যে

यरनरत्र उत्पृष्ट सम्भूत उनिव्ह।

এ বাকোর পূর্ণ পরিমাণে প্রয়োগ হইবে, ভাহাতে আর সংশা কি ?
বিদ্যা কর্মা ও পূর্ব্য প্রাক্তান্ত্রমারে দেহবিমৃক্ত আত্মার বিবিধরণ প্রত ১৯৮৭ ১৯৮৭ এবং ভত্তরোকে বিচরণ ঘটবে, ইহা ব্রিতে পারা গেল, কিছু চন্দ্রলোক হইতে বৃষ্টিধারায় পৃথিবীতে আসিবার যে কথা আছে, সে কথাটা কি * ? চন্দ্রলোকে কাছারা যায় ?
ক্রিগণ। কর্ম্মিগণের প্রথম গতি কোথার ? পিড্লোকে।

ক কোঁবীতকী উপনিবদে মৃতব্যক্তিমাতের চল্লালে গমন ববিত আছে।
উহার মতে প্র্যানহে কিন্তু চল্লাই প্রত্যির দার, স্তরাং কুল্বীতে আসা ব
কর্পে গমন উভরই চল্লা হইতে হয়। ঘাহারা সেই চল্লাকে অভিন্য করে
ভাহারা আর পৃথিবীতে আবেল না, বাহারা ভাহাকে অভিন্য করে না ভাহার
বৃষ্টি হইয়া পৃথিবীতে অবভরণ করে এবং জ্ঞান ও ক্র্যান্থনারে কীটপত্য
মন্ত্রাদি হয়। এবানে সংক্রেপে বাহা উল্লাহটিক অভানা উপনিব
ভাহার বিত্ত বিবয়ণ আছে। এই উপনিবদে একলোকে গমনের বে বিত্
বৃত্তান্ত আছে আনানা উপনিবদে ভাহার উল্লেখ গেখিতে পাওরা বায় না।

িত্লোকে গমন করিয়া অবশ্র তাহারা শৈত্রকণ প্রাথ হয়।
শৈত্রকণপ্রাপ্তিইলেই মোক্ষার্থে বছ অবশ্রভাবী । অক্রণা বে রূপ ধারণ বিফল। এই যত্নে পরাত্মালিকিত আত্মা ইন্দ্রিরগণ হইতে বিযুক্ত হয়, ইন্দ্রিরগণ কর হইয়া চল্লে গমন করে। সেথানে সেই আন্ন নেবগণের ভোগা হয়। ভোগছার। যথন উহারা কয় পায়, তথক অব্যাক্তাবছা উপস্থিত হয়। এই অব্যাক্তাবছা আকাশ অনস্তর আকাশ হইতে বায়ু,—বায়ু হইতে বৃষ্টি হইয়া পৃথিবীত্তে পত্র, পৃথিবীতে পত্রন হইয়া আলাকার ধারণ, সেই আর প্রকাশ প্রিতে হত হইয়া বোষায়িতে জন্মগ্রহণ। যথন জন্মগ্রহণ হয় তথন বীজমধ্যে অমরাংশ ছিল কি ? ছিল বৈকি ? প্রাণই সেই অমরাংশ। প্রাণ অর্থাৎ ইন্দ্রিরগণ। এই ইন্দ্রিরপণ দেবতা, এবং গর্ভস্থ বামদেব তাঁহাদিগেরই জন্ম প্রত্তাক্ষ করিয়াছিলেন। এখানে বামদেব আছা, তিনি অল্প তিনি জন্মিপ্রেন না, কিন্তু প্রত্তা হইয়া সকলই দেখিলেন। তিনি ছিলেন কোথার ? সেই জায়মান দেহে নয়, কিন্তু পরাত্মাতে।

এপানে সকলেই দেখিতে পাইবেন "ভত্ত সমন্বরাৎ" আমরা এই বেদান্তহতের বলে এক স্থানে যাহা উল্লিপিত হর নাই অক্ত স্থান হইতে ভাষা আনিরা অন্তক্ত বিষয়ের আমরা পূরণ করিয়াছি। এরূপে পূরণ না করিলে যথার্থ ভব কিছুভেই হাদয়লম হইত না। এইরূপে পূরণ করিয়া আমরা ব্রিভে পাবিভেছি আত্মার লোকলোকান্তরে অমণ এবং দৈছিক ইন্দ্রিগণের পৃথিবীতে পুনরাগমন হইয়া জন্ম-জন্মান্তরসিদ্ধ হয়। আমরা আমাদের এই দেহকে অতি ভুচ্ছ মনে

कति। आमारतत मत्न रत, हेरात गरिल आमारतत (बाल रहार চইরাছে, ইহার বেন কোন পূর্ব্ব রুভান্ত নাই। এ দেহের প্রভাক বিন্দুর সহিত শক্ষ লক রুগের সম্বন্ধ আছে, এ কথা আমানের স্থতিপথে উদিত হয় না। একটি জীবের ভূমিষ্ঠ হইবার প্রে তংশ্বিতে লক্ষ লক্ষমের কথা প্রতিভাত হওয়া আমাদের निक्रि क्रे क्रिक (मक्रिक य रिक्कानिक मर्डाइ डेशरत शक्रि **छि** हेश आमारनत मत्न आरम ना। अस्मिताहे उग्रिशानि ক্রিরা যে শত শত বর্ষে দেহের ধর্ম হইরা গিয়াছে. এ কথার কি আমরা বিশ্বাস করি ? একটি জীবদেহের উৎপত্তি মহারহত্তে পূর্ণ श्रीविश्र मिया हत्क हेटा दिश्याक्षितन, छोटे बाल विकानितनता সেই রহস্তের উদবাটনে তাঁহাদের সমুদায় শক্তি নিয়োগ করিয়া ছেন। রাজাধিরাজ ঈবরের তনয় আত্মা দেহের অধীন নহে কিন্তু উহার দুটা যথনত সে অধীন হয় তখনত ভাহার ভন্মত আছেন হইরা পড়ে, এ কথা সতা, কিন্তু দেহের সমূচিত বাবগারে সে যে প্রকাজ বিশ্ববাজ্ঞা আপনার অযুত্রাধীন করিয়া লইতে সমর্থ হয়. ইহাতে কি আর কোন সংশয় আছে ? চকুরাদি ইক্রিমণণকে আমরা ভক্ত মনে করি, মাভুগর্ভত বীজে উহাদিগের প্রাকাশ এবং সে প্রকাশে দেবগণের প্রকাশ আমাদের নিকটে জলীক অত্যক্তি, कि प्रमुख हेक्ति शार्वित चाबीन कित्रा द्वाराम्पर्टन देवक शास दिन গণের বারা নিয়ত নিশার হটতেছে এ কথা কি অত্বাকার করিতে भावि १ विकानविलां हेशांक मश्हानमञ्ज-वृत्ति (Organic memory) नात्म अভिहिত कविटल शाद्यम, किन् चुक्ति बनिदनहे উছাতে দেবছের সংক্রমণ ঘটিতেছে। দেহপিতে প্রাণ অর্থাৎ इक्तिकार्गत थकान त्व वहनक्षवर्षक इंडिकाम विकानक्रक जानिका

উপস্থিত করে, নাজ কাল বিজ্ঞানপ্রধান সমরে ইবা আর অবৃত্ত অপ্নধান নবে প্রতাক বাাপার। বেবের হাম বা অহম একটি উপা-লানেরও বুণা ক্ষর বর না, স্থাবিশেবে হাম ও অহম উপালানের প্র: পুন: আগমন হর বেলোপনিবং এ কথা বলিয়া বিজ্ঞানবিক্ষ্ কথা বলিয়াজ্বেন কে ইবা বলিবে? বেলান্তে ইজিরগণের এত প্রাথায় কেন? তাহালেরই পুনর্ধার্থনের বর্ণনা কেন? বেলান্তের এই প্রাচীন বাফাট তাহার করেণ প্রদর্শন করে।

कारेनः कात्रतिकासः शूक्तवः ।

অন্তর্গ প্রমণ্ডর ইন্দ্রিরগণের ঝোগে কাররিতা। তিনি এই সকলের বারা আমানের কর্ত্ত্রের সর্বভার্থী গতি কক্ষ করেন বলিরাই ইন্দ্রিরগণ আমাদের বলে নহে, উহারা স্বরং ভগ্নানের বলে অবস্থিত। আমরা তাঁহার বল না হইলে কথন তাহানিগের উপরে আধিপতা করিতে পারি না। মধু আফ্রণ এ জন্তই প্রকৃতি, অন্তর্ধামী এবং জীব এ তিনের একত্বে ব্রের্কর সহিত একত্ব বর্ণন করিরাছেন। তাই পুন: পুন: বলিতেছি, শরীরকে ভূক্ত করিরা কেহ বে ঝোগী হইবেন, ব্রক্ষের সহিত এক ইইবেন, ভাহার কোন সন্তাবনা নাই। স্বরং ব্রক্ষ বাহার প্রক্তি অনালর করেন, তৎপ্রতি জনালরকে উচ্চধর্ম মনে করা বে অম, ইহা অর্মানিনের মধ্যেই সকলেরই প্র্তীতির বিবর হর।

চক্রলোক ইইতে পুনরাবৃত্ত দেহোপাদানসমূহ ভাল বা মন্দ আচরণাত্মসারে ভিন্ন ভিন্ন বোনি প্রাপ্ত ইইরা থাকে, উপ-নিবদের এ কথা শুনিবামাত্র নির্তিশন অযুক্ত বলিরা কাহার না প্রভীত হয় ? এ সকল উপাদান আঁসিরা হয় কি ? উপনিবং বলিডেছেন — শ্রীছিষ্ব ওষ্ধি বনম্পত্তি ভিল যাব হয় । বি মুক্ল

लानी अहे खनिएक (जाञन करत जाहामिरात महगठ इहेबा हैहात वीकाकात धातन-कटत । दमहे वीक्रदंक दे केट्रतंत्र शिज्रामरह कीरवर প্রথম জন্ম বলিয়াছেন এবং মাতৃগতে ইন্দ্রিয়াদির বিকাশ এবং काचारक উदारात सही निर्देशन कतियाहन। धरें है शिरव দ্বিতীর জন্ম। এখন কথা হইতেছে, যবাদি ভোজা সামগ্রীর মধ্যে সন্তাদি গুণের তারতম্য আছে কি না ? এবং সে তারতম্য প্রাণশক্তি इहेट उँ हु उ इहेट उट्ह कि ना १ अक खानन कि नेतृन जात जम इस (कम উপश्चिक कतिन ? अवश्च स्तर्दत छाल मन आहत्र এরপ তার ত্যের কারণ, এ ভিন্ন আর কি বলা ষাইবে ? আচরং creen किया ভिन रुग, ভिन किया रहेट छे**लानानम्**रध्य ভिन গুণপ্রাপ্তি হয় ইহা কি প্রভাক্ষ নয় ? ভিন্ন গুণের উৎপত্তি রাসায়-निक शिक्तिया देश आत आज काल कारात अविभिन्न नरह। (व थानी य अनुकू रा थाना जलानुन्यूक आशर्या ভाष्ट्रम कतिश शांक, यु हतार छ छ म्रानिम पु छ आ निभग्र के छे भनिष्य स्य अकार व्यवस्थात् कतियारक्त रमजल अवशात्र कता काशात्र अरक अम्बर नाइ। উপনিষদে যে কথাটা সংক্ষেপে নিবদ্ধ হইয়াছে, অক্তান্ত স্থলে উক্ত বিষয় গুলির তাহাতে সন্নিবেশ না করিলে উহার প্রাকৃ खार्थ क्षत्रक्रम इस ना । शक्त कार्थ क्षत्रक्रम ना इहेबा हैक (स क्यानिष्ट इहेग्राष्ट्र अथन छेट्। मकरवहे दुविएड शाविरक्टरकन्।

छन्त् हेर वसनीप्रध्येत अक्षार्टात्मारबर्ध्व वसनीयाः स्थानियागरनावन् वाजन् स्थानिः वा व्यवस्थानिः या देवश्वस्थानिः वाथ व ^क हेर्द्य क्षृत्रद्वताः व्यक्षार्टानाः वरक्ष कम्बाः स्थानियागरस्यवन् बहुतानिः वा मृकद्रस्थानिः वा छ्वानस्थानिः वा ।

ব্যাখ্যাভূপণ এখানে 'বে' পথে অনুশরিপণ করিবাছেন, আমরা শভপণ ভ্রান্ধণের কথার 'প্রাণাঃ' করিবাছি। মূল বেলান্তে অলুশবিশব্দ কোবাও নাই।

শাষরা তানতে পাইনাছি বে জিবিধ কথাবিবরে আমারের বজ্বা বলিবার কিছু দিন পর এক জন বৃদ্ধিনান্ ব্যক্তি এই নজ প্রকাশ করিয়াছেন যে, পুনর্জন্মবাদ বাদ দিলে হিন্দুধর্ম বিপদ্প্রভা ইইবে, কেন না পুনর্জন্মবাদ বাদ দিলে তাহার সঙ্গে সোকের সকল তর চলিরা যাইবে, বাহার যাহা ইছো সে তাহাই করিবে, কেন না লোকে যে ধর্মকর্ম করে সে কেবল ইহলোকে বা কট পাইতে হয়, এই তয়ে। সে তয় চলিয়া গেলে আর রহিল কি দু

अन्ताः आमानिशतक वनिष्ठ प्रदेखाए, এ मन शतकी मनात किलाभीन বাজিপণ কর্ত্তক উদ্ভাবিত। বেলান্তের প্রকৃত অর্থ করিতে পেলে বেলাস্ত বে मक्त नम रव अर्थ वावशांत कतिवाहिन, मारे मक्त शहन कतिवा छाशांत अर्थ নির্দারণ করিবার অক্ত যতু করা সমুচিত। পরবর্তী চিস্তাপ্রধান সময়ের শক্তানি मामानिगरक त्वनाल क्टेंटिक विलाख कतिया विभाव महिया वाहा वाहा প্রত্যক্ষ শাস্ত্র। অস্তরাত্মার সহিত বোগবশৃতঃ যে সকল স্ত্যু ও তত্ত্ব কৰি-গণের অন্তশ্যুতে প্রতিভাত হইয়াছে, সেইগুলি ভাঁহারা বেলান্তে প্রবচনাকারে নিবদ্ধ করিরাছেন। পরবর্ধী চিন্তাশ্রধান সমরে যে স্কল তত্ত্ব সভ্য শ্বশালিত হইয়াছে সেগুলি প্রত্যক্ষ শাল্পমধ্যে পরিগণিত নতে, এক ভ উছা-বিপৰে অনুসান বলে। প্রত্যক্ষণান্তকে শ্রুতি ও অনুসানের পান্তকে শ্রুতি बरल, पुलित वादश्रक भक्तक माफित वार्यश्रहत निरम्भ এकक्षेत्र वायका বিধিসিত্ব মনে করি না। আমরা বেদান্তের তত্ত্ব প্রকাশ করিতে গিরা একস্ক কোৰাও তৎপরবন্তী সময়ের বাবজত শক্তক প্রমাণ বলিয়া উপস্থিত করি नारे। जकत्व विश्वित्क शाहरवन, आश्रता अकुमतिम्दलत श्रक्तांबान कृतिश শতপথ ব্রাক্তণের উক্ত প্রাণশন্স জাদরের সহিত গ্রহণ করিয়াছি। এক্সপ क्यां छ जे छत्त्र अर अर्थार्शनियर अकृष्ठि यांश किছू विवशास्त्र छांश्रेत निक्छ आयाद्यत छेक्टि स्थायथ त्रिलिश निहाटकः आयत्र आना कति छार्चिंगंव छाजकटन उनिवरमक्त नाठ कवित्रा कीवछक् मिक्षात्रन कविद्यतः अत्र महिरम भाव साम गढियात रकाम मकायना शाकरन मा।

আর্থান্তবিগণের সন্তানের মুখে সদৃশ কথা ভানিরা বড়ই ক্ষোভত হয়, ভাই আমরা ইহার উত্তরে বেদাত সমন্তরের অবতরণিকার নিমে। ইহার পর খেন আমাদিগকে উদৃশ অফি শাসের কথা ভানিতে না হয় ইহাই আমাদিগের আত্মীরবর্গের নিকটে প্রার্থনা।

ভাষারা এতকণ যাহা বলিলাম, তাহা সকলেরই হান্যক্ষম
ইইয়া থাকিবে। ব্রহ্ম স্বয়ং শুদ্ধ ও অপাপবিদ্ধ, জীবকে তাঁহার সহিত
এক হইতে গোলে তাহাকেও অপাপবিদ্ধ হইতে হইবে, বেদান্তের এ
উক্তি আমাদিগের নিকটে অসম্ভব বলিয়া প্রতীত হয়। এই এক
স্বন্ধপ লইয়াই জীব ও ব্রহ্মে প্রভেদ বণন স্বাভাবিক তণন এ
প্রভেদ কোন কালে ভিরোহিত হইবার নহে, ইলা সহজে আমাদের
হান্যে প্রতিভাত হয়। বেদাস্ত বদি জীবের শুদ্ধর অপাপবিদ্ধর বিনা
ব্রহ্মের সহিত একজ্ব—কথার কথা হইয়া উঠে। শ্রীমন্তানামুক্ত
এ মন্বদ্ধে যে সিদ্ধান্ত করিয়াছেন দে সিদ্ধান্ত আমাদিগকে আদরের
সহিত গ্রহণ করিতে হইবে ৩। ব্রহ্মের সহিত একজাকুতব সমগ্র

বেলান্তের উদ্দেশ্য একস্তাই উহাতে ভেদদর্শন নিষিদ্ধ হইরাছে ।

যধন ব্রহ্ম এবং তাঁহাতে নানা বিষয় নিতা বিদ্যমান আছে, তথন

এই নানান্থকে ব্রহ্ম হইতে স্বতক্ত করিরা 'নাই করিয়া কেলা' কি

প্রকারে সম্ভবে, এইটি মীমাংসিতব্য বিষয়। নানাবিষয়ে মনের অভিনিবেশবশতঃ ব্রহ্ম ইইতে চিভের যে বহিমু্খগতি হয়, এই গতিযোগের অস্করায়। এই বহিমু্খগতি নিবারণ-করিয়া ব্রহ্ম সহ জীবের

অবিরোধভাবে স্থিতি যোগে আকাজ্জাণীয়। সাধক যথন ব্রহ্মের
প্রেরণান্থবর্তী হইনা দর্শন প্রবাদি ব্যাপার নিশান্ন করেন, তথন

তাঁহার চিত্ত এক ব্রক্ষেতে আনন্দান্থতব করেন। এই অবস্থা লক্ষ্য

করিয়া উপনিষ্থ বিদ্যাহেন,

व्यानमार अजात्या विचान न विष्कृति कमाहम।

বেদাদির অনুশীলন বা অন্ত কারণে সাধকের চিত্ত যথন অন্ত মাত্রও ব্রহ্ম হইতে অবস্থত হয় তথন তাহার ভয় উপস্থিত হয়।

বদ। ছেবৈব এত মিন্নুদরমস্তরং কুরুতে। অব তন্ত ভন্নং ভবতি।

কি জানি বা পাপাদি বিরোধী বিষয় ছারা ব্রহ্মযোগের জাগুমাজ বিচ্ছেদ হয়, এ ভয় যখন সাধকে শ্বভাবতঃ উপস্থিত হয়, তখন সেই ভয়ই পাপপ্রগ্রিনিস্তির প্রকৃষ্ট কারণ। কি জানি বা ব্রহ্মের সহিত বিচ্ছেদ ঘটে বেদাস্তবিং সাধকের চিত্তে এ ভয়ের বিদামানতা-সত্ত্বে পাপে নিপতন কি প্রকারে সন্থবিবে ? পাপে পতনের সন্থাবনা সত্ত্বে ভাহা হইতে নিস্তি জীবের গুদ্ধতা এবং সেই শুদ্ধতাই হিতা তলাবিচ্ছেদে ভয়ং ভবভীতি। যথোজং মংগ্রিভি: "য়য়ৣয়র্ত শ্বণ বাপি বাস্থবেবা ন চিস্তাতে। মা হানিভ্রম্বভিন্তের সা আছি: মা চ বিক্রিমা" ইত্যাদি। এশ্বনি প্রতিষ্ঠারা স্বভ্রমবকাশো বিচ্ছেদ্বর। তাহাকে পাসম্পর্নবির্দ্ধিত করিরা রাখে। এই আপেদিক ওরুর ও অপাপবিরুদ্ধ বধন জীবে সম্ভবপর তথন বেলান্তসির মোক—এদের সহিত একত্ব—আর অসম্ভব রহিল কোথার ?"

मृत कथा आधा मकतह वना इहेन, अधन कर्षामद्भाव कि वन खारबाक्य। छेर्नानियामत मटक कर्व अध्यात मा एमरहत ? तृत्मा क्रुक विवादिक्त ;-- "अमलुत कर्मिनिहत्तत त्वर अहे ि नामानी [সেই দেহ সামান্ত] এই সকল কর্ম্মের উক্থ [উত্থান কারণ]; दिन ना कह [त्मर मामाछ] रहेट के मकन कम् छेबान करता **এই [तिह श्रामां है] हेहात्मत श्रमान। त्कन ना এहें।** श्रकन কর্ম্মের সঙ্গে সমান। এইটি ইহাদের ব্রহ্ম (অন্তর্ভাবক)। কেন ना এইটি সকল কর্ম ধারণ করে। সেই এই নিামরূপ কর্ম] তিনটি হইরা একটি — এই দেহ, দেহ এক হইরা এই ভিনটি [নাম-ক্ষপ কৰ্ম]। সেই এই [তিনে এক একে তিন] অমৃত, সতা ৰারা আছেন। প্রাণই অমৃত। নাম ওরূপ সভা, ভত্মারা প্রাণ चाक्रका" क कटन (मनिट अधिका याहेट कह सह--नाम-क्रिश-कत्यंत ममष्टि, त्रह गहेबारे नाम-क्राप-७-कत्यंत शिक्ति। नाम-क्राप-কর্মপ্র সভা, ক্ষেত্র সভা কর্মের কারণ প্রাণ নিভাকাল স্থারী। পতাকি ? নাম ও রপ। নিভঞ্জাল ছারী কি ? প্রাণ। প্রাণ-कियानिक वा कर्य, हेश मम्बा सगक्त प्रारंग (क्या उपन इहेबा कमाणि विनाम शात ना छेहा समाबद श्रवाहिक इहेटड बारक, कुडताः উপनिष्ठ উहारक अमुख वा अविनानी विवदार्थन। আমরা ধারা করি, ভাষা কম, ভাষার কোন কালে বিনাশ হর मा। এ क्या बना किছू भर्क नत्र। आश्वात उनावि लान, अरे छेनापि द्याराहे आश्वात वाहित्त अकान । हक्तानि हेल्पिन अहे প্রাপ্রেরই বিশেব বিশেষ সংস্থান, থা অন্ধ উপনিবদে থাগি শব্দে ইন্দ্রির ব্রার। ইন্দ্রিরগণের আধার দেই। উপনিবৎ বলি দেইকে কলের আধার বিগরা থাকেন, ভাহা ইইলে ভোগের নিমিন্ত জীবের দেহবতা এ কথার কোন আপতি ইইতে পারে না, কেন না উহা প্রভাক সিদ্ধ। আত্মা দেহবিহীন হৈছল, সংযোগ বিনা উৎপত্তি হর না, স্বতরাং ভাহার উৎপত্তি নাই এ কথা বলা বুক্তিযুক্ত। চৈতনোর ত্রইত্ব স্বভাবসিদ্ধ স্বভরাং সংযোগোৎপন্ন দেহের উহা ত্রটা উপনিবদের এ কথা আমরা অমাল্ল করিতে পারি না। দেহ ইন্দ্রিয়-ও-মনোবৃক্ত হইরা আত্মা ব্যক্তিত্ব লাভ করে, আত্মা কিন্দ্র ইহাদিগের হইতে স্বতম্ব। গীতা ভাই বলিরাছেন.

শুকুতে: ক্রিয়মাণানি গুণৈ; কর্মাণি সর্কাল:। শহকারবিষ্টাক্ষা কর্জাহহমিতি মনাতে !

দেহে ব্রিষ মন— গ্রন্থতির বিকার, ইহাদের হই তেই সকল প্রাকার ক্রিয়া উপস্থিত হয় । কিন্তু আত্মা মৃঢ্তাবশক্ত: মনে করে আমিই এ সকল ক্রিয়ার কর্ত্তা। এই কর্ত্তাভিমানের ফল এই হয় বে, দে আপনাকে দেহেক্রিয়নন মনে করে। আত্মার বন্ধন এ ক্রন্তই হইরা থাকে। আত্মা ও প্রাণ এ চুইরের তব্ব প্রকাশক, সাংখ্য দর্শন। সাংখ্য-দর্শনে প্রকৃতি ও পুরুষ এ উভরকে কেছ অবীকার করিতে পারেন না। সাংখ্যদর্শনের প্রকৃতি ও বেদান্তের প্রাণ সাংখ্যদর্শনের পুরুষ ও বেদান্তের জীব একই। প্রকৃতি ও প্রাণের ক্রিয়া—ভগৎ, দেহ ভগতের ক্র্যাংশ। আত্মা— হৈতত্ত-মাত্র, ক্রন্ত ও প্রাণ্যান্তিত ভারা নিত্য হিতি। গ্রন্তিত বা প্রাণ জীবের ভোগা। প্রকৃতি ও প্রাণ্যান্তিতি উহার বহিঃপ্রকাশ। প্রাক্রাভিক ক্রিয়া বা কর্ম্বের অনুষ্ঠানে বেহপ্রান্তি, ব্রন্ধ ও ভারার ভারে

আত্মার স্বভাবে স্থিতি। বদি ইহাই তত্ত্বর ভালা কইলে ছেন্ডের সংসরণ বা গমনাগমন, আত্মার লোক লোকান্তরে বিচরণ এ মডে সার দেওয়াতে কোন আপত্তি হর না।

আমরা যাহা বলিলাম তাহা শুনিতে ভাল, কিন্তু আমানের কথা বে বেদান্তসিদ্ধ এটি দেখাইতে না পারিলে আমানের কথা কথামাত্রে পর্যাবসর হইবে। বৃহদারণাক শত পথ ব্রাহ্মণের অন্ত-শাগ আমরা সেই শতপথ ব্রাহ্মণ হইতে আমানের উক্তি সঞ্জাণ করিতে বদ্ধ করিব। বাহারা জ্ঞানাশ্রয় করিবাছেন, তাঁহানের আর প্রত্যাবর্ত্তন হর কর্মীর। কন্মীর আত্মা কি ? তহু কি ? যজ্ঞ।

এৰ হ বৈ যক্ষমানত অমুমিন্লোকে আংখা ভৰতি ফলকো: সং সংবতজুৱেৰ বজমানো অমুমিন্লোকে সতাৰতি বএবং বিধান্নিজ্তা বজতে ৷ >> ৷ ১ ৮ ৷ ৬ ৷ * .

যজের আহতিই কর্মীর আত্মা।

এবা হবা অভাণতি রমুমিন্লোকে আবারা ভবতি। স বলৈবংবিদমা-লোকাং লৈতি অবৈত্যেবায়তিরেডভ পুরে সভ্যাহরতে—মহা বৈ ভইংা-আমৌতি। তথাহারতি ভমানাহতিন'মে। ১১। ২ ২। ৩।

যজ্ঞ কথীর কাঝা বলাতে জীব বা পুরুষ কথীর ছায়া নচে, কথীর আহা প্রাণসমূহ। শতপথ ব্রহ্মণ ভাছাই বকি ছাছেন,

উত্তে হৈত্ৰ এক পাতিব।প—মন্তাং চৈৰামুত চে, তক্ত প্ৰাণা এৰামুত।
কালঃ প্ৰীৰং মন্ত্ৰী স এতেন কৰ্মণৈ তলাকুতিক ৰাজ্যৱমুত মকুক্ত । তথৈ
বৈত্ৰত্বভানাৰ উত্তৰ্গেৰ ভ্ৰতি মন্ত্ৰীং চৈৰামুত্ত চ, তক্ত প্ৰাণাএৰামুতা ভ্ৰতি
ক্ৰীৰং মন্ত্ৰী স এতেন ক্ৰীণেত চাবুতৈকধাক্ষমমূত্ৰমান্ধানং ক্ৰতে । > । ১ ।
ক 1 ১ ।

विक्य शांख जाना मनरक नहेना लाकलाकान्यतः विहतन

করে, ক্রিয়াপ্রধান প্রাণ সংগরণ করে, এ বিবরে এই সকল প্রান্থি আমাদের মনে কোন সংশর নাই। আমার লোক লোকান্তরে বিচরণে ভাষ্টারের সম্মতি আমরা উাহার ভাষ্টেই ["উক্ত অমেরা এই প্রোক"—ইহার টিয়ানী দেখ] দেখিতে পাই, আমরা যাহাকে প্রাণ বিলয়ছি, তিনি ভাষ্টেকে অসুশরী বিলয়ছেন, এ প্রভেদ প্রভেদ কি না ইহা একটি বিচার্য্য বিষয়। দেহারক্তক ভূকাবিছি কর্মা অসুশর। পূণ্য কর্মা ও পাপ কর্মা যদি অমুশয় হর, তবে উহার আধার আম্মানহে প্রাণ এ কথা বলিতে কুন্তি হ ইবার কোন কারণই নাই, কেন না প্রাণকে বিনা আম্মানেকতো আর উপনিবৎ কর্ম্মের আধার বলেন নাই। মূল বিষয়ে ভাষ্টাকরের সক্তে আমাদের বিরোধ নাই, এই পর্যান্ত আনিলেই আমাদের সম্ভূষ্টি আর আমরা অধিক চাই না।

এই ক্রিগণ প্রথমে পিতৃলেংকে গমন করে, সেধান হইছে আকাশে • আকাশ হইতে চল্ললোকে গিলা শল হল। এই অন্ধ্রে দেবগণ ভোজন ক্রিয়া নিঃশেষ ক্রিলে পুনরার আকাশতপ্রাপ্তি হল। পিতৃলোকে বাঁহাদের বাস তাঁহোরা ছুল দেহধারী নহেন, তাই হরিবংশ বলিলাহেন

षम्बद्धाः शिकृत्रनारखरेन भूजाः अमानरकः।

পিতৃলোকে গিয়া ক্রিগাণের পৈত্রেরপ অমৃত্রসাধক, তাই

* বৃহহারণ্যকে আভানের কথা না থাকিলেও ছাম্মোগ্যে আছে. অভএব নেই অমুক্ত কথাটা এখানে সংসূহীত হইরা তত্ত্ব নির্ভারিত হইর। উৎক্রমণ ভালে সমূরার প্রাণ বেমন একপ্রাণ হয়, তেমনি পিতৃলোক হইতে চল্লে
বাইবার পূর্ব্বে ভূতগণ এক ভূতাকাল হয়। চল্লে গিয়া আবার সমূর্ণার ভূত
ভাতত্ত্বা লাভ ক্রিয়া আর হয়। তৈত্তিরীর এবং অভাভ উপনিবনের স্ক্রিয়া

वीव जारमाञ्चा कविरम अधानकात छव महरम क्वतम वहरेर ।

कांशास्त्र कत बहेवात छेशायात्री विजित्ने कश्म हस्तानादक कत्रव शास হর। এই পিতৃলোক কিছু সামার নতে বোগজ্ঞীগণের পুনরার যোগিত্বলাভ এখানেই সিদ্ধ হইরা থাকে। গীভার যোগন্তগণের উদ্ধ लाएक शिवा दर्शाशकुरन क्या क्रेशिव द कथा चाह्य केश त्महे এই পিড়লোক এবং ভৎপরবত্তী উৎকৃষ্টলোক। আত্মা সোপাধিক না হইলে পরাস্থার সহিত অবিভক্তভাবে স্থিতি করে, তাই উহাকে मन्डिभागि वा প्रार्थाभाविकार उभिन्यत वर्षिक (प्रविष्ठ भावत যায়। মনউপাধি আত্মার লোকলোকান্তরে এবং প্রাণোপাধি আত্মার পিতলোকে গমন হইয়া থাকে। প্রাণোপাধি আত্মা ভূতাত্মা স্বতরাং গৈত্ররণ গ্রহণ্ডালে উহার ভূতাংশ বিশ্লিষ্ট হইয়া আকাশে একড-লাভ করে এবং সেই ভাবে চন্দ্রে গিয়া অলাকারে পরিণত হয়। দেখানে পুনরায় আকাশত্ব প্রাপ্তি হইয়া ভূতলে আবার প্রাণসমূহের অবতরণ হয়। উপনিষ্দের প্রথমেই চল্লানে গ্রম ব্বিত থাকিবার কারণ এই প্রতীত হয় যে, সকল আত্মাই প্রথমে পিতৃরূপ ধারণ করিয়া শ্রদ্ধাগ্রহণ করেন, পরে উপযোগিতাফুদারে গরুকাদি क्र यथात्र वर्ष्ट्रक छाउँ हाक वात्री हन । याहात्रा मानानित्व में पूर्वक উপনিষৎ এবং তৎসংশ্লিষ্ট ত্রাহ্মণগুলি পাঠ করিবেন তাঁছাদিনের নিকট এই সকল তম্ব প্রতিভাত হইবে, সুতরাং উচ্চারা আপনারা ভব সংগ্রহ করিবেন এই আশা করিয়া আমরা বক্তবা বিষয়ের উপদংহার করিভেডি।

উপসংহারে একটি বিষয়ের উপরে সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ নিভান্ত প্রায়েজন। মাজুকা উপনিষদ জাগ্রৎ ও স্থপ্প এ উত্তর অবস্থার মধ্যে সাক্ষার উল্লেখ করেন নাই উহার উপাধিমাতের উল্লেখ করিবাছেন। এরূপ করিবার কারণ কি ? আক্ষার স্করণ স্থিতি জার • পরাস্থাতে হিতি ও ছই তির নর একই। কোন পদার্থ
পরপত: কি ভাগানা জানিলে, সে পদার্থই জানা হর না, এ জল্প
মাণ্ড্রা আত্মাকে কজানখনরপে প্রজ্ঞ বা পরাপ্রকৃতিসহ একীভূত
করিরা উল্লেখ করিয়াছেন। বহিজ্গাৎ ও অস্তর্জগৎ এ উভরের
জ্ঞান বাহাতে ঘনীভূত হইয়া বিদ্যান দেই জীবাল্লা। স্বরূপতঃ
ভাহার ন্থিতি পরাল্লাতে, বহিজ্গাৎ ও অস্তর্জগতে ভাহার স্থিতি
অভিনিবেশ বশত: •। যদি এ কথাই সতা হয়, ভাহা হইকে
ভাহার সাক্ষাৎ উপলব্ধি পরাল্লার উপলব্ধির সঙ্গে সক্ষেক্তর্বান
উপনিষ্টের তত্ত্ব প্রকাশে এত প্ররাস পাইবার অল্প কোনা উদ্দেশ্ত
নাই, এই এক উদ্দেশ্ত যে, আল্লা ও পরাল্লা যুগপৎ আমাদের
উপলব্ধির বিষয় হইবেন। সাধারণতঃ লোকে দেহেজিরসহ
আল্লাকে এক করিয়া দেখে। জাপ্রৎ অবস্থাতে বধন বহির্জ গতের
প্রতি এবং স্বলাবভাতে বধন অন্তর্জাতের প্রতি নিজের অভিনিবেশ হয়, তধন আর চিত্ত হইতে আল্লাকে কের প্রথক্ করিয়া
লাইতে পারে না, আল্লাকে চিত্তবৃত্তি বলিয়াই সকলের প্রতিভি

[•] এক সময়ে এক জন বছু কেলবচল্লকে মন ও আজার বিবরে প্রশ্ন করিয়ছিলেন। তিনি অতি সহলে মন ও আজার তত্ উলেকে বুবাইয়াদেন। তিনি বলেন, আমাবের এই হততল ও হত্তপুঠ, তুই কিছু খতয় নয়, কিছ হততলের অস্থানিসকল সম্পূচিত করিয়াসকল বল্প বারতে পারা বার, হত্তপুঠ বারা সেরল করিতে পারা বার না, মন ও আজার এইয়প একছেও বতজা। এ দুইলাইটি অতি হালার বার নিক্ পরাজার বিদেশে কিছ্ হত্তপুঠ, আর বে নিক্ বিবরে নিকে সেটি মন, মনোহতদৈবং চলুং, এই বন অতিবিশ্বরপ্রকারে পরাক্রিব। বিবর ছই প্রকার—পার্থিব ও আজিব। আজার ব্যবহৃত্তপুঠ, আর বে নিক্ বিবরে ছই প্রকার—পার্থিব ও আজিব। আজার ব্যবহৃত্তপুঠ ভাগতে বিবর সাক্রিব।

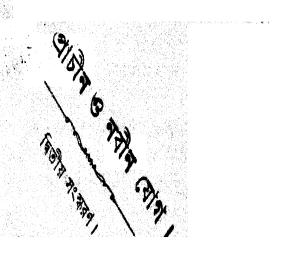
বিব্যবহার তার তে বিহল বাইছে ইইবে। পার্থিব বিষয়ন্তিন আনাকারে ব্যবহার স্বিভ্না আজিব ভাগতে বিব্যবহার করিব। পার্থিব বিষয়ন্তন আজারার ব্যবহার বিব্যবহার বার আজিব।

স্বিত্য অতিরভাবে অবাইত ভ্রম্বন ভ্রম্বরণ প্রয়েশ্য ব্যবহার বার ব্যবহার সাক্রিব।

স্বিত্য অতিরভাবে অবাইত ভ্রম্বন অব্যবহণ প্রয়েশ্য ব্যবহার পরক্রেক্স স্বালার ব্যবহার ব্যবহার স্বালার ব্যবহার স্বালার ব্যবহার স্বালার ব্যবহার স্বালার ব্যবহার স্বালার স্বা

इंडा करें क्रेडींड सांचा नरह, सांचा रन क्रेडींड हरे**ड** इंडा ভাৰার স্থিতি নির্ভর পরাস্থাতে, সাধক বাছাতে এইটি ব্নর্ভয় कतिया कठार्थ रश्टक शास्त्रन, ममुताब खेशनियदनव दमहे सिटक यह । चाक डेशनियाम छव श्रवादगाठना कतिए श्रिया मित्र व्यायात्मव এই লাভ হইয়া থাকে যে, আত্মা ও পরাত্মা বুগপং উপদ্ধির बिरम अक्षित्क छाड़िया आत अक्षित छेशनिक त्कान कारन हत ना ভাহা হইলে আমাদের প্রয়ত্ত্বে ফললাত হইল। একপে উপল্ভি বহিজ্ঞাৎ ও অন্তর্জগৎকে বা একেবারে বিলুপ্ত করিয়া ফেলে এরূপ আশঙ্কা করিবার কোন কারণ নাই, কেন না এতদবস্থায় পরাত্মার প্রাধান্তবশত: তিনিই দেখান তিনিই শুনান ইত্যাদি প্রতীতি আত্মাতে উপস্থিত হয়। ইহাতে এই হয় যে জগং প্রাত্মার অভা-चারে থাকিরা সাধকের প্রভীতির বিষয় হর। তাঁতাকে ছাডিয়া ছাত্র ভাবে উহার প্রতীতি হয় না। পরাত্মাতে বাস করিয়া নবা-ভিবাক্ত আত্রা তাঁহার বলে শরীবের চর্জাভিত্বদোষ অপনয়ন করে, ইবাই উহার মহত্ব। এই মহত্ব শরীরে অভিনিবেশবশতঃ অমুদ্ভির থাকে. দে আপনার অশক্তি অত্তব করিয়া শোকগ্রন্ত হয়। এ শোক তাহার চির দিন থাকিবার নহে কেন না সে অভিসম্বর আপনাতে ভগবানের মহিমা ভগবানের নিরমন অক্সভৰ করিয়া কুডার্থ ও ধরু কইবে। এরপ উপলব্ধি এবং বৃদ্ধি ষ্থন সভা, ভখন তাদৃশ উপলব্ধিতে ও যুক্তিতে আত্মা সত্যের রাজ্যে বাস अविन, अमाराव नरह। यथन এই त्रभेट हरेग उथन এই मछ। উপলব্ধির নিমিত উপনিষ্দের প্রাধ্নত্ব সূত্র সাধ্কের (अर्प्यत कांत्रण ।

_45



প্রাচীন ও নবীন যোগ।

क्रगटक श्रवाविकास मश्रवांग छ विरवांग मुद्दे बहेबा थारक। मराशांत । विद्यान, वाकर्षन । विकर्षन, विद्याद । मिनन, अ উভয়ুট নিবন্তর ঘটিতেছে। জগতের প্রত্যেক ব্যাপারে প্রকৃতির निवमाक्रमाद्र निवक करें विकक्ष कार्यत्र ममाद्रम रहेवा थेरिक। এরণ স্থান বধন বোগের বিষয় বলিতে উদাত, তথন আগ্রে বিয়ো-গেব বিষয় বলা সমূচিত। যোগ প্রয়োজন, এই কথা বলিবা-মাত্রই ব্রিতে হটবে, বিরোগ হইরাছে, বিচ্ছেদ হইরাছে। বিধােগ অবস্থিতি না করিলে যােগ আসিতে পারে না। যেখানে विरयान नाहे. त्रथान त्यान नाहे। त्यान अ विरयान, विरयान अ যোগ, এই রূপে বিয়োগান্তে ছাই বিভিন্ন বস্তুর একতা সংযোগ— বোগ। যোগের পুর্বে বিয়োগ কি তালাই অগ্রে বলা বাইভেছে। বিরোগ কাহাকে বলে ? যেখানে স্বাতস্ত্রা আছে, ভিন্নতা আছে, বিরোধ আছে, সেধানেই বিরোগ বর্তমান। পরমাত্মা তইতে জীবাত্মার বিরোগ ঘটলে সংসারের সঙ্গে দারা পুত্রের माल कीव शांका व्यावक हता माधन बाता ममुनत वक्षन किन করিবা সাধককে ক্রমে বোগে উপনীত হইতে হয়। বেখানে विद्धांत्र नाहे, त्रथात्न द्यांत्रभारञ्चत्र चात्रक हहेटल भारत ना । क्त ना वित (वान पाक, जाहा इहेटन (यानायूनामन क्या निर्द्धात्रास्त्र । देवत्रात्मा त्यात्मत्र स्थातस्त्र । देवतात्मात्र स्थित्रत्य

[·] जिप्रतित्र बार्याः नरवानज्ञाक अवस विकीव वक्षका !

আৰৱা বিৰোগ নুৰ্পূন কৰিবা থাকি। বৈৰাণা বিযুক্ত কৰে, বিজ্ঞিন কৰে, সংসাৰে আৰক্ষ জীবকে সংসাৰ হইতে বিজ্ঞিন কৰিবা লয়। অন্ত্ৰাগেই বোগ, বিৰাগেই বিৰোগ। সংসাৰে অন্ত্ৰাগ হইলে ঈশব হইতে বিৰোগ এবং ঈশবে অন্ত্ৰাগ হইলে সংসাৰ হইতে বিৰোগ ঘটে।

अकरण दमशा यां डेक, देवबारगात श्रादाखन कि ? जनवात्नव স্থিত-প্রমান্তার সহিত জীবান্তার বিচ্ছেদ ইইরাছিল। বিষয় ब्याभारत कावक नः नारत कावक स्त्रीव दनहे काकर्षण हिन्न कतिता भनवाव क्रेबात्तव माम याण मःशामन कक्र विषयवाणिकाव প্রতি নিস্পৃহ হইরা পড়িল। সংসার চিত্তকে দুঢ়বদ্ধ করিয়া রাশিয়াছিল, বৈরাগা উদিত হইয়া উহার অনর্থকতা দেশাইল। ঈশার হইতে বিচ্ছিন্ন হওরাই সংসারের সহিত যোগের কারণ। ঈশ্বর হইতে বিচেছদে সংসারের সহিত যোগ ঘটিয়াছিল, আবার সংসার হইতে বিচেছদে ঈশবের সহিত যোগের আরম্ভ হইল। फन्छः द्यथात्न विद्यांग त्यथात्न हे द्यांग, द्यथात्न विद्यांध **(मशास्त मियान कार्यश्रहाती। देवताना यथन मःमादित ध्रां**ड বিরাণ উৎপাদন করে, তখন তব্জ্ঞানের অভাদর হর। এই তব-জ্ঞান অভাণরের হেতু এই বে, বিষরের অসারতা, অস্থ্যুক্তি, হংধ-করন্ত, এই সকল দেখিয়া তৎপ্রতি বিরাগই সাধককে তত্ত্বাভ্যাসে निर्माण करत । এই चार्छाविक প্রশালী अवनवन कतिवाह (वाग-শাস্ত্রকারণণ এই তথাভ্যাসকে যোগের একটি উপার বলিয়া निर्द्धन कंतिबाह्यन । अन्त मन्छि डेशास्त्रत मर्था निवानमःयमकता এकটি উপার নির্দিষ্ট আছে। পরবর্ত্তী সমরে হঠবোলিগণ অন্ত ममुताब छेलाब लिबिहात कतिया ध्रहेडिटक व्यवलयन कवक विविध

অনিষ্ঠের মূল হইরাছেন। > মিনিট, কি > মিনিট, কি ২০ মিনিট, কি তারাহিক সমর নিবাস অবক্রম করিয়া রাখা বােগের। প্রেক্ত প্রকৃতি প্রবালী নহে। এরপ করিতে গিরা বিবিধ রোগ্র উপস্থিত হয়। অস্থা-ভাবিক প্রশালী অবলম্বন করাতে এরপ ঘটিবে তাহাতে আর

ভবাজাস প্রকৃষ্ট উপার। একণে দেবা যাউক, তদাজাস কি ? যে বন্ধ বেরাপ ভাষাকে তজ্ঞপে গ্রহণ ভন্মাভ্যাস। এই তৰাভাগে অভিনিবেশ হইলে বে বস্তুর সহিত যে সম্ভ্র প্রাক্তত, সেই বন্ধর সহিত সেইক্লপ সম্বন্ধ নিবন্ধ হয়। যে বন্ধতে চিত্ত অভিনিবিষ্ট রহিয়াছে, সে বস্তু নিত্য কি অনিতা, এ চিস্তা যথন উপস্থিত হয়, তথনই ভ্রাভ্যাদের আরম্ভ। বে পরিমাণে এই তবাভ্যাস প্রগাঢ় হয়, সেই পরিমাণে বৈরাগ্যের উদয় হয়। কি প্রকারে তত্ত্বাভাসের আরম্ভ হর, মহামতি শাকোর জীবনে আমরা দেখিতে পাই। তিনি রাজসম্ভান; রাজপ্রাসাদে বাস कतिया देकाशाय ऋरच कानव्यन कतिरवन, ना छाँवाय मान धानम হইতে বিষয়ের প্রতি বিভক্ষা দেখা দিল। পিতা বুঝিলেন, সম্ভা-নের বিষয়বিভূঞা উপস্থিত ; মতএব সংসারে তাঁহাকে বাধিরা রাবিবার জন্ম বিবিধ ভোগের সামগ্রীতে তাঁহাকে পরিবেটিত করিলেন; ভোগ বিলাদ ছারা আত্রষ্ট করিবার নিষিত্ত পুত্রকে नानाज्ञण चारमाप अस्मारन नृष्ठा गोलापि वाशास्त्र अमल जाबिरक বত্ব করিকেন। পিতা মনে করিলেন, এইরূপে পুত্তকে চিরদিন गःगात **भारक कतियां ब्रासिट्सन : किन्न गैकां**त्र सन विकारिक्स হইয়াছে, তাঁহাকে বিষয়নিগড়ে বান্ধিয়া রাখিতে কে সমর্থ ছইবে ৮

্ৰক দিন শাকা কুলবোলানে বাইবার সময় সহসা গুড়ি मर्दा रम्बिरमन, अरू दृद्ध कन्नि उक्तन्त्र, मखरीन, चनित्रन्त् मंत्रीय जीर्ग मीर्ग, कारमहर्गाछ, बाँड शांत्रग कतिया बालग्रंथ চলিতেছে। তিনি সার্থিকে জিজ্ঞাসা করিলেন, ইহার এরণ मना दिन हरेंग ? देश कि देशन कुनधर्य, ना मकनकि धहे न्मालक रहेर्ड रहेर्व ? नाविथ छेख्त कविन, मह्यामाव्यक জরানিমিত এইরূপ দশা প্রাপ্ত হইতে হয়। আপনারও धरे शृष्टे तरह, कुन्तत्र कांखि, ज्ञान नावना ভित्ताहिक इहेन। धरे व्रक्षत्र मना श्राश हरेए हरेरत । वृक्षामरवत्र आत कुल्पमकामान याख्या हरेन ना। त्योवत्नत्र भतिनाम कि, हेरा वृक्षित्छ भातिना আর তাঁহার ভোগে অভিলাব হইল না। কোন বাজিতে তৰ্জানের উদ্রেক হইলেও সংসার নানাপ্রকার প্রলোভন **(मधोरेश आवात डाराक डेग जुनारेश (मत्र। करतक मिन** ষভীত হইলে শাকোর আর সে ভাব রহিল না। আবার चात्र এक मिन मभीत्रशामवान वाहित हहेता शास तहिवानन. রোগগ্রন্ত এক বৃবক চলচ্ছজিতীন হইয়া কাঁপিডেছে, মুখ विवर्ग स्टेबा शिवाएस, भवीत अविक्रियावर्णय स्टेबाएस, अवस्म শিরাসমুদার দেখা যাইভেচ্ছে, বিলুত্রদ্বিত বল্লে পরিবৃত্ত রহি होष्ट्र। नात्रथिक विकाना कतितन, ७ बारात कि ? नात्रथि निम, त्रारम चाकाल रहेशा हेशत धारे मना, चाननात्रश अक मिन खड़े मणा क्षित्। स्वता क वाधित हिलाव कांडात मत्न देवतात्मात छेनत हहेन : किन्न किन्न कान शहर आवात विकुछ स्ट्रेशन । आत अक विवन वाहित्त शंभन कतिया प्रिक-(गन, बहार गांविक बढाम्हाविक त्वर बहेश क्क क्लि त्वाक

तमन कतिराउद्या वसूवर्ष द्वामन कतिराउद्य, दक्ष वा श्रुवाम অবশৃতিত হইতেছে, সঙ্গিগণ সঙ্গে সঙ্গে অধ্যেমুখে গমন করি (अट्डा गांका गांत्रशिरक विकास कतिरमन, गांत्रश्व. व छत्रानकः দশ্রের মর্ঘ কি ? এ সকল লোক এরণে আর্তনাদ করিয়া শোক-সাগরে ভাসিতেছে কেন ? সার্থি উত্তর করিল, আপনি আর এক দিন যে বাজিকে ব্যাধিগ্রস্ত দেখিরাছিলেন, ভাতার মুতা হইরাছে। বন্ধবর্গ তাহার মুত্রপরীর শাশানে লইরা गाहेट्ड । पृणिगीट जना शहर कतिरम अक मिन ना अक मिन সকলকেই এই পথে গমন করিতে হইবে। মৃত্যুর হক্ত হইতে পরিত্রাণ পাইবার কাহারও সাধা নাই। কাল্ফ্রে মৃত্যু আসিহা উপস্থিত হয়, আত্মীয় স্থান বন্ধুবান্ধনকে কাঁদাইয়া সংসারের মারাপাশ হইতে ছিল্ল করিয়া মাতুষকে উহা অজ্ঞাত দেশে লইরা যার। আপনারও এই পরিণাম। শাকা জ্বরা ব্যাধি ও মুতার চিস্তায় একেবারে অভিতৃত হইয়া পড়িলেন। সে রাজ-প্রাসাদ, সে ভোগা সামগ্রী, সমুদার তাঁহার নিকট বিষ্কুলা বলিয়া বোধ চটতে লাগিল। আজ যাতা মনোহর আজ যাহার क्छ मन काकून, मुज़ाक्रभ विवधत वानिया जाहारक मःनन कतिर्दर, তাহাকে বিনাশ করিবে, জরারাক্ষ্মী আদিলা সমুদার কান্তি হবৰ कतित्व, वाधित्क त्नर अवगत्र रहेवा शिक्षत. এই किया कतित्व করিতে তিনি অধীর হইলেন। এমন কি কোন উপায় নাই, বাহাতে স্বরা মৃত্যুকে অতিক্রম করিতে পারা বায়, এইরূপ চিস্কার তিনি প্রবৃত্ত হইলেন। সে চিন্তার বিশেষ কোন ফল ফলিল কি ना कि स्नातन, किन्नु छेहा त्य निक्तन हत्र नाहे हेहा सिन्छर, अस्त्रधा শেব দৃক্তে তাঁহার সম্পূর্ণ পরিবর্ত্তন কেন ঘটিবে ?

जनस्त्र गांका अक मिन शिष्यामा अक व्यगांकवृति किञ्चाक चराणांकम कतिरानन । देनि चिक बीत अवः हित्र, इःरवन्न रमन्यात्वत्र हिरुष देशाल नारे, क्याम खनाय. खक्कि श्रेति। **धरें लोया मृर्खि (प**विवासांख तुक मात्रशिक विकास क्रिता व्यवगढ रहेरणन, हैनि छिक्, मरमास्त्रत मात्रा পরিত্যাগ করিয়া नाखिशास्त्रत चारत खेनमीड ; जना मृङ्ग नाधि हैशास छीड ক্ষিতে শীরে মা; ইনি দর্মদা অন্তরে আনন্দদন্তোগ করিভেছেন, कणाकात्र अन्त हैनि हिन्दिक नरहन : काकारणत्र विद्यालय छात्र हैनि वित्रभुक, मश्मात रहेला विवरण। এই अवका माछ कतिवात জন্ত শক্তি সংসার ছাড়িয়া রাজবেশ পরিত্যাগ করিয়া ভিক্রেশ ध्यवणश्चन क्रतिरम्म. छेनात्रीन छाटव विष्ठत्रभ क्रतिरक श्वतुत्व হইলেন। ব্রদ্ধের এই আচরণের ভিতরে তত্তাভাাদের প্রণালী নিবিষ্ট রহিরাছে। তিনি জ্ঞানদৃষ্টিতে যাহার সহিত যে সম্বন্ধ ভাছা বুঝিলেন, বুঝিয়া অনিভা বিষয়ের সহিত দল্প ছেদন করি-শেল। এই পর্যান্ত করিলাই তিনি নিবৃত হইলেন না ; তিনি এমন काम वस्त्र अध्यस्त कातृत हरेलन याहा हाती अवः निका।

প্রত্যেক বস্তুর তত্ব আলোচনা করিরা উহার অনিতাতা কণ্ডসুবতা বিচার করা, এ বস্তু নিত্য নর, উহার বিবিধ দোব আছে, উহা আজ আছে কাল নাই, ইহা দির করিরা বাহার সহিত নিভাকালের সম্বন্ধ, অনতকাল বিনি বর্তমান থাকিবেন, কেই বাঁহার বিনাশ নাখন করিতে পারেরে না, বাঁহার প্রতি প্রেবে বিরোগ নাই, কিছেদের সভাবনা নাই, তাঁহাকে অব্যেবৰ, তৎপ্রতি সম্বন্ধ্যাপ্য,—তম্বাভাস ৷ এইরূপে অনত ভূমা নিত্যাবিদ্যানান পরমেশ্রের চিত্তাভিনিবেশ করিতে সংসারের সম্বন্ধ

तिक्रा इहेबा बाब। बाहाएल मकन एष्टे भगार्थ द्विकि कृति-তেছে, এই তৰ্জান বারা তাঁহাতে চিত্ত অভিনিষ্টি হয়। এট অভিনিবেশে নিবৃত্তি আসিয়া উপস্থিত কর। এ সমর্বের চিন্তা জার কিছুই নয়, কেবল সম্বন্ধ নির্ণয়। যোগার্থী তথন বলিতে থাকেন, "ডুমি ভাই, ডুমি প্রিয়তম পুত্র। ভোমাদের" প্রতি আমার এই সেহ নিতা কি অনিতাণ তোমরা আমার চিরকালের সঙ্গী কি না 🕈 বখন আমি মৃত্যুমুখে পভিত হইব, ভখন তোমরা আমার কি করিবে ? সে সমরে বখন আমি 'ছা ছভোছি' করিতে থাকিব, তখন ভোমরা কি আমার সার্না হইবে ? আমি যখন অস্তিম সমরে উপনীত হইব, তথন কি ভোমরা আমার সহায় হইবে ? পাপপিশাচের কবলে পড়িয়া যথন আমি মরিতে বসিব, তথন তোমরা কি আমার উদ্ধার করিবে ? পাপের আলা হরণ করিবার ক্ষমতা তোরাদের নাই। নিতা কাল তোমরা আমার সঙ্গে সংযুক্ত থাকিতে পার না। আজ না হর কাল ভোমরা আমার পরিত্যাগ করিবেই করিবে।" এইরূপে বোগার্থী অনিতা সংসারের অনিতাতা যতই চিস্তা করিতে লাগিলেন, ততই উহার স্থিত তাঁহার বিচ্ছেদের আরম্ভ হইল। এত দিন সংগারের সহিত যোগ ছিল, এক্সনে সংসারের সহিত বিরোগের সময় উপস্থিত। এ সময় বোগার্থী বলিতে প্রবৃত্ত হইলেন, "হে বন্ধু বাছৰ সম্ভন আত্মীয়গণ, এত দিন তোমাদের সলে সংযুক্ত ছিলাম, এখন আর ভোষাদের সঙ্গে বিযুক্ত না হইলে প্রথা-স্থার সহিত সংযোগের সম্ভাবনা নাই। এত দিন ভাঁছার সহিত বিবৃক্ত ছিলাম, ভোমাদের সহিত বোগ ছিল। ভোমাদের মারার ज्ञिता मःमारबद वक्षक शिव वक्ष काम कतिता श्रीवन किंगिर-

তেছিলাম। প্রমেশ্ব নিতাবন্ধু, সমুদার স্থশাবিবর্ধনে সহায়।
তোমাদের সজে বিরোগ না হইলে তাঁহার সহিত বোগ হাটবে
না। তোমাদের সভিত বিরোগ বিনা দেখিতেছি তাঁহার সহিত
যোগের সম্ভাবনা নাই।" ফলতঃ এক দিকে যোগ আর এক
দিকে বিরোগ, ইহাই অভাবের নিয়ম। যাহারা ঈশ্বরকে বিদার
করিয়া দিরাছে, তাহারা তলিপরীত সংসারের সহিত যোগ
সংস্থাপন করিয়াছে। এইরূপে বে দিকে বোগ ঘটবে, তাহার
অন্ত দিকে বিরোগ ঘটবেই ঘটবে।

তত্ত্বাভ্যাদের পর ঈশবপ্রণিধান উপস্থিত হয়। ইহাই বোগের তৃতীর অবস্থা। প্রথমে বৈরাগা, বিভীয় অবস্থায় ভবাভ্যাস। এই তন্ধান্তানে জগতের কণ্ডকুরতা, সংসাবের অনিভাতা, মায়া, মোহ যত কণ জনতে দৃঢ় মুদ্রিত না হয়, তত কণ ঈশ্বরপ্রশিধান ছয় मा। তত্বাভাদের পূর্বে বিষয়বাণিজাবাপারে বোগ ছিল, অভিনিবেশ ছিল, একণে তত্তাভাদের সকে সঙ্গে ঈখরে অভিনিৰেশ ছইল। সংসারের দিকে বিরোগ, আর এক দিকে त्वार्ग, चलात्वत नियमहे अहे। यथन मःभात मह त्यार्ग, ज्थन क्रेचन गर विद्यांग धवः यथन क्रेचन गर वाग, उसन गरमान गर विद्यात । श्रामिश्राम क्रेचेत्र मह द्यारात्र छेलात्र । वह स्थानिश्राम নানা সাধক নানা উপায়ে অর্জন করিয়াছেন। বোগণাত্তে विविध छेशारात कथा निविष्ठ चार्छ, तम मम्नाव ध्रेशात बारमाहमा कतित्रा ममश्रक्ता अवाबन नाहे। विवास विज्ञक इड्डा, खेशात व्यनिकाका समयक्षम कृतिया स्वरंदित मित्र मन कित्रिन, উहात ठाक्नाल धार्मारक हहेन । नकरनत मून विनि डीहात विरक वथन मन कितिया, छथन विवत्रवाांभारत कात

कि क्रेम कायब शांकिएक शारत ? ममुमात वसत्मत कात्रश्रक ছ:খের মৃণ বলিয়া জানিলে তৎপ্রতি বিভূষা উপস্থিত হয় ৷ এর বিভ্রফার বৈরাগা। অস্তান্ত লোক আনারে আসক্তি होत्रहार्श करत. त्रमनात्र गाममात्र व्यावक श्रहेत्रा सुनाशास निश बाटक। किन्त त्यांनी कि करतन ? त्यांनी भन्नीत्रशाम (नव निमित्त चाहाब करतन, चन्छ উम्मन्त छाहाब नाहे। हिन উদাসীন হইরা আহার করিতেছেন, স্মতরাং ইয়ার আহারে জাসক্তি হর না। সংসারে থাকিরা যোগী যোগাভাাস করেন. অথ্য সংসার তাঁহার কিছু করিতে পারে না। তিনি সংসার-চিস্তায় বিরত, স্মৃতরাং তাঁহার চিত্তবিকার নাই। তখন আৰু লালসা আসিয়া তাঁহাকে বিক্লিপ্ত করে না, বাসনা আরু তাঁহাকে পথন্ত করিতে পারে না। স্বভাবের নির্মে চক্র যেমন উঠি-ভেছে, বায়ু বহিভেছে, হুর্যা কিরণ দিতেছে, সেইরূপ ভিনি ৰাভাৰিক ক্ৰিয়া নিশায় করেন, অথচ ইন্সিয়ের পরিভৃথি ইইডে ' ৰাসনাজনিত বিমৃচ্তা হইতে সম্পূৰ্ণ বিরত থাকেন। ভিনি ভনিয়াও শোনেন না, দেখিয়াও দেখেন না, জোগা বস্তু ভোগ कतिवाद (खांश करतन मा । हैशाक कांधानियक (मधिया लाहक बरन, होन द्याशञ्चे हहेबाहिन ; श्वामदा द्यमन कावा कति, हेनिल ভো ভেমনই কাৰ্যা করেন। ভাহারা কানে না যে, যোগী কাৰ্যা कतिया करतन ना। त्यानभारत विधिष्ठ चारक, यक मिन त्यक শাহে, ইলির আছে, প্রকৃতির সহিত সম্বন্ধ আছে, তত দিন कारी कतिए बहुद्व। अहे कारी क्षेत्रत गृह विक्रित हहेगा नहरू. नेपदा मनुषात्र व्यर्गगर्भक উशत्र व्यक्ष्यांनः द्यागमाद्य देशहे सेवत श्रामधान वांगता निर्मिष्ठ श्रहेबाट्या

ি দিন দিন অধিকতর ইখনে আক্রষ্ট বঙরা প্রণিধানের ফল। এই প্রণিধান হইতে আর এক অবস্থাতে বোগী উপনীত হন, দে व्यवद्यात नाम चक्राण व्यवद्यान । जैयत श्रामिशास त्यांनी व्यापनात খভাব, আপনার প্রকৃতি বৃঝিলেন। যখন ঈশবের শ্বরূপে চিত্ত অভিনিবিষ্ট হইল, তখন আপুনি কভ কুল্র তাহা হ্রমুদ্দম করি শেন; অনস্ত চিচ্ছক্তির মধ্যে আপনি ভূবিরা গেলেন। এখন আর প্রকৃতি কড় প্রকৃতি নাই, বোগী সমুদার জ্ঞানবস্তুতে পরি-পূর্ণ দেখিলেন। এইরূপে ঈশরপ্রণিধান হইতে পরপে অভি-নিবেল, স্বরূপে অভিনিবেশ হইতে প্রকৃতির সহিত সমাক প্রকারে বিয়োগ উপস্থিত হইল। ঈশবে অভিনিবিষ্ট না হইলে, আপনাকে ঈশর হইতে অশ্বতম্ব জ্ঞান করিতে না পারিলে ঈশরে স্থিতি इब मा। এই कारण केचरत शिक्षि इडेबा यथन किख वाहिरतत मिरक ধাবিত হয়, তখন বুক্ষ শতাদি দেখিতে গিয়া উঠার মধ্যে ঈশ্বরা-বিৰ্ভাব উপলব্ধি হয়। এইরপে সমুদার বস্তু ঈশব্যভিনিবেশের टक्क रह धर मिन मिन क्षेत्र गर पनिष्ठ गणक शामिल हह। शृक्काल यक्ता व्यवसामहे त्याश हिन ; किन्न এहे यक्ता व्यव স্থান দ্বিবিধ ছিল। বিরোগ হইতে যোগ আরম্ভ করিয়া স্থাপনি ৰাহা তাহা কানিয়া আপনাতে অবস্থান, বিভীয় স্বন্ধপের ঐকো ঈশবে ছিতি। বাঁহারা প্রথম পক্ষ অবশ্বন করিতেন, তাঁহার। ষ্টবরপ্রশিধান উপায়রূপে এছণ করিয়াও জীবের আপনাতে আপনি স্থিতি লক্ষা স্থলে রাখিতেন।

ু পুরাকালে বোগিগণ মুক্ত পুরুষে অথবা ঈর্থরের অরুপে চিক্ত ছাপন করিতেন। এই উত্তর প্রকারে চিত্তনিবেশের বিধি থাকিলেও মুক্ত পুরুষে চিত্তছাপদই অধিকাংশের অনুষ্ঠিত পদ্বা

(मधिरें भावता यात्र। योजुन विषय लाटक किसा कतिरव, स्वतन मिक वा वस्त्र अकृष्टि व खनावनि ভावित्त, त्म त्मरेक्षण व्यवशालक চ্চবে। স্থতরাং এই মৃক্ত প্রবে চিত্তখাপনে বোগীর চরিত্র ও मन (व डेब्रड इहेरव, तम विवदंत आंत कान मत्मह नाहे। मुक প্রবে চিত্তপাপন কেবল আর্থাধোগিগণের অফুটিত পছা নতে, ট্রার প্রচার সর্বজেই বেধিতে পাওয়া বার। জীই সম্প্রদারভক্ত ব্যক্তিগণ প্রীষ্টেতে সমস্ত চিত্তা অভিনিবিষ্ট করিয়া থাকেন। নির্মাণের আশার বৌদ্ধগণ বুদ্ধের সহিত বোগস্থাপন করিতে বছু করেন। কিন্তু দেখিতে হটবে, এরূপে চিত্তত্বাপনে চিত্ত প্রশাস্ত হর বটে, কিন্তু ঈশরে স্থিতি হর না। ঈশরকে গ্রহণ করিবার क्य वर्खमान गुरात खानानी खातीन यागीरनत खानानी इटेरफ স্বতন্ত্র হইরা পড়িরাছে। জরা মৃত্যু হইতে নিছুতিলাভের উপার তখন কিরুপ ছিল, এবং এখনই বা কি আকার ধারণ করিয়াছে দে বিষয়ও আলোচনা করা কর্ত্তবা। এগনকার বোগের নৃতন माकात विकाजीत नरह, अजाजीत। अञाजीत विकाजीत विकाजीत অমোদিগের পূর্বভন যোগিগণ যে উপায় অবলয়ন করিয়া খোগ সাধন করিতেন, ভাগারই ক্রমবিকাশে এই নুভন যোগ। প্রাচীন হইতে নৃত্রের উদ্ভব। প্রাচীন কালে যে কোন বস্তুতে চিত্ত অভি-निविष्टे कविवा छेशत ठाकना चलनवन करा छत्मना हिन । छाकना মণনীত হইলে আত্মা আপনাতে আপনি স্থিতি করিতে সমর্থ হয়। আপনাকে আপনি না জানিলে ঈশ্বরকে জানিতে পার্য व्यास्त्र, अ बस्त शांत्रीन रागांक नुष्ठन शांत्रत्र केंद्रांतक वनिएक হইবে। প্রাচীনকালে মুক্ত পুক্রে চিত্ত অভিনিবিষ্ট করিয়া भागनात्र चत्रभञ्जान महरक छेननकि हहेछ । वर्खमारन व धानानी

স্ক্ৰি পরিবর্তিত হইরাছে। ঈশ্বরঞ্জিণিধান বর্ত্তমানে গ্রীধার
লাভ করিরাছে। আমরা ঈশ্বর চিতা করি, ঈশ্বর মনন করি এ
ঈশ্বরের স্বশ্ধণে চিভাভিনিবেশ করিয়া থাকি। পূর্ব্ধ কালে বুর
ভূত, ইন্দ্রিরুগণ, প্রোণ, বৃদ্ধি আদিতে চিভ নিবিষ্ট করিয়া জয়ে
সমূলারের অতীত আত্মাতে গিয়া বোগী উপস্থিত হইডেন; এখন
আত্মা হইতে পরমাত্মাতে গিয়া একেবারে সাধক উপস্থিত হন।
ফল্মপে বিচার করিলে দেখিতে পাওয়া যায়, প্রাচীন কালে
ভূতাবিতে চিত্ত অভিনিবেশ তভাভাগে জন্ম অবলম্বিত হইড।
জনাথা 'নেতি নে'ত' করিয়া পরিলেবে আত্মাতে গিয়া উপস্থিত
হইয়া ঘোগের পর্যাবদান কথন হইতে পারিত না। জনস্ত মহান্
ভূমা প্রার্থে এই আত্মাকে নিমগ্র করিয়া প্রাচীন যোগগিণ কৃত্যার্থ
হইতেন, বর্ত্তমানে আমরা এই জনস্ত মহান্ ভূমা প্রার্থ হইডে
প্রথমই বোগারন্ত করিতে অধিকারী হইয়াছি।

এই নবীন বোগ এক ঈশ্বরে অভিনিবেশ হইতে উপস্থিত হুইবাছে। এ বোগ আমাদের গুণে সিদ্ধ হর নাই, ইহা পূর্মে। তন বোগের অবশাভাবী ফল। ৬০ বংসর পূর্মে যিনি এ দেশে অক্ষন্তান জনসাধারণের গোচর করিলেন, বলিতে হুইবে ঠাহা হুইতে এ যোগের স্থপ্রপাত হুইরাছে। তিনি ক্ষম্পী যোগশক মুখে উচোরণ করেন নাই, কিন্তু অন্ত সমুদার উপার দূরে পরিহার করিয়া এক অভিতীয় ব্রহ্মকে বাজ্বগণের আ্লারণীর করাতে এ বোগের মূল ভাঁছাকেই বলিতে হুইবে। পূর্ম্বতন অধিগণ ব্যাপের ফ্রিডি নির্দেশ করিয়াছেন। স্থভাগ এ বোগ প্রাচীন বোগের ভূমি পরিহার করিয়া নৃতন ভূমির উপরে সংস্থাপিত এ কথা আমারা বলিতে পারি না। আজ্বর্থাবে গুণে এখন বালক

श्वा देक এই বোগের ফলভোলে সমর্থ। अन छ वहान ভূষা পর-হলে চিত্তনিবেশ এখন প্ৰথম হইতে সকলে অভ্যাস করেন। এখন আর কাচারও পরত্রকো চিত্তনিবেশ ভিন্ন উপান্যস্তর গ্রহণ विविद्यात लाराक्रम देव मा । इः विदेश विविद्य थेटे देव, थेटे बहक्रम যোগপ্রণালী আমাদিগের হস্তগত থাকিতেও ব্রাক্ষণমান্তের কোন কোন লোক ভাত্তিবশত: পশ্চাকার্যন করিতেছেন, প্রাচীন অস্থা-ভাবিক যোগের পথ অবলখন করিতে প্রবৃত হইয়াছেন। রাজা রামমোহন ব্রহ্মজান পুনরুদীপন করিয়া অনস্ত মহানু ভূমা প্র-त्मचेत्रक श्रारमत श्राम कीवरमत कीवनकरण श्रामानिशात निकर्षे উপস্থিত করিলেন। ষিনি আমাদিলের প্রাণের প্রাণ হইরা নিশ্বা-শের নিখাস হইয়া অন্তরে বাহিরে বিচরণ করিতেছেন, তাঁহাকে লাভকরিবার নিমিত্ত হঠবোগের আশ্ররগ্রহণ করিতে হইবে. নিখাদ প্রখাস অবরোধ করিতে হইবে, বিবিধ অস্বাভাবিক প্রণা-লীর আশ্ররগ্রহণ করিতে হইবে, এ কি ভয়ানক কথা !! পূর্ব্ব-কালের যোগ যেথানে শেষ হইরাছে, সেই শেষ ভূমি—চরমভূমি হুইতে নবীন থোগের আরম্ভ। তঃথের বিষয় এই যে, ইহা কেছ কেই বুঝিতে না পারিয়া পরিতাক্ত ভূমি মধ্যে বাহা নিকুই ভাহারই আশ্রয়গ্রহণ করিভেচেন। সাক্ষাৎসম্বন্ধে ব্রকোর না করিরা অন্ত প্রণালীতে যোগসাধনকরিবার নিমিত্ত প্রবাস रव वृथा ममहत्क्रण এवः विश्वमञ्जूण, हेश ভाগवजानि भारत न्माहे উলিধিত আছে। অধিক কি, যোগমধ্যে অস্বাভাবিক প্রণালী আছে বলিরা পূর্বভন ভক্তগণ যোগপথপরিহার করিরা ভক্তিপণ আশ্রর क्तिशाह्न। এই ভক্তির পথে মুক্ত পুরুষগণের চিত্তন মনন প্রধান। বর্তমানে নৃতন বোগে ভক্তিধোগও ব্রহ্মধোগে স্থলিক হইরাছে।

এक जैबत्रश्रीनिधान इटेंटि कि श्रीकारत ममुमात्र मिक्क हत. व्यामारमञ्ज नकरणत्रहे हेहा छान कतिया तुवा छैठिछ। नवीन (याश आमत्रा वृद्धि छ-विहात्रश्रुर्वक अधिकात कति नाहे. हेहा স্বাভাবিক গতিতে আমাদিগেতে উপস্থিত হইরাছে। যে দিন क्तार बन्नाकान द्यान शाहेन, त्मरे पिन श्रेटि मुक्तशुक्रवितः দরে প্লায়ন করিল। কি জানি বা অবতারগণ এজের স্থানা धिकांत करतन, এই ভবে बक्रवानिशन मर्स्व धकारत छै।शिनिश्व সংস্রবপরিহার করিলেন। ব্রন্ধচিন্তা ব্রহ্মমনন ব্রন্ধে চিত্তা-ভিনিবেশ, ত্রাহ্মগণের ইহাই সাধনভন্ধনের বিষয় হইল। অনন্ত महान् जुमा. जेचत यथन अन्तरांगीत श्रुगत्र अधिकात्र कतिरागन, তথন তিনি আপনি যে কিছুই নন, ইহা দেখিতে পাইলেন। যথন আপনি কিছুই নই, এই দৃষ্টি স্থিরতালাভ করিল, তথন তাঁহার ভিতরে গোতম ও ঈশা জন্মগ্রহণ করিলেন। প্রথমতঃ তিনি এই স্স্থান্ত্যকে চিনিতে পারেন নাই, কেন না তখনও তাঁহার আমিত্বের লেশ ছিল। ঈশ্বরের আবির্ভাবে 'আমি' কুত্র হইয়া গেল বটে, কিন্তু কুদ্র হউক, তবু সে 'আমি' রহিল। যখন बक्रवामी, ध स्नामि तक, धरे विषया श्रुक्त भनिर्दिश क्रिक्ट छात्र छ इहेरनम, जबन मिथिरनन, এ आभित ममुनाव श्राद्वीक मिनुल हहे-बाह्न, देशक जात युक्त देखा नारे, जबन जिल सानितन, अ আমি আর কেহ নহে, গৌতম ও ঈশা। তিনি দেখিলেন, ঈশ্বর একা তাঁহাতে আবিভূতি নহেন, তাঁহাতে ভাঁহার সম্ভানগণঙ অবস্থিত। এই সন্তানগণ সাধকের সঙ্গে অভিন্ন হইরা বান, সাধক সম্ভানগণসম্ভৱে অবৈতভাৰাপর হন। ভগবানে অকি-क्षना छक्ति इहेरन स्वरंगन चानिया त्म क्राय वान करतन,

_{গা}গব⊋ও এ কথা বলিয়াছেন। কেন না উহাতে উলিধিত আছে,—

'বভান্তি ভজিতগৰত।কিক্না দর্মেড'ণেতত নমানতে ত্রাঃ । হরাবভক্ত কুতো মহদ্ভণা মনোবংশনান্তি বাবতো বহিঃ ॥

শ্বাহার ভগবানেতে অকিঞ্চনা ভক্তি আছে, তাহাতে দেবগণ সমুদার গুণ লইরা আসিয়া বাস করেন, হরিতে অভক্ত
বাক্তিতে মহজ্জনগণের গুণ কোথা হইতে আসিবে,সে যে মনোরথযোগে বাহিরে অস্থিমরে ধাবিত।" ভগবান ও ভক্ত উভরে
মিলিত হইরা নবষোগীর আমিখের মূলছেদন করিলেন। এক
আমির ভিতরে হই আমি। এক আমি শ্বরং ভগবান, আর
এক আমি জীব। ভগবান প্রকাশ পাইলেন, জীব কৃতার্থ হইল,
কিন্তু এই জীবে 'আমি ভক্ত' 'আমি দাস' এ অভিমান রহিল।
বৈশ্ববগণ এই অভিমানের প্রশংসা করেন, তাঁহারা বলেন, এই
অভিমানে জীবের বন্ধন হয় না। নবীন যোগ এ আমিছও
অবশিষ্ট রাখিলেন না। এই আমিছে ঈশ্বরের সন্তানগণকে
দেখিরা 'আমি ভক্ত' 'আমি দাস' এ অভিমানও নবীন যোগী
দূরে পরিহার করিলেন।

ভক্তিতে চৈত্ত যথন প্রমন্ত হইতেন, তথন বৃক্ষ নতা প্রভৃতি সম্পারে তাঁহার ইইদেবতাকে দর্শন করিতেন। কথন কথন বা ভগবদ্ভকাগণের ভাবে মুদ্ধ হইরা তাঁহাদিগের সঙ্গে এক হইয়া যাইতেন। বৈক্ষবগণ এই শেষ ব্যাপার সক্ষা করিয়া বিশির্ভেন:—

'बाविक्'र मरमाइटकी उसकि फःचक्रशकाम्।"

ক্ষাবের নিজ্য ভাব মনোরন্তিতে আবিভূত হইলা, তং.

ক্ষিণাবালি হয়।" স্বির সর্বলে বিদ্যানা, তিনি আমাদিনের

কাণ, আমারিপের শক্তি ও বল, তাঁহার সত্রে যোগ নিতাগিছ।

কবে বে বিরোগাস্থতন হয়, তাহা অজ্ঞানতাজক্ত অবিদ্যানিনিছ।

কিষরবাননার চিত্ত মোহে আজ্ঞ্ম থাকে বলিয়া নিতাবোদসভেও যোগাস্থতন হয় না। ঋষি-মহর্ষি মহাজনগণ তক্তগণসহরে

করপ কথন বলা যায় না। তাঁহাদের সক্রে একগাম্পুত্র হায়
সভাস্কক না হয়, বিজ্ঞানসিজ না হয়, তাহা হইলে কেবল ভাবকভারে অহুরোধে আমরা এরপ একগাস্থতন করিতে চাই না, কেন
না যাহা সত্য নহে, বিজ্ঞানসিজ নহে, তাহা হইতে বিবিধ কুসংকার ও অযুক্ত ধর্মের অভ্যানম হইবে। অতএব আমাদিগকে
দেখিতে হইতেছে, বিজ্ঞানসিজ প্রণালীতে ইহাদিগের সহিত্ত
আমাদিগের একতা আছে কি না ?

আমরা এ কথা স্বীকার করিতে পারি না যে, মান্ন্র যথন প্রথম জন্মগ্রহণ করিরাছিল, তথন সে সম্পার শক্তি সম্পার ভাব লইরা জন্মগ্রহণ করিরাছে। আজও বে সকল বর্পর জাতি আছে, তাহাদিগের বিষয় আলোচনা করিলে দেখা যায় বে, তাহা-দের আজও অনেক ভাব ও শক্তি প্রফ্টুত হয় নাই। মনে করিয়া লওয়া যাইতে পারে যে, যথন জ্ঞানাদির উত্তিদ হর নাই, সে সমরে সকল মান্ন্যুই এই বর্জরগণের ক্রায়, বা তদপেকা হীন ছিলা জনসমাজের মধ্যে ঈশবের সাক্ষাৎ ক্রিরাতে ক্রমে জ্ঞানাদি প্রফ্টুত হইরাছে। এক এক ব্যক্তিতে ঈশবরের বিশেষ ক্রিয়া প্রকাশ পাইরা পরিশেষে সেই সেই ব্যক্তি হইতে জনেক লোকের মধ্যে ঐ ক্যানাদি প্রবিষ্ট হইয়াছে। এই সকল বিশেষ

ক্লি সেই সেই জ্ঞান ও ভাবের সহিত নিতা সংযুক্ত হৰীয়া हिताहरून । छीरात्मत त्रक्तमाःत्मत्र तम्ह विमष्टे हरेश गिसाहरू. ন দেহের আর পুনরুথান নাই, কিন্তু তাঁহাদের ভাবমরী আমান শক্তি বিনষ্ট হয় নাই, উহা মানবসমাজের মধ্যে জীবত শক্তি হইয়া প্রবিষ্ট হইয়া রহিয়াছে। আজ যে শি**ত জন্মগ্রহণ করিল**, ঐ সকল শক্তি তাহার আত্মার উপাদান হইল। এই সকল উপা-नानरक नाधात्रभण: উপযোগিতা नाम दन उम्रा इहेना थाटक। এই সকল উপাদান উপযুক্ত অবস্থামধ্যে স্থাপিত হইলেই আৰু-টাকার ধারণ করে। এই উপযুক্ত অবস্থা কি ? উপযুক্ত অবস্থা রুশুরে চিত্তাভিনিবেশ। যখন জীব ঈশ্বরে অভিনিবিষ্ট হয়. তখন সে কালদেশের অতীত ভূমিতে গিরা উপস্থিত হয়। জীব জ্ঞান দারা ঈশবের জ্ঞান, প্রেম দারা ঈশবের প্রেম, শক্তির দারা ঈশবের শক্তি, পুণা ঘারা ঈশবের পুণা ধারণ করে। যদি ভাহাতে এই সকল মূলেই না থাকিত তাহা হইলে ঈশ্বরের সহিত তাহার যোগের কোন সম্ভাবনা ছিল না। সাধু-মহাজন-ঋষি-মহর্ষি-গণের যে সমুদার ভাব আত্মাতে উপযোগিতাক্সপে বিদ্যমান, সেই সকল ঈশবে স্থিত সাধু-মহাজন-পামি-মহর্ষিগণের সঙ্গে একতা-সাধনের পক্ষে সহায় হয়, কেন না সে সমুদায় না থাকিলে আমাদের পক্ষে তাঁহাদিগের পরিচয়লাভ কোন প্রকারে সম্ভবপর হইত না। অধ্যাত্মহোগে ইহাদের সহিত আমাদের যত পরিচয় रव, তত वाहित देखिहारम छाहामिरभन द्य कीवन वर्निज आहि, তাঁহাদিগের উক্ত যে সম্দায় সত্য লিপিবদ্ধ আছে, তাহা আমা-निरात क्रमबक्तम क्र धवः तम मकन आमानिरात जीवरमत সহিত একীভূত হইয়া য়ায়। এই প্রণালীতে পূর্ববর্তী ভক্ত-সাধু-

মহাজন-ও-খবিগণের পরিচরলাভ এমনই সতা বে, এ বিষুদ্ধ আমি দৃঢ়তার সহিত সাক্ষ্যদান করিতে পারি। মহর্ষি ঈশাকে আজ আমি অতি পবিএচরিত্র পরমযোগী বলিরা গ্রহণ করির রাছি। তাঁহার জীবনী ও তাঁহার উক্তির আধার বাইবেল এখন আমার নিকটে অতীব শ্রেষ্ঠ গ্রহ। এক সমরে মহর্ষি ঈশাকে অতি কদর্যাচরিত্র, বাইবেল সর্বাণ ভ্রমাত্মক বলিরা এ উভরের সংস্পর্শে আমার অকচি ছিল। কিন্তু বখন আত্মার অবস্থা ভগখানের ক্রপার পরিবর্তিত হইয়া গেল, তখন সেই ঈশা, সেই ঈশার জীবনী, সেই ঈশার উক্ত সতা, নৃতন ভাবে হলরকে স্পর্শ করিল। তখন ব্রিতে পারা গেল, ঈশ্বর বে ঈশাশক্তিকে জনসমাজের আত্মার উপাদান করিরাছেন, তাহার কোন দিন বিনাশ নাই।

ঈশবেতে আমরা ও সম্পার বিখ নিতা বিদামান। যত সম্পার অমর আত্মা তাঁহাতেই নিতাকাল স্থিতি করিতেছেন। তিনি আপনার ভিতুর হইতে বে শক্তি উত্তুত করিরাছেন, তাহার কোন দিন বিনাশ নাই। ঈশবের অবিনাশিত্ব হইতে এই সম্পারের অবিনাশিত্ব উপাছিত হইরাছে। যথন এ সম্পার ঈশবের ভাবসভূত, তথন ঈশবের ভাবও নিতা, ইলারাও নিতা। ধেখানে ঈশর, সেখানেই এই সকল উত্তুত শক্তি বিদ্যামান। ক্রফার্জিক, আইশক্তি, শাকাশক্তি, চৈতক্তপক্তি, এই এক অনজ্ব শক্তিরই বিবিধ প্রকাশ। যাহারা ঈশবেতে প্রবিষ্ঠ হইবেন, তাঁহাদের সঙ্গে এই সকল উত্তুত শক্তির জ্ঞাতসারে হউক, অজ্ঞাতসারে হউক, অকত্ব সম্পৃত্বিত হইবে। এদেশে শাক্তার- গণ একটি অতি উৎকৃষ্ট ব্যবস্থা করিরাছেন। শিশু জ্লমাত্র

विश्व थार्ग व्यावक रह ;— शिक्षान, श्वविश्वन ও द्रावश्वन । द्र pre भिक्त खना शहर कतिन. तम कूरनत निकटि तम श्रेगी, दर নচল ঋষিগণের প্রণীত অধ্যাত্মতত্ত্ব দে অভ্যাস করিল, আত্মন্ত क्तिन, डांशांपिरात निक्रे रम थागी श्रेम। এरेक्का य दानवडा হাহার শরীর মন প্রাণ ও আত্মা অর্পণ করিলেন ও নিয়ত কাল ভাহার প্রতিপালনে নিযুক্ত, সে দেবতার নিকটে সে ঋণী। मनुवामारकत यनि अहे अन्दर्वाध अवन धारक, जाहां हहेरन रम क्थन अक्षुत्रक हरेटि शास्त्र ना। आमानिरशत्र अहे त्तरहत्र अन्त আত্মার বিবিধ শক্তির জন্ত কত জনের নিকটে আমরা ঋণী, ইহা যদি আমরা ব্রিতাম, তাহা হইলে তাঁহাদিগের সঙ্গে আমাদিগের অচ্ছেদ্য যোগ আমরা কখন বিশ্বত হইতাম না। এ দেশের পূর্বতন ঋষিগণের ঘাঁহারা শিষা ছিলেন, তাঁহারা আচার্যোর সহিত এমনই আপনাদের অভিন্নতামূভব করিতেন যে, তাঁহাদিগের श्रीड श्रष्ट डाँहाता यनारम श्राहात ना कतिया चाहार्या अधिशानत নামে প্রসিদ্ধ করিয়াছেন। যেখান হইতে ভাব প্রথম সমাগত হয়, নেই ভাবে উদ্দীপ্ত ব্যক্তিগণের তন্নামে পরিচিত হওয়া এই জ্ঞ একপ্রকার চিরস্তন প্রথা হইয়া পড়িরাছে।

এখন হরতো সকলে ব্ঝিলেন, অনস্ত মহান্ ভূমা প্রমেশ্রকে নেখিয়া, যে আনি কুদ্র হইয়া তাহার সঙ্গে সংযুক্ত রহিল, সে আমি মকপুরুষগণে মিশিয়া কি প্রকারে সর্বাণ আমিওশৃত হইল। ঈখরের ইচ্ছাপ্রতিপালন করিতে গিয়া যে ত্যাগন্ধীকার করিতে ইইল, সে ত্যাগন্ধীকার আমি করিলাম না, আমার ভিতর বে ঈশা বাদ করিতেছেন তাহারই গুণে এ ত্যাগন্ধীকার হইল। আমি কিছুই নই, আমার ভিতর হইতে যাহা কিছু ভাল হইডেছে,

ভাষা এক বিকে সকলের প্রভাবে, আর এক দিকে ঈবরের সম্ভানপারের ভবে। একপে আত্মাভিমানত্যাগ মিথা নহে, বরনা
নাকে, কেন না আমার ভিতরে বে সমুদার অধ্যাত্মশক্তি আছে,
ভাষা এক দিকে ঈবর হইতে সমুৎপর আর এক দিকে নার্
মহাজনগণ হইতে আমাতে সংক্রোমিত। বিজ্ঞানিবদ্গণ বিশেপরশারাস্ভৃত বলিয়া বে একটি বৈজ্ঞানিক মত স্থাপন করিতে
বিদ্ধ করিতেছেন, তাহা এই দিক্ দিয়া বিচার করিলে সত্য।
অজ্ঞানতার দৃষ্টিতে দেখিলে, সকলই আমার নিজ শক্তিতে হইতেছে
এই প্রকার অভিমান উপস্থিত হয়, কিন্তু বিশুদ্ধ জ্ঞান্টিতে
ইহার বিপ্ররীত আমারা জনায়াসে উপলব্ধি করি। যাহা বিজ্ঞানসিদ্ধ, যাহা দর্শনস্থত, তাহার প্রতি আমরা কথন উপেক্ষা
করিতে পারি না। আমাদের সমুদার সাধন ভজন, যোগ সমাধি,
এই সত্য অবলম্বন করিয়া অমুষ্টিত হওয়া সমুচিত।

সকলেই জানেন, নববিধানবাদিগণের মধ্যে সাধ্যমাগম বিলিয়া এক সময়ে বিশেষ অন্তর্গান হইরাছিল। এই অন্তর্গান সভাম্লক না কল্পনামূলক ? প্রীপ্টানগণ প্রীপ্তের প্রতি অন্তর্গাগবশতঃ আকাশে ক্রুশ দেখিয়াছেন, কখন বা ক্রুশ হতে লইয়া য়য়ং প্রীপ্ট দণ্ডায়মান অবলোকন করিয়াছেন। বৈক্ষবগণ প্রীক্ষণকে সপার্বদ দর্শন করিয়াছেন, ইহা তাঁহাদিগের প্রস্তে বিশিক্ত আছে। তবে এই দর্শনে আনন্দলন্দ্র মৃত্র্গা এবং মৃত্র্জামধ্যে প্রীক্ষণ ও তাঁহার পার্যদর্গণের সহিত দন্তাবণ বর্ণিত থাকাতে এখানে কল্পনার ক্রিয়াম্পাই দেখা ষাইতেছে। প্রীপ্টানগণের দর্শনমধ্যেও যে সত্তার সঙ্গে কল্পনা মিশ্রিত রহিয়াছে তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। আমরা যে সাধ্যমাগমের কথা বলি, তাহার মধ্যে কোন কল্পনার

বাাধার নাই। আমরা এ কথা বলি না বে, তাঁহারা সর্বাক্ত আছেব, বা আপনারা আমিরা আমাদিগকে দেখা দেন। আমরা ক্রিক বৈতে যত মগ্ন হই, তত আমাদিগের চরিত্র তাঁহাদিগের অভুরূপ হর, যত চরিত্র অভুরূপ হর, তত তাঁহাদিগের সহিত আমাদিগের একতা উপস্থিত হয়। এই চরিত্রের একতাভির স্বতর ব্যক্তিম ব্রিবার আমাদের সামর্থ্য নাই। আমরা ঈশ্বরস্বতর অবৈতবাদী নহি, কিন্তু সাধুমহাজনগণসম্বন্ধে অবৈতবাদী।

বৈরাগ্যে যোগের আরম্ভ এবং প্রাচীন কালে বৈরাগোই त्यारशत (नव। देवताशा मःमारतत मरक मध्य कारिया निन, किन আবার পুনরায় তাহার সঙ্গে সম্বন্ধ ঘটাইয়া দিল না। সংসারের সহিত বিয়োগ ঈশবের সহিত যোগ, এ কথাতেই সে কালে যোগ শেষ হইল। বিরাগের বিপরীত অনুরাগ, লে অনুরাগ আর বোগীর জীবনৈ আসিল না। বোগী বলিলেন, দূর হও অনিতা সংসার, আমি আর তোমার চাহি না, এই বলিয়া তিনি সংসারকে বিদার করিয়া দিলেন, সংসারের প্রতি তাঁহার মণা ভাষাল। সংশারের অসারতাচিত্তা করিতে পিয়া উহার কুংদিত দিক্ জ্ৰমান্তৰে তিনি দেখিতে লাগিলেন, দেখিতে দেখিতে হলর অদৃশা মনোহর সামগ্রী সকল তাঁহার নিকটে অতি কদগ্য বলিয়া প্রতীত হইতে লাগিল। তিনি দেহকে মল-মূত্র-ক্লেদাদির আধার বলিয়া তাহার নির্যাতনে প্রবৃত্ত হইলেন। লী পুত্র পরিবারবর্গ মায়ার কুছক বলিয়া ভাষাদের সন্দ পরিভ্যাপ कतिरामन। धार्थारन अमूत्राश नांहे ट्व्यनहे खुना। ट्याश यनि এখানে শেষ হয়, তবে ভাহা কথন পূর্ণ যোগ নহে। যোগে বিরোপ हरेन, সম্দার সংসার উড়িয়া গেল, এক ব্রহ্মাত অবশেষ রহিবেন।

विभावाजीक यादा किए नकनरे मिथा, कूरक, हात्रा ভाववाजी. জাগ্রংখ্র, এই বলিয়া যোগী সকলই অলীক করিলেন। আরজে যোগী সংসার হইতে বিদায়গ্রহণ করিবাছিলেন, আর र्जिन मः मारत कितिरलन ना । नवविधान व्यामित्रा विल्लन, अ र्यां पूर्व र्यांग नरह. बक्रांक नहेंग्रो मश्र पर्थ थाकिरन हिन्दि ना ; निर्व्हाणय बाक्त थातीन यात्री विधामनाच कतितनन, এখন সেই নির্কিশেষ ব্রহ্মকে লইয়া সবিশেষ ভূমিতে অবভরণ করিতে হইবে। নবযোগী ব্রহ্মকে লইয়া সংসারে ফিরিলেন, সমুদার সংসার এক্ষমর হইল। জী পুত্র পরিবার, সমুদায় পার্থিব দামগ্রী মৃতবৎ উড়িয়া গিয়াছিল, আবার ত্রন্দের দমাগমে নবীন সৌন্দর্যো যোগীর নিকট উপস্থিত হইল। এখন আর ইচারা যোগীর পক্ষে বন্ধন বহিল না। যোগী সকলের ভিতর দিয়া এক সত্য শিব স্থন্দর ত্রন্সেরই সহিত বিহার করিতে লাগি-লেন। পূর্ব্ধে বন্তুসমূলায়কে ঈশ্বরহীন দেখিয়া যোগী তৎপ্রতি বিরক্ত হইয়াছিলেন, এখন আর তিনি ঈশ্বরকে না দেখিয়া কোন বস্তু দেখিতে পান না যাহা দেখিতে যান তাহাতেই আগে ঈশ্বরকে দেখিতে পান। তাঁহার যোগ পূর্ণতা লাভ করিল, অবচ পৃথিবীর লোক তাহা বুঝিল না। তাহারা মনে করিল,যোগী ফোণ্ডাই হইয়া व्याचात्र मःमाद्र निश्च इट्टेशास्त्र ।

এই নৃতন বোগ প্রাচীন কোন শাস্ত্রে দেখিতে পাওরা যার না। জনকাদি সংসারে থাকিরা যোগ করিয়াছেন, কিন্তু এরূপ কোথাও উল্লেখ নাই বে, তাঁহারা স্ত্রীপুত্রপরিবারবর্গকে যোগ-ক্ষেত্রে আনিয়াছেন, তাঁহাদের ভিতরে ব্রন্ধের বিচিত্র নালা দেখিয়া মুগ্ধ হইরাছেন। তদ্ধ যোগিগণের মধ্যে এ নববোগ না থাকিলেও ভকুপণের মধ্যে থাকিতে পারে, কিন্ত সেধানেও এ নববাগ দেখিতে পাই না। ঐতিচতক্ত বিক্তপ্রিরাকে পরিত্যাগ করিরা সর্যাদী হইলেন। তিনি কি আর উাহাকে হৃদর হইতে দ্ব করিরা দিয়াছিলেন ? না, দেন নাই,কিন্ত আর তিনি বিক্তপ্রিরাকে আপনার সন্ধিনী করিলেন না, চির ঔলাদীক্তরতে সমরক্ষেপ করিলেন। প্রাচীন গ্রন্থ পাঠ কর, কোথাও এ বোগ পাইবে না। নারীগণমধ্যে বিভন্ক নরনে মাতৃমূর্ত্তি দেখা সে কালের বোগিগণের মধ্যে ছিল না। তাঁহারা নারীগণমধ্যে ভয়কর ব্যাস্থাসূর্ত্তি দেখিতেন। তাঁহারা অক্টিত ভাবে বলিরাছেন,

"जित्रा हि नत्रकाशीनामिश्वनः हाक्रमर्भनम्।

শ্বীগণ দেখিতে মনোহর নরকায়ির ইন্ধন।" শুককে বিমুপ্প করিরা সংসারে রাখিবার জন্য বাসে রস্তাকে আনরন করিলেন। শুক যে প্রকার বীভৎস কথার রস্তাকে লক্ষিত করিরা বিদার করিরা দিলেন, তাহা পাঠ করিলে কে আর বলিবে, সে কালে এ নবীন বাগের চিহ্ন কোণা গুলি। ফলতঃ অনেক শাল্প পড়িরাও এ নবীন বোগের চিহ্ন কোণাও আমি দেখিতে পাই নাই। যদি কেহ অক্সত্ত ইহার অন্তিত্ব দেখাইতে পারেন, জাহার নিকটে ক্রতক্ত হইব, কিন্তু ইহা যে স্ক্রণ নৃত্ন, আর কেহ আমাদিগকে ইহা শিক্ষা দেন নাই, এ কথা অকুষ্টিত মনে সকলকে বলিব।

সকলে জিজ্ঞাসা করিবেন, এ নৃতন যোগ কে প্রবর্তিত করি-লেন ? তিনি করিলেন, যিনি সার্কভৌমিক (নির্কিশেষ) ও সবি-শেষকে এক ভূমিতে আনরন করিয়াছেন। আচার্য্য কেশবচক্ত এই নবীন যোগের জন্ত চিরশ্বরণীর থাকিবেন। আমি এ কথা প্রকাশ্বে সকলের নিকটে সুক্তকণ্ঠে বলিতেছি রে,

এ यांश डांशहरे निक्छ निका कतियाहि, बात काशत निक्छे भिषि नारे। **ভिনি বিয়োগ ও যোগ, বিয়াগ ও অমুরাগ, অ**স-শ্বিলন ও মিলন, এ সমুদায় বিরুদ্ধ সামগ্রীকে একীভুত করিয়া-ছেন, সামলক্ষের ভূমিতে আনিগছেন, এ কীর্ত্তি তাঁহার কেই বিলুপ্ত ক্রিভে পারিবে না। যাহা তাহার নিকট হইভে পাই-ষাছি, তাহা অস্বীকার করা যোর অপরাধ বলিয়া মনে করি। তীহার সহিত আমাদের স্বন্ধবিধরে অনেকের মনে অনেক প্রকার অযুক্ত সংস্থার আছে, কিন্তু বাঁহারা না জানিরা মিথা কোন সম্বন্ধ আরোপ করিবেন, তাঁহারা ভজ্জত কখন নিরপরাধী हहैरवन ना। जिनि आमापिरशत आहार्श, निजा कारनत जन আচার্যা, এই সম্বন্ধ স্থিরতর রাণিবার জন্ম ব্রহ্মমনিরে বেদী সংরক্ষিত হইরাছে। তাঁহার সহিত সহসাধকত, একত ঈশ্বর-भूजानित्र कप दम्था है वांत कना এই दिनी। ইश हित्र निम अवजात-• বাদের প্রতিবাদ করিবে। সে কথা যাউক, কেশ্চক্র কোন গ্রন্থ পাঠ করিয়া এ নবীন যোগ প্রবর্তিত করেন নাই। প্রাচীন गांछ. वर्खमान कालंद विकानवि९ ও मार्गनिकशालंद आविकि या, এ মতের সঙ্গে মিলাইয়া দেখিয়াছি, কাহারও সাধা নাই বে, তাঁহার প্রবর্ত্তিত নব বোগ নব ধর্মের অণুমাত্র খঞ্চন করে। আমাদের আচার্যাের বিশেষ মত এই ষে, যদি কোন একটি মত বিজ্ঞানের নব আবিছি মার বিরুদ্ধ হয়, তথনই সে মতকে জলাঞ্জলি দিতে হুইবে। আমি প্রথম হুইতে দংশরবাদিগণের গ্রন্থ বহুল পরিষাণে পভিরাছি, এখনও অধ্যয়ন পরিত্যাগ করি নাই। वसूर्गण व्यानक नगरत व्यक्षारा करतन, किन्न व्यामि क्वरण नव धर्यंत शीत्रवर्षत्नत असरे अधातन कतिता थाकि। जुरेन, कमहे

শালার প্রভৃতি কেইই এ নব ধর্মের অণুমাত্র বিপান্ত করিতে পারেন নাই, এবং এ বিষয়ে আমার ছির বিশান আছে যে, কেইই এ ধর্মের বিপান সাধন করিতে পারিবেন না। ধর্মের চুলনার দর্শনবিজ্ঞানপাঠ অতি সামান্ত ইহা আমার জানা, বিদ্যান্তার অভিমান বে অতি তৃত্ত ও হের, ইহা আমার জানা আছে; কিছু ইহার সঙ্গে নঙ্গে বিরোধী মত্র ওওন করিয়া ধর্মের মূল দৃঢ় হরা কর্তবা, ইহা আমার বিশাস করিয়া থাকি। যাহা কিছু নবধর্মের বিরোধী ভাহা থওন করিবই ক্রিব, সত্যকে সংশ্রতাল হইতে মূল করিবই করিব, ইহাই বিধানবিশাসীর আন্তরিক প্রতিষ্ঠা, আমাদিগের ধর্ম যথন দর্শন ও বিজ্ঞানের উপরে প্রতিষ্ঠিত, ত্থন আ কার্যাকে কার্যারও সম্বন্ধে কথন গ্র্মুমন করিবে পারি না। ক্রিয়ার আ্মানির্বাদ করুন যে, সকলের মনে এই নবধ্র্ম দর্শন ও বিজ্ঞানের ভূমির উপরে প্রতিষ্ঠিত ইইরা চিরকাল তাহাদিগের সম্বন্ধে অকুর থাকে।

তনং রমানাথ মজ্থদারের ষ্টাট কলিকাতা, "মজলগঞ্জ মিদন এমেনে" কে, পি, নাথ কর্তৃক মুদ্রিত ও নববিধান প্রচারকার্যালয় হইতে প্রকাশিত।



বৈশ্বভিক প্রলোকভন্ব

. বৈদান্তিক পরলোকতত্ত *।

হে প্রজ্ঞান্যন প্রমানের, তুনি আমার স্থানরের সকল প্রকার দ্বিত থাকে, সভ্য কথন আমার স্থানরে আরা আমার স্থানর দ্বিত থাকে, সভ্য কথন আমার স্থানরে অবভরণ করিবে না। বেলাস্তমধ্যে পরলোকসম্বন্ধে যে স্কুল তত্ত্ব আছে, সে সকল যদি সংস্থানকল্যিত চিত্তে বুঝিতে যাই, উহারা সেই সংস্থান ছারা প্রজ্ঞান হইয়া পড়িবে, উহারা যাহা নর সেইরূপে মনে প্রভিভাত্ত হইবে। অভএব, দেব, বিষয়টির অবভারণার পূর্বে ভোমার চরণাপ্রগ্রহণ করিতেছি, তুমি স্থানরের সম্পার আবরণ উল্মোচন কর এবং তরিহিত সভ্য সকল যথায়থ ব্যক্ত কর। ভোমার কুপার অথভিত সভ্য ব্যক্ত হইবে, এই আশা করিয়া তব পাদপদ্মে প্রণাম করি।

ধর্মনিজ্ঞানের তিনটি প্রধান অঙ্গ;—উপাশু; উপাশ্তের পরিচয়লাভের উপার বা সাধন; প্রাণ্য নিষয় বা গতি। বেলাস্কের ধর্ম ধর্মবিজ্ঞানের অন্তর্গত, স্কুতরাং উহাতে এই তিনটি অঙ্গই আছে। "আর্ধধর্ম ও ভঙ্যাখ্যাতৃগণ" এই বক্তৃতার বেলাস্কাদ্ধ উপাশু দেবের তত্ত্ব এবং "বেলাস্কের অপবাদধত্তন" এই বক্তৃতার সংক্ষেপে বেলাস্কাদ্ধ সাধন উল্লিখিত হইলাছে। অদা পরলোকতত্ত্ব বাাখ্যাত হইলেই বেলাস্কধর্মের বিজ্ঞানসিদ্ধ ভৃতীর অঙ্গের পূর্বতা হয়। কি প্রণালী অবলম্বন করিয়া পরলোকত্ত্ব আলোচিত হইবে, প্রথমে তৎসম্বন্ধে ছচারিটী কর্মাব্যাক

[•] সপ্তসপ্তভিতম মাবোৎসবোপলকে উপাধ্যার-প্রবন্ত-বস্তাম্লক।

প্রয়েজন। এই সকল তত্ত্বে আলোচনার আমি পাশ্চাতা পণ্ডিতগণের নিকট যে আলোকলাভ করিয়াছি ভাষার বন (कान উল্লেখ না করি, তাহা ইটলে অকুভজ্ঞতাদোবে আমার দৌবী হইতে হয়। বিজ্ঞানবিদ্যণ যে ভাবে প্রাক্তিক ভত্তের चैकूर्रं तने करतेन, राष्ट्रे छार्य जामि मानवश्चकुष्टि बहेरेले रहे नकन ডব্ব উদ্ভ হইয়াছে সে সকলের অনুসরণ করির। থাকি। কোলা देहैरेंछ । दर्गन एवं हैकांत-केतिए बहेरन शहरक मस्यकात र्श्वेर्यभः क्षेत्रियुक्त कतियो भागा केशिएकते मेठ केतिए इसे, दिक-নীয়ুগত টিপ্রাল প্রভৃতি বিজ্ঞানবিদ্যাণের তত্তাবেষণের এই রীতি। बहै तीं अवन्यन ना केत्रिश गांशीं जिला विवेश केत्रिशाहन, उँशित्री द्य देनेश्यक चार्यनातित राज्यमध्येन कतिवादिन, याहा ইইতে যাহা কিছুতেই আদিতে পারে না ভারা হইতে তাহা केंद्रेकेंद्रनात्र वाहित कतिप्राष्ट्रन, देश दक मा खंदगढ आह्न ? वाक्षान्तरमास्य मठा श्रकाण ना भारेषा मठा श्रेष्ठि हरेया পড়ে। বিশ্লেষণরীতি অবলম্বন করিয়া সভ্যোদ্ধার, এ বিষরে व्यापि शाक्तका शाखकशत्वत निकरं भेगी। मश्मत कच्छात्वत অতিদ্ত। স্থিরতর সিদ্ধান্তসমূতের প্রতি সংশব না অন্মিশে काहोरमत्र वस्तन इटेटले (कंट मुक्त इटेटल शारत मा.) रि नकत वसन दिस करिएक ना शाहित क्षत्राक मुख्य करा थानि कदा नामा कागरसद मठ कदा कथन मस्टर ना। आमाद क्षेत्रंतरक अहे बंग्र वंशवंत, जिनि नर्काश्चवाम नर्क विजेम अपृष्टि ज्ञानवामिनालय निकार कामात्र नहेश निवाहितन । कैशिक्त क्षेत्री यक पूर्व लुक्तिश्कात्रविनात्मत कावा इटेंट शास, कावा कतियां नेहेश जिमि जामात्र जवकारमत नित्क उँकृष कतिता-

किरमन । এই সংশহী পণ্ডিতগণের নিকটে আমি চিরক্তঞ. একট ব্ৰন তথ্ন তাহাদের প্রতি আমার কুছজতা প্রকাশ করিবা লাক। ধর্মসম্মের ভত্তনির্ণয়ে আমি যে পাশ্চাত্য পণ্ডিতগুলের আক্ষরিক অনুসরণ করিয়াছি এ কথা বলিতে পারি না। পাশ্চাক্তা প্রতিপ্রের মধ্যে ছুইটি পক্ষ প্রধান। এক পক্ষ প্রাচীন ধর্মাকলের মধ্যে কৰিছ ও কুলুনার সামাদ্রা, আর এক পঞ্চ बनगर्भाष्ट्रत रन्जुशानत साक्षातिकात आधान रात्यन । शिक्षकत्व মোক্ষ্মলর প্রথম পক্ষের, স্পেন্ধার ছিতীর প্রক্ষের নেতা। বৈশিক্ষ हेन्द्रानि द्वारान आकृष्ठिक मक्ति, कवित्र ७ कज्ञनारगारन द्वाराहरन বর্ণিত প্রথম পক্ষের এই মত ; বিতীয় পক্ষের মতে ইহাদের প্রতি-জন জনসমাজের নেতৃপুক্ষ, দেবতা বলিয়া সাধারণ লোকরিগের কর্ত্তক গৃহীত। ধর্মের উৎপত্তি কোঝা হইতে হইল এ বিষয়ে অন্ত: দ্বান করিতে গিয়া প্রেতাত্মার বিখাস উহার মূল, হক্সেলে অভ্তি বিজ্ঞানবিদ্যাপ এই সিদ্ধান্তে আসিয়া প্তৃতিয়াছেন। স্পেক্ষরত এ মতের অভুমোদন করেন। রজনীতে প্রপ্রে ভ্রমণ লক্ষা করিয়া ষধন আদিমকালের লোক জানিতে পাইল যে সে শ্যায় যেমন भवन कृतिया स्माट्ड ट्रिम्सि भवन कृतिया दिल, द्र्याणां छेठिया यात्र नाहे, जबन तम कड़े मिद्राय कतिन त्य तम कक्बन नत्र प्रदेशन. ष्मञ्जभा अक् द्वारत श्रदेश थाकिया नानाद्वारन स्त्र स्व्यूष्टिन क्रि अकारत ? (कान अकृष्ठि अनात कार्या कतिएक छेराक व्हेटल কে বেন ভাষাকে এমকাইয়া সে কার্য্য হইতে বিবত করিতে প্রারুত্ত, व दाविका क्रीविककारण विनि गामन कहिएकन क्रीवावरे ब्याकास्थ व्यन ९ मामन कविटल्ड, व्याविमकात्मव त्यात्मव महन व विश्वास कृष्ठ रहेशादिन । क्लेक्टिक श्रांशांता पर्यात सून वरतान, कांशांश्रा

প্রেভাত্মা (Ghost) নহে কিও পরাত্মা (Holy Ghost) ধর্মের मन है हो है निर्देश करतन। ये निकार कामारनत दर्शन व्यापित माहे, दक्त ना आमता शहा हैका क्ति छात्र हत ना, आत अकी ইচ্ছা শারা আমাদের ইচ্ছা নিয়ত প্রতিরূদ্ধ হয়, এই প্রতিক্র দর্শনের উপরে আমাদের ইচ্ছার অতিরিক্ত আর একটা ইচ্ছা যে জগতে নিরত আত্মপ্রকাশ করিতেছেন, ইহা নি:সংশর স্থামাণ হর। আমাদের ইচ্ছার (শক্তির) প্রতিরোধক আর একটা ইচ্ছা (শক্তি) নিমন্তর প্রতাক হর বলিরাই জীবাত্মার অভিরিক্ত পরাত্মা বিদামান, এ বিশ্বাস আদিমকাল হটতে জনসমাজে প্রবর্ত্তিত ইছিয়াছে। কোন একটি বিখাস প্রতিজনের প্রতাক্ষভূমিতে নিমত আবিভূতি না হইলে, উহা সমগ্র জনসমাজের বিখাসরণে क्नांनि निर्दिग्क रय ना। कफ टिल्क ए क्रेयंत्र लहेश विद्वास धकारन निवृत्व रहेवा आमियाहि, त्कन ना এकारनव विकानविकान ্দীখরে অবিধাস অনোক্তিক (illogical), জড় সাক্ষেতিকমাত্র (xyz), চৈতভুই প্রধান, এ কথা প্রমাণ্সিদ্ধ করিয়া বিরোধ मुण्युक्त कतिया नियाद्यता

ঈশরে বিখাস এবং পরলোকে বিখাস এইরপে সমকালিক বলিরা প্রতিপদ্ধ হয়। আমরা একজন নই প্রক্রিকার চুই জন, অর্থনর্শনে আদিমকালের লোকের বলি এ বিখাস জীয়ারা থাকে, এবং সেই ছুই জনের এক জন বলি শান্তা বলিরা গৃহীত হন, ভাষা হইনে জীবাজ্ঞা ও পরাত্মা নিত্য একএ স্থিত সপ্রমাণিত ইইন। জীবিতকালে বিনি শান্তা ছিলেন, মৃত্যুত্ব পর তাঁহার আত্মা শশ্যাতে পশ্যাতে থাকিরা শাসন করিতেছেন এ বিখাসও বাধা, আরু কুই জ্পএসর হুইরা কোন একটি জ্ঞার কার্যা করিতে গিরা

ভিতরে মন্দ আত্মা ও ভাল আত্মার বিরোধ উপস্থিত,এমন বিরোধ বে সমুদার রাত্রি ভাষার জন্ত নিজা হর না, এ বিশাস্ত ভাষা। विनि (य निक् निवा वाउन ना दक्त, छुटे चाचात्र अकता विकि कांशांक मानिएक हरेरव. युक्ताः भाषा क्रेयत अवश् भाष्ठ कीव নিয়ত একতা বাস করেন এবং দেহাস্তেও এই চুইরের এ সম্বন্ধ অস্কুর थाकित्त, এ विश्रांत अकहे नमत्त्र मानत्त्व कारत छैतिक हत् । বেদের মত প্রাচীন গ্রন্থ আর নাই। তরাধ্যে যদি অতি প্রথম হইতে এই বিশাস লিপিবদ্ধ থাকে, তাহা হইলে ভাহাতে আভ্যানিত হইবার কোন কারণ নাই। বৈদান্তিক পরলোকতত্ত্বের কথা বলিতে গিগা অংগ বৈদিক সময়ের পরকোকে বিশ্বাসের কথা বলা প্রয়োদ জন, কেন না সেই বিখাদই প্রবাহক্রমে জনসমাজে প্রচলিত চইরা বৈদায়িক সময়ে সুক্ষাকার ধারণ-করিয়াছে। যদি কেছ জিজ্ঞাসা করেন, যে সকল বিশ্বাস মনুষাপ্রকৃতিসিদ্ধ ভারাকে দৃত্যুল করিবার জন্ত প্রাচীন গ্রন্থ গুলির আশ্রন কইবার কি প্রয়োজন ? তাঁচাদের এ প্রশ্নের আমরা এই উত্তর দি, আমাদের সম্মথে বিশ্বরূপ বিশ্বক প্রেকৃতিগ্রন্থ যেরূপ বিদ্যমান, তেমনি মন্ত্রা-প্রকৃতিরূপ গ্রন্থ বিদামান। যে ভাবে বেরূপে বাহিরের প্রকৃতির অধারন কবিতে হয় সেই ভাবে সেইরূপে আন্তরিক প্রকৃতির कारायमकता । शासाम । मकन भागार्थ मकन वस मकन सीराय किउदा (व প্रका विमामान, मिहे श्रका जामात्मत जिल्दात विमा-मान, क्रुडताः व्यक्षत । वाहित ह्हेट्ड श्रकात विक्वतम् । व्यामान रमंत्र निकटि (य नव नव खान श्रकाम शाम (महे खान वाक e আন্তর বিজ্ঞানরপে পরিণ্ড হয়। বাহ্ন ও আন্তর প্রকৃতির मर्मा दकान विद्रांथ माहे, विद्रांथ मिलांकान हरेट छेर्णा हरे,

মনকে বিশুদ্ধ বাধিবা সংস্পারদোষবর্জিত করিবা উভর প্রাকৃত্বিক আধারন আমাদের প্রতিজ্ঞানের কর্ম্বরা। একই প্রজ্ঞা বদি উভর প্রকৃতিমধ্যে প্রতিষ্ঠিত না থাকিতেন, তাহা হুইলে বিজ্ঞান বদিরা কিছুই দাঁড়াইত না। মহাত্মা সজেটিস প্রজ্ঞাকে মূল করিবা তত্মার্যণ করিবাছেন, তত্মশাস্ত্রের অধ্যয়ন করিবাছেন, আমিও সেই প্রণালী অবশ্যন করিবা তত্মনির্থ্য যত্ম করি। বেদ ও বেদাস্তের অভাস্তরে প্রবেশ করিবা উত্থর-জীব-ও পরলোকতত্মনির্ণয়ে যত্ম করি কেন, জিজ্ঞাসা করিলে তাহার উত্তর এই, চক্র স্থ্য পৃথিবী কুক্লতা প্রভৃতির জন্মবৃদ্ধি কইবা তেমনি আস্তর প্রকৃতি, মানবজাতির জন্মবৃদ্ধি কইবা তেমনি আস্তর প্রকৃতি। আস্তর প্রকৃতির তত্ম আনিতে হুইলে জনসমাজের ইতিহাসের মধ্যে এই জন্মই প্রবেশ করা প্রবেশন হুইবা পড়ে। আদা যে বৈদান্তিক পরণোকতত্ত্বের কথা আলোচিত হুইতেছে উ্রা এ প্রণালী-অবশ্রম্ব বিনা ক্লাপি স্থাসিক হুইতে পারে না।

স্থা হইতে হক্ষ, হক্ষ হইতে ক্রমে হক্ষতমে উথান জনসমা
তের উন্নতির নিয়ম। সকল বিজ্ঞানেই এই নিয়মে উন্নতি দৃষ্ট হয়,
কিব্র আজ বাজ বিভাগে এ নিয়মের নিয়েগ দেগাইবার কোন
প্রয়োজন করে না, পরশোকবিষয়ে এ নিয়মের নিয়োগ য়য়্য়য়ন
ভাগাবছক। স্থা শরীর—ছামি, প্রথমাবস্থায় এ জ্ঞান সকলেরই
ভাভাবিক। কেবল এ সময় আমিকে স্থাল শরীর বলিয়া প্রহয়
করা হয় তাহা নহে, উপাত্যদেবপর্যায় স্থাল ভাবে গৃহীত হইরা
থাকেন। প্রকৃতির যে অংশে দেবশক্তি প্রকাশ পায়, আদিম
কালের লোকনিগের নিকটে সেই স্থা অংশ দেবতা। ঝাথেলের
সমরে ইক্স আয়ি বায়ু প্রভৃতি প্রাকৃতিক দেবতার স্থোব্যক্ষনা

हुत्नर्ड दनवनकिनर्मन दनशहिश दनग्र। दन मगरव अभीकृत, মৃত্তিকার প্রোথিত বা কলে নিক্ষিপ্ত মহুবাদেং বে পরলোকে পুনরুখান করিবে, এ বিশাসকরা আর অসম্ভব কি ? আঞ্চঞ गाधारण लाटक शरदालिक कुल एमर विमा आचार क्रिकि कहामा-ক্রিতে পারে না। বাঁছারা জ্ঞানে কথঞিৎ উল্লভ হইরাছেন, ঠাঁহারা তুল দেহের স্থলে সূক্ষ্ম দেহ কলনা করিয়া তবে আতার পরলোকে স্থিতি বিশ্বাস-করেন। 'মানসশক্তিসমিতির' বিবরণ আমি অতি প্রথম হইতে পাঠ করিয়া আসিতেছি। তক্সধো বে ণকল বুতাজ পড়িয়াছি, দে গুলিতে আমি উপক্লত হইয়াছি ইছাও গামায় স্বীকার করিতে হয়, কিন্তু উহারা সূপ বা স্ক্রদেহে আমার বিখাদ উৎপাদন-করে নাই। যিনি পরলোকগত আত্মাকে প্রত্যক্ষ **০রেন তাঁহার মান্সগত প্রতিমৃত্তি অবলম্বন করিয়া তাদুশ মৃত্তি** দম্বৰে উপস্থিত হয় প্ৰথম হইতে আমি এইরূপ বিশ্বাস করিয়া আসিয়াছি। সম্প্রতি বিজ্ঞানবিৎ কোরণ সাহেব বিত্তান্যোগে • গুরস্থ ব্যক্তির নিকটে যে ফটো পাঠাইয়া থাকেন, আমি মনে করি উলা সেই প্রণালীর অন্তর্গত। "মৃত্যুর পরও মানবের বাক্তিম বিদামান থাকে" এই গ্রন্থখনিতে আমি যে একটি বৃত্তাস্ক পাঠ করিয়াছি সে বুতাক্ত আমার মনে দৃঢ় মৃদ্রিত হইরাছে, কিন্ত সে বুক্তাঞ্চও 'দূরতোভাবসঞ্চারণ' (Telepathy) নির্মের অন্তর্গত বিনা আমি অক্ত কিছু মনে করি না। নঃবৎসর পূর্বে মৃতা ভগিনী—এক মাতা বিনা অপরের অজ্ঞাত গওদেশে বে কতরেখা হয় তৎসহকারে দিবালোকে সমুখীন হইয়া-কার্যাসাগরে ময় ভ্রাতাকে গৃহে গমনে প্ররোচিত করিয়াচিলেন, এ বৃত্তান্ত বনিও অহুত তথাপি নর বংসরের পুর্বের কতকে নবীন কতের সায়

প্রদর্শন মানসপজির ক্রিয়া বাতীত আর কিছুই নর, ইথা সহুজেই বুরিতে পারা বার। বাল্যকাল হইতে কন্ত কন্ত দে দেহে ভইরাছিল, দে সকলের চিহ্ন একটিও নাই, মৃতদেহে বে আঁচড় লালিয়াছিল, নর বৎসরে ভাগা অবিলুপ্ত আছে, পরস্ক দেহের ক্ষতেওে আছা ক্ষত হর, এ সকলের কোন কথা দাঁড়ার না, কেবল বিখান্দাংলার অন্ত ক্ষতপ্রদর্শন, এ বিনা এ দৃশ্রের কোন অর্থ নাই।

अथन ध नकण कथा वांडेक, द्वन इट्टंड द्वनाटस श्रादन पून হটতে পুলে পুল হটতে ক্রমে পুলতমে হটরাছে পরলোকতত্ত সম্বন্ধে এ নিয়মের প্রয়োগ কিরূপ ভাষাই দেশান যাউক। বৈদিক ममात भव अधिरेक मध्यकताहे माधातन खनानी हिन, क्लाशांक কোণাঞ্চ মৃত্তিকাতে প্রোথিতকরাও হইত। উত্তর স্থলেই শব-দেহের উপরে বন্ধুগণের অতাধিক আদর প্রকাশ পার, কেন না · দঙ্নযোগে বাংমৃত্তিকার চাপে যাহাতে শবের ফ্লেশ না হয়, ভজ্জ্ঞ অগ্নি ও পৃথিবীর নিকটে কাতর প্রার্থনা দেখিতে পাওরা যার। कार्शि वसन (महरक मध्य करत ज्यन (कान कान वाहरत পড়িश यात्र। यथन পরলোকে অগ্নি দেছের অক সকল দেছে मश्राक्षिक क्रियन, ज्वन त्मरे व्यम या व्यम त्मर वा मश्राक्षिक मा इब, এই ভবে উহাকে लहेबा शिवा मारह मः योक्षिक कवियात জন্ত অগ্নিসলিখানে ব্যাকুল প্রার্থনা দৃষ্ট হয়। পরলোকে পত্নী পুত্র প্রভৃতির সহিত মিশিত হইয়া মুত ব্যক্তি পুথিবীর ভোগের ক্লার ভোগে রত হম, এ বিধাস বৈদিক সমরে স্থপ্ত। কেবল পত্নী প্রাকৃতি নতে পালিত পশুপক্ষারি সকলই দেখানে গিয়া ভাগার ত্ব বাৰ্ছত করে। ফণত: পৃথিবী ও পরবোক এ উভরের মধ্যে

देवनिक नमात्र दकान भाषीका दमिश्यक भाषा यात्र मार्च देवने खिक সমরে সুলের পরিহার ঘটিরাছে, স্বতরাং এথানে আনাপ্তরূপ দেহপ্রাপ্তি কামনাত্রল লোকপ্রাপ্তি দেখিতে পাওয়া যায়। পিত্লোকে স্বাপ্রিক শরীর, গন্ধর্মলোকে স্ক্রোপধিযুক্ত শরীর, প্রমাত্মার জীবের চিন্মাত্রতা, ব্রহ্মলোকে ছারা ও আতপের স্থার উহার স্থিতি বেদান্তে বর্ণিত হইরাছে। বৈদিক সময়ে মৃত বাজি লোকলোকান্তরে ভ্রমণ করে এরপ বিখাস ছিল। এ সকল लाकरनाकाञ्चत्र পृथिवीत अञ्चल পृथिवीरनाक मिरारनाक नरह, মুতরাং বৈদিক অমুষ্ঠানে মহুষালোক হইতে মহুষালোকান্তরে পুনরাবৃত্তি হয়, বেদাস্ত এইরূপ সিদ্ধান্ত করিয়াছেন। কেই কেই मान करतन, दिवास दय भूनतानुष्ठि-वर्गन कतियाहन छैरा अहै পৃথিবীতে পুনরাবৃত্তি। ব্রাহ্মণবিভাগে স্থ্যের অধ্যেভাগে ছিত वस्ताक वर्षिक इरेब्राह्म। अरे मकन लाक पृथिगीपपाकां ह मधुशालाक: प्रशांत উपवांत के मकरन श्रांकियक बहैरकरह, একট ভন্তলোকত ব্যক্তিসকল এক তানে তির থাকিতে পারে ना, এक লোক इटेटि छारानिश्रक अन्न लाकि गारेट रह । निर्वा तसनीत প্রভাবর্তনে ঐ সকল লোক ক্ষিফু, স্বভরাং উহাদের অধিবাসিগ্ৰ এক অবস্থার থাকিতে সমর্থ নর। বাক্ষণবিভা-र्भन्न এই विश्वाम र्यमाञ्च रह शहर कतिहास्क् हास्माना म्लहेरारका ভালা দেখাইরা দিয়াছেন ।। লোকসমূহের প্রতি উথিত হর, @ कथा विनिहा बुरुमात्गाक छ के कथा विनिहास्ति । "ति व्यक्ति इहेटल कर्षकितियांत कक धा त्नांतक आहेरम" धनामकात 'ध लाक' (व श्रीववीवाठक--- मक्ष्यात्माकवाठक छात्रा चत्रः वृहत्तात्रणा-

^{+ +121301}

কাই "আকাল হইকে রাষ্ বায় হইতে পৃথিবীৰ এই কথা বলিলা নিবেন্দিয়া হ'বিষা দিবাছেল। বৈদিক্তিকাকলাপ যাহাল অহীন করে, বালী তড়াগ কুণাদি ধনন আবানাদি স্থাপন ইড়াদি প্রাপ্ত করার বাহালা করে, তাহাদের লোকলোক্ত্রের ক্রমণ নর, নক্রেলাকে প্রনাপ্ত করি চির্নাদিনের অন্ত নেখানে রাস হল না, কেল না এক কথা বলিলা বেদের অবমাননা করেন নাই, কেল না নাই বেল কর্মান্ত জীয়িকলের এইক্রপ গতিতেই বিশাস করিছেন। নেদান্তসিদ্ধ উপাসনা অব্যাহন-করিলা যে গতি হর সে পতিতে আরা পুনরাবর্জন নাই, দিবালোকে নিতা কাল বসতি হয়। বিদান্তিক পরণোকতন্ত্রের আলোচনা করিতে হইলে এই মুখ্য অপুনরাবর্জনী গতিরই উল্লেখ প্রধানক্রন।

অপ্ননাবর্তনী গতি বিবিধ। প্রথমটাতে যদিও পৃথিবীলোকে
প্রনাগমন হর না তথাপি ইন্ডামত বিবিধ দিবালোকে প্রমণ

ইবা থাকে। সেই সেই লোকের প্রথমিনজার ঈদ্ধ গতির
কতার্থতা। বাঁহারা গৃহস্থ হইরা গুটীর ধনাচরণ করেন সত্য ও

ক্রেম্বর্তনিরত, তাঁহারাই এইরপ স্বেজ্যামত দিবালোকসমূহে প্রমণ
করিতে অধিকারী হন। এতয়্মধ্যে বাঁহারা হল-কপট-মিথাাচরণ

শৃষ্ঠ উহিবরা অপুনরাবর্তী হইরা ব্রজলোকে ছিতি করেন ব ক্রেজ্যার
বিনি পরমনিধান তাঁহাকে পাইবার ক্রম্ত এক সত্তি উপার।
সাত্যের রালা সমুদার কর করিয়া দেবভাবপ্রাহ্যে হয়। রসম্বর্জা

শার্রজে ছিতিতে সম্যক্ অভয়্লাভ ইইরা থাকে। এ অবস্থার
নাধক কর্মান্তর বিজ্ঞেল সন্ত করিছের রাবের লা। শ্রীটেড্ডের
ক্রম্মরূপ পরব্রজার উপারক ক্রিলের। উপাক্ত সহ অধ্যাত্র
বিজ্ঞেল তাঁহার বে কি দশা হইত, রাহারা তাঁহার জীবনবৃত্রাম্ব

গঠি করিয়াছেন ভাষার ভাষা কথকিৎ অবগত আছেন। বল র্কুপী পরব্রন্ধের উপাসনার সম্প্র জীব ও সমগ্র জগতের স্বাইউ একাম্বর্ডা উপস্থিত হয়। এই একাম্বর্ডায় পরব্রেমে নিতা জানক। मरकान माध्यक क्रार्थको । अक्षातावनस्य चाकानकक्रम भन्ने अस्मित छेशामनात्र शत-शत-छेरक्टि-कौर्यनगाछ इत. ध कथा बनिहा বেদান্ত অনন্তজীবন প্রতিপন্ন করিয়াছেন এবং তিনি বৈ ক্র জীবের অনস্তত প্রাণাবিষয় বলিয়াছেন তাহা কিরণে নির হয় তাহা ইহাতেই দেখাইয়াছেন। শোভাদাতা বলিয়া সর্ব্ধ প্রকাশক বলিয়া পরব্রফের উপাসনা করিলে নিখিল শোভা-ও-দীরি প্রাথি হয় এবং জীবনান্তে বৈজ্বতিক পুরুষ দেবপথে এক্ষপথে উপাসককে এক্ষসন্ধি ধানে উপনীত করেন, আর মহুযালোকে পুনরাবৃতি হর না। এই (मवर्गाल कारम (य क्षांकारत आत्ताहन हम (वनाख जाहा वर्गम-করিয়াতেন ৷ আশুর্বা এই বে, একাণের 'মানসশক্তিসমিভির' শিদ্ধান্তের সহিত ইছার একতা আছে। বে দিন কোন ব্যক্তির প্রলোকগমন হয়, গেই দিনই কোন কোন বন্ধু তাহার প্রস্তুক্ত काकारक श्रक्ताकृत्रण रमस्टिक शाम । अ मिरमद शत मर्मनमारमञ्च मिन पूर्व पूर्व करेबा शर्छ, शरवरशत शर्व मर्गनमान निवृत्त क्या দিন, পক্ষ, ছয়মাস, সংবংসর এ লোকের সভিত সভন্ধ থাকে, সংবংসর পর আদিতা চক্র ও বৈড়াভিক লোকে ভাহার প্রবেশ হয়, সেখান চইতে বৈতাতিক পুরুষ ভাহাতে অন্যলাকে উপনীউ करवन बाव हैश्लारकत महिल महत्व शास्त्र मा. रवशास स क्यो বলিয়া সেট কথাই বলিয়াছেন। 'মানসশক্তিসমিভিয়' বিবর্ত্ত वह वर्द शरबं वर्षनवान निवक चारक, डेबाड स्य द्वाविद्वादी नेत अक्षा रनिरात अर्थका त्राप मी, रक्त मी गतलाक्त्रक

বাজি থেমসম্বন্ধে সম্ভব্ধ ব্যক্তিগণের সহিত ইচ্ছাক্রমে নিমেরের জন্ত মিলিক হইতে পারেন, বেলাস্ত একথা প্রতিরাক্তা উদ্ধিপ করিরাছেন। স্থারশিযোগে ইহলোক হইতে পরলোকে গমন হর, বেলান্তের এ সিদ্ধান্ত 'মানসশক্তিসমিতির' সিদ্ধান্তের বিপরীত ইহাও বলিতে পারা যার না। দূরবর্তী আত্মার সহিত দূরবর্তী আত্মার যোগ প্রত্যক্ষ করিরা উল্লোৱা ইথারকে এই যোগের কারণ নির্ণর করিরাছেন, বেলাস্ত সে ভলে চক্ষুর অদৃত্য স্ক্ষতম স্থারশ্বিকে যদি যোগের কারণ বলিরা হির করিরা থাকেন তাহাতে কিছু গুরুতর মতভেদ উপস্থিত হইল না, বরং করিনক ইথারপেকা স্ক্ষতম স্থারশান্ত বিদ্ধান্তর স্থারশান্ত বিদ্ধান্তর স্কৃত্ব মতভেদ উপস্থিত হইল না, বরং করিনক ইথারপেকা স্কৃত্ব স্থারশান্ত বিদ্ধান্তর স্থারশান্ত বিদ্ধান্তর স্থারশান্তর বিদ্ধান্তর স্থারশান্তর স্থারশান্তর স্থারশান্তর স্কৃত্ব স্থারশান্তর বিদ্ধান্তর স্থারশান্তর স্থান্তর স্থারশান্তর স্থারশান্তর স্থায় বিদ্ধান্তর স্থারশান্তর স্থান্তর স্থারশান্তর স্থারশান্তর স্থারশান্তর স্থারশান্তর স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান স্থ

সাধনভেদে গতির কিরুপ তারতমা হর তাহা এক প্রকার দেখান হইল, এখন বিশেষ বিশেষ সাধনে বিশেষ বিশেষ গতি প্রদর্শন করা প্রবোজন। প্রথমতঃ পঞ্চায়িবিদা। এই পঞ্চায়িবিদা। এই পঞ্চায়িবদা। গৃহস্তগণের সাধনের বিষয়। ছালোক, পর্জেক্ত, পৃথিবী, পুরুষ ও ঘাষিৎ এই পাঁচটিকে পঞ্চায়ি এবং আদিত্যাদিকে সমিধাদি বজের উপক্ষণ কর্নাকরা হইরাছে। আকাশ হইতে বর্ষণ হর, দেই বর্ষণে পৃথিবী শসাশালিনী হয়, সেই শস্তজীব ভক্ষণ করিয়া সম্ভানোৎপাদন সামর্থালাভ করে। এই সম্ভানোৎপাদন রাপায়ির মধ্যে জীবের গতিচিন্তন পঞ্চায়িবিদ্যার উদ্দেশ্য। যে গক্ষণ জীব ভদ্মগ্রহণ করে তাহাদের আকাশ হইতে বৃষ্টিকে, বৃষ্টি হইতে পৃথি-রীতে অবতরণ হইয়া অরবোগে জীবদেহে প্রবেশ এবং সেই জীবদেহর উপদান হইতে প্রকল্পভাবে প্রকাশ, উপনিষ্ঠ এই মন্ড। এ মত এই দেখাইরা দের যে জীব নিভা অবিনাশী, যত দিন পর্যান্ত লা ডাহার প্রক্ষে হিতি হইতেছে, তত দিন তাহাকে জ্যা

अत वरीन शांकिटक इव, शृथिबीत नवभन्नी त्नाकनक्टनटक । प्रतिक स्त । नकानकवामस्या गृहत्व यनि दक्तन कीरतद्व তিভিত্তা করেন, তহাতীত যদি আর কিছু তাঁহার চিস্তার বিষয় া হয়, ভাহা হইলে ইহাকে বিদ্যা বলিয়া প্রহণকরা ঘাইতে পারে ता। द्यमाख दा दकान छेशानना श्रेशांकी निवक कतिबाद्धन. বৈদিক রীতিতে ভাষাতে যজকলনা করিয়া প্রাকৃতিক উপাদান: দকলকে উহার উপকরণ করিরা লইরাছেন। এই সকল উপা-দান পরাত্মার প্রেরণার সফল হয়, অন্তথা ইহানের হইতে কিছুই চ্টতে পারে না। বেদান্তর এই প্রতিজ্ঞাবশতঃ সে সকলের সক্ষে পরাত্মার কোন উল্লেখ না থাকিলেও উচাদের মধ্যে জাঁচার किशामनीन कतिताहै (यम इटेडि (यमार्ड व्यवज्ञान इटेन । श्रका-धिविलामित्या भवाचारक ना त्मित्रा यनि चून छात्व त्महे स्वित्र পাঁচটির উপাসনা হইত, তাহা চইলে উহাতে অপুনরাবৃত্তি কথন दर्निक इरेक ना. उन्न शाखित महायना हिन ना. देवितक श्रनतातु-कि है डिशाल डिलिशिक इटेड। माक्यारमध्य भवमार्थाक मांछा-माछा ও সর্বাঞ্চলক বলিরা উপাসনা করিলে যে গতি হয়. এই পঞায়িবিদ্যালিত উপাসনায় সেই গতি হয় এরূপ উলিখিত হওরাতে এটি বে পরাত্মারাধনাবর্জিত নর ইলা সহলে প্রভীত হয় ঃ शृष्टि शक्तिश्राम् श्राप्त वर्षात वर्षात चालि श्रास्त्रां वर्षा स्वाप्त स्थान वर्षा এই স্ষ্টি প্রক্রিয়া 🎍 আমাদের বৃদ্ধিগোচর হয়, সুতরাং ভন্মধ্যে सहारक माकार मद्दक मर्नन कविशा द्यांक धरे विमा के लिक्टि कतिबाह्यत. এ कथा बना किछ अपक नहा

পঞ্চারিবিব্যার মধ্যে যে সক্র উপাদানের উল্লেখ চইরাছে নে গুলি
ক্ষেথ্রকিছার মধ্যে উলিখিত উপাধানাতিরিক্ত নয়, স্বভরাং সক্তানক্ষমধ্যে
ক্ষেত্র ব্যাপারদর্শন পঞ্চারিবিদ্যার অস্ট্রীভূত।

व्यक्ताक विमान डेट्स थन शृद्ध नाईका धर्मन क्रिक विमास्त्र নিরতিশর অসুরাগ কেন, ইহার কারণ নির্দারণ করা নিতাত প্রয়োজন। বেলাত্তে "সম্প্রতি" বলিয়া একটি অমুর্চান আছে। এই অমুষ্ঠানটি দেখাইরা দের বেদান্তবিদ্যাণ এ জগতে পুত্রের কি প্ররোজন মনে করিতেন। তাঁহারা তিনটি লোক দ্বীকার-করিতেন, মহুষালোক, পিতৃলোক, দেবলোক। কোন কর্মানু-ষ্ঠান ছারা নতে এক পুত্র ছারা মহুবালোকজর হয়। কর্ম बाता निज्लाक ध्वरः विमा बाता स्मवत्नात्कत्र कत्र बहेता थात्क। লোক গুলির মধ্যে দেবলোক শ্রেষ্ট। বিদ্যা ছারা দেবলোকের ষয় হয়, এ জন্ম বিদারে প্রশংসা। ব্রন মৃত্যুকাল উপস্থিত. তথন পিতা পুত্রকে বলিতেন, তুমি বেদ, তুমি বজ্ঞ, তুমি লোক। পুত্র ইবার উত্তরে বলিভেন, আমি বেদ, আমি যক্ত, আমি লোক। পিতাপুত্রমধ্যে এরপ উক্তি প্রত্যক্তি কেন হইন, পায়ং শ্রুতিই তাঁহার ব্যাখা করিয়াছেন। বেদশক উচ্চারণ-করার অভিপ্রায় এই যে, পিতার প্রয়াণানস্তর যে নৃতন বেদ অবতীর্ণ হইবে তাহার সঙ্গে পিতার সমরে অবতীর্ণ কেদের धहेत्राश धक्का श्रेम । यस्त्रभम फेलाबनकतिवात कालिशांव धारे त्य तक्त यक अञ्चित व्हेगार्ड, आत त्य तक्त यक शिकात প্রসাণানন্তর পুত্র কর্তৃক অমুষ্ঠিত হইবে, এ উভ্রের এইরূপে धक्छ। रहेन । लाक्यक छेळावरवत चित्र श्रह एवं, रव मकन লোক পিতা জন-করিয়াছেন এবং তাঁছার প্রাণানস্তর পুত্র कत-कतिरवन, उठ्डरात धरेकाण धक्का हहेन। धरे मुख्यान अष्ट्रकारन श्रीत व পुनियोट यादा कर्डवा दिन जाना भून बहेन। भिका अञ्चेतानखन धरे थार्थना कतिरान, 'हेरालाक हरेए धरे

on आमात शहरन वहेंचा आमारक तका कक्का' शहर कर-ার্থ বেদ, পুত্রের অনুষ্ঠিত যক্ত, পুত্রের অধিকৃত লোক পর্বোকে ভার পঠবল হটবে, এজন্ত প্ররাণকালে পিতা এই স্প্রানান ভাগন করেন। এই অত্তানে পিতা মরণকালে সর্বেজির হ পুরেতে প্রবিষ্ট হন। বহু কর্মে ব্যাপৃতিবশত: পিতা যাহা ারিরা উঠিতে পারেন নাই তজ্জনিত অপরাধ হইতে পুত্র পিতাকে क करतन, এ बज डाँहात नाम शुव +। शिका धहेताश हैह-লাকে পুত্তেতে প্রতিষ্ঠিত হইলেন। এখন যে সকল দেব প্রাণ ইব্রির) হইরা তাঁহাতে প্রবিষ্ট হইরাছিলেন, তাঁহারা শ্বরং গাঁহাতে প্রবেশ করিয়া পরলোকে তাঁহাকে প্রাণযুক্ত করিলেন। পুথিবী ও অগ্নি হইতে তাঁহাতে দৈবী বাক প্রবেশ করিল, এমঞ্ এখন তিনি যাহা বলেন তাহাই হয়। আকাশ ও আদিতা হইতে डांगांट देनव मन आदम कविल, अक्स जिनि वित स्थी बहेरनन, আর তাঁহাতে শােক সন্তবিল না। জল ও চন্দ্রমা হইতে তাঁহােছে रेमर ज्यान करत्ना कहिला कहिला पान स्थान राहे ज्यान यिनि ष्टांवतकक्रमानि मर्क्त मध्यत्र कतित्रा वा मध्यत्र ना कतित्रा বাণিত হন না, বিনষ্ট হন না। এই প্রাণে তব্জ ঝুক্তি দর্বভৃতের সহিত একাত্মতালাভ করেন এবং প্রাণদেবতাকে সর্বভূত যে প্রকার রক্ষা-করে, ইহাকেও সেই প্রকার রক্ষা-করে। সর্বভ্রের পাপের সহিত ইতার সংস্রব হর না, উহাদের পুণোর সহিত रश्यव इत्र, टकन मा द्ववादक भाभव्यक् करत्र मा। शकामिविना প্রভৃতি সকল বিদ্যারই চরম ফল পাপস্পর্ন বিজ্ঞিততা।

অধরণজনিত অণরাধ হইতে পিতাকে পবিত্র করেন (পু+তক্)
 বিষয় পুত।

স্পর্ণবিচ্ছিত না হইলে অপাপবিদ্ধ ত্রেমের সহিত একও হরণ না বেদান্তের এই বিশেষ মত।

অথানে আমরা দেখিতে পাইতেছি, সমুদার অপতের সহিত সাধকের একাজতা উপস্থিত হওয়াই বেদান্তের মুখা গভি। সকল প্রাণের সহিত একপ্রাণ হওরাই ঈদুশ একাস্থতার কারণ। প্রকৃতিশক্তি ও জীবশক্তি এ চুট সর্বাদ। মিশিরা আছে। জীব-मिक्टिक द्वास्त्रविकान ज्यानशायनमिक वर्णन । जायाममुम मर्क-ভূতের উপরে সমানরকেই আমরা সমগ্র জগতের সহিত একপ্রাণ হওয়া মনে করি। এ অবভার কেবল হিংলাদি নিবুত্ত হর তাহা नहर गर्सक रेमबी উপञ्चित रहा। तम कथा वाडिक, परविपत्र (वहास्त्रिक अंकि अधानविहा। व्यत्नक जाधक आहे विशाव নিরতিশার পক্ষপাতী। হাদরে চিত্রগংগ্রাপনপুর্বক ধ্যান মনন চিম্বা সহজে উপস্থিত হয়: এই সহজ্মিদ্ধতা এ প্রকার পক্ষ-পাতের কারণ। দহরশব্দের অর্থ ক্ষুদ্র। ক্ষুদ্র হৃদর।কাশে ব্রহ্মদর্শন कतिया त्महे कृपाकामत्क अनुष्ठाकात्मत मत्क मिनाहेबा अनुष्ठ वक्रक छात्रभाष्ठतकत्री अहे विमात्र ख्रांन डेक्का পরব্রনের সভাকাম সভাকলভাদি কলাণগুণ অভুত্র-করিরা সাধক ভত্তাবাপর হন। এই ভত্তাবাপরতার পরকেঞ্চলত বাকি ইচ্ছামাত্ৰ পিতা মাতা ভ্ৰাতা ভগিনী সৰা প্ৰভৃতিৰ সহিত কেবল মিলিত হন তাহা নহে, অভিলাহমাত্র সর্বপ্রকার ভোগাবিবর প্রাপ্ত হন। একলে বেদাস্ত একটি অভি গুঢ় তত্ত্ব বিবৃত করিয়া-(इन। भागता (व काम वाक्षि वा नवार्यंत्र महिल नवस हैहै, खेशांतत गरिष्ठ चामायत मच्य कान काल विव्यत वत्र मा, উহারা আমাদের জনরে নিতাকালের জন্ত স্থিতি করে। স্থি

हार् हरेन छारा स्ट्रेल अ जीवत त्कन आमन्न छारानिशत्क গ্রতাক করি না। প্রতাক করি না এই জন্ম যে উহারা অনুত ারা প্রক্র হইরা আছে। সহজ ভাষার অনৃতশ্বে আমরা ম্পা ব্রিমা থাকি। মিথা বারা আছের হইরা আছে, এ ক্থা বলিলে এ মিথ্যা কি, জিজ্ঞানা উপস্থিত হয়। সাংখাসত্ৰ বলিতে-ছেন, যে সকল বিষয় প্রত্যক্ষ করিতে কোন বাধা উপস্থিত হয় না দেগুলি সং, আর যে গুলি প্রতাক্ষ করিতে বাধা উপস্থিত হর সেগুলি অসং। অত কথার বলিতে গেলে বলিতে হর, যে সকল বিষয় চক্ষুরাদির গোচর উহারা সং, আর বাহারা চক্ষুরাদির অগোচর উহারা অসং। চকুরাদিব অগোচর হইলেই বে উহার। অসং, মিথ্যা বা নাই এরূপ মনে কর। ত্রম। ফুলু ফুলুতর ও হল্মতম বিষয়মাত্রই আমাদের চলুরাদির অগ্রাহা, কিন্তু বলিতে ছইবে দুখ্যমান সমুদার বিষয়ের তাহারাই মূল, স্থতরাং সভাের সভাত্ব ভাষাদিগেরই হইতে। শব্দশাস্ত্রজ্বাক্তিগণ বাংপতিযোগে • थठ ६ अन्ड मत्यत्र त्यक्रण त्याचा कतित्राह्म, त्यहे वााचाहि আমাদিগকে এছলে গ্রহণ করিতে হইতেছে। তাঁলারা বলেন क्रमादक याहा व्यक्तिकांत्र कतिया थाटक जारा अ.ड. श्रू उतार याहा श्वत बहेट अनुष्ठ बहेबाट श्वतार अधिकात कतिया नाहे, তাহাই অনুত। এই অর্থই যে বেদায়ের অভিনত, তাহা ঐ श्रात्मत वर्गमाई পतिकात कतिया तुवाहेश (मह। छमस्त्रभ उक्त-পুরে সেই স্কল ইঞ্জিরের অগোচর বিষর আছে। ভুগার্ভ নিহিত হিরণারাশির উপর দিয়া নিধিশাস্তানভিজ্ঞ লোকসকল গতারাত करत, बर्बा दियन छेहात अधिक छाहाता अञ्चय करिएक शास्त्र ना, म्बेक्न मञ्चा अब्बंद खुवृश्चिकाल श्वन्त अत्वन क्रिबाड

অনভিজ্ঞতাবশতঃ সেই সকল গভা বিষয়ের কোন সংবাদ্ধ পার না। ঘাঁহারা দহরবিদারে উপাসক তাঁহারা প্রমান্তভন্ত ছইরা পরলোকগভ হন, এবং তাঁহারাই এই প্রাছের বিষয় সকল মধ্যে প্রভাক করিতে সমর্থ।

व्यथान व्यथान विसा व्यवस्थन कविशा कि व्यकांत्र शक्ति हत्त. ভাহা এক প্রকার উল্লিখিত হইল, এখন মৃক্তিসম্বন্ধে বেলান্তের মত কি, তাহার উল্লেখ প্রধানন। মুক্তিতে জীব ব্রশ্বের সহিত এক হট্মা বাম, তাহার আর স্বতন্ত্র অন্তিত্ব থাকে না, বেদান্তসিত্ব মুক্তি माधात्रगण्डः रंगारक अहेत्रभटे वृतिका बारक। मनी । मनुरक्षत महील व्यवनचन-कतिशे दिनाख यथन मुक्तित्र कथा विनिश्राह्म छथन -লোকের মনে যে এ প্রকার সংস্কার জন্মিবে ইহা জার একটা व्यमञ्चर वााशांत कि ? जातत महिल क्षम मिलिया अकाकात कहे. শেও মিশ্রিত কলের অভিছ বিল্পু হর না,কেন না মিশ্রিত কলের ं बार्स शृंस्कालत शिवाशांधिका रुत्र, व युक्ति वक्षत्रवृक्ष बार्ड ना, कांत्र मक्लरे यथन डीहान अस्कृंड, उथन किह्रे डीवान नाना-ধিকাসাধনে সমর্থ নছে। স্বাষ্টর পূর্বে সকলই ভাছার সহিত व्यविक्रक कारव दिक दिन, म्हिकारम विक्रकांकारक अस्तान नाहेन। यति विकक्षाकात्र स्तर् शकान नाहेन. 🚜 स्वन ८ ব্ৰন্ধের দহিত নিগুঢ় অবিভক্তা অভব্নিত হইল না, কেন না তীবার সভা হইতে খতর হইরা উচার অভিরণাক। অসম্ভব। বাহিৰে বিভক্ত ভিতৰে অবিভক্ত জগৎসকলে এ কথা বহিলে কিছু অভিবিক্ত বলা হব না। আমরা প্রতিজন বিভক্তভাবে শ্বতন্ত্র খতন্ত্র ঘইরা আছি ইণাতে কোন সংশর নাই, কিন্তু একই कार्यक्ति जामात्मव जल्दत वाहित विश्वमान शक्ति तनहे

শক্তিতে আমানিগকে অবিভক্ত করিয়া রাখিয়াছে, এ কথা আমরা কিছুতেই অস্বীকার করিতে পারি না। পরস্পরস্পার্ক বে সকল व्यान्तरी निशृष् मन्द्र व्यवद्यावित्यत्व क्षात्रान भाव. त्य क्षात्र व्यव रमथाडेवा रमव रम, आमता आमामिगरक रमक्रे प्रकृत अध्य । भूथक বলিয়া মনে করি বস্ততঃ দেরাপ সভন্ন ও পৃথক্ নহি, আমরা বাহিরে বিভক্ত কিন্তু অন্তরে অবিভক্ত। যে জ্ঞান বিভক্তে व्यविष्ठक मर्गन करत, रम खान मादिक, छन्त्रक्रीला व कश्रह এ কথা বলিরাছেন। সৃষ্টির পূর্বেবে অবিভক্ততা ছিল তাছা তিরোহিত হর নাই সঙ্গে লাগিরা আছে। মুক্তিতে সেই অবিভক্তা-यञ्चात कान देख्या हरेशा किर्फ. त्कन ना धरे खानरे महा खान, ध জ্ঞান আমাদের মানসিক বিকারে প্রচ্ছন্ন হইরা পড়ে, বিকার চলিরা গেলেই উহা আত্মার সন্নিধানে স্কুম্পার প্রকাশ পার। ব্রহ্ম সহ আমরা অবিভক্ত ভাবে অবস্থিত, এই জানই তবে সতা জান, এবং উহাই মুক্তিনামে অভিহিত। বেলান্ত মুক্তিতে জলের সহিত करनत मः मिल्रालत त्व मुद्देश विवाहिन, उदा এই अविज्ञका প্রদর্শনের জন্ত। যদি তাহা না চইত ভাহা চইলে জীব নামরূপ व्हेट विमुक्त ब्हेबा भवादभव भवम भूक्ष्यक शाश हत, अ क्वी विनश दिनास बन्न ए जीदनत ल्याना शानकमन्त्र कथन উল्लब कतिराजन ना । "विनि भवम तामारक कारनन जिनि तामारे शायन, हैगात कृत्म अञ्चलित इत ना" अ कथा वनाएक अहे वृक्षाहेटल्ड्स বে, ব্ৰহ্মের সহিত বাঁহার একস্থলাত হইরাছে পুত্র পৌত্রাদি তাঁহার শেই ভাব गहेबा समाश्रहन करत, सुख्वाः खाशास्त्र मश्य त्कर भद्रभविर रह ना। एटका श्रृतक्रश उद्धाराशम श्रेता समाधर्ग क्तिताहित्वन अठताः छाहावा नकत्वहे द्यागभवात्रन हहेबाहि-

লেন, ইতিহাস এই কথারই সাক্ষ্যদান করে। 'ব্রক্ষই হয়েন' এ
কথা শুনিরা অন্ত প্রকার ভাবিবার কোন কারণ নাই, কেন না
স্বর্গপরাস্থালে বেদান্ত ভোজা ভোগা ও প্রেররিভা এ তিনকে
একই ব্রহ্মশন্দে অভিহিত করিরা থাকেন। জগৎ জীব ও নিয়ন্তা এ
তিন বিরোধপরিহার করিয়া এক হইলে ব্রন্ধেতে এ তিনের ভিয়তা
তিরোহিত হয়, রহদারপাক মধ্বিদ্যায় এ কথা অতিস্পষ্টরূপে বাজ্ক
করিয়াছেন। প্রকৃতিতে বিনি প্রতিষ্ঠিত, জীবে তিনিই প্রতিষ্ঠিত। বিনি এ উভরে প্রতিষ্ঠিত থাকিয়া উভয়ের সম্বন্ধ হইতে
কল্যাণ উভূত করিভেছেন এবং সেই কল্যাণে জগৎ ও জীবকে
আবিরোধী করিভেছেন, তিনি ও ব্রন্ধ একই পদার্থ, স্বতরাং
নিয়ন্তার সহিত এ ছইয়ের অবিরোধী ভাব ব্রন্ধের সহিত একতা
উপস্থিত করে। এই একতা ব্রন্ধাৰ ও ব্রন্ধেতে স্থিতি নামে
অভিহিত হইয়া থাকে।

এ মৃক্তি দেহে অবস্থানকরিয়াও সিদ্ধ হর। 'হলহালিত অভিলাষ সমুলার যখন থিনিয়া পড়ে, তথন মন্তা অমৃত হর এবং ইছ
জীবনেই ব্রজসম্পন্ন হয়। সংপ্রি মৃত নির্মোক বিলাকে নির্মিণ্ড
হইনা ছেমন শ্রান থাকে, তেমনি মহুবোর এই শ্রীর শুরুল
থাকে। তথন এই মন্থ্যা অশ্রীর হর অমৃত হর।" ুলি মুক্ত
ব্যক্তি শ্রীরস্থেও অশ্রীর হর, তবে তাছাতে তথনও শ্রীরচেন্তা কেন দেখিতে পাওলা যার ? এ প্রশ্নের উত্তরে ক্রতি বলিতেছেন "ব্রম্বই প্রাণ হন; ব্র্মাই ভেজ হন।" ক্রেবল এই প্রান্ত
নহে "স্ক্রে বিস্তীর্ণ চিরন্তন পথ তাঁহাকে ম্পূর্ণ করিয়া রহিনাছে"
মুক্ত বাক্তি এইরপ অম্কত্ব করেন। সে পথ কোন্প্র ?"
"সেই পথ যে পথে ধার ব্রহ্বিস্পাণ দেহাতে মুক্ত হুইনা স্থাপানন

करबद्ध ।" द्यांशिशन देशांलादिक शांकिशांक शहरताटक स्नारहरू এরপ অভুত্তৰ করেন কেন, বেদান্তের এই সক্ষ কথার ভাষা প্রকাশ পাইতেছে। শরীর থাকিতেও অশরীর হইরা বাস, অর্থচ শরীরধারিসমৃতিত সমুদার কর্ত্তবাসাধন অনেকের মনে অগম্ভব বলিরা মনে হইতে পারে, কিন্তু শ্রুতি এ সম্বন্ধে বে মীমাংসা क्षित्रास्त्रम, त्म श्रीभारमात्र लाक्तिकृत्म क्या विवास नारे। ঈশ্বরগতজীবন সাধুগণ আপনাদের কর্তৃত একেবারে বিশ্বত হন। ভাঁহাদের দেহ মন আত্মা আপনারা কিছুই করে না স্বরং ঈশ্বরের প্রেরণার ভাষাদের ক্রিয়া হর, যধন ভাষারা এরাপ বলেন ভখন डीहारमत दम कथात्र दकान मानत कतिर्ड भाता यात्र ना. दकन ना व कीवान यति केतृन व्यवशा इतना व्यवश्व इत, जाहा हरेल छेशामना-वन्तना-माधन-छल्ननाति मकनहे व्यर्गुल हहेगा भएए । यति পুর্বেও যেরপ অবিশুদ্ধ জীবন ছিল, বছ সাধনেও সেইরপ कौरनहे थाकिया (शन, जाहा हहेरन माथन आञ्चतक्षनाज्यि कांत्र कि बना बाहेरक शास्त्र। (बनाखमस्ड दकान अवदानाक स्हेरन मुक्ति स्नाड, देश कालाहमा कतिया एमिलन वृद्धि भाता यात्र, · दिनास सांजाविक श्रष्टा शतिष्ठाान-कतिता दिनान व्यटनमर्तिक शक्ष আশ্রম করিতে বলেন নাই। সাধক সর্বাপ্রমানর অভিযানশৃত্ত क्रेबा वाग्छावालब व्हेदन, द्वनारुद्ध वह मस्त्रिशान छेल्दन । गांचक वधन वामछावाशन हम, छथन छिमि शालात चडीड हम, বেদান্ত এ কথা বলিলেন কেন ভাচার কারণ আমরা সেধানেই कुणांहे बारका जेख बहेबारक स्विटक शाहे। हिन्त अखियानम्ना হইলে অভঃকরণের তৃষ্ণা নিবৃত্ত হর। তৃষ্ণা নিবৃত্ত চইলে পরমা-স্থাতে হিতি সংগ হইয়া পড়ে। প্রমান্থাতে হিভিতে তাঁহার

প্রেরণাই জীবনের নিরামক হয় । সমুদার জীবন তাঁহার জেলণার নিরমিত হইলে আর পাণের সভাবনা থাকে না। পাণের সভাবনা চলিরা গেণে চিভ বিকারশৃত হয়, মোহ সংশর ছিয় হয়, বাংলাভে স্থিতি সিদ্ধ হয় । এই ব্রন্ধেতে স্থিতি বেলাতে ব্রন্ধলোক বলিরা অভিহিত হইয়া থাকে ।

टक्नाटखाक मुक्ति यमि এইजार्श इत्र. जाहा हटेला दक्नाटखाक मुक्ति निकानमुक्ति छेराल बीत्वत अस्वितिनान रत, এ कथा উঠিল কোলা হইতে ? যাজ্ঞবন্ধা ও মৈত্রেয়ীর কলোপকথনে चामना तमिर्छ भारे, याक्रवसका विलिख्डिन "कहुनीक्षक रेमसन-थे करन निकिश रहेरन रामन करन मिनाहेबा यात्र, चात्र छाहारक উহা হইতে তুলিয়া লওয়া যায় না, কিন্তু বেখান বেখান হইতে कन जुनिया न उम्रा यात न वन्हें इत्, टिमिन धरे व्यन स व्यनात মহৎ ভূত বিজ্ঞানখন হইয়া যায়; এই সকল ভূত হইতে উত্থান क्रिया रुगरे जुड नकरनरे चमुना रहेश यात्र, (स्वमडामि) र्कान ू गैरका शास्त्र ना, आमि छाहाई विवादिक ।" त्ववप्रकानि दकान वित्यव मरका थाक ना, देशव अर्थ कि ? वाकिय थाक ना देशहे कि नरह ? दक्वन रय अहे भर्यास जाश ना हत, करनत किस्त नर्ग (र প্রকার ভূতসকলের ভিতরে উহা যে দেই প্রকার অনুপ্র रुदेश यात्र। अक्रम अनुश्च दश्या कि आधात विनाम नरह ? हेरा विनाम नरेर, किन्न धकान्या हरेया विकि चन्नः यास्त्रवदाह ध क्या र्यामशास्त्र। "अति रेमाबति, आति साहकत राका यनिष्ठिक्ष मां, जाजा त्य जित्रामी अञ्चलक उहात धर्च, जावि ভাষাই বলিতেছি।" বুদি এইরপ্ট হটল তাতা হটলে পরে दक्त वना रहेन, "राथारन छुछ बारक रमबारन जक अनुबद्ध रार्थ. চ অপারকে থাণ গর্ম, এক অপারকে শোনে, এক অপারকে বলে,
চ অপারকে চিন্তা করে, এক অপারকে জানে। বেধানে ইহার
চলই আত্মা হইরা গেল সেধানে (আত্মাভিরিক্ত) কাহার
রা (আত্মাভিরিক্ত) কাহাকে দেখিবে, কাহার হারা কাহাকে
নিবে, কাহার হারা কাহাকে বলিবে, কাহার হারা কাহাকে
ভা করিবে, কাহার হারা কাহাকে জানিবে। বাহার হারা
সকলকে জানা যার কাহার হারা ভাহাকে জানিবে। বাহার
সকলকে জানা যার কাহার হারা ভাহাকে জানিবে, বিজ্ঞানিকে কাহার হারা জানিবে।" এ কথার এই ব্যাইতেছে, এক
জ্ঞাভাই রহিলেন, বিজ্ঞাভার অভিরক্ত ভাহাকে জানিবার
যার কেহ রহিল না। এখানে এ বিজ্ঞাভা কে ? পতঞ্জলির
তে পুরুষ (জীব) বেলায়মতে-পরাত্মা বলি এরূপ রলা যার, তাহা
ইলে জীব ও জীবের অন্তর্যামীকেই ব্রার কেন না পরাত্মবর্হিত জীবের জ্ঞাত্মই সন্তবে না। বেলাত্মে মুক্তি ও কৈবলা
এ ত্ইয়ের পার্থকা কি তাহা ব্রিলে কৈবলা নির্বাণমুক্তি কি ব

মুক্তিতে জীব ও এক্ষের স্থনপের ঐক্য হইরা এক্ষেতে তাহার কেবল স্থিতি হর তাহা নহে, তাঁহার অন্থণত হইরা তাঁহার বিবিধ ঐথায় সে সন্থোগ করে। কৈবল্যে আত্মভাবাপর জীব এক্ষের সহিত অবিভক্তভাবে স্থিতি করে, স্প্রির পূর্বের সে বেমন প্রস্নাম্মভ অন্থ ভব-করিয়া নিত্য আনন্দসন্ভোগ করিও, তদবত্থাপর হর। এথানে জীবের বিনাশ হইল না কিন্তু সে প্রস্নাম্মভবাম্মভবী হইল। "আত্মা অবিনাশী অন্তচ্ছেদ উহার ধর্ম্ম" কৈবল্যাবত্থা বলিতে গিরা বৃংলার্থা এজনাই এ কথা বলিয়াছেন। জীবের কৈবল্যাবত্থা উপন্থিত ইইলে স্প্রীর বিল্য হর, স্কুতরাং বভ দিন স্প্রীর বিল্য না ইইতেছে,

क्षक क्षित्र देकरामा दकरण मक्षावनामाळम्दरा गंगा। स्टिस र्वरक्ष ष्ट्रेपरबच्चाधीन, जीरवर देव्हाधीन नरह, व्यत्नक चाठार्या अवव মৃত্তির পক্ষপাতী কৈবল্যের পক্ষপাতী নহেন। ব্রন্ধের সৃষ্টিত चक्ररण खेका मुक्ति, क मिक जामारमञ्ज अक्रुर्यामनीत, दक्त ना যত দিন পর্যান্ত স্বরূপে একতা না হর, ছঙ দিন পাণজনিত विद्वाध कार्यकारी। धरे विद्वाध हिन्दा शिल कीव मर्क्सथ ঈশবের ইচ্ছাতুবর্তী হয়, এই ইচ্ছাতুবর্তিতাকেই আমরা মৃক্তি বলি। এ অবস্থার ব্রহ্ম জীবের প্রাণ হন, ব্রহ্ম জীবের তেজ (जेनाम) इन, त्यनारस्य ध क्यांत्र महिल आमार्त्तत्र कान विरवाध নাই. আমরাও এই কথা বণিরা থাকি। যত দিন মুক্তিনা क्टें(छाइ, ७७ निन स्रोटना crette किकाल क्रिकि हत्। द्वाराखन এই কথা গুলি ভাষা প্রদর্শন করে :--জীব যুগন ইচলোক ভটুতে লোকান্তৰে চলিয়া বাৰ তখন প্রমান্তা কর্তৃক আলিক্তি হইরা অস্থান করে। যথন সে দেহবিমুক্ত হইল তথন সে বিজ্ঞানমর, ু মনোমর, প্রাণমর, চকুর্মর, শ্রোজমর, জলমর, বায়ুমর, আকাশমর, टिंडिकाम्ब, काममब, व्यकाममब, टिकाधमब, व्यक्तिसमब, धर्ममब, অধশ্বময়, সর্কময় হইরা এরপ ওরপ সকলই হইল। ফল 🕸 বে रश्क्षण कर्ष करत्र रशक्कण चाहत्रण करत्र रम रमहेक्रण हत्। व्यक्षिकारी। काही माधु इत, भाभकाशकाती भाभी इत। भूग कर्ष भूग भाभ कार्य भाभ बहेबा थारक।" @ जकन कथांव @हे सबाहे-ভেছে, প্রভোক আত্মা হ'ব আচরণামুসারে মৃত্যুর পরও ভির ভিন্ন বাজি হইরা স্থিতি করে, প্রাকৃতিক পুন্ম উপাদানগুলিও ভাষার সঙ্গে থাকিয়া যার। যত দিন আত্মা সকল কামনা হইতে विश्वक करेता बक्काम मा क्रेएडर्ड, एक पिन काहात लोकरनाका-

ত তীৰণ নিয়ন্ত হয় না, "অকাম, নিকাম, আপ্তকাম, আত্মকাম," লো আর ভাহার এথানে ওথানে গমন হয় না, ত্রকভূত হইরা কভেই ভাহার তিতি হয়।

বেদান্তসিদ্ধ পরলোকতত্ত্ব একপ্রকার সংক্ষেপে বিবৃত হইল। াদান্ত ইংলোক ও পরলোক উভয়কে শ্বতন্ত্র দৃষ্টিতে দেখেন না। ভন্ত দৃষ্টিতে দেখেন না বলিয়াই যে ব্যক্তি ইহলোকে বেরূপ ाठित्रण करत भत्ररलारक रम रमहेक्राण हम्, धहे धक कथात्र छेरक्रहे-াতি ও অধোগতি উহাতে নিণীত হইরাছে। জীবের আচরণামু-ারে গতি, এ কথার উপরে বেদান্তের এমনই নির্বন্ধ যে, ভিন্ন ভিন্ন মুষ্যলোকেও বান্ধণ চণ্ডালাদিভেদ নির্দারণ-করিতে বেদান্ত কিছু-ाज कृष्टिक हम मारे। बाजाना श्रामानिक व वरवावर्ग अमानिक स াৰ. কিন্তু গুণ ও কৰা সেক্লেট প্ৰাভেনে নণীত আছে, তথা ক্রিলোকেও ব্রাহ্মণাদিভেকি বক্ষঞ্জনিত দেব-৬ প্রকিপথান ভিজ বদান্তবিদ্যাপের ইহাই অভিপ্রার। গ্রাজিগণের ইংলোকেই স্থিতি হয়, পুন: পুন: কীটপভলানি কর গাভ-করে। এ কথার নির্দ্ধীক এক্সালে ইইভে পারে না. কেন না কোন না কোন আকারে সর্বতে ঈশহজ্ঞান বিদ্যমান ইঞা খখন নিতা প্রত্যক্ষ্ণ তখন পৃথিবী সে অবস্থা অতিক্রম করিগছে এ কথা লো কিছু শাত্রবিক্ষ নয়। শাত্রবিক্ষ নর বলিয়াই গীতা স্ত্রীশ্রাদ্ কলের প্রতি স্পাতির বার খুলিয়া দিয়াছেন। নানা অবস্থাপর हीरवंत लाक्टलाकांखरत सम्बन्ध द्वम हहेत्छ द्वमार्छ नमान्छ ।ইরাছে তাহাতে কোন সংশর নাই, কি**ন্ত** এইটি বিবেচ্য বে বেকে াহার মূলমাক আছে, বেদাত্তে ভাহাই বিশেষক্রণে ব্যাখ্যাত हिनादको दिनास देशमत याथान ७ क्लो बनात किहू पछ-

রিজ বলা হর না। ব্যাখান কথন ভগপীরখনিত নির্দিশক হইতে পারে না, বেলান্ত আপনি এ কথা বখন বলিরাছেন, তথন এ বাধানের অর্থ যে আধুনিক ক্রমাভিব্যক্তির ভাষাতে আর সংশ্ব কি ? আমাদের মনে ক্রমাভিব্যক্তির নিরম প্রবল বাকিলেও উহার নিরোগ আয়রা বেলান্তের উক্তি অবলমন করিয়া করিয়াহি, বলপূর্বক উহার নিরোগ বেলাতে করি নাই, আশা করি আলোচনার ইহা সকলেরই নিকটে প্রতিভাত হইবে।*

[•] বলিবার সময় বে সকল কথা বিশেষ্ট ছিল না বা বীলাকারে ছিল লিখিবার সময় সে সকল পরিক্ট করিয়া দেওয়া গেল, বলিতে পিয়া বে সকল বিভূত হইয়াছিল, সেঙলি লিখিবার সময় সংলিগুলাকারে লিপিবছ হইল। শেকার নির্কাণমুজিতে বিখাস করিয়াছেল। লগং জীব ও ঈশর এ তিনের নিত্য সক্ষ বধন অপরিহার্য,তথন উাহার মতে আময়া সায় লিতে পাহি না, বেলাভোক বুলিবই আময়া অনুমোদনাকরি।

কলিকাতা।

তনং রমানাথ মজুমনারের ষ্ট্রাট। "মুফুলগঞ্জ মিশন প্রেন্দ্রে" কে, পি, নাথ কর্তৃক মুদ্রিত ও প্রকাশিত।

